

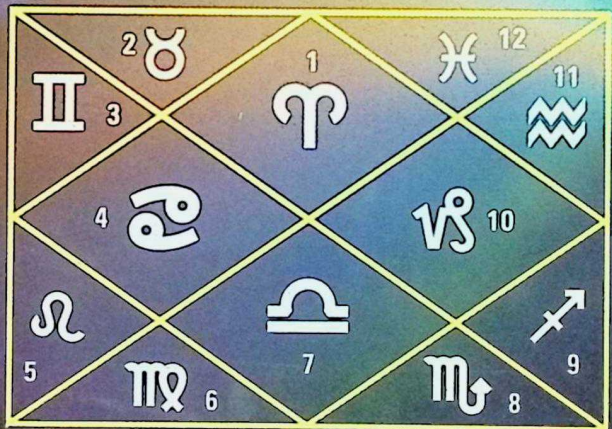
रावण संहिता

और

दशानन कृत ज्योतिष के

सुनहरी सिद्धान्त

ज्योतिषाचार्य पं. कपिल मोहन जी



शुभाक्षर प्रकाशन, हरिद्वार



ज्यो- १६५६



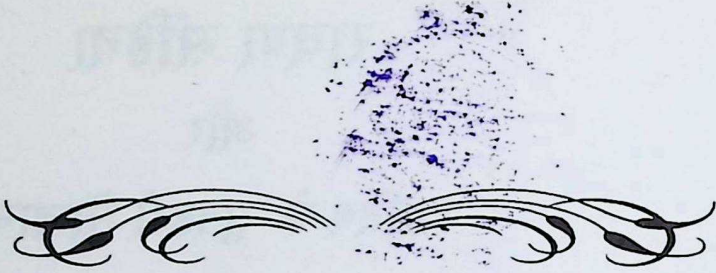
R. ६४

दशानन कृत रावण संहिता और

ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त

भारतीय ज्योतिष की परम्परा में जन्म कुण्डली देखकर फलादेश करने के लिए सर्वप्रसिद्ध ग्रन्थों में भृगुसंहिता, मानसागरी, बृहज्जातकम् तथा रावण संहिता और दशानन कृत ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त सर्वविदित हैं लेकिन रावण संहिता की दुर्लभता एवं क्लिष्टता के कारण यह ग्रन्थ अभी तक बाजार में उपलब्ध न था। इस नाम की जो अन्य पुस्तकें अभी कुछ वर्षों से छपीं वह सब भ्रामक, अर्थहीन, ज्योतिष के विषय से सर्वथा परे, तथ्यविहीन व आडम्बरयुक्त हैं।

अब इस दुर्लभ ग्रन्थ को प्राप्त करके बड़े परिश्रम से इसकी सरल व सुबोध प्रस्तुति तथा सम्पादन करके पं. कपिल मोहन जी ने इसको सर्वसाधारण के लिए अनुकरणीय बना दिया है। एक प्रमाणित फलित ग्रन्थ आपके हाथ में है, इसका आद्योपांत अध्ययन करें और किसी भी प्रकार की कुण्डली का सटीक फलित बतलाकर आप भी सफल ज्योतिषी बन सकते हैं।



अनुभव समर्पण

संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित एवं ज्योतिष के महाविद्वान् महर्षि पुलस्त्य के पौत्र की रावण संहिता और मुनि विश्रवा के सुपुत्र दशानन की ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त की यह सुबोध व सुगम कृति भारतीय ज्योतिष के प्रेमियों तथा अनुसंधानकर्ताओं की सेवा में प्रस्तुत करते हुए मुझे सुखद अनुभूति है।

—लेखक



फलित ज्योतिष का दुर्लभ ग्रन्थ—
दशानन कृत

रावण संहिता



और
ज्योतिष के
सुनहरी सिद्धान्त

सम्पादक एवं प्रस्तुतकर्ता :

पं. कपिल मोहन जी

ज्योतिषाचार्य, रत्नसम्राट, नवग्रह यन्त्र निर्माता,

शुद्ध तान्त्रिक सामग्री विशेषज्ञ

एवं गुह्यविद्या के ग्रन्थों के अनुसंधानकर्ता

मूल्य : 300.00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

प्रकाशक : रणधीर प्रकाशन
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334).226297

वितरक : रणधीर बुक सेल्स
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता : गगन बुक डिपो
4694, बल्लीमारा, दिल्ली-110006

जम्मू विक्रेता : पुस्तक संसार
167, नुमाइश का मैदान, जम्मू तबी (ज.का.)
पुस्तक विक्रेता

संस्करण : सन् : 2012

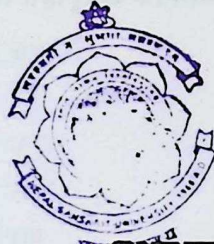
मुद्रक : राजा ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली-92

© रणधीर प्रकाशन

RAWAN SAMHITA AUR DASHANAN KRAT JYOTISH KE SUNHERI SIDDHANT

EDITED BY : PT. KAPIL MOHAN JEE

PUBLISHED BY : RANDHIR PRAKASHAN, HARDWAR (INDIA)



अनुक्रम

प्रथम भाग : रावण संहिता

मेष लग्न	१९
मेष लग्न में सूर्य का फल	१९
मेष लग्न में चन्द्रमा	२१
मेष लग्न में मंगल	२३
मेष लग्न में बुध	२४
मेष लग्न में गुरु	२६
मेष लग्न में शुक्र	२७
मेष लग्न में शनि	२९
मेष लग्न में राहु	३०
मेष लग्न में केतु	३२
वृष लग्न	३४
वृष लग्न में सूर्य का फल	३४
वृष लग्न में चन्द्रमा	३६
वृष लग्न में मंगल	३७
वृष लग्न में बुध	३९
वृष लग्न में गुरु	४०
वृष लग्न में शुक्र	४२
वृष लग्न में शनि	४३
वृष लग्न में राहु	४५
वृष लग्न में केतु	४७
मिथुन लग्न	४९
मिथुन लग्न में सूर्य का फल	४९
मिथुन लग्न में चन्द्रमा	५१

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

मिथुन लग्न में मंगल	५२
मिथुन लग्न में बुध	५४
मिथुन लग्न में गुरु	५५
मिथुन लग्न में शुक्र	५७
मिथुन लग्न में शनि	५९
मिथुन लग्न में राहु	६०
मिथुन लग्न में केतु	६२

कर्क लग्न

कर्क लग्न में सूर्य का फल	६४
कर्क लग्न में चन्द्रमा	६६
कर्क लग्न में मंगल	६८
कर्क लग्न में बुध	७०
कर्क लग्न में गुरु	७२
कर्क लग्न में शुक्र	७४
कर्क लग्न में शनि	७६
कर्क लग्न में राहु	७८
कर्क लग्न में केतु	७९

सिंह लग्न

सिंह लग्न में चन्द्रमा	८२
सिंह लग्न में मंगल	८४
सिंह लग्न में बुध	८६
सिंह लग्न में गुरु	८८
सिंह लग्न में शुक्र	९०
सिंह लग्न में शनि	९२
सिंह लग्न में राहु	९४
सिंह लग्न में केतु	९६

कन्या लग्न

कन्य लग्न में सूर्य का फल	१००
कन्या लग्न में चन्द्रमा	१००
कन्या लग्न में मंगल	१०२
	१०४

❖ रावण संहिता ❖

७

कन्या लग्न में बुध	१०६
कन्या लग्न में गुरु	१०८
कन्या लग्न में शुक्र	११०
कन्या लग्न में शनि	१११
कन्या लग्न में राहु	११३
कन्या लग्न में केतु	११५
तुला लग्न	११७
तुला लग्न में सूर्य	११७
तुला लग्न में चन्द्रमा	११९
तुला लग्न में मंगल	१२१
तुला लग्न में बुध	१२३
तुला लग्न में गुरु	१२५
तुला लग्न में शुक्र	१२७
तुला लग्न में शनि	१२९
तुला लग्न में राहु	१३१
तुला लग्न में केतु	१३३
वृश्चिक लग्न	१३६
वृश्चिक लग्न में सूर्य	१३६
वृश्चिक लग्न में चन्द्रमा	१३८
वृश्चिक लग्न में मंगल	१४०
वृश्चिक लग्न में बुध	१४२
वृश्चिक लग्न में गुरु	१४४
वृश्चिक लग्न में शुक्र	१४६
वृश्चिक लग्न में शनि	१४८
वृश्चिक लग्न में राहु	१४९
वृश्चिक लग्न में केतु	१५१
धनु लग्न	१५४
धनु लग्न में सूर्य	१५४
धनु लग्न में चन्द्रमा	१५६
धनु लग्न में मंगल	१५८

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

धनु लग्न में बुध	१६०
धनु लग्न में गुरु	१६२
धनु लग्न में शुक्र	१६५
धनु लग्न में शनि	१६७
धनु लग्न में राहु	१६९
धनु लग्न में केतु	१७१

मकर लग्न

मकर लग्न में सूर्य	१७४
मकर लग्न में चन्द्रमा	१७६
मकर लग्न में मंगल	१७८
मकर लग्न में बुध	१८०
मकर लग्न में गुरु	१८२
मकर लग्न में शुक्र	१८५
मकर लग्न में शनि	१८७
मकर लग्न में राहु	१८९
मकर लग्न में केतु	१९१

कुम्भ लग्न

कुम्भ लग्न में सूर्य	१९४
कुम्भ लग्न में चन्द्रमा	१९६
कुम्भ लग्न में मंगल	१९८
कुम्भ लग्न में बुध	२०१
कुम्भ लग्न में गुरु	२०३
कुम्भ लग्न में शुक्र	२०५
कुम्भ लग्न में शनि	२०७
कुम्भ लग्न में राहु	२१०
कुम्भ लग्न में केतु	२१२

मीन लग्न

मीन लग्न में सूर्य	२१५
मीन लग्न में चन्द्रमा	२१७
मीन लग्न में मंगल	२१९

मीन लग्न में बुध	२२२
मीन लग्न में गुरु	२२४
मीन लग्न में शुक्र	२२६
मीन लग्न में शनि	२२८
मीन लग्न में राहु	२३०
मीन लग्न में केतु	२३२

द्वितीय भाग : सुनहरी सिद्धान्त

राशियाँ	२३७
राशियों के स्वामी	२३७
ग्रहों के लिंग	२३७
ग्रहों की दृष्टियाँ	२३८
ग्रहों के दिन	२३९
ग्रहों के नक्षत्र	२४०
भाव	२४०
ग्रहों के यन्त्र, तन्त्र एवं रत्न	२४०
ग्रहों के मन्त्र	२४१
ग्रहों के रत्न	२४२
ग्रहों की वस्तुएँ	२४३
शुभ तथा अशुभ ग्रहों का निर्णय	२४५
उपायों के बारे में	२४५
ग्रहों का फलादेश	२४६
सूर्य	२४७
सूर्य प्रथम भाव में	२४७
सूर्य द्वितीय भाव में	२४७
सूर्य तृतीय भाव में	२४८
सूर्य चतुर्थ भाव में	२४८
सूर्य पंचम भाव में	२४९
सूर्य षष्ठम भाव में	२४९
सूर्य सप्तम भाव में	२५०

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

सूर्य अष्टम भाव में	२५१
सूर्य नवम भाव में	२५१
सूर्य दशम भाव में	२५१
सूर्य एकादश भाव में	२५२
सूर्य द्वादश भाव में	२५२
सूर्य के उपाय	२५३

चन्द्र

चन्द्र प्रथम भाव में	२५६
चन्द्र द्वितीय भाव में	२५६
चन्द्र तृतीय भाव में	२५७
चन्द्र चतुर्थ भाव में	२५७
चन्द्र पंचम भाव में	२५८
चन्द्र षष्ठम भाव में	२५८
चन्द्र सप्तम भाव में	२५९
चन्द्र अष्टम भाव में	२५९
चन्द्र नवम भाव में	२५९
चन्द्र दशम भाव में	२६०
चन्द्र एकादश भाव में	२६०
चन्द्र द्वादश भाव में	२६१
चन्द्र के उपाय	२६१

मंगल

मंगल प्रथम भाव में	२६३
मंगल द्वितीय भाव में	२६३
मंगल तृतीय भाव में	२६४
मंगल चतुर्थ भाव में	२६४
मंगल पंचम भाव में	२६५
मंगल षष्ठम भाव में	२६५
मंगल सप्तम भाव में	२६५
मंगल अष्टम भाव में	२६६
मंगल नवम भाव में	२६६

❖ रावण संहिता ❖

११

मंगल दशम भाव में	२६७
मंगल एकादश भाव में	२६७
मंगल द्वादश भाव में	२६८
मंगल के उपाय	२६८
बुध	२७१
बुध प्रथम भाव में	२७१
बुध द्वितीय भाव में	२७१
बुध तृतीय भाव में	२७२
बुध चतुर्थ भाव में	२७२
बुध पंचम भाव में	२७३
बुध षष्ठम भाव में	२७३
बुध सप्तम भाव में	२७३
बुध अष्टम भाव में	२७४
बुध नवम भाव में	२७४
बुध दशम भाव में	२७५
बुध एकादश भाव में	२७५
बुध द्वादश भाव में	२७५
बुध के उपाय	२७६
बृहस्पति	२७९
बृहस्पति प्रथम भाव में	२७९
बृहस्पति द्वितीय भाव में	२७९
बृहस्पति तृतीय भाव में	२८०
बृहस्पति चतुर्थ भाव में	२८०
बृहस्पति पंचम भाव में	२८१
बृहस्पति षष्ठम भाव में	२८१
बृहस्पति सप्तम भाव में	२८२
बृहस्पति अष्टम भाव में	२८२
बृहस्पति नवम भाव में	२८३
बृहस्पति दशम भाव में	२८३
बृहस्पति एकादश भाव में	२८३

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

बृहस्पति द्वादश भाव में	२८४
बृहस्पति के उपाय	२८४

शुक्र

शुक्र प्रथम भाव में	२८७
शुक्र द्वितीय भाव में	२८७
शुक्र तृतीय भाव में	२८७
शुक्र चतुर्थ भाव में	२८८
शुक्र पंचम भाव में	२८८
शुक्र षष्ठम भाव में	२८९
शुक्र सप्तम भाव में	२८९
शुक्र अष्टम भाव में	२९०
शुक्र नवम भाव में	२९०
शुक्र दशम भाव में	२९१
शुक्र एकादश भाव में	२९१
शुक्र द्वादश भाव में	२९२
शुक्र के उपाय	२९२

शनि

शनि प्रथम भाव में	२९५
शनि द्वितीय भाव में	२९५
शनि तृतीय भाव में	२९६
शनि चतुर्थ भाव में	२९६
शनि पंचम भाव में	२९७
शनि षष्ठम भाव में	२९७
शनि सप्तम भाव में	२९७
शनि अष्टम भाव में	२९८
शनि नवम भाव में	२९८
शनि दशम भाव में	२९९
शनि एकादश भाव में	२९९
शनि द्वादश भाव में	२९९
शनि के उपाय	३००

❖ रावण संहिता ❖

१३

राहु

राहु प्रथम भाव में	३०३
राहु द्वितीय भाव में	३०३
राहु तृतीय भाव में	३०४
राहु चतुर्थ भाव में	३०४
राहु पंचम भाव में	३०५
राहु षष्ठम भाव में	३०५
राहु सप्तम भाव में	३०५
राहु अष्टम भाव में	३०६
राहु नवम भाव में	३०६
राहु दशम भाव में	३०६
राहु एकादश भाव में	३०७
राहु द्वादश भाव में	३०७
राहु के उपाय	३०८

केतु

केतु प्रथम भाव में	३१०
केतु द्वितीय भाव में	३१०
केतु तृतीय भाव में	३११
केतु चतुर्थ भाव में	३११
केतु पंचम भाव में	३११
केतु षष्ठम भाव में	३१२
केतु सप्तम भाव में	३१२
केतु अष्टम भाव में	३१३
केतु नवम भाव में	३१३
केतु दशम भाव में	३१३
केतु एकादश भाव में	३१४
केतु द्वादश भाव में	३१४
केतु के उपाय	३१४

मंगलीक योग विचार

मंगलीक योग	३१७
------------	-----

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

मंगलीक भंग योग

शनि की साढ़े साती

साढ़ेसाती का फल

साढ़ेसाती के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय

वरुण

वरुण प्रथम भाव में

वरुण द्वितीय भाव में

वरुण तृतीय भाव में

वरुण चतुर्थ भाव में

वरुण पंचम भाव में

वरुण षष्ठम भाव में

वरुण सप्तम भाव में

वरुण अष्टम भाव में

वरुण नवम भाव में

वरुण दशम भाव में

वरुण एकादश भाव में

वरुण द्वादश भाव में

वरुण के उपाय

वारुणी

वारुणी प्रथम भाव में

वारुणी द्वितीय भाव में

वारुणी तृतीय भाव में

वारुणी चतुर्थ भाव में

वारुणी पंचम भाव में

वारुणी षष्ठम भाव में

वारुणी सप्तम भाव में

वारुणी अष्टम भाव में

वारुणी नवम भाव में

वारुणी दशम भाव में

वारुणी एकादश भाव में

३१८

३२०

३२०

३२१

३२२

३२२

३२२

३२३

३२३

३२३

३२३

३२३

३२४

३२४

३२४

३२४

३२५

३२५

३२६

३२६

३२६

३२६

३२७

३२७

३२७

३२७

३२७

३२८

३२८

३२८

❖ रावण संहिता ❖

१५

वारुणी द्वादश भाव में	३२८
वारुणी के उपाय	३२८
भाग्य-तारिका (Fortuna)	३३०
भाग्य-तारिका प्रथम भाव में	३३०
भाग्य-तारिका द्वितीय भाव में	३३०
भाग्य-तारिका तृतीय भाव में	३३०
भाग्य-तारिका चतुर्थ भाव में	३३१
भाग्य-तारिका पंचम भाव में	३३१
भाग्य-तारिका षष्ठम भाव में	३३१
भाग्य-तारिका सप्तम भाव में	३३१
भाग्य-तारिका अष्टम भाव में	३३१
भाग्य-तारिका नवम भाव में	३३१
भाग्य-तारिका दशम भाव में	३३२
भाग्य-तारिका एकादश भाव में	३३२
भाग्य-तारिका द्वादश भाव में	३३२



ध्यान योग चिकित्सा

(असाध्य रोगों का बिना दवा उपचार)

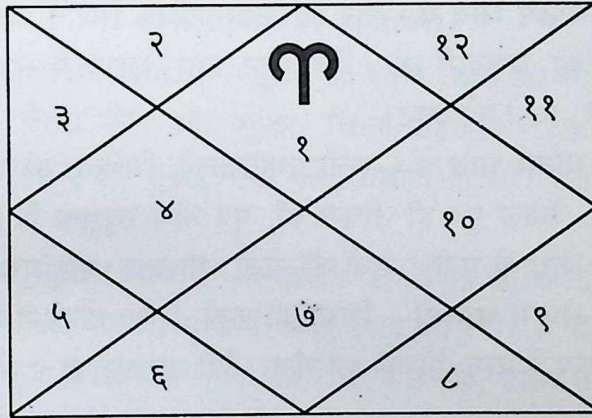
वैज्ञानिक जगत को चुनौती देने वाली, विश्व के इतिहास में एक नई रहस्यमय चिकित्सा पद्धति का विवरण देने वाली यह पुस्तक लिखकर श्री नन्दलाल दशोरा ने एक सराहनीय कार्य किया है। इसी चिकित्सा पद्धति को अपनाकर सफल परीक्षण कर रहे हैं—‘श्री मोहन जी’ जिन्होंने अब तक बिना दवा के तीन लाख से अधिक असाध्य रोगों का उपचार करके विश्व भर में ख्याति प्राप्त की है। लेखक का मानना है कि रोग का बीज चित्त में होता है। चित्त में संकल्प से उस बीज को नष्ट किया जा सकता है।

सभी बीमारियां मन की उपज हैं यदि मन को स्थिर एवं शांत करके शरीर के केमिकल्स बदल दिये जायें तो शरीर को अनेक बीमारियों से छुटकारा मिल सकता है। यही ध्यान योग चिकित्सा है जिससे आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान भी सम्भव है।

इसी ध्यान योग चिकित्सा का सफल परीक्षण करते हुए गुरुदेव मोहन जी ने जिन हजारों रोगियों को रोग मुक्त किया है उनका विवरण भी इस पुस्तक में दिया गया है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों से पहुंचे रोगियों को देखते हुए एवं गुरुदेव के जर्मन प्रवास के चित्रों की पूरी एलबम भी पुस्तक में दी गई है।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

मेष लग्न



मेष लग्न में सूर्य का फल

सूर्य प्रथम भाव में—वीर, तेजस्वी सभी आदर करें, विद्या भाग्य में लिखी है, सन्तान को कंधे पर चढ़ाए रखता है। भाग्यवान् उच्च चरित्र। आँखें तेज। पत्नी स्वच्छता प्रिय, सजी सँवरी तथा प्रवीण। सन्तान बुढ़ापे में प्रभावशाली बन जाए। मान बढ़े। बन्दूक का लाइसेंस। राजयोग, शरीर में ईश्वरीय शक्ति का वास। जब से पुत्र उत्पन्न हुआ है भाग्योदय पाँच बार।

सूर्य द्वितीय भाव में—सन्तान सम्पत्ति पर शीघ्र अधिकार कर ले। सन्तान बाबा की गद्दी सँभालना चाहे, विद्या कम। दाहिना नेत्र कमजोर।

नेत्रों में फोड़े।

सूर्य तृतीय भाव में—सन्तान अपने चाचा-ताऊ की गोद में झूलती रहे। बन्धु-बान्धव अधिक पढ़ जाएँ। भाग्यवान्। सन्तान यात्रा में साथ रहे। ज्यों-ज्यों सन्तान उत्पन्न हो भाग्यशाली बनती रहे। स्वयं बड़ा भाई।

सूर्य चतुर्थ भाव में—माता विद्वान्। शिक्षा घर में भी ग्रहण करे। सन्तान मकान व जमीन पर शीघ्र कब्जा कर ले। मकान बदल जाए। नौकरी भी बदलनी पड़े। जब सन्तान उत्पन्न हो तब मकान भी बने।

सूर्य पंचम भाव में—विद्या वारिधि, एम.ए.। न्याय तथा कानून का विद्यार्थी। सन्तान सिंह के समान वीर तथा पढ़ी-लिखी। रोजगार करने में मन न लगे। नौकरी के लिए प्रयत्न। उच्चपद की अभिलाषा। भूगोल में रुचि। अध्यापक न बने। पुत्र प्राप्त होते ही भाग्योदय। आत्म बलिदान।

सूर्य षष्ठम भाव में—रोग और शत्रु अधिक सिर न उठावें। सन्तान किसी शत्रु की तरफदारी करे। विद्या छूट जाए, बुढ़ापे में सन्तान शत्रुवत् व्यवहार करे, मामा को कष्ट।

सूर्य सप्तम भाव में—पत्नी प्रभावशाली, शिक्षित, स्वच्छता पसन्द, सजी सँवरी, केवल पुत्र ही उत्पन्न हों, पुत्र नीच स्वभाव के, सन्तान भी स्वच्छ रहे। शिक्षा में प्रवीण, पुत्रों की रोजी लग जाए। एक पुत्र जनरल।

सूर्य अष्टम भाव में—शिक्षा की कमी, शिक्षा धोखा दे जाए। परेड, ड्रिल, खेलकूद में मस्त, निशाने का शौक। वैसे उम्र भर पढ़ता रहे, विदेश में भी पढ़े।

सूर्य नवम भाव में—बचपन से ही शिक्षा में ध्यान, क्लास में फर्स्ट आवे, यात्रा में सन्तान उत्पन्न। केवल एक ईश्वर को माने। वर्ण का पक्का, बन्धु बान्धवों को भी भाग्यवान् बना दे, सन्तान भाग्यवान्, यात्रारत। विश्व का भ्रमण, आत्मविश्वासी।

सूर्य दशम भाव में—शिक्षा में सरकारी सहायता न मिले। पुत्र शत्रु बन जाएँ, नौकरी में शिक्षा का समुचित आदर न हो, शिक्षा में पिता की भी मदद कम मिले परन्तु मकान, जमीन के उत्तम योग हैं, सवारी का प्रबन्ध हो जाए।

सूर्य एकादश भाव में—शिक्षा व्यापार के काम न आवे। पुत्र पिता की गद्दी को सँभाल कर त्याग दें। पुत्रों से कारोबार में न बने, कारोबार में बुद्धि न लगे, कारोबार में सरकार से हानि, इसलिए कारोबार बदलने पड़ें। दुकान में आग लग जाए। अगले जन्म में कुम्हार के घर जन्म लेगा तथा व्यापार में फिर भी घाटा पाएगा।

सूर्य द्वादश भाव में—शिक्षा में अधिक खर्च। फिजूल खर्चा समाप्त। शत्रुओं पर प्रभाव। सन्तान अधिक खर्च करे, विद्या में रुकावट। समुद्री जहाज की शिक्षा। बाएँ नेत्र की दृष्टि कमजोर, नेत्र में फोड़े उठें। उच्चाभिलाषी, वृद्धावस्था में प्रभावशाली। पिछले जन्म में किसी शिशु को जला दिया था, इस कारण सन्तान कष्ट है तथा विद्या में वृद्धि नहीं है।

मेष लग्न में चन्द्रमा

चन्द्रमा प्रथम भाव में—भूमि की प्राप्ति, माता का प्यार क्रोध में बदल जाए, चेहरा गोल और सुन्दर, चिन्ता रहित, हँसमुख, भोलापन, विचारशील स्त्री सुन्दर, सुखी, सेवा करे। रोजी लगी रहे। मनोयोग, मृदु-भाषी, बुढ़ापे में धनाढ्य।

चन्द्रमा द्वितीय भाव में—लखपति योग, पिता की सम्पत्ति पर कुछ माता भी अधिकार कर ले, सुख में कमी, पिता की रकम से सवारी मिले, सवारी से मामूली ऐक्सीडेन्ट। पिता की रोजी में उन्नति, उत्तम धन प्राप्ति से बार-बार मन प्रसन्न।

चन्द्रमा तृतीय भाव में—जमीन जायदाद पर बन्धु-बान्धवों का कब्जा। बन्धु-बान्धव सुखी। माता भाइयों को अधिक चाहे। पुरुषार्थ के सुख प्राप्त हो, धार्मिक यात्राएँ अपनी सवारी से।

चन्द्रमा चतुर्थ भाव में—बचपन से सुखी, भूमि, सवारी प्राप्ति, माता की सूरत से मिले। सुन्दर, मनोबलयुक्त। विचारवान, उत्तम पद, प्रजा के वोट मिल जाएँ। पिता की रोजी में उन्नति, भाग्योदय, मन शान्त।

चन्द्रमा पंचम भाव में—माता ने उत्तम शिक्षा दी। माता का पौत्रों पर विशेष ध्यान। घर के निकट स्कूल, शिक्षा का लाभ मिले। पिता से अलग

कार्य करे। जीवन सुखी, अपनी सवारी में बैठकर पढ़ने जाए। मृदुभाषी। प्रखर बुद्धि कन्या सन्तति।

चन्द्रमा षष्ठम भाव में—मकान त्यागना पड़े, जमीन छिन जाए। अपनी सवारी से एक्सीडेन्ट, रोग तथा शत्रु बढ़े। ठंडी चीजों पर खर्च। मनोबल गिरा रहे। ननिहाल सुखी, माता को कष्ट, जिगर का रोग, पिता की रोजी घटती जाए।

चन्द्रमा सप्तम भाव में—विवाह होने पर सवारी मिले, माता तथा बहू आदत में एक-सी हों। गृहस्थी सुखी, तन, मन सुखी, अन्य स्त्रियों से प्रेम, माता बहू की तरफदारी करे, रोजी लगी रहे।

चन्द्रमा अष्टम भाव में—माता की उम्र कम, सुख में बाधा। सवारी से माता को एक्सीडेन्ट, जमीन को हानि। मनोबल में कमी, जीवन में अशान्ति। पिता की रोजी घटती जाए। जिगर के रोग से मृत्यु।

चन्द्रमा नवम भाव में—माता बड़ी भाग्यवान् व धार्मिक, अपनी सवारी से यात्राएँ, भाग्योदय, दैवबल की सहायता। कुछ भूमि स्कूल के लिए या देव मन्दिर के लिए दान कर दे। उच्च मनोबल, समुचित आदर, प्रजा के वोट मिल जाएँ।

चन्द्रमा दशम भाव में—माता-पिता के कार्य को सँभालती है, इसके कारण पिता भी सुखी हैं, माता-पिता के काम की तरफ संकेत करती है। मकान में लोहा अधिक लगे। सवारी का सुख। माता नौकरी को भी कहती है।

चन्द्रमा एकादश भाव में—बचपन में ही पिता सवारी खरीद ले। पिता की लोहे की दुकान। अन्य लोग अपने मकान गिरवी रख जाएँ। मकान जमीन की बिक्री-खरीद। ग्राहकों से बनाए रखना। माँ कहती है कि कारोबार करो। अगले जन्म में किसी सेठ के यहाँ जन्म लेगा और सुखमय जीवन पाएगा।

चन्द्रमा द्वादश भाव में—अपना मकान छोड़कर अन्य मकान, माता की उम्र कम, विमान बने। सवारी बेचनी पड़े, जमीन सम्बन्धी खर्च अधिक, लाभ कम, अशान्त। माता की मृत्यु हो और मकान बिक जाए। पिछले जन्म

में किसी की भूमि हड़प ली थी जिसके कारण अपनी जन्म भूमि छिन गई।

मेष लग्न में मंगल

मंगल प्रथम भाव में—परमवीर, साहसी, शिकारी, निशानेबाज। अपने से अधिक से भी जूझ पड़े। अवसर पर डाकुओं से मिल जाए। माता पर हाथ उठा दे। जमीन जायदाद बँटवारे में अधिक प्राप्त कर ले। स्त्री की न माने। पत्नी को दुखी रखे, क्रोधी और हठी। रूखा, अभिमानी, मंगली। विवाह से पहले ही पत्नी को धोखे से देख आए। हथियार छिपाकर रखे।

मंगल द्वितीय भाव में—पिता की जायदाद पर पूरा कब्जा। धोखे से धन प्राप्त करने वाला। गिरह कट, शिक्षा कम, उम्र बड़ी, पिता के धन से रोजगार, धन का नुकसान।

मंगल तृतीय भाव में—बन्धु-बान्धवों से झगड़ा। असीमशक्ति, गुण्डागर्दी। छोटे भाई की उम्र कम। शत्रु संहारक। परेशानियों पर विजय, भाग्यवान् परन्तु एक भाई की मृत्यु।

मंगल चतुर्थ भाव में—मंगली, माता को कष्ट, मकान गिर जाए, मामूली चोट। पत्नी से अनबन, पत्नी को कष्ट। पिता की उन्नति। उत्तम नौकरी, नौकरी में सुख, पिता की आज्ञा माने। छोटा भाई बीमार, माता का हत्यारा। हृदय रोग।

मंगल पंचम भाव में—रात-दिन विद्या पढ़े, गणित में होशियार, भूगोल में रुचि, रोजगार करे। रोजगार में कभी-कभी हानि। रोजगार बदलते रहें। मशीनरी के कार्य, पुत्र सन्तति। छोटे पुत्र की उम्र कम।

मंगल षष्ठम भाव में—शत्रुओं को धमका कर भगादे। रोग मुक्त। जीवन उलझनमय। परतन्त्र रहे। बलशाली। स्वार्थी। छिपकर काम करने वाला। एक-दो शत्रुओं को जाने से मार दे। पुलिस विशेष नुकसान न पहुँचावे। ननिहाल दुखी। बाई टाँग पर वजन गिर पड़े।

मंगल सप्तम भाव में—मंगली, पत्नी दुखी, विवाह से पहले पत्नी को देख ले, दैनिक रोजी की चिन्ता। रोजगार बदलते रहे। बाई टाँग में चोट। पत्नी पर दबाव। सांझे में नुकसान। दूसरा विवाह हो जाए।

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

मंगल अष्टम भाव में—उम्र बड़ी, वीर, दृढ़ी, स्वार्थी, कातिल। हथियार छिपाकर रखे, डाकुओं से मेल। वृद्धावस्था शीघ्र। अपने को स्वयं उलझनों में फँसाता रहे। सिर का रोगी। मंगली, विदेश में भाग्योदय तीन बार।

मंगल नवम भाव में—उत्तम भाग्य लिखाकर आया है। धार्मिक ग्रन्थों का योग कम, तीर्थों का बहिष्कार। एक भाई की हानि, बन्धु-बान्धवों से झगड़ा। मिट्टी पकड़े तो सोना हो। उच्चपद की अभिलाषा। नाम की मुहर बने।

मंगल दशम भाव में—पुलिस या फौज की नौकरी, इंजीनियर अहंकारी, क्रोधी, माता का ध्यान न रखे, पिता का आज्ञाकारी। स्वतन्त्रता से हुकूमत करे। मकान छूट जाए। सवारी सरकारी मिले, भाग्योदय में गड़बड़, धैर्यवान।

मंगल एकादश भाव में—व्यापार में कूटनीति। लाभ हर जगह चाहने वाला, उम्र भर उत्तम आमदनी। कुल पुर्जे, व्यापार में झगड़ा, विदेश में रोजगार, अगले जन्म में भी कलपुर्जे बनाने का कार्य करेगा, परन्तु क्रोधी रहेगा।

मंगल द्वादश भाव में—उम्र कम, खर्च के कारण परेशान, पत्नी दुखी, मंगली योग। पहली पत्नी कमजोर, दूसरा विवाह हो जाए, हेर-फेर वाले कार्य। नशीले पदार्थों पर खर्च। बाग कटवा दे। पिछले जन्म में अपने चाचा-ताऊ की सेवा नहीं की जिसके कारण चोट-चपेट में मृत्यु समान कष्ट उठाना पड़ रहा है। चाचा-ताऊ का धन भी हरण किया था इसलिए जन्म से ही धन का नुकसान हो रहा है। पैरों में चोट।

मेष लग्न में बुध

बुध प्रथम भाव में—वीर, पक्ष, शिल्पी। व्यवहार कुशल। चतुरता से बोलने वाला। एक भाई इसे बहुत चाहता है। उलझनमय जीवन, रोगी। हलका खुशामदी। लेखक, दर्जी, कपड़े के मिल में कार्य, शत्रु घर पर आकर हमला करे। चालाक वक्ता।

बुध द्वितीय भाव में—पिता के घर पर भाइयों का कब्जा। पिता का धन प्राप्त न हो, चोरी हो जाए। कुछ धन पर माता का कब्जा, दाहिनी आँख कमजोर।

बुध तृतीय भाव में—बन्धु-बान्धव पराक्रमी। एक भाई से वैर, पुरुषार्थी, भाग्यवान, धर्म प्रिय। जब कोई झगड़ा होता है तो बन्धु-बान्धव सब शत्रुओं को धमका देते हैं।

बुध चतुर्थ भाव में—भाई माता को अधिक चाहते हैं। माता की उम्र कम। सुख में कुछ कमी। जमीन छिन जाए, कुछ माता को मिल जाए। भाइयों का जमीन पर कब्जा।

बुध पंचम भाव में—शिक्षा में कमी। सन्तान की कमी, फिर भी शिक्षा प्राप्त कर ले। शिल्पकला में दक्ष, लेखक, सम्पादक। मशीन का कार्य। निपुण, चतुर, सोच समझकर कार्यकरने वाला, सन्तान का कद छोटा।

बुध षष्ठम भाव में—भाई शत्रु बन जाए। भाइयों की सहायता से शत्रुओं का विनाश। स्वयं पराक्रमी। ननसाल में उन्नति। भाइयों के पक्ष में खर्च अधिक। शत्रु मुकाबला न करें।

बुध सप्तम भाव में—दैनिक रोजी में असमानता। किसी शत्रु की पत्नी पर प्रभाव। भाई का पत्नी से प्रेम। पत्नी दक्ष। कमाकर खावे।

बुध अष्टम भाव में—दो भाइयों की हानि, रोग से हानि, शत्रु बिना मौत मर जाए। मामा का निधन। पिता के धन का नुकसान, चोरी हो जाए।

बुध नवम भाव में—भाग्य में बाधा, यात्रा में चोरी। भाइयों की उन्नति। भाइयों के भाग्य से पनपने वाला। वैसे भाग्यवान।

बुध दशम भाव में—बन्धु-बान्धवों को सरकारी सहायता प्राप्त, अपनी नौकरी में अड़चनें, पिता का जीवन कष्टमय, ननसाल वाले नौकरी लगावा दें, सरकारी कर्क सहायता करे, मामा सरकारी नौकरी में, पिता पर पद प्रहार करे।

बुध एकादश भाव में—एक भाई रोजगार में साझी हो जाए या दुकान हथिया ले, रोजगार में विघ्न, बदमाश डराते-धमकाते रहें। बुद्धि बल से रोजगारों में उन्नति, अगले जन्म में दर्जी के घर जन्म लेगा। परन्तु आमदनी

कम रहेगी।

बुध द्वादश भाव में—ननिहाल खर्च के कारण तंग। भाइयों का अधिक खर्च। कंजूस। बाई आँख कमजोर, रोगों पर विशेष खर्च, पिछले जन्म में शत्रुतावश किसी भाई की हत्या कर दी थी जिस के कारण बन्धु वियोग तथा शत्रु द्वारा अधिक व्यय को सहन कर रहा है।

मेष लग्न में गुरु

गुरु प्रथम भाव में—क्रोधी परन्तु सदाचारी, भाग्यशाली, जन्म से ही घर की हालत सँभलती गई। धर्म-प्रिय, न्याय-प्रिय, खर्च अधिक, पारिवारिक सुख, स्त्री सुख, दैवशक्ति की सहायता, नाम की मुहर बने।

गुरु द्वितीय भाव में—पिता की सम्पत्ति में थोड़ा भाग, दाँएँ नेत्र में चोट, दाँएँ नेत्र की दृष्टि मामूली कमजोर, धनाढ्य, उम्र बड़ी, प्रभु के दर्शन।

गुरु तृतीय भाव में—भाइयों ने भी उन्नति कर ली। एक भाई परेशान, स्वयं भाग्यवान्, यात्राओं में लाभ, यात्राएँ व्यापार सम्बन्धी, मकान की अभिलाषा।

गुरु चतुर्थ भाव में—मकान, जमीन, जायदाद, सवारी तथा पूर्ण सुख उच्च भवनों का निर्माण, धर्मशालाएँ, देवालय, कुछ जमीन बिक जाए, माता भी सुखी पर उम्र कुछ कम, राजयोग, ज्यों-ज्यों भवन बनवाएगा त्यों-त्यों फलेगा तथा सुख समृद्धि बढ़ेगी, मकान के उत्तर में आंगन की ओर धन गढ़ा है, भाग्योदय चार बार।

गुरु पंचम भाव में—विद्यावारिधि, पिछले जन्म का ऋषि। लाभ अधिक, सन्तान शिक्षित, पुत्र सन्तति, पुत्र भाग्यवान्, धर्म-प्रिय, न्याय की शिक्षा ग्रहण करे, ज्यों-ज्यों शिक्षा प्राप्त करे त्यों-त्यों भाग्य फले, ज्यों-ज्यों पुत्र उत्पन्न हो, त्यों-त्यों उन्नति हो।

गुरु षष्ठम भाव में—भाग्य में बाधा, यात्रा में चोरी, शत्रु तथा मुकद्दमों पर खर्च, रोगों पर खर्च, इधर साला बीमार हुआ उधर चाचा बीमार हुआ।

गुरु सप्तम भाव में—जब से पत्नी आई है तब से भाग्य बढ़ता गया है। पत्नी ईश्वर-भक्त, तीर्थाटन वाली, पत्नी की बात माननी पड़े।

गुरु अष्टम भाव में—भाग्य में बाधा, मृत्यु भय, विदेश में उन्नति, पिता के धन की हानि। साले को मृत्यु-तुल्य कष्ट, इधर चाचा को मृत्यु-तुल्य कष्ट।

गुरु नवम भाव में—महाभाग्यवान् योग, भाग्यशाली परिवार में जन्म, यात्राओं में भाग्योदय, धन का लाभ, जीवन सुखी, दैवी शक्ति की पूर्ण सहायता, दूसरों को भी भाग्यवान् बना दे। मिट्टी पकड़े सोना हो। चाचा-ताऊ भी भाग्यशाली, परोपकार तथा दान में खर्च, भाग्योदय तीन बार।

गुरु दशम भाव में—सरकार में उत्तम पद, मजिस्ट्रेट, बार-बार बदली, ऊँचे भवन बने, जमीन जायदाद प्राप्त, कुछ जमीन बिक जाए, मान पद प्रतिष्ठा, पिता सुखी।

गुरु एकादश भाव में—व्यापार में अनेक लाभ, जवाहरात की दुकान, प्रतिष्ठा, दिन-दूनी उन्नति, चाचा को नया व्यापार, अगले जन्म में ड्राइवर बनेगा तथा लाभ कम रहेगा।

गुरु द्वादश भाव में—अपने क्षेत्र का प्रधान, जवानी के बाद उन्नति, प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, शत्रु नुकसान न करें, सौम्य खर्च, चाचा को उन्नति, पिछले जन्म में देवताओं का अपमान किया है, जिसके कारण अब देवताओं की सहायता नहीं मिलती है। दक्षिण पूर्व में धन गढ़ा है, मिलेगा नहीं।

मेष लग्न में शुक्र

शुक्र प्रथम भाव में—पिता का धन मिले, विवाह से पहले पत्नी इसे देख ले, चित्त प्रसन्न, क्रोधी तथा हँसमुख, शान शौकत का जीवन, धनाढ्य, सुन्दरता, भोग विलास, कार्य कुशल।

शुक्र द्वितीय भाव में—पिता के धन पर कब्जा, उम्र बड़ी, पत्नी स्वस्थ सुखी, उत्तम शानदार रोजगार, चतुराई से धन कमाना। जीवन कुछ बंधनमय, धनाढ्य, बहुत ही सुन्दर, विवाह होते ही धन बढ़ गया, पत्नी धन को सँभाल कर रखे, धन प्राप्ति सात बार।

शुक्र तृतीय भाव में—पुरुषार्थी, चतुर भाई-बहनों का योग, पत्नी, देवर को बहुत चाहती है, परन्तु वैसे नहीं बनती, जीवन में शत्रुता, भाग्यवान्,

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

धार्मिक अरुचि, पत्नी धन लेकर भाई के पास झगड़े के कारण पहुँच जाए।

शुक्र चतुर्थ भाव में—माता तथा पत्नी दोनों ही सुन्दर हैं, पत्नी की सास सेवा खूब करती है, बहू से सन्तुष्ट है, ससुराल से सवारी मिले। ससुराल से भूमि मिले, सरकारी सहायता, उत्तमपद, जीवन सुखी, मकान भव्य, अमीरी के ठाट, मकान में उत्तर की तरफ धन गढ़ा है।

शुक्र पंचम भाव में—पत्नी पुत्रवती, पत्नी सन्तान को गोद में लिए बैठी रहे, पुत्र वीर और विद्वान्, उत्तम कारोबार में संलग्न, कारोबार पुत्रों के नाम पर, पत्नी अधिक शिक्षित, प्राइवेट स्कूल चलायेगा।

शुक्र षष्ठम भाव में—पत्नी को रोग धन की चिन्ता, पिता की चोरी, ननसाल धनाढ्य, पत्नी का खर्च अधिक, वीर्य दोष।

शुक्र सप्तम भाव में—अमीर घर की पत्नी प्राप्त, पत्नी बहुत सुन्दर, स्वर्ण आभूषणों से सुसज्जित, घर में शान-शौकत, ठाट-बाट, दैनिक रोजी भरपूर, बहू के आते ही अमीरी आ गई, दान दहेज खूब मिले, स्वयं सुन्दर, आकर्षक, मोहक, प्रसन्नमुख, राजयोग, पत्नी पर व्यय सार्थक है।

शुक्र अष्टम भाव में—पिता के धन की कमी, पत्नी को मृत्यु-तुल्य कष्ट, यात्रा में धन प्राप्त, पत्नी आज्ञा न माने, दैनिक रोजी में कमी, गृहस्थी में जीवन दुखी, अंडज पर प्रहार।

शुक्र नवम भाव में—पत्नी बड़ी भाग्यवान् है, तनिक बड़ी भी है, शिक्षित है, पिता की सम्पत्ति भाग्य में लिखी है, पत्नी अपने भाई का ध्यान रखती है।

शुक्र दशम भाव में—पिता का धन पिता के कब्जे में है, पत्नी सर्विस करना चाहती है, पत्नी ससुर की सेवा करती है, माँ के पास अधिक रहती है, पत्नी कहती है कि सर्विस करो, विवाह होते ही नौकरी लगी।

शुक्र एकादश भाव में—पिता के धन से रोजगार आरम्भ, कारोबार, पत्नी के नाम पर लाभप्रद, पत्नी कहती है कि कारोबार करो, उच्च अभिलाषा की पूर्ति हो, कारोबार में लड़कियाँ कार्य करें, अगले जन्म में रोजगार सुचारु रूप से चलाएगा।

शुक्र द्वादश भाव में—पिता की सम्पत्ति नष्ट, पत्नी के विषय में

अधिक, खर्च, रोगिणी, क्षेत्र का प्रधान, कारोबार में लड़कियाँ कार्य करें। वीर्य दोष, पिछले जन्म में किसी की पत्नी तथा धन का अपहरण किया है, इस कारण धन तथा पत्नी से वियोग के कारण दुखी है।

मेष लग्न में शनि

शनि प्रथम भाव में—पहले नौकरी फिर रोजगार, नौकरी रोजगार दोनों साथ-साथ ही चलें, खूब लाभ, पिता के साथ कार्य, आलसी, प्राइवेट नौकरी, सरकारी मदद, पराक्रमी, चेहरे पर तिल, इन्द्रिय पर कई तिल, पिता से न बने।

शनि द्वितीय भाव में—माता की उम्र कम, पिता ही अपना धन नष्ट कर दे, कारोबार में नुकसान, प्राइवेट नौकरी, कंधे व गुदा पर तिल।

शनि तृतीय भाव में—पराक्रमी, पिता भी दीर्घजीवी, हृष्ट-पुष्ट भाइयों के साथ कारोबार, भाई के यहाँ नौकरी, सरकारी सहायता, यात्रा में भाई-बहन का सुख, पिता अन्य भाइयों को बहुत चाहता है, धर्म-कर्म में आलस्य, दाहिनी भुजा पर तिल व जाँघ पर तिल।

शनि चतुर्थ भाव में—पिता ने मकान बनवा दिया, दुकान भी मकान में ही है, सरकारी परमिट मिल गए, सवारी चुनावों में काम आती है, कारोबार घर पर ही है, लाभ उत्तम है, माता-पिता की खूब घुटती है, सीने पर तिल, कमर पर तिल।

शनि पंचम भाव में—अंग्रेजी कमजोर, शिक्षा में कमी, कन्या सन्तति, रोजगार में हानि, दुकान में मामूली आग लग जाए, अध्यापक नाराज रहे, सन्तति आलसी परन्तु ऊँचे कारोबार वाली, सन्तान को नौकरी भी मिल जाए, पिता कहता है कि खूब पढ़ो। नाभि के आसपास तिल।

शनि षष्ठम भाव में—न कारोबार, न नौकरी। न शत्रु, न रोग, कारोबार कलह के कारण बिगड़ जाए, अफसर शत्रु बन जाए और नौकरी छूट जाए, श्री हनुमान जी की सेवा से लाभ। ऊँची अभिलाषाएँ रहें। दाहिने पैर पर तिल।

शनि सप्तम भाव में—उच्चकोटि का रोजगार देखकर विवाह हुआ।

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

पत्नी की सर्विस में उच्चपद, ससुराल अमीर, पिता की समधी से मेल मुलाकात, लेन-देन, राजयोग, इन्द्रिय पर अनेक तिल, पिता अपनी कुछ कमाई पुत्रवधू को भी देता है।

शनि अष्टम भाव में—कारोबार बिगड़ जाए, नौकरी छूट जाए, अफसर इन्चार्ज, रुग्ण, विदेश में कारोबार या नौकरी लगे, विदेश से लौटकर न आवे। पिता दुखी, उम्र बड़ी। बाएँ पैर पर तिल।

शनि नवम भाव में—सर्विस तथा रोजगार दोनों भाग्य में लिखे हैं, दैवी शक्ति की सहायता, पिता भी भाग्यवान, अमीर घर, पराक्रमी, सरकार से लाभ। नौकरी में बार-बार तरक्की। बाएँ पेट पर तिल।

शनि दशम भाव में—बसें व जहाज में सर्विस, बसें व जहाज अपने भी चलें। नौकर-चाकर कार्य करें। स्वयं हट्टा-कट्टा, आलसी, भाग्यवान, अमीर, दरबार में कुर्सी, अफसर इन्चार्ज, हथियार रहें। हथियार नौकरों पर लदे रहें, स्वयं परमिट देने वाला या दिलवाने वाला, खर्च कम आमदनी अधिक, हृदय पर तिल।

शनि एकादश भाव में—लोहे का ऊँचा कारोबार, नौकर-चाकर रहें, सरकारी अफसर मिलकर चलें, मिट्टी पकड़े तो सोना हो, हर कार्य में लाभ। हर कार्य में पिता का साथ, पिता सुखी। स्वास्थ्य कमजोर, उम्र कम, अगले जन्म में खजांची या अफसर बनेगा तथा सुख भोगेगा, बाईं भुजा पर तिल।

शनि द्वादश भाव में—न नौकरी लिखी, न रोजगार लिखा, पिता शीघ्र चल बसा। खर्च के मारे परेशान, रोग और शत्रु हमला न करें, पिता की सम्पत्ति नष्ट, बाहरी स्थान के सम्पर्क से कारोबार लाभ, शनि का दान उपयोगी, पिछले जन्म में किसी की नौकरी तथा रोजगारों में लात मारी है इस कारण स्वयं नौकरी तथा रोजगार के लिए परेशान रहता है, सरकार भी साथ नहीं देती, न धन ठहरता है। बाएँ कंधे व आँख पर तिल।

मेष लग्न में राहु

राहु प्रथम भाव में—सिर के अवयवों में कमी, चिन्ता, भारी क्रोध के

कारण नुकसान। भाइयों से झगड़ा, सिर पर आघात, पराक्रमी, उन्नति के पथ पर अग्रसर। अनाधिकार प्रयत्न, डाकुओं का साथी।

राहु द्वितीय भाव में—पिता की सम्पत्ति का सत्यानाश। कर्ज, अनाधिकार प्रयत्न। जेब कट, भाइयों को पिता की शेष सम्पत्ति मिले, अशान्ति। संकटों का सामना। चिन्तायुक्त।

राहु तृतीय भाव में—भारी पुरुषार्थ। गुप्त युक्तियों से कार्य, कठिन कार्यों को पूरा करे, दूसरों को दबाव में रखे, प्रभावशाली, अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए कभी न चूकने वाला, साहसी, हथियार साथ रखे, भाग्योदय चार बार।

राहु चतुर्थ भाव में—माता की उम्र कम, सुख की कमी, सवारी चोरी चली जाए, मकान छिन जाए, यदि चन्द्रमा कृष्णपक्ष का हो तो जमीन जायदाद से दूसरों को चमत्कृत कर देने वाला, भाई माता के खिलाफ।

राहु पंचम भाव में—शिक्षा में कमी, बुद्धि में कमी, एक पुत्र मूर्ख, सन्तान से सुख न मिले। हकला। अपने विचार उत्तमता से प्रकट न कर सके।

राहु षष्ठम भाव में—पराक्रमी, विजयी, शत्रु संहारक, निरोगी, चतुर, कूटनीति से कार्य। सावधान। नई-नई युक्तियाँ सोचने वाला ननसाल में दिक्कतें, मामा दुखी।

राहु सप्तम भाव में—विवाह देर में हो, पत्नी से न बने, कुछ अलग-अलग रहें। पत्नी को मारे। रोजगार में परेशानियाँ, रोजी में कमी, अनाधिकार लाभ उठाने वाला, चालाक।

राहु अष्टम भाव में—सर्प व सीढ़ी का भय, बन्धु-बान्धव दुखी, उम्र कम, पेट के निचले भाग में रोग, सन्तान को कष्ट।

राहु नवम भाव में—भाग्य में बाधा, धन का नुकसान, यात्रा में नुकसान अपने धर्म में विश्वास न रखे, ईश्वर की सहायता में कमी, अपयशी, शत्रु डगमगा जाए।

राहु दशम भाव में—पिता दुखी, स्त्री दुखी, माता दुखी, सर्विस में परिश्रम करना पड़े। पेचीदा तरकीबों से सुख पावे। नाव में डूबना।

राहु एकादश भाव में—लोहे के निर्माण से लाभ ही लाभ, कभी-

कभी नुकसान, एक भाई से सांझा, गुप्त युक्तियों से कार्य-कुशल, व्यवहार में रूखा परन्तु चतुर, सब संकटों को पार करने वाला, अगले जन्म में कोयले का कार्य करेगा तथा जीवन में सुख पाएगा।

राहु द्वादश भाव में—एक भ्राता की हानि, भाग्य में हानि खर्च बहुत, हताश न होने वाला, यात्रा में नुकसान, प्रधान का अनुगामी, पिछले जन्म में वकील तथा अपराधियों की तरफदारी करता था, इसलिए इस जन्म में मुकद्दमों में विशेष खर्च हो रहा है, धन की कमी।

मेष लग्न में केतु

केतु प्रथम भाव में—दब कर न रहे। क्रोधी, पराक्रमी, कृश देह दूसरों को उत्थान देने में सहायक, हृदय मजबूत, पहले हमला करे, भाग्यवान।

केतु द्वितीय भाव में—धन की कमी, धैर्य से कार्य, धन के पक्ष में घोर संकट, धन का बटवारा किसी शक्ति के साधन से सन्तोष, भाग्य वाले कार्यों में धोखा।

केतु तृतीय भाव में—भाई-बहन भाग्यवान, भाइयों से क्लेश, पुरुषार्थ में कमजोरी. गुप्त शक्ति से कार्य करने वाला, अनुचित रीति से बहादुरी का परिचय देने वाला, भीषण प्रहार सहने वाला, धैर्य को त्यागने वाला।

केतु चतुर्थ भाव में—माता भाग्यवान, उत्तम मकान, परन्तु माता की उम्र कम तथा वह मकान भी चला जाए, सुख की कमी, अशान्ति, दारुण विपत्ति का सामना, अन्त में सुख, पिता परेशान।

केतु पंचम भाव में—मूर्ख, शिक्षा कम, सन्तान विलम्ब से, बुद्धि में कमी, अन्धविश्वासी, कुछ छिपाकर रखता है। सन्तान भाग्यवान्।

केतु षष्ठम भाव में—महान् कठिनाइयों से जूझने वाला, शत्रु को परास्त करने वाला, पुरुषार्थी, मामा को कष्ट, स्वार्थसिद्धि का पूरा ध्यान।

केतु सप्तम भाव में—पत्नी से अशान्ति, रोजी में कठिनाई का सामना, पत्नी के भाग्य से रोजी मिले, साहस से उन्नति।

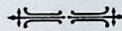
केतु अष्टम भाव में—गुदा रोग, भाग्य साथ न दे, हेकड़ी जताने वाला, धन एकत्र न कर सके।

केतु नवम भाव में—परिश्रम से भाग्यवान्, महान् झंझटों का सामना, तामसी, तमोगुणी। फिर भी भाग्यवान्।

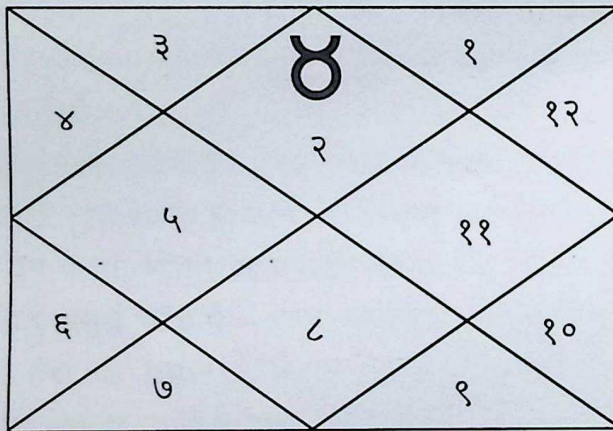
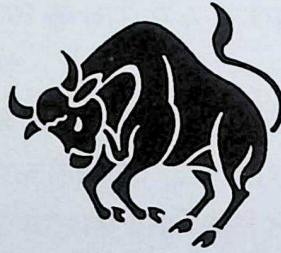
केतु दशम भाव में—भाग्यवान् योग, नौकरी में उत्तम पद, पिता को कष्ट, माता की उम्र कम, कई बार उन्नति।

केतु एकादश भाव में—ऊपरी भाग में कार्य, लाभ में कमी परन्तु वैसे लाभ अधिक, आमदनी की नई-नई योजना। अनुचित लाभ, दौलत मुफ्त मिल जाए ऐसा विचार, अगले जन्म में वैश्य के घर जन्म लेगा, परन्तु सफाई का कार्य करेगा।

केतु द्वादश भाव में—भारी खर्च, खर्च के मामलों में संकट, शत्रु और रोग दबकर रहें। भाग्य साथ न दे, आमदनी कम, पिछले जन्म में गजटेड अफसर था तथा बिना रिश्वत लिए किसी को उन्नति नहीं देता था, इस कारण अपने जीवन में उत्तम तरक्की न पा सका।



वृष लग्न



नोट : सूरत मामा पर

वृष लग्न में सूर्य का फल

सूर्य प्रथम भाव में—विशेष खर्च, सवारी खरीदने में नुकसान, सवारी बिक जाए, सुख की कमी, मकान बिक जाए, माता की कम उम्र, अन्यत्र भूमि लाभ, मामा को हानि, शत्रु तथा रोग नष्ट, अधिक खर्च। पिछले जन्म में किसी की सवारी चुरा ली थी, इस कारण अब सवारी तथा भूमि के लिए परेशान है।

सूर्य द्वितीय भाव में—माता से वैमनस्य फिर भी माता का प्यार, क्रोधी, काया दुखी, भूमि का लाभ, माता कठिनता से जमीन में नाम लिखवावे, सवारी भी मिल जाए। पत्नी रुग्ण, स्वयं बड़ा भाई है।

सूर्य तृतीय भाव में—माता का पिता के धन पर काबू है, सवारी भी माँ दिलवाएगी, आयु बढ़े, पूर्व दिशा में जमीन की खरीद।

सूर्य चतुर्थ भाव में—स्वयं बड़ा भाई है, पराक्रमी, भूमि में भाइयों का भाग, माता छोटे भाई की तरफदारी करती है, कर्म को प्रधान मानने वाला, धर्म में अरुचि, यात्रा में नुकसान।

सूर्य पंचम भाव में—माता दीर्घजीवी, सुखी, गौरवमय जीवन, अपनी सवारी व भूमि, मकान का सुख, एक मकान सरकार किराए पर ले, पिता को कष्ट, पिता से अनबन, अपने में मस्त, लक्ष्मी प्रसन्न, पिता की रोजी में उन्नति, भाग्योदय पाँच बार।

सूर्य षष्ठम भाव में—उत्तम बुद्धि, सुखी सन्तति, भूमि में सन्तान वः। नाम लिख जाए, माता लिखवा दे, शिक्षा का नौकरी में कम लाभ तथा व्यापार में अधिक लाभ, नौकरी में अफसर से न बने।

सूर्य सप्तम भाव में—भूमि का हरण, माता को कष्ट, माता शत्रु की तरफदारी करे, रोग नष्ट, शत्रु मित्र बन जाए, खर्च अधिक, जन्म भूमि से अलग रहे, सुख में कमी, मामा को कष्ट, छिपा साहसी, पिता की रोजी घटती जाए।

सूर्य अष्टम भाव में—माँ पत्नी को बहुत प्यार करती है, पत्नी गरीब घर की है, विवाह के बाद भूमि लाभ, मन में ज्वाला, अशान्ति, घर में सुख, भूमि से दैनिक रोजी, सवारी से टक्कर।

सूर्य नवम भाव में—घर की जमीन छूट जाए, विदेश में आजीविका, माता की उम्र कम, पिता के धन में कमी, दूर की यात्रा से धन अर्जित, अपनी मृत्यु के पश्चात् अमीरी छोड़ जाए।

सूर्य दशम भाव में—भाग्यवान, भूमि लाभ हो, यात्रा में लाभ हो, भाग्य साथ दे, सवारी से टक्कर, परन्तु कुछ नीरसता रहे। पुरुषार्थी, भाई-बहनों से मेल, माता मनोती माँगे।

सूर्य एकादश भाव में—माता कहती है कि नौकरी कर परन्तु नौकरी में मन नहीं लगता। पिता से अनबन, अफसर से अनबन, सवारी से पिता की टक्कर, माता-पिता में नहीं बनती।

सूर्य द्वादश भाव में—मकान-दुकान एक जगह, जमीन का क्रय-विक्रय, स्कूटर, रिक्शा आदि का काम, मकान, भूमि प्राप्ति, सुखी। माता कहती कि दुकान खोल ले, सुखी लकड़ी, मेवा, नाव, जहाज के कार्य, शिक्षा उत्तम, बुद्धि प्रखर, वाणी का प्रभाव, माता भी दुकान की देखभाल करे, अगले जन्म में क्षत्रिय के घर जन्म लेगा तथा जल सेना में नौकरी करेगा।

वृष लग्न में चन्द्रमा

चन्द्रमा प्रथम भाव में—पुरुषार्थ की कमी, बन्धु वियोग, भाई अधिक खर्च करे, शत्रु बड़े, मन उदास, निराश, मनोयोगी, दूरदर्शी, बाहर अन्य स्थानों से लाभ। बाएँ नेत्र की दृष्टि उत्तम, महत्वाकांक्षी, पिछले जन्म में किसी की भुजाओं में चोट मारी थी इस कारण अब इसकी बाहु कमजोर है।

चन्द्रमा द्वितीय भाव में—सुन्दर, पुरुषार्थी, भाई-बहन सबकी सूरत एक सी, सब मिलकर रहें। स्त्री सुख, विचारशील, शिक्षित, सन्तति भाग्यवान्, प्रसन्न, दूरदर्शी, उच्च मनोबल, जल सम्बन्धी यात्राएँ, रोजी लगी रहे। कवि, गायक, वैद्य, सुरीला कंठ, प्रभावशाली, शरीर में स्त्रीशक्ति का वास, भाग्योदय दो बार।

चन्द्रमा तृतीय भाव में—पिता की सम्पत्ति पर भाइयों का कब्जा, बन्धु-बान्धव पुरुषार्थी, धनाढ्य, पिता की सम्पत्ति से कुछ प्राप्त हो, मनोबल तथा पुरुषार्थ कम, परिश्रमी, स्वयं चाहे कि छोटे भाई को अधिक हक प्राप्त हो।

चन्द्रमा चतुर्थ भाव में—प्रभावशाली, पुरुषार्थी, परिश्रमी, भाई-बहन सब सुन्दर, अपनी सूरत भिन्न, बन्धु-बान्धव प्रसिद्ध, भाग्यवान्, उत्साही।

चन्द्रमा पंचम भाव में—भाई मकान तथा जमीन के हकदार हो जाएँ, मकान-भूमि, सवारी का सुख, सुखी जीवन, अन्य भाई माँ को बहुत चाहते हैं। भाई कहते हैं कि मकान बनाओ, सवारी खरीदो, पिता सुखी पर

नीरसता, भाई जमीन खरीद लें।

चन्द्रमा षष्ठम भाव में—भाई सन्तान को बहुत प्यार करते हैं, इसके बच्चों को पढ़ाते हैं, विद्या कम पर वजीफा, सन्तान सुन्दर, मृदुभाषी, हाजिर जवाब, जल, चाँदी सम्बन्धी कार्य, हीरे-मोती की खरीद बिक्री।

चन्द्रमा सप्तम भाव में—भाई को चोट, भाई परतन्त्र, ननसाल सुखी, एक भाई का मामा पालन करे। खर्च अधिक, रोगी तथा शत्रुता।

चन्द्रमा अष्टम भाव में—भाई पत्नी को प्यार में रखे। पत्नी से अनबन, स्वयं सुंदर, मनोबल में कमी, रोजी में उलट फेर।

चन्द्रमा नवम भाव में—पुरुषार्थ में कमजोरी, एक भाई की मृत्यु, एक भाई विदेश चला जाए, जल यात्रा, विदेश जाने की लालसा में नौकरी छोड़े।

चन्द्रमा दशम भाव में—भाग्यवान, बहन अधिक, मनोयोगी, पुरुषार्थी धार्मिक यात्राएँ दैवशक्ति की सहायता, धनवान।

चन्द्रमा एकादश भाव में—भाई नौकरी पर लग जाए, राज में तरक्की, प्रतिष्ठामय। बाहुबल से उन्नति, सुन्दर रहन-सहन, मकान, सवारी का सुख, माता की सेवा।

चन्द्रमा द्वादश भाव में—भाइयों का व्यापार में सांझा, चतुर, पुरुषार्थी, शिक्षित, मनोबली, भाई कहता है कि दुकान में बैठ, सदा लाभ, कन्या सन्तति, अगले जन्म में ब्राह्मण के घर जन्म लेगा तथा किसी नदी किनारे भाइयों सहित रहेगा।

वृष लग्न में मंगल

मंगल प्रथम भाव में—क्रोधी, हथियार वाला, चोर-डाकुओं से मेल, जेल, पैतृक सम्पत्ति का हास, पत्नी पर खर्च, पत्नी से न बने, मंगली, परिश्रमी, पुलिस नुकसान करे, पिछले जन्म में अपनी पत्नी को बहुत तंग करता था इस कारण अब पत्नी तंग करती है।

मंगल द्वितीय भाव में—पत्नी ने विवाह से पहले इसे देख लिया। क्रोधी, देह कृश, माता को चोट, पत्नी से प्रेम, मंगली, सवारी को तोड़ कर

बेचने वाला, बाग कटवा दे, मकान की असुविधा, अशान्त, दौड़-धूप वाला, ऐक्सीडेन्ट।

मंगल तृतीय भाव में—धन की हानि, पत्नी भी धन की हानि करे, पत्नी के पिता ने धन लेकर विवाह किया, छोटा पुत्र कृश, विद्या में कमी, आठवें स्थान में शुक्र हो तो ऐक्सीडेन्ट, पिता की सम्पत्ति झगड़ों में नष्ट।

मंगल चतुर्थ भाव में—पत्नी देवर को घुड़क देती है, देवर दूर-दूर रहता है, बन्धु-वियोग, भाग्यवान्, यात्रा में लाभ, शत्रु-मर्दन। पराक्रमी, प्रयत्नशील।

मंगल पंचम भाव में—मकान-दुकान सवारी आदि सब फूँक दी, माता को कष्ट, मामूली नौकरी, मंगल, पत्नी सास को मारे, पत्नी ने मकान बिकवाया, रोजी में कठिनाई, विवाह से पहले पत्नी दूर से मकान को देख गई थी। राज में सम्मान। जन्म स्थान त्यागकर अन्यत्र रहे।

मंगल षष्ठम भाव में—अधिक न पढ़ सका। सन्तान हानि, सन्तान के विचार न मिलें, छोटे पुत्र को कष्ट, तीन गर्भ गिर जाएँ। वाक् चतुर, खर्च अधिक।

मंगल सप्तम भाव में—मुकदमों में खर्च, लड़ाई-झगड़ों में विजय, झगड़ों में स्वयं को चोट लग जाए, दाएँ पैर में चोट, मामा को चोट, पत्नी शत्रुओं से घिर जाए, वस्ति का ऑपरेशन।

मंगल अष्टम भाव में—मंगली, पत्नी क्रोधी, हठी, पति-पत्नी झगड़ें, पत्नी का पलड़ा भारी, पत्नी झगड़े में आगे, स्वयं को चोट, मार-पीट, रोजी हर सूरत बनी रहे। पत्नी की कृपा से भाग्योदय, तीन बार हथियार वाले विभाग में नौकरी।

मंगल नवम भाव में—पत्नी को कष्ट परन्तु बच जाए। पत्नी घर से दूर रहने को बाध्य करे, ससुराल की दशा कमजोर, फिजूल खर्च कम, नाभि के नीचे ऑपरेशन, न्यून आयु, पिता का धन बर्बाद, मंगली, जंघा में चोट।

मंगल दशम भाव में—पत्नी भाग्यशालिनी, पत्नी के आते ही भाग्य खुल गया कुछ बातों में बाधा, यात्रा में खर्च तथा नुकसान, भाइयों से लापरवाह, पुरुषार्थ में कमजोरी, दैवशक्ति की प्रबल सहायता, दुर्गाजी की

सिद्धि। एक अदृश्य शक्ति नुकसान करने के लिए ही खड़ी रहे।

मंगल एकादश भाव में—मामूली नौकरी, पत्नी को भी नौकरी मिल सकती है। नौकरी छूट जाए, विशेष खर्च, पत्नी श्वसुर की मामूली सेवा करे, सास की आज्ञा माने। परिश्रमी, पुलिस में नौकरी।

मंगल द्वादश भाव में—पत्नी कहती है कि व्यापार करो और सुख भोगो, व्यापार कहता है धन उधार लेकर लगा दो, उत्तम लाभ, पत्नी के नाम पर कार्य, सन्तान और पत्नी को कुछ न समझे, पत्नी बड़े बेटे की तरफदारी करे, फौज या पुलिस के ठेके, अगले जन्म में शिकारी बनेगा तथा मछलियों का व्यापार करेगा।

वृष लग्न में बुध

बुध प्रथम भाव में—पिता की सम्पत्ति नष्ट, सन्तान खर्चीली, सन्तान क्रोधी, झगड़ा पसन्द, एक कन्या की मृत्यु, विद्या न पढ़ सका, सिर में चोट, सन्तान को ननसाल बहुत पसन्द, विवाद को सुलझाना, कलाओं से अनभिज्ञ, पिछले जन्म में बहुत धन तथा पशुओं का अपहरण किया है, इस कारण अब धन नहीं ठहरता तथा अल्पजीवी है।

बुध द्वितीय भाव में—विद्या बुद्धि की अपार शक्ति, सन्तान का गौरव। सन्तान साथ रहे। सन्तान सेवा करे। कला-कौशल, वक्ता, वकील जैसी योग्यता का रोजी पर प्रभाव, प्रवीण, पिता का धन प्राप्त, पत्नी से न बने।

बुध तृतीय भाव में—सन्तान पैतृक सम्पत्ति पर कब्जा करके अपने अलग कार्य खोल ले। विद्या-धन संग्रह, धन कमाने दूर निकल जाए। कन्या सन्तति अधिक, ज्यों-ज्यों सन्तान उत्पन्न हो त्यों-त्यों धन की प्राप्ति।

बुध चतुर्थ भाव में—बुद्धि बल से युक्त, पुरुषार्थी, सन्तान शिक्षित, उत्साहित, भाग्यवान्, व्यापार की यात्राएँ। ईश्वरभक्त, यश प्राप्त, दृढ़ विचार, शीलवान् सन्तान, चाचा-ताऊ की मदद से भाग्यवान् बने।

बुध पंचम भाव में—सन्तान मकान पर कब्जा करके रहे, उसी मकान में पैतृक सम्पत्ति दबी है, सन्तान सुखी, स्वयं सुखी, घर ही में

कारखाना, सन्तान से बाबा बहुत प्रसन्न हैं, माता-पिता सुखी, निजी स्कूल सर्विस।

बुध षष्ठम भाव में—खूब धन लगाकर सन्तान को पढ़ाया, सन्तान इंजिनियर, अध्यापक, वक्ता, वाणी प्रवीणता, एम.ए. लेखक, प्रकाशक, स्टेनो, टाइपिस्ट सन्तान पर व्यय सार्थक है।

बुध सप्तम भाव में—सम्पत्ति चोरों ने लूट ली, कुछ जुए में गई, शिक्षा का त्याग, सन्तान शत्रुसम व्यवहार करे, सन्तान ननसाल में रहना चाहे, पढ़ाई में बहुत खर्च परन्तु बेकार।

बुध अष्टम भाव में—बुद्धि बल से रोजी, स्त्री चतुर, सन्तान माँ की गोद से न उतरे, रोजी में पुत्रों की सहायता, पत्नी को धन की उत्तम सहायता, पत्नी अपने भाइयों की सेवा करती रहे, कुछ धन ससुराल में चला जाए।

बुध नवम भाव में—सन्तान हानि, विद्या में कमी रह गई। विदेश में पढ़ने जाए। पैतृक धन बर्बाद। बुद्धिबल से अमीर।

बुध दशम भाव में—धन और विद्या भाग्य में खूब लिखे हैं, यात्रा में आलसी, व्यापारिक यात्राएँ। बुद्धिबल की विशेषता। लेखक, कला कुशल, पारखी, सन्तान भी भाग्यवान। धार्मिक, बहन-भाइयों से पृथकता।

बुध एकादश भाव में—पिता अपने धन को कब्जे में किए हैं। सन्तान बाबा से लिपटी रहती है, एक पुत्र बाबा की गद्दी सम्भालेगा, सन्तान को सर्विस मिल जाएगी, कर्मिष्ठी, भूमि लाभ, सरकारी मदद।

बुध द्वादश भाव में—रोजगार में पिता की सम्पत्ति लगी है। पुत्र कहता है कि कोई नया कार्य कीजिए, रोजगार में पुत्रों की सहायता, प्रोफेसर, अगले जन्म में मिस्त्री बनेगा तथा जलयान का निर्माण कराने में संलग्न रहेगा।

वृष लग्न में गुरु

गुरु प्रथम भाव में—क्षेत्र का प्रधान पर मृत्युभय बना रहे, व्यापार में अधिक खर्च करने पर लाभ, विदेश यात्रा में विफलता, बड़प्पन में कमी, बाएँ पैर में चोट। पिछले जन्म में सरकारी धन को लूटा है, इस कारण अब

कोई रोजगार नहीं पनप रहा है।

गुरु द्वितीय भाव में—कार्य ईमानदारी का है, पर स्वयं चतुर है इसलिए कार्य मन में नहीं लगता, कार्य बदलना चाहता है परन्तु भाग्य कार्य को नहीं बदलता, वैसे कार्य बड़प्पन का है, प्रोफेसर, मेजिस्ट्रेट, पत्नी क्रोधी पर दयालु, पुत्र कुछ-न-कुछ करता रहता है, पुत्र शिल्पी, टाइपिस्ट, स्टेनो, उम्र कम।

गुरु तृतीय भाव में—रोजगार को बनिया छीन ले, बाई टाँग में चोट, पैतृक सम्पत्ति में कुछ भाग, दुकानदारी परेशान रहकर, परेशानियों से ही लाभ उठाने वाला, वृद्धावस्था में धनाढ्य।

गुरु चतुर्थ भाव में—पाँच भाई, व्यापार कुशल, भाई भी भाग्यवान, सब भाई एकत्र कुछ कार्य करें, मान-मर्यादा, आयु उत्तम, पराक्रमी पर दयालु, गृहस्थ पर कंट्रोल, धार्मिक भावना कम, यात्राएँ, बाद में सब भाइयों को अलग-अलग कार्य करा देना, जीवन में गौरव।

गुरु पंचम भाव में—घर में ही व्यापार, धन कमाकर ऊँचा भवन बनवाया है, घर में ही मृत्यु, सुखी जीवन, माता के नाम पर व्यापार, दीर्घजीवी, उम्र बड़ी, पिता सुखी।

गुरु षष्ठम भाव में—कोई सन्तान बड़ी होकर मृत्यु को प्राप्त हो, शेष सन्तान का व्यापार पर कब्जा, परन्तु वह व्यापार भी बदल जाए, विद्वान्, अध्यापन, वकालत, कानूनी, व्यापार में उलट-फेर, बातों में अरुचि, साधारण लाभ, बड़प्पन में कमी।

गुरु सप्तम भाव में—बाई टाँग छोटी, टाँग में दोष, रोजगारों में घाटा, कई कार्य बदले जाएँ परन्तु असफलता, पिता से बिगड़ जाए, नौकरी में अरुचि, साधारण लाभ, बड़प्पन में कमी।

गुरु अष्टम भाव में—क्रोधी पत्नी ससुराल में आकर दयालु बन गई तभी से रोजगार में लाभ होने लगा। पत्नी अपने पिता का भी व्यापार में हाथ बैटाती थी। उम्र भर पत्नी को प्रसन्न रखा। चालीस वर्ष बाद विदेश जाने की इच्छा। विदेश में लाभ, दयालु और विद्वान्।

गुरु नवम भाव में—आयु भर व्यापार। व्यापार विदेश में खूब जमे,

पैतृक धन भी मिले, खर्च अधिक, जीवन में गौरव ।

गुरु दशम भाव में—सूरत मत देखो भाग्यवान् है । व्यापार में वृद्धि भाग्य में लिखाकर लाया है । भाई-बहनों को बड़ा प्रेम करता है, कभी-कभी दैव साथ नहीं भी देता । लम्बी यात्राएँ लिखी हैं, यात्राएँ व्यापार सम्बन्धी भी हैं ।

गुरु एकादश भाव में—माता सुखी, पिता को सहारा । पिता मरण पर्यन्त रोजगार में लगा रहे । दूर की नौकरी, दिल का रोग, अन्त में सुधार । विदेश की नौकरी के लिए नौकरी का त्याग किया ।

गुरु द्वादश भाव में—व्यापार कुशल, जीवन में अनेक लाभ । व्यापार सम्बन्धी विदेशी यात्राएँ । सन्तान व्यापार में साथ न दे । धनवान, मान-मर्यादा । साहूकारा, समझदार, न्यायप्रिय, विद्वान, मैजिस्ट्रेट । अगले जन्म में वैद्य बनेगा तथा इसका इलाज अन्तिम हुआ करेगा, विदेश में उन्नति दो बार ।

वृष लग्न में शुक्र

शुक्र प्रथम भाव में—सुन्दरता तथा कान्ति की कमी, वीर्य पतन । जीवन भर खर्च को न सँभाल सके, देह कृश । ननसाल गरीब, शत्रु का नुकसान । चतुरता में कमी । पिछले जन्म में माता का सारा धन हड़प गया इस कारण अब जीवन भर खर्च है तथा एक पैर अदालत में रहता है ।

शुक्र द्वितीय भाव में—बहुत सुन्दर, गोरा, हृष्ट-पुष्ट, प्रवीण, चंचल नेत्र, जिससे झगड़ा हो जाए उसी को मित्र बना ले । ठाठ से रहे, स्वच्छता, आत्माभिमान, पत्नी को प्रसन्न रखने वाला, दृढ़ संकल्प, कामातुर, जल्दबाजी, शरीर में दैवी शक्ति का वास ।

शुक्र तृतीय भाव में—पैतृक सम्पत्ति बड़े झगड़े से प्राप्त हो, अधिक प्राप्ति की बराबर चेष्टा करे । कुछ भाग से मामा भी लाभ उठा ले । धन खर्च करके शत्रुओं पर विजय, मृत्यु से लड़ता रहे । धनवान । साहूकारा ।

शुक्र चतुर्थ भाव में—परिश्रमी, पुरुषार्थी । भाई-बहन सुन्दर, उनसे प्यार, एक भाई शत्रुवत् व्यवहार करे । महान् आत्मबल । ननसाल सुखी, प्रत्येक कार्य में विजयी, भाग्यवान् ।

शुक्र पंचम भाव में—माँ से कहता है कि पहले मकान बनवाऊँगा, ननसाल से भूमि मिले। जीवन सुखी, कुछ भूमि की हानि, भवनों का स्वामी, माता ठाठ से रहे, पिता को सन्तोष।

शुक्र षष्ठम भाव में—सन्तान नीच विचार की, बुद्धिमान, बी.ए., न्यायकुशल, कानून व गणित की शिक्षा, मस्तक-रोग, शिक्षा में अड़चनें।

शुक्र सप्तम भाव में—शक्तिशाली शत्रु, पर उनसे मित्रता। निरोग काया, सुन्दर शरीर, परतन्त्र, सुखी ननसाल से सहायता, खर्च अधिक, गुप्त चतुर, विजयी।

शुक्र अष्टम भाव में—विवाह से पहले पसन्द कर लिया, पत्नी क्रोधी, पत्नी को सजाकर रखना चाहता है पर पत्नी से बिल्कुल न बने। भोग विलासी, रोजी बदलती रहे।

शुक्र नवम भाव में—मामा को कठिन रोग, ठाट-बाट तथा प्रवीणता में कमी, धन प्राप्त, व्यापार में लाभ, विदेश गमन। दाहिनी टाँग में रोग।

शुक्र दशम भाव में—६० प्रतिशत भाग्यवान, परिश्रमी, प्रवीण, धर्म में श्रद्धा कम। यात्रा कम तथा लाभ, दैवशक्ति का सहारा, शत्रु भी भाग्यवान, यशप्राप्त, जीवन सुखी, नाम की मुहर बने।

शुक्र एकादश भाव में—उच्चपदवी के विचार, राज में उन्नति, पिता प्रसन्न, पिता डाँटता रहे, शत्रुओं पर प्रभाव, सुखी जीवन, अन्त समय उन्नति, माता को स्वतन्त्रता।

शुक्र द्वादश भाव में—ऊँचे ठाट-बाट के व्यापार, बचपन से व्यापार पसन्द, शत्रु भी मित्र बनकर इसकी नौकरी कर लें, व्यापार में लड़कियाँ मुलाजिम, न्याय में चतुरता, सन्तति कन्या, बड़ी दौड़-धूप करने वाला, अगले जन्म में बड़ा सुन्दर राजकुमार बनेगा और घोड़े की सवारी में निपुण होगा तथा ठाठ बाट से जीवन बिताएगा, भाग्योदय बारह बार।

वृष लगन में शनि

शनि प्रथम भाव में—पिता कृशगात, खर्च अधिक, भाग्य साथ नहीं देगा, अधिक परिश्रम करने पर भी फल प्राप्त में देर लगेगी तथा फल कुछ

कम मिलेगा। लघु कर्म, नौकरी छूट जाएगी, धन का नुकसान, शत्रुओं पर विजय, रोगों से मुक्त, शराबी अफीमची, क्षेत्र में प्रधान, चिन्तित, पिछले जन्म में ईश्वर की आराधना नहीं की इस कारण भाग्य साथ नहीं देता, बाईं आँख तथा कन्धे पर तिल।

शनि द्वितीय भाव में—तमोगुणी, आलसी, भाग्यवान्, अधिक यात्राएँ। दैवशक्ति प्रधान, तमोगुण, देवता प्रसन्न, सर्विस स्थायी, सर्विस में कई बार उन्नति, पिता कहता है पहलवानी करो, पत्नी क्रोधी, राज्य से लाभ, नाम की मुहर बने, चेहरे पर तिल।

शनि तृतीय भाव में—अलमारी की चाबियाँ पिता के पास हैं। पिता का धन पूरा लिखा है, रिश्वत देकर नौकरी लिखी है, माता को कष्ट, उग्र कम, मकान त्यागना पड़े, भाग्यवान्, धनवान्, दूर की यात्राओं में भाग्योदय, दाएँ कान, आँख व कंधे पर तिल, इष्टदेव के दर्शन।

शनि चतुर्थ भाव में—पराक्रमी, पराक्रम से उन्नति, बहन-भाई सब भाग्यवान्, पिता अन्य सन्तान को अधिक चाहे। पूर्ण भाग्यवान्, दैव-शक्ति की सहायता। भाइयों को भी नौकरी मिल गई। चिन्तित, दाहिनी भुजा पर तिल।

शनि पंचम भाव में—पिता कहता है कि जमीन मत खरीदो, सर्विस, अफसर नाराज तथा बीमार, शत्रुओं पर प्रभाव, देह कृश, भाग्य की आशा कम, परिश्रम का फल मिले, माता रुग्ण, पेट पर जिगर की तरफ तिल।

शनि षष्ठम भाव में—कन्या सन्नति, सन्तान भाग्यवान्, सन्तान को सर्विस मिल जाए, अंग्रेजी भाषा का विशेषज्ञ। पत्नी दुखी, तत्त्वज्ञानी, वैद्य, व्यापार तथा सर्विस दोनों, धन की विशेष प्राप्ति। उच्चपद की लालसा, दाहिनी जाँघ पर तिल।

शनि सप्तम भाव में—पहलवान्, शत्रु संहारक, निरोग काया। भाग्य में वृद्धि, पिता की दीर्घ आयु परन्तु कुछ झंझट, खर्च मामूली, पहलवानी के कारण नौकरी में काम कम करे पर अफसर का पिटू रहे, दाहिनी टाँग पर कई तिल। मकान में उत्तर पश्चिम में धन गढ़ा है।

शनि अष्टम भाव में—पत्नी भाग्यवान् है, पिता पुत्रवधू को बहुत

चाहता है। स्वयं चिन्तित, दैनिक रोजी, उत्तम पत्नी, आलसी तथा स्थूल, माता को कष्ट। मानयुक्त, भाग्यवान् पत्नी जो भाग्यवृद्धि के स्वप्न देखती है तथा वे स्वप्न सत्य होते हैं, इन्द्रिय पर तिल।

शनि नवम भाव में—बहुत दीर्घ उम्र, नौकरी छूट जाएगी। भाग्य साथ नहीं देगा, पिता को संकट। कुछ पिता का धन मिल जाएगा। विदेश में लाभ। विद्या में कमी, धर्म बदलने में तत्पर, बाएँ पैर पर तिल।

शनि दशम भाव में—महाभाग्यशाली, राजघराने में उत्पन्न, तमोगुणी, देवता प्रसन्न, लक्ष्मी प्रसन्न, पराक्रमी राजयोग। पिता कहता है कि भजन कर, पिता भी भाग्यवान्, धनवान्, भाई-बहन का सुख, बाई जाँघ पर तिल। मकान के दक्षिण में आँगन की तरफ धन गढ़ा है, भाग्योदय दो बार।

शनि एकादश भाव में—पिता पहलवान तथा भयानक, स्थाई सर्विस। पिता अपनी पत्नी को सताता है, राज में विजय। राजयोग, पुलिस या फौज में अधिकारी। सुख में कमी, पत्नी से मनमुटाव, हृदय पर तिल।

शनि द्वादश भाव में—पिता कहता है कि नौकरी कर, कर्मशील तथा भाग्यवान्, दैव की असीम सहायता, अंग्रेजी में चतुर, सन्तान आलसी तथा वाक्चतुर, परिश्रमी, कृश, अगले जन्म में भी पहलवान बनेगा तथा चोरों की वस्तुएँ प्राप्त करेगा। बाई भुजा पर तिल, मुफ्त की सी आमदनी।

वृष लग्न में राहु

राहु प्रथम भाव में—पिता का धन नष्ट, जीवन भर भारी खर्च, गुप्त रीति से खर्च पर काबू पावे। शत्रु, रोग, मुकदमों पर खर्च, पिछले जन्म में अपने कुटुम्ब का धन खो बैठा है इसलिए अब धन तथा सन्तान का कष्ट सहन कर रहा है।

राहु द्वितीय भाव में—देह में कमी, चिन्ता, शिर रोग, चतुराइयों से अर्थ सिद्धि करे। महान् कठिनाइयाँ, साहसी, सज्जनता दिखाकर ठगने वाला।

राहु तृतीय भाव में—बड़े परिश्रम प्रपंच तथा युक्तियों से धन प्राप्त करता है। धन के मामले में गहरी मुसीबत। धन प्राप्ति के लिए बन्धनकारक कर्म।

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

राहु चतुर्थ भाव में—बड़ा परिश्रमी तथा पुरुषार्थी, बहन-भाई पर कष्ट तथा वियोग। कष्ट साध्य कर्म करे, स्वार्थ सिद्धि के लिए कार्यबद्ध। राजयोग।

राहु पंचम भाव में—माता की उम्र कम। सुख में कमी, मकान भूमि की हानि, सवारी भी बिक जाए। जन्म स्थान से दूर। जीवन में बड़े-बड़े दुख। दुख सहकर सुख प्राप्ति की नींव जमाने वाला। अशान्त।

राहु षष्ठम भाव में—सन्तान में हानि, मूर्ख, शिक्षा में कमी, हकला, गुप्त चतुर। परीक्षाओं में ले-देकर पास हो फिर भी डिग्री परन्तु बड़ी कठिनाई से।

राहु सप्तम भाव में—शत्रुओं पर प्रभाव, रोगों पर विजय। धन नष्ट। संकटों से साथ न छोड़े। पेचीदा व गुप्त तरकीबों से काम निकालने वाला। प्रभावशाली, दयारहित। सावधान, बुद्धि तीव्र। ननसाल में हानि।

राहु अष्टम भाव में—विवाह देर में। इन्द्रिय में सुस्ती, स्त्री कष्ट। ससुराल से हानि, दैनिक रोजी में कष्ट। गृहस्थ में बहुत परेशानियाँ, कटु स्त्रियों से काम निकालने वाला। भोग की इच्छा।

राहु नवम भाव में—आयु में मृत्युतुल्य संकट। उदर विकार अशान्ति, चिन्ता। जीवन को समाप्त कर देने की सोचना।

राहु दशम भाव में—उन्नति के लिए परेशान। धर्म में कमी, पिता की सम्पत्ति मिले। यश में कमी। धर्म-अधर्म की परवाह न करके उन्नति पाने वाला।

राहु एकादश भाव में—राजसमाज में गहरी युक्तियाँ। नौकरी में ट्रांसफर। पिता से असन्तोष। घबराहट। अशान्ति, चिन्ता, अन्त में उन्नति पर काबू।

राहु द्वादश भाव में—लाभ में बड़ी सफलता। तमाम कुयोग नष्ट हो जाएँ। धन इतना कि सँभाला न जाए। अनाधिकार लाभ, स्वार्थी, परिश्रमी। चिन्तित, अगले जन्म में किसी क्षत्रिय के छोटे-घराने में जन्म लेगा तथा युद्ध-प्रेमी बनेगा।

वृष लग्न में केतु

केतु प्रथम भाव में—खर्च के सम्बन्ध में बड़े-बड़े भीषण संकट, अन्य स्थानों में क्लेश, बाहरी सम्बन्ध में गुप्त योजनाएँ। हठधर्मी, साहसी। पिछले जन्म में चोर था, जिनकी चोरी की थी वे सन्तान हैं तथा मित्र हैं, वे ही धन क्षय करवा रहे हैं।

केतु द्वितीय भाव में—मस्तक में कमी, अशान्ति, पुरुषार्थी, अन्ध विश्वासी। स्वार्थसिद्धि में बहादुर। वृद्धावस्था में सँभल जाना।

केतु तृतीय भाव में—धन में व्यापार हानि। धन का बँटवारा, धन की कमी। अशान्त तथा वेदना सहने वाला, अनुचित कर्म। धन के विषय में आघात।

केतु चतुर्थ भाव में—पुरुषार्थी से उन्नति के लिए दौड़-धूप। बहन-भाइयों से सम्बन्ध विच्छेद। संधातिक प्रहारों पर भी साहस न छोड़ना, अन्त में उत्तरोत्तर वृद्धि, सफलता, परिश्रमी। धनवान, राजयोग।

केतु पंचम भाव में—माता को आय कम। जन्म भूमि से वियोग। जायदाद में कमी, क्लेश। सुख की कमी, सवारी के नीचे दब जाए, अन्त में सुख।

केतु षष्ठम भाव में—मूर्ख सन्तान वह भी विलम्ब से। शिक्षा की कमी, बातचीत में कमजोरी। सन्तान में मूर्खता। गुप्त विवेकी, सत्य-असत्य की परवाह न करते हुए दृढ़ संकल्प।

केतु सप्तम भाव में—शत्रु से बहादुरी, विपक्षियों पर प्रभाव। रोगों तथा दुःखों की परवाह न करे। ननसाल दुखी। साहस तथा युक्तियों से महान् कार्य पूर्ण करना, स्वार्थसिद्धि में दृढ़ता। असन्तोष, अपने मार्ग को साफ करने के लिए अन्धाधुन्ध शक्ति का प्रयोग।

केतु अष्टम भाव में—पत्नी देह से दुखी। दैनिक व्यवस्था में संकट। इन्द्रिय में रोग। आन्तरिक धैर्य। रोजगारों में भीषण आघात फिर भी उन्नति से धन प्राप्ति। धन का पत्नी विषय के में अपव्यय।

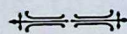
केतु नवम भाव में—आयु की वृद्धि, धन लाभ। दूर की यात्राओं से अधिक लाभ। दिनचर्या में मस्ती का आनन्द। आडम्बरयुक्त। गहरी चिन्ताएँ।

जीवन में कुछ कमी। अन्दरूनी मजबूत। गुदा रोग।

केतु दशम भाव में—प्राकृतिक परेशानियाँ, भाग्योदय में रुकावटें। धर्म में हानि, सुयश में कमी, ईश्वर में अविश्वास। किसी सिद्धि के लिए हठधर्मी, असन्तोषी। घोर परिश्रम। अन्त में उत्तम भाग्य।

केतु एकादश भाव में—उन्नति के लिए महान् परिश्रम, महत्त्वाकांक्षी। पिता दुखी, उम्र कम। नौकरी में उत्थान-पतन। गुप्त शक्ति तथा धैर्य से कार्य करने वाला। मान प्रतिष्ठा के मामले में घोर संकट, हठधर्मी। अन्त में उन्नति।

केतु द्वादश भाव में—महत्त्वाकांक्षाएँ पूर्ण होंगी। अतीव धन प्राप्त। महान् परिश्रमी, बड़प्पन। अनुचित युक्तियाँ, लेन-देन, स्वार्थी। मुफ्त का सा लाभ प्राप्त, अधिक नफा खाने वाला। सुन्दर वस्तुओं की कमी। श्रेष्ठ कारोबार। अगले जन्म में ब्राह्मण के छोटे कुल में जन्म लेगा फिर भी मकान पर झंडा लगा रहेगा।



मिश्रुन लग्न



४	II	२
५	३	१
६	१२	११
७	८	१०

नोट : सूरत माता जैसी, पिता व निज पत्नी के विचार एक।

मिथुन लग्न में सूर्य का फल

सूर्य प्रथम भाव में—व्यापार में भारी पुरुषार्थी। भाग्योदय जन्म से ही, व्यापार में उन्नति, साहसी, विद्या में पहले प्रवीण फिर कमजोर, सन्तान में कमी, परिश्रम की सफलता, महान् लाभ, तेजस्वी, सरकार से सहायता, भावों के उलट-फेर को तुरन्त परिचान ले, एक भाई को व्यापार का सहारा दे, अगले जन्म में श्रेष्ठ क्षत्रिय कुल में जन्म लेकर प्रधान सेनापति बनेगा।

सूर्य द्वितीय भाव में—भाइयों का बेहद नुकसान, पुरुषार्थ में कमी, तेजहीन, सरकार से बन्धन, शत्रुओं पर प्रभाव। रोगों की परवाह न करने वाला, बाँया नेत्र कमजोर, पिछले जन्म में किसी का नेत्र फोड़ दिया था, इस कारण नेत्र कष्ट तथा बन्धु वियोग उठा रहा है।

सूर्य तृतीय भाव में—भाई बहुत प्यार करते हैं। अक्सर बड़ा भाई, पुरुषार्थी, बलवान तेजस्वी। परिश्रम से तरक्की, पत्नी धार्मिक, एक भाई इसके साथ रहता है।

सूर्य चतुर्थ भाव में—पिता की सम्पत्ति पर भाइयों पर कब्जा, धनवान। भाइयों से विलग। कुटुम्ब में प्रभावशाली। दूर की यात्राओं में न पड़ने वाला। नेत्र प्रभाव शाली।

सूर्य पंचम भाव में—बड़ा भाई बड़ा पराक्रमी, पहलवान, तेजस्वी, धर्म में रुचि, भगवान् का भक्त, भाई-बहनों का गौरव, कठिन-से-कठिन कार्यों को उत्साह से करने वाला। यशस्वी।

सूर्य षष्ठम भाव में—भाइयों का मकान पर कब्जा, कारीगरी वाले भवन बनवाने वाला, सरकारी ठेकेदार, सुखी, माता प्रभावशाली, पिता की मान-मर्यादा बड़े। साहसी, सर्विस के योग।

सूर्य सप्तम भाव में—मलेच्छ विद्या, विद्या में कमी, बड़े पुत्र की उम्र कम। अशान्ति, बुद्धि में थकान, व्यापार पर दृष्टि, भाई नीच वृत्ति के, बुद्धि में क्रोध।

सूर्य अष्टम भाव में—भाई-बहन को गर्मी का रोग, शत्रु पर विजयी, निरोग काया, सरकारी फिजूल खर्च, पुरुषार्थी, कुश्ती में जीतने वाला, भाई शत्रु हो जाए। ननसाल प्रभावशाली। दुःखों को न समझने वाला, परतन्त्र।

सूर्य नवम भाव में—पत्नी मान-मर्यादा वाली, प्रभु-भक्त, सबसे छोटा भाई, अपनी भाभी के साथ ही रहे। मस्तक में गर्मी, दैनिक रोजगार उत्तम, पत्नी न्याय प्रिय, इन्द्रिय भोगादिक की महान् शक्ति, गृहस्थ के कार्य बाहुबल से पूर्ण करना।

सूर्य दशम भाव में—एक भाई का निधन। भाई दूर जाने से कतराए। पैतृक सम्पत्ति में भाग। पुरुषार्थ की कमजोरी।

सूर्य एकादश भाव में—भाई आलसी। पुरुषार्थ से भाग्य चमके। पराक्रमी। भाई भाग्य को न माने। सज्जन। क्रूर देवता देर में सहायता करें।

सूर्य द्वादश भाव में—एक भाई ऊँची कुर्सी पर। उत्तम तरक्की, योग्यता तथा पुरुषार्थ बल। अच्छी सर्विस। मैजिस्ट्रेट। भूमिपति। सुखी। नौकर चाकर लगे रहें। बड़े-बड़े कार्य करने वाला। ऊँची मान-प्रतिष्ठा।

मिथुन लग्न में चन्द्रमा

चन्द्रमा प्रथम भाव में—पैतृक सम्पत्ति का लाभ। भारी आमदनी, शान्त मनोबल, बुद्धि में चमत्कार, ज्योतिष में रुचि, बोली में मिठास। धन प्राप्त करने के अन्य उपाय। जल सम्बन्धी कार्य। अगले जन्म में अर्क का कार्य करेगा।

चन्द्रमा द्वितीय भाव में—शुभ कर्मों में बहुत खर्च करने वाला। पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होने पर भी त्याग दे या खर्च कर दे। बाहरी सम्पर्क से मनोयोग द्वारा बहुत धन प्राप्त हो, शत्रु से नरमाई। खर्च पर रोक न लग सके। ठाटबाट में खर्च। पिछले जन्म में किसी वृद्धा का धन खा बैठा है इस कारण पैतृक सम्पत्ति का वियोग भुगत रहा है, मकान के दक्षिण पूर्व में धन गड़ा है, परन्तु मिलेगा नहीं।

चन्द्रमा तृतीय भाव में—पैतृक सम्पत्ति इसी को मिलेगी। धन द्वारा अनेक कार्य तथा अनेक लाभ। धन के बल से कमी। स्वयं सुन्दर। चतुर, मित्रभाषी। पत्नी धर्मपरायण, भाग्यशाली। मूल्यवान वस्तुएँ धारण करे, ससुराल में आदर। शान्त हृदय, कुटुम्बीजन तरफदारी करें।

चन्द्रमा चतुर्थ भाव में—अपार सम्पत्ति। कुटुम्ब की वृद्धि। दूर-दूर के स्थानों से धन का लाभ। सन्तान सुखी। अपार पैतृक सम्पत्ति। मकान में उत्तर पूर्व में धन गड़ा है।

चन्द्रमा पंचम भाव में—पैतृक सम्पत्ति भाइयों को मिले। साहसी, पुरुषार्थ से धन कमाने वाला। दो बहनें। स्वार्थ सिद्धि करने में चतुर तथा प्रभावशाली, भाग्यशाली।

चन्द्रमा षष्ठम भाव में—अपार सम्पत्ति, आभूषण तथा रत्न मकान

के उत्तरी भाग में गढ़ी हुई हैं। पैतृक सम्पत्ति से भवन निर्माण, भूमि की खरीद बिक्री, जीवन में अनेक सुख के साधन, नौकर-चाकर, सवारी, राज सम्मान।

चन्द्रमा सप्तम भाव में—पैतृक सम्पत्ति का लाभ सन्तान को मिले। विद्या प्राप्ति में खूब धन खर्च हो। दो सुन्दर कन्याएँ, अन्वेषक, चतुर। जल, शर्बत, पारा सम्बन्धी कार्य। प्रसन्नवदन। व्यापार से कतरावे।

चन्द्रमा अष्ठम भाव में—पिता के धन की चोरी। मुकदमों में धन खर्च, कुटुम्ब की हानि, रोगों में खर्च, मन खिन्न, गुप्त चालों से लाभ। खर्च ऊँचे पैमाने के।

चन्द्रमा नवम भाव में—ससुराल से अपार धन प्राप्त। उच्च मनोबल। सुन्दर शरीर। पत्नी सुशील, शान्त, धर्म परायण, कन्या सन्तति वाली, भोगादिक की महान् इच्छा। प्रसन्नचित्त। धन को पत्नी सँभालकर रखती है।

चन्द्रमा दशम भाव में—दूर की यात्राओं के विचार। पिता का धन नष्ट हो गया, जो शेष है वह मिलेगा। पैतृक सम्पत्ति ऐसी जगह गढ़ी हुई है जिसके प्राप्त होने में बहुत देर है।

चन्द्रमा एकादश भाव में—पैतृक सम्पत्ति भाग्य में लिखी है। यात्राओं में धन प्राप्त। धर्म में आलस्य। भाई भी भाग्यवान्, धनाढ्य। भाग्य में उतार चढ़ाव।

चन्द्रमा द्वादश भाव में—पैतृक सम्पत्ति का ढेर पिता के पास है, राज्य में सम्मान, सुख, सवारी, भूमि, भवन। पिता दीर्घायु। रिश्वत देकर ऊँची नौकरी और कई बार उन्नति।

मिथुन लग्न में मंगल

मंगल प्रथम भाव में—व्यापार में मामा की सहायता। गुण्डे लोग नौकर रहें। फौजी सामान का ठेका, साहसी, व्यापार कुशल। प्राइवेट नौकरी। धन का नुकसान। तीन गर्भपात। सन्तान व्यापार से दूर रहे, सन्तान पिता की आमदनी का अधिक लाभ न उठा सके। धनाढ्य। शत्रुओं पर प्रभाव। डाके का धन प्राप्त। अगले जन्म में शत्रुत्रिय होगा व पुलिस विभाग में नौकरी करेगा,

घर पर बन्दूक रहेगी।

मंगल द्वितीय भाव में—व्यापार में तीन बार भारी नुकसान। खर्च बहुत, लाभ दिखलाई न दे। मामा रोगी, पत्नी दुखी, मंगली, बहुत परिश्रम से रोजी मिले, शत्रुओं से दबकर रहे। पिछले जन्म में किसी की दुकान में चोरी की थी, इस कारण अब व्यापार के लिए सिर पकड़कर रो रहा है। मुख पर चोट।

मंगल तृतीय भाव में—मंगली, क्रोधी, रूखापन, चालाक, दुखी, कोई रोजगार पसन्द नहीं आता। कार्य भार बहुत रहता है। आयु दीर्घ, मस्तक में चोट। वाणी में दोष। मकान गिर जाए, सुख में कमी, माता दुखी। इन्द्रिय में दोष।

मंगल चतुर्थ भाव में—पिता का धन व्यापार में लगाकर नुकसान में गया। धन इकट्ठा नहीं होता, सन्तान कष्ट। दीर्घ आयु, व्यापार करने के लिए धन नहीं है। बन्धनयुक्त परिश्रम।

मंगल पंचम भाव में—महान् शक्ति, बाँधवों से वैमनस्य। भाई सब रोजगार से लग गए। पिता सुखी, हेकड़ी से काम, शत्रु मित्र बन जाए। गुण्डों से दोस्ती। धार्मिक बातों को न माने, किसी पर विश्वास न करे।

मंगल षष्ठम भाव में—माता को क्लेश, रोग। माता को रोजगार पसन्द नहीं है। शत्रु जमीन पर कब्जा करना चाहता है। मंगली। जो मकान बनवाया है, उसमें माता रहना नहीं चाहती। राज-समाज में परिश्रम से फायदा। पत्नी के धार्मिक कार्यों में रुकावट।

मंगल सप्तम भाव में—विद्या में कमी, गणित तथा बाहुबल कमजोर। गर्भ खंडित। छोटे पुत्र को मृत्यु समान कष्ट। बुद्धि में कठोरता। जो कार्य बच्चों पर थोपना चाहता है वह कार्य बच्चों को पसन्द नहीं है।

मंगल अष्टम भाव में—शत्रुओं को घूमकर पीछे से मारने वाला। दुकान में डाका परन्तु माल मिल जाए। रोजगार में मामा का सांझा, ननसाल प्रसन्न, साहसी, डाकुओं से सम्बन्ध।

मंगल नवम भाव में—मंगली, पत्नी खुश, पत्नी फुसलाने में आ जाए। रोजगार में पत्नी का दखल। रोजगार पत्नी के नाम।

मंगल दशम भाव में—दीर्घायु, किसी हथियार से चोट न लगे, धन की कमी। दूर के रोजगार में लाभ और मजबूती।

मंगल एकादश भाव में—भाग्य की शक्ति से ही लाभ तथा भाग्य की शक्ति से ही नुकसान। खर्च में अधिकता, तरक्की में रुकावट। ईश्वर पर कम विश्वास।

मंगल द्वादश भाव में—मामा ने नौकरी लगवा दी। नौकरी बदलती रहे, अफसर दयावान। अफसर से क्रोध का व्यवहार। परिश्रमी, धनाढ्य। मकान को गिरवाकर बनवाए, साइड बिजनेस करे।

मिथुन लग्न में बुध

बुध प्रथम भाव में—शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य सुख, माता का सुख, घर का मकान, भूमि। विवेकशील, यशस्वी तथा व्यापार के क्षेत्र में सफल। शान्त स्वभाव, धनवान एवं स्त्री सुख विशेष।

बुध द्वितीय भाव में—धन तथा कुटुम्ब का सुख, शारीरिक सुख में न्यूनता, माता के सुख में कमी, भूमि-सम्पत्ति तब भी प्राप्त, पुरातत्ववेत्ता, आयुर्वृद्धि।

बुध तृतीय भाव में—चित्रकार, शिल्पी, मध्यम योगी। माता बड़ा प्यार करती है, मकान इसी के नाम करना चाहती है तथा इसी के साथ रहना चाहती है। आदत और चेहरा माता से मिलता है। बड़ा प्रवीण, प्रत्येक कार्य में दक्ष, कूटनीतिज्ञ, मशीनों का प्रयोग, लेखक, छापाखाना। जीवन वैमनस्यमय, संघर्ष मय। व्यापार में बदमाश लोग नुकसान पहुँचाते हैं। भाग्यवान।

बुध चतुर्थ भाव में—पिता के धन को हड़पना चाहता है। अलमारी की चाबियाँ माता के पास भी रहती हैं तथा इसके पास भी रहती हैं। अधिक धन से जमीन की खरीद। मकान में सुखी, दुकान में परेशान, धनवान।

बुध पंचम भाव में—अपने भाई को बहुत चाहता है, और माता अपने भाई को बहुत चाहती है, मकान में भाई का भी नाम डलवाया है। माता अपने भाई से कहती है कि तुम यहीं रहा करो।

बुध षष्ठम भाव में—जमीन जायदाद का स्वामी। अनेक मकान

खरीदे, बनवावे, रहन रखे, माँ से लिपटा रहे। अपने पेट की बात माँ से कह दे, उत्तम नौकर सेवा करें। राज्य से लाभ, माता प्रवीण, कार्य-दक्ष। माता की वाणी में सरस्वती, अपनी सवारी, माता को अध्यात्म योग, रोजी न छूटे। पिता की रोजी में उन्नति। भूमि सवारी पर व्यय सार्थक है।

बुध सप्तम भाव में—पढ़ाई में ध्यान, चित्रकार, पुत्रों से लिपटा रहे। व्यापार में लूट, सन्तान-दक्ष, पुत्र सुख, भूमि पुत्र के नाम। पुत्र की भी सेवा करे।

बुध अष्टम भाव में—जीवन में वैमनस्यता, शत्रु से दबा रहे, ननसाल में जाते ही बीमार, मामा से न पटे। खाँसी-आँत, हृदय रोग। हकलापन। लेख में कमी। पुस्तकों में अरुचि। खेल-कूद में चतुर, वाणी में कठोरता। सवारी से टक्कर, गूँगा, पिता की रोजी घटती जाए।

बुध नवम भाव में—पत्नी में अधिक प्रेम, पत्नी को विवाह से पहले ही देख ले। पत्नी विद्वान्, धर्म परायण, प्रवीण, कार्यदक्ष। माता पत्नी को अधिक चाहे। पत्नी के नाम मकान-जमीन की खरीद, सांझीदार की तरफदारी करता है। रोजी में विशेष ध्यान।

बुध दशम भाव में—नदी में मगरमच्छ से सावधान। दया और आंत्ररोग से मृत्यु। नाव में बैठकर सैर करे और भयभीत रहे, पढ़ना छूट गया, आगे न पढ़ सका। पढ़ाई में कम जमाव।

बुध एकादश भाव में—परिश्रमी, बलवान और शारीरिक श्रम से आजीविका, भूमि, सम्पत्तिवान। माता का सुख, सन्तान से सुख, विद्या-बुद्धि से सफलता, वाक्पटु एवं वाणी से लाभ लेनेवाला।

बुध द्वादश भाव में—भूमि-सम्पत्ति में कमी, घर के अतिरिक्त सम्बन्धों से अधिक लाभ, खर्च अधिक, विदेशी व्यापार सम्भव, जन्मभूमि से विलग होने पर सुखी, शत्रु निर्बल, विवेक से सफलता। अपने अन्दर से चिन्तातुर होते हुए भी समाज में सम्मानित स्थिति।

मिथुन लग्न में गुरु

गुरु प्रथम भाव में—स्वाभिमानी, मनोबलयुक्त, सुखी। पिता पक्ष से

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

लाभ, राज्य लाभ एवं सम्मान। स्त्री सुख परन्तु सन्तान द्वारा कुछ चिन्ताएँ। भाग्य तथा धर्म के विषय में आंशिक सफलता।

गुरु द्वितीय भाव में—मामा से सहयोग, शत्रु पर विजय, प्रभावशाली। पिता तथा राज्य के सहयोग से सम्मान एवं सुख, व्यवसाय से अपूर्व धन लाभ, पुरातत्त्व से अरुचि, कुटुम्ब वृद्धि एवं सुखी।

गुरु तृतीय भाव में—भाई-बहनों से सहयोग, पराक्रमी, सुन्दर एवं सुशील पत्नी, सफल व्यवसायी, लाभ भरपूर लेकिन भाग्य से असन्तोष एवं धर्म पक्ष में कमी। पुरुषार्थ से ही धन लाभ।

गुरु चतुर्थ भाव में—मकान, भूमि, पैतृक सम्पत्ति, माता के सुख की प्राप्ति, आयु कम, पुरातत्त्व से हानि, मानसिक अशान्ति, पिता से सहयोग, राज्य कार्यों से सफलता, यशस्वी, विदेश से लाभ फिर भी आय से व्यय अधिक।

गुरु पंचम भाव में—विद्या एवं शैक्षणिक कार्यों से सफलता, सन्तान से चिन्तित, भाग्योन्नति में कठिनाई से सफल होने पर यथेष्ट लाभ, शरीर स्वस्थ, प्रभावशाली, दूरदर्शी, पुरुषार्थी, वाणी से काम बनानेवाला, चतुर, सफल।

गुरु षष्ठम भाव में—शत्रुओं पर विजय, स्त्री पक्ष में मतभेद से आंशिक सफलता, पिता से कुछ विरोध के बाद सहयोग, राज्य द्वारा सम्मानित पद, उन्नति के नए-नए अवसरों से पदोन्नति, व्यय अधिक, विदेशी सम्पर्क से लाभ में वृद्धि, परिवार में सहयोग, जीवन में उन्नति।

गुरु सप्तम भाव में—पढ़ना छूट गया। आगे न पढ़ सका। पढ़ाई में मन न लगना।

गुरु अष्टम भाव में—पिता पर मुकदमा, पत्नी पर मुकदमा, पिता शत्रु से फैसला कर ले। पत्नी कभी शत्रु की तरफदारी करे। मानहानि, नौकरी छूट जाए। नौकरी में परेशानी, बड़ा अफसर शत्रुता का व्यवहार करे, पद की हानि।

गुरु नवम भाव में—इसकी बहू देखने इसका पिता गया था, बहू झूट पिता को पसन्द आ गई। पिता बहू की तरफदारी करता है। पत्नी नेक और

सर्वगुण सम्पन्न, धर्म परायण। पत्नी श्वसुर की सेवा का ध्यान रखती है। पिता पत्नी तथा स्वयं सभी धर्मरत, भगवद्भक्त तथा धनाढ्य। पत्नी इन्टरव्यूह में सफल। पिता ने बहू को आगे पढ़ने के लिए कह दिया। पत्नी गम्भीर, पत्नी के पैर पुजे, पत्नी को अध्यात्म योग।

गुरु दशम भाव में—पिता तथा पत्नी की उम्र कम, पेट खराब रहे तथा आँतों के रोग (मामूली), नौकरी में उथल-पुथल। पद में कमी परन्तु नौकरी कहीं-न-कहीं लगी रहे। पत्नी धन को सँभालकर रखे।

गुरु एकादश भाव में—स्वयं भाग्यवान्, पिता भाग्यवान्, पत्नी भाग्यवान्, भ्रमण, प्रिय बन्धु-बान्धव भी भाग्यवान्, पत्नी अपने भाई को अधिक चाहती है। पत्नी पीहर जाती है तो भाई के पास रहती है। पिता कमाते भी खूब हैं तथा खर्च भी खूब करते हैं। भाग्य में धन लिखा है, विद्वान् पत्नी भी भाग्य में लिखी है।

गुरु द्वादश भाव में—पत्नी श्वसुर को देवता मानती है तथा सेवा खूब करती है। पिता विद्वान् तथा भारी सम्मान वाला। पिता पूजनीय। सरकारी उत्तम नौकरी तथा दिन-दिन तरक्की। उन्नति के योग। सुख सवारी के योग, माता सुखी, पत्नी सुखी तथा स्वस्थ पिता कुछ अपना भला अधिक चाहता है, पिता को अध्यात्म योग, अध्यापक तथा लेखक। भाग्योदय पाँच बार।

मिथुन लग्न में शुक्र

शुक्र प्रथम भाव में—रोजगार में लाभ तथा हानि बराबर, ठाटबाट की कमी। विद्या में निपुणता, परन्तु विद्या अधिक न पढ़ सका। लड़का रोजगार में नुकसान पहुँचाता है। दामाद लड़के का शत्रु है। खर्च का सारा भार इसी पर है। अगले जन्म में कबूतर की योनी प्राप्त होगी तथा मस्ती से दाना चुगेगा।

शुक्र द्वितीय भाव में—ठाठबाट, उत्तम कपड़ों में खर्च, सन्तान शान-शौकत में बड़ी खर्चीली है। पुत्र की उम्र बड़ी, पुत्र विद्यावारधि, स्वयं विद्वान्। पुत्र की पढ़ाई में विशेष खर्च, पढ़ाई विदेश में भी हो, बेटा की ताऊ से नहीं पटती। सन्तान को आध्यात्मिक शक्ति, पिछले जन्म में दानी था इस

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

कारण अब बेटा धन पाता है।

शुक्र तृतीय भाव में—बेटे सिर पर चढ़े रहते हैं, टेकनिकल कार्य में दक्ष, सुन्दर स्वच्छ। गायन में रुचि, कला प्रेमी। सन्तान सुन्दर। सिर पर तमाम खर्च, खर्च करने के लिए उत्पन्न हुआ है। सन्तान पिता की सेवक है।

शुक्र चतुर्थ भाव में—आमदनी खूब, नुकसान भी खूब। बचे धन पर सन्तान का अधिकार, स्वयं साधारण सुखी, सन्तान अधिक सुखी।

शुक्र पंचम भाव में—भाई के द्वारा धन का नुकसान हो गया, बेटा अपने चाचा को बहुत चाहता है या चाचा दबाता है। भाई-बेटा से लाभ उठाता है।

शुक्र षष्ठम भाव में—बेटा अपनी दादी को चाहता है, माता अभी तक धन निकाल-निकालकर देती रहती है। बेटे का मकान पर अधिकार, बेटे का निजी मकान भी बन जाएगा। मकान की मरम्मत बेटों ने की। बेटे को सवारी और सुख, जीवन सुखी।

शुक्र सप्तम भाव में—विद्वान, ऊँची डिग्री। इधर बेटा उत्पन्न हुआ उधर डिग्री मिली, विद्या में विशेष खर्च, विदेश की विद्या। अध्यापक, बेटों को अध्यात्म योग, सन्तान ठाठबाट तथा भोगविलास में लिप्त, ख्याति, प्रोफेसर, जादूगर, सन्तान, अनोखी सुन्दर।

शुक्र अष्टम भाव में—शत्रु तथा रोगों में खर्च। सन्तान पर मुकदमा। विद्या में कमी, ठाठबाट में कमी, वीर्य के रोग। सन्तान विद्याविहीन तथा असुन्दर। फिजूल के खर्च समाप्त।

शुक्र नवम भाव में—खर्च का भार पत्नी सँभालती है। पत्नी विदुषी तथा सुन्दर अध्यापिका। सन्तान अपनी माता से लिपटी रहती है। सन्तान अपनी माँ की कमाई से भी सहायता चाहती है।

शुक्र दशम भाव में—विद्या, योग्यता, ठाठबाट और वीर्य बल इन सब में कमी, खर्च में कमी, शरीर में बरदाश्त नहीं। विद्या के लिए बाहर जाना चाहे, बेटों की आयु कम, बेटों में विद्या तथा योग्यता की कमी।

शुक्र एकादश भाव में—विद्या तथा सन्तान भाग्य में उत्तम लिखी है, सन्तान भ्रमणप्रिय, सन्तान भाग्यवान, विद्या से जीवन यापन, ५० प्रतिशत

भाग्यवान् । भक्ति में दिखावा, राजदरबार में विलम्ब से उत्तम उन्नति ।

शुक्र द्वादश भाव में—उच्चपद, अफसर इन्चार्ज । ठाठबाट, सवारी सुख, सन्तान भी सुन्दर, उच्चपदासीन, बारह बार उन्नति, नौकरी से बारह बार इस्तीफा, राज दरबार में झंडा गड़ा रहे, अध्यात्मबोध, विद्याव्यसन प्रधान, पिता मान मर्यादावाला, जनता को सन्तुष्ट रखे, सन्तान अपने बाबा की अन्त तक सेवा करे ।

मिथुन लगन में शनि

शनि प्रथम भाव में—भूमि सम्बन्धी तोड़-फोड़ के कार्य । भाग्य में धीरे-धीरे भारी उन्नति । सन्तान हृष्ट-पुष्ट । विद्यावारिधि, अंग्रेजी प्रधान । निम्न कार्यों में लाभ, अधिकतर नौकरी । उम्र बढ़ी, जीवन में अन्त समय बाईं भुजा में चोट । अगले जन्म में भविष्यवक्ता बनेगा, जिसका प्रभाव अब भी विद्यमान है । बाईं भुजा पर तिल, चोरी छिपे हथियार बनाना ।

शनि द्वितीय भाव में—भाग्य सोया हुआ, उम्र कम है, विदेश में सुख है । शत्रु निर्बल, उन्माद तथा स्नायु रोग का खर्च करके इलाज हो जाए । बाएँ नेत्र की दृष्टि कमजोर । पिछले जन्म में धर्म के विरुद्ध था इस कारण अब भाग्य साथ नहीं देता है और धन हानि है ।

शनि तृतीय भाव में—विशेष रूप से भाग्यवान् । तामसी देवता हर समय सहायता करते हैं । मृत्यु की जानकारी पहले हो जाती है । जहाज की जल यात्रा में लाभ, भाइयों को हानि । पत्नी से विचार न मिलें, माता सुखी । खाँसी, परिश्रमी, पहलवान । तेल के कार्य में नाम की मुहर बने । चेहरे पर तिल ।

शनि चतुर्थ भाव में—धन बहुत बढ़ जाए और बहुत खर्च हो जाए । पिछले जन्म का संचित धन प्राप्त हो । जल यात्रा, भाग्य केवल धन प्राप्त करने में सहायता करे । माता की उम्र कम, पिता सुखी, पितृधन की प्राप्ति । जन्म से चार वर्ष के अन्दर कई मृत्यु हो जाएँ । दाहिने नेत्र की दृष्टि कमजोर ।

शनि पंचम भाव में—भाग्य सम्बन्धी शक्ति क्षीण । भाई भी भाग्यवान् न बना सके । दाहिनी भुजा में पीड़ा, स्वयं भाग्यवान् । देवताओं की कम

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

सहायता, परिश्रमी, पहलवान।

शनि षष्ठम भाव में—साले को भूमि प्राप्त। भाग्य में भूमि मकान लिखा है। कुछ भूमि नष्ट हो जाए। साला घर में रहे। २० प्रतिशत भाग्यवान। घर में रहने पर उन्नति, माता दुखी, कृश, बीमार।

शनि सप्तम भाव में—विद्यावारिधि। शिक्षा में शोध ग्रंथ का लेखक। तेल का भंडारी, बुद्धिमान, अपूर्व लाभ, व्यापारी, सन्तान सुखी, आलसी, स्वस्थ।

शनि अष्टम भाव में—शत्रुओं का बोलबाला, परन्तु शत्रु क्षीण रहें, बलवान। शत्रु लोग शीघ्र मरते चलें। उम्र बड़ी, भाग्यवान। ननसाल में दुख।

शनि नवम भाव में—पत्नी विदुषी और भाग्यवान। पत्नी को आयु कम। साले ने विवाह करवाया। साले भाग्यवान, साले सहायता करें।

शनि दशम भाव में—उम्र बड़ी। जल यात्रा। विदेश में अनोखा लाभ, विलम्ब से भाग्यवान् के योग। धन लाभ तथा धन बहुत खर्च।

शनि एकादश भाव में—विशेष भाग्यवान। प्रभु हर समय सहायता करें। आध्यात्मिक योग, मरघट वाले देवताओं की सिद्धि। जो चाहे सो मिले। आलसी, भ्रमण-प्रिय, साले स्वस्थ तथा भाग्यवान्, विदेश में भाग्योदय दो बार।

शनि द्वादश भाव में—पिता भाग्यवान, पिता की उम्र कम, पिता का कष्टमय जीवन परन्तु भाग्यवान्। भूमि प्राप्त, खर्च कम, नौकरी के उत्तम योग। पिता के लोहे की दुकान, माता दुखी, राज दरबार में सिद्धि। पुत्रों को नौकरी तथा उत्तम पद अवश्य मिले।

मिथुन लग्न में राहु

राहु प्रथम भाव में—कुछ अनुचित तथा गुप्त रूप से विशेष लाभ, लेन-देन में स्वार्थ सिद्धि। कभी-कभी आमदनी में असन्तोष। कुछ मुफ्त का सा लाभ। कभी-कभी व्यापार में कठिनाई। अगले जन्म में पशु पालन करेगा।

राहु द्वितीय भाव में—अधिक खर्च से परेशानी। अन्य स्थानों के सम्बन्ध से बाधाएँ। दूर की बातें सोचने वाला, अनाधिकार तथा गुप्त युक्तियों

से कार्य। पिछले जन्म में किसी स्त्री का धन ग्रहण किया था इस कारण अब खर्च से भारी परेशान है।

राहु तृतीय भाव में—लम्बी देह, शक्तिशाली। कूटनीति की अपार शक्ति। अप्राप्त कठिन वस्तुओं की खोज, वित्त से अधिक नामवर। बुद्धिबल से अन्य को छोटा समझना। सीमा से परे विचार, लम्बी-चौड़ी योजनाएँ। आध्यात्मिक शक्ति का दावा, भाग्योदय तीन बार।

राहु चतुर्थ भाव में—धन में अनेक बार हानि, बड़ी-बड़ी वेदनाएँ। कुटुम्ब में क्लेश, मनोयोग के बड़े-बड़े कष्ट। मुक्त का सा धन पाने की सूझ। धन पूर्ति के लिए अन्य की सहायता। ब्याज देने वाला, परेशान होते हुए भी अन्त में धन की शक्ति पाने वाला।

राहु पंचम भाव में—कुछ बहन भाइयों की हानि। पुरुषार्थ में कमजोरी होते हुए भी हिम्मत न हारना। पुरुषार्थ से असंभव कार्य भी कर डालना। योजनाशक्ति का अनाधिकार लाभ। स्वार्थसिद्धि पर अडिग।

राहु षष्ठम भाव में—माता के सुख में कमी। भूमि सम्बन्धी घाटा सुख साधन तथा यश का मन में दुख। सवारी से मामूली चोट। सुख सम्बन्ध में गहरा आघात। कूटनीति युक्त। अन्त में परिश्रम से तथा गुप्त तरकीबों से सुखी, भूमि की शक्ति पाने वाला।

राहु सप्तम भाव में—बेहद चतुर। बुद्धि की प्रशंसा में कमी। सन्तान कुछ मूर्ख। हेर-फेर की बातें। नशीली वस्तु का सेवन। युक्तिपूर्ण कामों से सफलता।

राहु अष्टम भाव में—शत्रु भंजन, ननसाल में हानि, निरोग, पाप दोष से न डरे। स्वार्थ सिद्धि का पूरा ध्यान। शील, सन्तोष, दया में असमर्थ। गुप्त चालों की हिम्मत से बड़े-बड़े कार्य, शूरवीर।

राहु नवम भाव में—पत्नी सम्बन्ध में अशान्ति। दैनिक रोजगार में थकान। इन्द्रिय भोगादि में कमी। गुप्त अनुचित रूप से भोगादिक की तृप्ति, लौकिक कमजोरी, कार्य में आलस्य।

राहु दशम भाव में—आयु में कभी-कभी कष्ट, उदर विकार, हानि पाते रहने के बाद मजबूती। गूढ़ युक्तियों की शक्ति।

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

राहु एकादश भाव में—भाग्य कमजोर, भाग्य सम्बन्धी दुर्घटनाएँ। गुप्त तरकीबों से भाग्य में उन्नति। धर्म पालन में कमजोरी, यश में कमी। दिखावटी भलमनसाहत।

राहु द्वादश भाव में—नौकरी में हानि, पिता की उम्र कम। दूर की सोचना। अन्य स्थानों में गुप्त युक्तियों से, अनाधिकार चेष्टा से लाभ उठाना। अधिक खर्च से परेशान।

मिथुन लग्न में केतु

केतु प्रथम भाव में—लाभ में वृद्धि, अनाधिकार लाभ, लाभ प्राप्ति में अन्ध विश्वास। महान् परिश्रमी, दौड़-धूप। लाभ के विषय में बड़ी-से-बड़ी मुसीबत। छिपाव शक्ति से सफल। अगले जन्म में दुकान में आग लगेगी।

केतु द्वितीय भाव में—बहुत खर्च। खर्च सम्बन्ध में चतुराई तथा धैर्य। अन्य स्थानों में कठिनाइयाँ। अन्त में मजबूती। पिछले जन्म में इसने अपने पड़ोसी की दुकान में आग लगा दी जिसके कारण इसकी दुकान में आग लगने का भय है।

केतु तृतीय भाव में—देह में कमजोरी, चिन्ताएँ। कद में व रंग में हलका, सुंदरता की कमी। कभी-कभी संघातिक चोट। गुप्त धैर्य शक्तियाँ। मान प्रतिष्ठा में कमी, संकीर्ण योजनाएँ, गुप्त हठी।

केतु चतुर्थ भाव में—धन के कोष में बड़ी-बड़ी हानियाँ व विफलताएँ। कुटुम्ब का बँटवारा। धन जन की वृद्धि में अन्धविश्वास के साथ अटल और अथक परिश्रम, अनाधिकार उन्नति के मार्ग में सफलता।

केतु पंचम भाव में—भाई-बहन के स्थान में बड़ी दिक्कतें। भ्राताओं की कमी। पुरुषार्थी पर पुरुषार्थ में कुछ हानि, महान् गंभीर परिश्रम। अत्यन्त धैर्य की गुप्त शक्ति। बहादुरी में कट्टरता, तत्परता, दौड़-धूप। उन्नति के मार्ग में अग्रसर।

केतु षष्ठम भाव में—माता की आयु कम। मकान में बँटवारा। भूमि में कमी। सुख में शान्ति में कमी, बहन का दुख, मकान सम्बन्धी अड़चनें।

सुख स्थान में मजबूती तथा तत्परता के बाद वृद्धि, धैर्यवान्।

केतु सप्तम भाव में—विद्या प्राप्ति में कठिनाइयाँ, दिमाग में परेशानी। सन्तान पक्ष में हानियाँ, बातचीत से अपना मन्तव्य न समझा सकने वाला। अन्धविश्वास की धारणा, कटु भाषण, स्वार्थी, शील रहित।

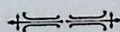
केतु अष्टम भाव में—शत्रु पर प्रभावशाली। ननसाल पक्ष में हानि। परेशानियों पर विजय, आंतरिक दृढ़ता, अन्धाधुन्ध शक्ति से कार्य। गुप्त धैर्य की पराकाष्ठा, कठिन परिश्रम और साहस से विजय। शील का उल्लंघन। स्वार्थ में तत्परता, उन्नति में निर्भयता।

केतु नवम भाव में—स्त्री स्थान में क्रांति। स्त्री के अन्दर विशेष शक्ति। भोग विलास की अधिकता। दैनिक रोजगार में महान् परिश्रम। आंतरिक दृढ़ भावना। गृहस्थ व लौकिक उन्नति के लिए प्रयत्न व शक्ति का प्रयोग। गृहस्थ की व्यवस्था में कमी।

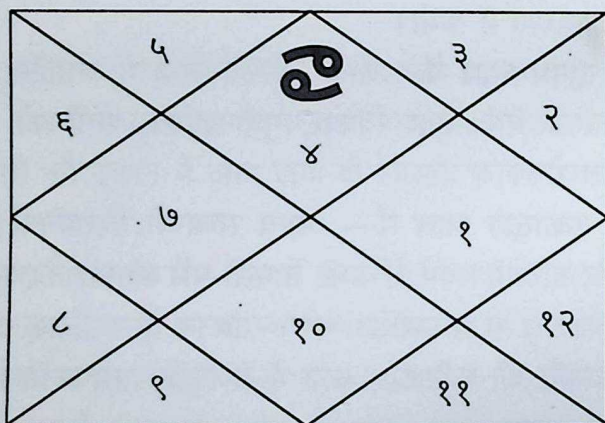
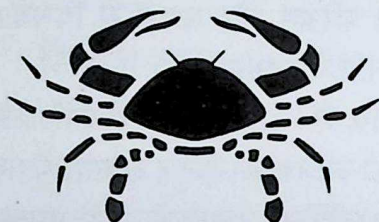
केतु दशम भाव में—जीवन की दिनचर्या में अशान्ति, परेशानियाँ लेकिन आंतरिक धैर्य। उदर विकार, गुप्त शक्ति, पत्नी की आयु कम, पुरुषार्थी, गुदा रोग।

केतु एकादश भाव में—भाग्य सम्बन्धी परेशानियाँ। भाग्य की उन्नति में घोर परिश्रम। धर्म में कमी, तामसी धर्म का पालन। यश में कमी। ईश्वर के विश्वास में कमजोरी। भाग्य साथ न दें, इसलिए देवताओं को कटुशब्द। उन्नति को कटिबद्ध, अन्त में मजबूती, असफलताओं के समय महान् धैर्य से काम।

केतु द्वादश भाव में—पिता की आयु कम, परेशानी। पदोन्नति के मार्ग में दिक्कतें। राजसमाज के कार्यों में महान् परिश्रम। गुप्त धैर्य की महान् शक्ति। इज्जत आबरू के स्थान में घोर संकट। बहुत निराशाओं के बाद किसी उत्तम मार्ग को अपना ले, अन्त में मजबूत शक्ति।



कर्क लग्न



नोट : पिता तथा इसके पुत्र की एक राय, बड़े भाई का माता से अधिक प्रेम।

कर्क लग्न में सूर्य का फल

सूर्य प्रथम भाव में—कुछ धन देकर केन्द्र में पक्की नौकरी। ऊँची कुर्सी, बड़ा प्रभावशाली। मकान सवारी से लापरवाह, धनाढ्य, बड़ी-बड़ी तरक्की, परन्तु सुख शान्ति में कुछ बाधा, माता से कड़ुवा बोल जाए। पिता की गद्दी पर, उच्चकर्म, उच्चमान। कुटुम्ब वालों ने मिलकर उत्तम नौकरी

पर लगाया। गजटेड अफसर, प्रधान।

सूर्य द्वितीय भाव में—पिता का धन प्राप्त। रुपए से रुपए कमाना, रत्नाभूषण युक्त, तेज बुद्धि से कार्य, वक्ता। अगले जन्म में कृषक बनेगा तथा उत्तम धन तथा पशु प्राप्त करेगा।

सूर्य तृतीय भाव में—पिता का धन नष्ट, कुटुम्ब में कमी हो जाए। बाहरी व्यक्तियों से मेलजोल व लाभ। स्थानीय प्रभाव की कमी क्योंकि पिछले जन्म में इसने कुटुम्ब का धन हरण किया था।

सूर्य चतुर्थ भाव में—पिता के धन पर पूरा हक। धनाढ्य, तेजस्वी, कुछ क्रोधी, स्वाभिमानी, न्याय के लिए क्रोध। स्त्री पक्ष में नीरसता, दैनिक रोजगार में कुछ अड़चनें, कुटुम्ब के कहने में। आत्मा उच्च, मूल्यवान योजनाएँ।

सूर्य पंचम भाव में—पिता ने इसीके लिए धन एकत्र किया है, नित्य-नित्य धन वृद्धि, प्रभावशाली, धन संग्रह को विशेष महत्त्व। मकान के उत्तर-पूर्व धन गढ़ा है। धन प्राप्ति पाँच बार।

सूर्य षष्ठम भाव में—पुरुषार्थी, पिता के धन का बँटवारा। धन से धर्म की उन्नति। भाग्यवान्, ज्यों-ज्यों धर्म-कर्म में खर्च करेगा, त्यों-त्यों भाग्यवान् होता जाएगा। बड़ा भाई, बाहुबल से चमत्कारिक कार्य। विद्युत पर अनुसन्धान। गौरवमय तथा साहसी।

सूर्य सप्तम भाव में—पिता को सुख तथा उन्नति तथा माता को कष्ट, धन खर्च करने पर भी सुख में अशान्ति। सवारी में सुन्दरता न रह सके।

सूर्य अष्टम भाव में—पिता के धन से विद्या प्राप्ति। दूरदर्शी, अपने सामने दूसरों को मूर्ख समझे। बड़े पुत्र को कष्ट। मंझली पुत्री को सभी कष्ट। बुद्धि में गरमी, बुद्धिमान, तीव्रमति से विचार, रोजगार चमकें। आमदनी प्रकट हो जाए।

सूर्य नवम भाव में—शत्रुभंजन, प्रभावशाली, परिश्रमी, अधिक खर्च। धन में कमी दिखलाई दे, धन प्राप्ति में परतन्त्रता। रोग-दोष पर काबू। कुटुम्बी शत्रु बन जाएँ। मकान के उत्तर-पश्चिम में धन गढ़ा है, देर

में मिलेगा।

सूर्य दशम भाव में—धन से कठिनाइयों द्वारा दैनिक रोजगार, पिता का धन पत्नी के पास रहे तथा कुछ नष्ट हो जाए। भोगादिक में नीरसता। लौकिक कार्यों में प्रभावशाली।

सूर्य एकादश भाव में—पिता के देहावसान पर काफी धन नष्ट हो जाए। कुटुम्ब में प्रभावशाली व्यक्ति की मृत्यु। प्राचीन धन की प्राप्ति तथा धन की अचानक हानि। धन संग्रह करने में असमर्थ, न्याय के विरुद्ध, धन प्राप्ति का विदेश से सम्बन्ध। गर्मी के रोग।

सूर्य द्वादश भाव में—धर्म से धन की वृद्धि। ईश्वरीय सहायता, अन्याय के धन को बुरा माने, पिता का धन भाग्य में लिखा है। तेजस्वी तथा साहसी। नाव या जलयान के कार्य में धन लगे। एक भाई।

कर्क लग्न में चन्द्रमा

चन्द्रमा प्रथम भाव में—पिता की सूरत पर, वैभवयुक्त, बड़े कारोबार। शान-शौकत, सुख साधन प्राप्त। जमीन जायदाद बढ़ाने की इच्छा। उत्तम कर्म, गौर वर्ण, यश और प्रशंसा। राज-समाज में मान, मनोबल से दिन-दिन तरक्की। इसको ऐसा प्रतापी तथा शान्त देखकर इसका अफसर इससे जलता है। शरीर में दैवीशक्ति का वास।

चन्द्रमा द्वितीय भाव में—रोजगार को शान-शौकत से सँभालने वाला, विद्या में अरुचि। प्रभावशाली, सुन्दर देह। तन-मन से धन कमाना, सन्तान से अनमना, खजांची, ज्योतिष से लाभ। अगला जन्म ब्राह्मण के घर में पायेगा और हीरों की खान खोदेगा।

चन्द्रमा तृतीय भाव में—जीवनभर खर्च का ठेकेदार। शत्रु तथा रोगों का बार-बार प्रभाव। शरीर कमजोर, मानसिक कष्ट, भ्रमित चित्त, अशान्त हृदय। बाहरी स्थानों में आमदनी बढ़े, शत्रु तथा रोग दबें, शरीर स्वस्थ रहे, मन में अशान्ति रहे। पिछले जन्म में इसने जल-जीवों की बहुत हत्याएँ की थीं जिसके कारण मन क्लान्त रहता है।

चन्द्रमा चतुर्थ भाव में—गौर वर्ण, सुन्दर सुडौल देह, प्रसन्न चित्त,

हाजिर जवाब, दृढ़ आत्मा, उच्च मनोबल, स्वाभिमानी, तत्त्वज्ञानी। दैनिक कार्य में पूरा ध्यान। मनमानी, क्रोध रहित राजीनामा-प्रिय, स्वच्छन्द, कवि। ज्योतिषी, स्त्री में नीरसता। ख्यातियुक्त। मकान की इच्छा। सज्जनशील स्वभाव की प्रधानता।

चन्द्रमा पंचम भाव में—पिता के धन पर स्वयं काबू करने वाला। कुटुम्ब की वृद्धि चाहना। अमीरी से दिनचर्या। पुरातत्त्व की खोज, विद्या में अरुचि। आयु के विषय पर पूरा ध्यान।

चन्द्रमा षष्ठम भाव में—पुरुषार्थी, तन-मन से उन्नति, धर्मज्ञ, भाग्यवान् स्वयं भी तथा भाई-बहन भी। भाई-बहनों से विशेष प्रेम, साहसी, आत्मबल, ईश्वरभक्ति।

चन्द्रमा सप्तम भाव में—सुन्दर देह, अपने स्थान में रहन-सहन की चाह। विदेश जाना मुसीबत समझे। जमीन जायदाद, मान-प्रतिष्ठा, सुख प्राप्त। आनन्दी जीव, विनोदी, माता सुखी, पिता सुखी।

चन्द्रमा अष्ठम भाव में—स्कूल से गैर हाजिर। बुद्धि में भ्रम, सन्तान से दुख, हृदय में अशान्ति। वाणी से अपना भाव न समझा सके। छोटा कद।

चन्द्रमा नवम भाव में—कुछ ननसाल में रहे। मित्रों से घिरा, कमजोर, परेशान, मन अशान्त, मामूली रोग बार-बार, अन्त में वक्ष रोग, नेत्र रोग, नेत्र चमकीले न हों। कानून की शिक्षा भारी मालूम पड़े।

चन्द्रमा दशम भाव में—पत्नी में रुचि, दैनिक कार्यों में दिलचस्पी। साझे में काम चाहने वाला। स्त्री सुन्दर। दैनिक रोजगार ना रहे। स्वस्थ गोल चेहरा। आत्मा तथा मन प्रसन्न। विवाह से पहले पत्नी देख ले। प्रेम विवाह असफल।

चन्द्रमा एकादश भाव में—आयु चिन्ता, विदेश भ्रमण, पुरातत्त्व की खोज। कुटुम्ब के वृद्धि की इच्छा। खिन्न मन, नेत्र का किसी दूर जगह में इलाज, क्षय रोग।

चन्द्रमा द्वादश भाव में—नेत्र विशेषज्ञ, बड़ा भाग्यवान्, धर्मात्मा। सुन्दर देह, न्याय-प्रिय, कानून को समझना, प्रसन्न, पुरुषार्थी, मन्दिर बनवाने वाला। तत्त्वज्ञानी, सुखी, यश प्राप्त। धर्म कार्य में भ्रमण, पुण्य संचय। दैवी

शक्ति की प्राप्ति। सज्जन, शील स्वभाव, दूरदर्शी, साली से प्रेम, भविष्य वेत्ता, नाम की मुहर बने।

कर्क लग्न में मंगल

मंगल प्रथम भाव में—राज में मान, प्रबन्धक, कर्तव्यपारायण धाराप्रवाह वक्ता, पिता की महानता, पुत्रों को भी कुर्सी, रक्षा विभाग, देह की भी परवाह नहीं, प्रतापी, प्रभावशाली, माता दुखी, हुकूमत से बोलने वाला, वाणी में प्रभाव। शिक्षा में डिग्री। नौकरी स्वमेव मिले। चेचक का टीका लगावे। शिक्षा सर्विस के लिए प्राप्त की। प्रधान कैप्टन, बन्दूक, धन प्राप्त तीन बार।

मंगल द्वितीय भाव में—विद्या की शक्ति से खूब धन कमाने वाला, प्रभावशाली, स्वार्थयुक्त, सन्तान भी व्यापार को सँभाले, प्राइवेट नौकरी। छोटी सन्तान को नौकरी। आमदनी के विषय में सन्तान आज्ञा न माने। स्मगलिंग, पुत्र खजांची करेगा, अगले जन्म में कसाई बनेगा तथा पशुओं का वध करेगा।

मंगल तृतीय भाव में—विद्या बुद्धि में कमजोरी, नौकरी विलम्ब से लगे तथा छूट भी जाए। सन्तान पर अधिक खर्च, सन्तान धन को बिगाड़े। सन्तान के कारण नौकरी छोड़नी पड़े। बाहरी स्थानों में नौकरी ठीक रहे तथा सन्तान सँभल जाए। पिछले जन्म में एक साधारण अपराध में अधीनस्थ को नौकरी से निकाल दिया था जिसके कारण नौकरी के लिए विलाप करता है। वक्ष में चोट।

मंगल चतुर्थ भाव में—देह कमजोर, मन अशान्त। सन्तान क्लेश देती रहे, तथा सिर पर चढ़ी रहे। पत्नी का विशेष ध्यान, सन्तान को माता का ध्यान। जीवन में नीरसता, अधिक भोग, याजनाओं से आशावादी। भूमि को दबाने की इच्छा। माथे पर पिता द्वारा चोट, भयंकर चेचक, मंगली, पिता वृक्ष कटवावे।

मंगल पंचम भाव में—पिता के सहारे से धन वृद्धि, सन्तान बड़ी होने पर धन पर काबू कर ले। पिता तथा पुत्रों को धर्म स्थान का ध्यान तथा

भाग्यवान् । सन्तान साहसी, विद्वान् । हाजिर जवाब, गुणग्राही, मानयुक्त । धन की चाबी पहले पिता के पास फिर उनके पुत्रों के पास । पिता के धन का बँटवारा किया, पुत्र के कारण मानहानि ।

मंगल षष्ठम भाव में—पिता इसके भाइयों को अधिक चाहता है । सन्तान भी चाचाओं से प्यार रखती है । तथा चाचा-ताऊ इसकी सन्तान से दूर रहना चाहते हैं । पराक्रमी, बाहुबल से राज सम्मान प्राप्त, भाग्यवान् । दैवी कृपा, कार्य कुशल । भाइयों को भी नौकरी मिले ।

मंगल सप्तम भाव में—पिता ने भूमि खरीदी । सवारी सरकारी, सन्तान के नाम जमीन, मकान । विषयभोग की इच्छा । शिक्षा घर पर प्राप्त करे । पिता से सुख, घर में नौकर लगे रहें । माता पर पिता द्वारा ताड़ना । नाभि के पास दाहिनी तरफ ऑपरेशन । मंगली, हथियारों का प्रभाव । पिछले छोटे भाई को गर्भ में क्षति, फिर पिता का स्वर्गवास, पिता को विष दिया ।

मंगल अष्टम भाव में—वाणी में ऑर्डर, चिड़चिड़ेपन से विद्या प्राप्ति, विद्या में डिग्री । सरकार से शिक्षा में सहायता तथा तुरन्त नौकरी, रक्षा विभाग, शिक्षा विभाग । जब-जब सन्तान पैदा हुई तब-तब नौकरी लगी । नौकरी अपने मन से त्यागी । शिक्षा में उच्च डिग्री । फिर भी पूरे शौक से शिक्षा दिलवाई । सन्तान क्रोधी, हठी, मनमाना आचरण करने वाली । पिता के मित्र अफसरों ने नौकरी का वायदा करके पढ़वाया । बन्दूक, पिस्तौल ।

मंगल नवम भाव में—इधर सन्तान को कष्ट, उधर नौकरी छूटी । रोगों पर विजय, घुटने के ऊपर चोट । साहसी, मन्दबुद्धि । पिता पर मुकदमें । पिता द्वारा इसे भाग्यवान् बनाने के लिए प्रभु से प्रार्थना । गणित कमजोर, हथियारों का प्रभाव । सन्तान की आयु कम । सन्तान शत्रु सम व्यवहार करे तथा सन्तान शत्रु से टक्कर ले । जाँघ में चोट ।

मंगल दशम भाव में—पुत्र उन्नति करने का प्रयत्न करे परन्तु मान-हानि सा देखता रह जाए । पुत्र कहना न माने । पुत्र की बुद्धि में कुछ कमी । पत्नी के विचारों में असमानता । पत्नी मूर्खतावश पति को उलझाने में प्रवृत्त । बिना इसे दिखलाए पिता ने यह विवाह स्वीकर कर लिया । वैसे पुत्र उन्नति

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

पर। भाग्येश शत्रु हो तो पुत्रों को भी डिग्री। घुटने में चोट, मंगली, अदृश्य शक्ति सन्तान के विवाह कराती है। पत्नी को बहुत डाटता है। पत्नी तुरन्त बात काटती है। पुत्र के विवाह के बाद तरक्की।

मंगल एकादश भाव में—घुटने के नीचे चोट, पिता की उम्र कम। नौकरी छूटती रहे। विद्या कम, परदेश में मुसीबत, सन्तान की उम्र कम। सन्तान को सवारी का सुख न मिले। मंगली। सन्तान सवारी से गिर पड़े। गणित कमजोर, हथियारों का प्रभाव, पिंडली में चोट।

मंगल द्वादश भाव में—राजसमाज द्वारा भाग्य में विशेष उन्नति, वृद्धि तथा शिक्षा के उत्तम प्रभाव से बार-बार तरक्की। पिता की भी तरक्की। पिता द्वारा की गई सिफारिश मान ली जाए। अफसर प्रशंसा करें। नौकरी में भ्रमण के कार्य। दूरदर्शी, पराक्रमी, पिछले जन्म के उत्तम कार्यों का विशेष फल। पिता की उम्र कम पर सुखी जीवन।

कर्क लग्न में बुध

बुध प्रथम भाव में—भाई का मन नौकरी में न लगे। अफसर नाराज रहे। पिता पर खर्च, नौकरी में रिश्त देनी पड़े। भाई ने कहा कि नौकरी करो। राजसमाज में सफलता की कमी। साहस से अफसरों से झगड़ने वाला। पिता पर कर्ज।

बुध द्वितीय भाव में—भाइयों ने खर्च करके रोजगार खुलवा दिया, भाई स्वयं रोजगारों पर, बल पुरुषार्थ से रोजगार। व्यापार में अधिक खर्च व कर्ज। अगले जन्म में शिल्पकार बनेगा तथा संगमरमर की मूर्तियाँ बनाएगा।

बुध तृतीय भाव में—खर्च का जिम्मेदार पर खर्च में सन्तुलन। कर्ज हो पर चुक जाए। भाइयों से दूर का सम्बन्ध। संचित शक्ति का खर्च। पुरुषार्थ धोखा दे। दूसरे स्थानों के सम्बन्ध से काम चले। अन्य पुरुषों की मदद से पुरुषार्थ दिखाएगा। पिछले जन्म में इस व्यक्ति ने अपने भाइयों का धन हरण किया था इस कारण भाइयों की सहायता से वंचित है।

बुध चतुर्थ भाव में—पहलवानी तथा पहलवानी से कमाना। शरीर में

पुरुषार्थ, शानदार खर्च, शिल्पकला में खर्च। बाहरी स्थानों में आना-जाना, भाइयों का प्यार।

बुध पंचम भाव में—पिता का धन नष्ट। भाइयों द्वारा पिता के धन पर कब्जा। बाहुबल से धन संचय, भाइयों ने कुटुम्ब की वृद्धि की। गूढ़ युक्तियों से धन की प्राप्ति।

बुध षष्ठम भाव में—महान् पुरुषार्थी, लगभग छः भाई-बहन, बाहरी सम्बन्धों से खर्च। जादू-टोना द्वारा भाई उत्पन्न, धर्म का दिखावा, भाइयों के जिम्मे खर्च। विवेक की महान् हिम्मत, फिर भी भाग्यवान। धार्मिक जनों से भी धन पैदा करने की प्रवृत्ति।

बुध सप्तम भाव में—माता से भाइयों का प्रेम। भाई की पिता से अनबन। खर्च माता पर, जमीन पर, सवारी पर परन्तु अधिक सुख न मिले।

बुध अष्टम भाव में—न स्वयं पढ़ सका, न भाई पढ़ सके। पढ़ाई में खूब खर्च किया। बोलने में रुकावट, अपनी गलती को न मानना, फिर भी चतुर बुद्धिमान। बुद्धि में कुछ क्रोध के कारण कमजोरी, गणित कमजोर। खर्च के कारण शिक्षा अवरुद्ध, बड़े परिश्रम से शिक्षा प्राप्ति।

बुध नवम भाव में—खर्च रोगों पर, शत्रुओं पर, मुकदमों में, भाई शत्रु हो जाए और शत्रु की तरफदारी करे। खर्च करने पर शत्रुता उत्पन्न हो। परन्तु शत्रु कानूनी हो। बाहरी सम्पर्क से बन्धन। परतन्त्र सा, पुरुषार्थ में कमी। गुप्त विवेक, अपनी वाणी ही शत्रु बन जाए।

बुध दशम भाव में—पत्नी अपने देवरों के कभी कहने में आ जाए और कभी कहने में न आवे। बहन का अच्छा सुख। बहन के कारण रोजी लगी रहे। पत्नी चतुर। पत्नी मशीन चला सके, पत्नी को सिलाई की मशीन लाकर दे।

बुध एकादश भाव में—भाइयों का विदेश योग, विदेश से कम लाभ के कारण वापिस आना। दूर की यात्रा में बेकार खर्च। भाई-बहन का वियोग।

बुध द्वादश भाव में—भाई भाग्यवान। स्वयं के भाग्य में कुछ कमी, भाग्य भरोसे कोई काम न हो, परन्तु पुरुषार्थ से सभी कार्य बन जाए। धर्म में कम विश्वास। धर्म-कर्मों से भी कमाना चाहे, फिर भी भाग्यवान।

कर्क लग्न में गुरु

गुरु प्रथम भाव में—भाग्यबल तथा ईश्वरीय शक्ति का राजसमाज में प्रभाव। कानून या प्रबंध अधिकारी। बड़ी दिक्कतों से तथा बल पुरुथार्थ से तथा ईश्वरीय भक्ति से अपनी पर बना रहे तथा मुफ्त निवास का उपयोग करे, बड़ी-बड़ी समस्याओं का हल करना, भाई पिता की सूरत पर, नौकरी में फिर भी शिकायतें होती रहें, नौकरी छूटती लगती रहे, भाग्यवान्, विद्वान्। किसी धर्मगुरु ने नौकरी मिलने का आशीर्वाद दिया।

गुरु द्वितीय भाव में—भाई-बहनों का सुख, भाग्यशक्ति से व्यापार में लाभ तथा शत्रु पक्ष से व्यापार में अरुचि तथा नुकसान। पत्नी से घृणा, सन्तान सुख। दैनिक रोजगार को ओछा समझने वाला। कोई व्यक्ति, जो धर्म बदले हुए हो वह अवश्य नुकसान पहुँचावे, अगले जन्म में ब्राह्मण के घर जन्म लेगा तथा वकील बनेगा।

गुरु तृतीय भाव में—पिछले जन्म में धर्म परिवर्तन कर लिया था इस कारण देवता साथ नहीं देते। सावधान! भाग्य साथ नहीं देगा, दैवी शक्ति भी कोई बड़ा कार्य नहीं करेगी तथा साधारण कार्य भी देवताओं की तरफ से देर में होंगे। हाँ, भाग्य किसी दूसरे स्थान में अवश्य फलेगा। शत्रु तथा रोगों से साधारण नुकसान। धर्म तथा ईश्वर की निष्ठा में कुछ न्यूनता। जीवन दिनचर्या में नीरसता। तरक्की नहीं मिलेगी। जब पुत्र के पुत्र उत्पन्न होगा तब भाग्योदय होगा, मकान बने।

गुरु चतुर्थ भाव में—आत्मज्ञानी, प्रतापी, भाग्यवान्, धर्मात्मा, वीर हृदय, न्यायप्रिय, सत्यभाषी, धर्म पालक, गौरवर्ण, दृढ़ ऊँची देह, बुद्धिमान मैजिस्ट्रेट सन्तान वाला, प्रधान, उत्थान और सम्मान की प्रधानता, ऊँची ननसाल, ज्योतिष-प्रेमी, तेजस्वी, विजयी, तथा गृहस्थी से कुछ घृणा। ईश्वरीय शक्ति का इतना प्यारा कि लोग अवतार समझें। भूत, भविष्य, वर्तमान का स्वयं पता लग जाए। साले की पसन्द पर विवाह। शरीर में किसी गुरु शक्ति का वास। नाम की मुहर बने। उन्नति व भाग्योदय बारह बार।

गुरु पंचम भाव में—प्रभु की कृपा से धन और धर्म बढ़ता रहे, तथा चोरों की दुष्टता से धन का अपहरण होता रहे। कुछ कानूनी बदमाशों द्वारा

धन की हानि तथा धन की प्राप्ति लगी रहे। ननसाल से धन की प्राप्ति। हृदय बल से धन की वृद्धि। भाग्योदय बुजुर्गों का, दादी भाग्यवान। प्रभु के दर्शन।

गुरु षष्ठम भाव में—पाँच भाई, भाइयों की छल चतुरता के कारण कुछ वैमनस्य। कुछ भाई-बहनों का वियोग। शेष भाई भी भाग्यवान। पिछले जन्म के कर्मों के कारण भाग्यवान् तथा पराक्रमी, शत्रु भाइयों से मिल जाएँ। पत्नी को ओछा समझना, पराक्रम से व्यापार सँभालना। भाग्य की विशेष सहायता। धर्म में रुचि।

गुरु सप्तम भाव में—भाग्यवान। ईश्वर की कृपा से जमीन, मकान, सवारी तथा माता का सुख, परन्तु माता से विचार न मिलें, भाग्यबल से ही नौकरी मिले। कुछ प्रयत्न करने पर नौकरी अवश्य मिलेगी। राज में मान।

गुरु अष्टम भाव में—तीन पुत्र दो पुत्रियाँ, बुद्धिमान, धर्मवान, शिक्षा सम्बन्धी यात्राएँ, ज्योतिष प्रेमी, कानून की समझ, औषधियों का ज्ञान। देह में सुन्दरता व बड़प्पन। तत्त्व की खोज, ईश्वरवादी, दूरदर्शी। यह भाग्य में लिखा है कि सन्तान शत्रु के समान व्यवहार करने लगेगी।

गुरु नवम भाव में—किसी के साथ नेकी करने का फल तुरन्त मिले। अपने धर्म को त्याग कर अन्य धर्म का पालन करने वाला। शत्रु को हृदय व भाग्यबल से तथा न्यायशक्ति से पराजित करके मित्र बनाने वाला। हठयोग से धन मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति। ननसाल भी भाग्यवान। उन्नति के अवसर पर विघ्न बाधाओं का सामना। उन्नति के लिए परिश्रमी। साले पर मुकदमा।

गुरु दशम भाव में—पत्नी बजुर्गों के कहने में आ जाए। पत्नी भाग्यवान, पत्नी धर्म-कर्म वाली, विवाह में शत्रुओं के द्वारा परेशानी, परन्तु विवाह हो जाए। जीवन सुखी, स्वास्थ्य सुख।

गुरु एकादश भाव में—शत्रु तथा रोगों में हानि, परन्तु भाग्य कमजोर। हृदय रोग अन्त तक साथ दे। विदेश में भाग्य वृद्धि। वैसे यात्राओं में नुकसान, ननसाल दुखी। ईश्वर की निष्ठा में कमी, तरक्की नहीं मिलेगी।

गुरु द्वादश भाव में—विशेष भाग्यवान, ईश्वरीय शक्ति का खिलौना, ननसाल भी भाग्यवान। इसके संसर्ग से शत्रु भी मित्र बन जाएँगे तथा वे भी

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

भाग्यवान् हो जाएँगे। पाँच भाई, सन्तान सुख, ईश्वर की सदैव कृपा दृष्टि। बार-बार उन्नति, शत्रुओं को भी ऊपर उठाने का ख्याल। उन्नति चार बार।

कर्क लग्न में शुक्र

शुक्र प्रथम भाव में—माता, भूमि, सवारी व ऐश्वर्य का पूर्ण लाभ। सुखी ठाठबाट का जीवन, उज्ज्वल कार, व्यापार, लाभ नौकरी में भी। कार्य कुशल, चतुर, नौकरी के साथ कोई अन्य कार्य भी।

शुक्र द्वितीय भाव में—मिट्टी पकड़े तो सोना हो। अपनी कोठी, अपनी कार, प्रत्येक व्यापार में लाभ विशेषकर सफेद रंग के कार्यों में या कारखानों में लाभ, नौकर-चाकर लगे रहें। लक्ष्मी प्रसन्न। मकानों में दुकानें, दुकानों पर मकान। अन्य अनेक रोजगार, फाइनेंस ऑफीसर। पिता की रोजी में उन्नति। अगले जन्म में जौहरी बनेगा तथा सरकारी धन का भी भागी बनेगा। उत्तम भाग्योदय दो बार।

शुक्र तृतीय भाव में—जमीन मकान बिक जाएँ, सवारी नष्ट हो जाएँ, व्यापार बिगड़ जाएँ, परन्तु अन्य जगह जमीन मकान सवारी व्यापार धीरे-धीरे सबकुछ मिल जाए। परन्तु जन्म स्थान पर दिवाला निकल जाए तथा ऋणी हो जाए। इस दुःख में माता शीघ्र मर जाए, कुछ कुटुम्ब की हानि, पिता की रोजी में घाटा। पिछले जन्म में इस व्यक्ति ने किसी के मकान तथा दुकान पर कब्जा कर लिया था।

शुक्र चतुर्थ भाव में—सुन्दर आकर्षक चेहरा, माता का प्यारा, माता प्रभावशाली, माता मकान को इसी के नाम करना चाहती है। सुख रहित, लाभ को न चाहे। चतुर, कार्य दक्ष, गृहस्थ सुख, पत्नी सुन्दर, भाग्यशाली। व्यापार की लाइन सिर पड़ जाए। प्रसन्नवदन।

शुक्र पंचम भाव में—व्यापार से धन संग्रह, माता से धन प्राप्त, मकान बनाते ही आमदनी बढ़ जाए। आयु का सुख। इन सभी बातों का ७० प्रतिशत लाभ तथा ३० प्रतिशत हानि।

शुक्र षष्ठम भाव में—लाभ के कुछ कार्य भाइयों को, जमीन मकान का अधिक भाग भाइयों को, माता का अधिक प्यार भाइयों को, भाग्यवान्,

भाग्य भी भाई-बहनों का साथ दे। कुछ बाहुबल में कमी। सुन्दरता की कमी।

शुक्र सप्तम भाव में—जमीन-मकान-दुकानें अधिक बनवावे, परन्तु कामकाज घर में ही करे। घर सजा हुआ शीशे जैसा, मकान-दुकानें इकट्ठे। माता को विशेष प्यारा। ऐसा पुत्र पाकर माता धन्य हो गई और पिता को यश मिला, सुखी ठाठबाट का जीवन। पिता की रोजी में उन्नति, भाग्योदय सात बार।

शुक्र अष्टम भाव में—विद्वान, शिक्षा में डिग्री, बुद्धि व वाणी में बड़ी-बड़ी कलाएँ, सन्तान का सुख। व्यापार सन्तान को फले। लेखक, पत्रकार मशीनों का व्यापारी, शान्तियुक्त, पिता प्रसन्न हुआ जब पोते के नाम कार खरीद कर आई।

शुक्र नवम भाव में—व्यापार में परतन्त्र, लाभ कम, माता दुखी, जीवन कुछ बेकार मित्रों से घिरा हुआ। सवारी से गिरे, मकान गिर पड़े, माता की आयु कम। शत्रु से झगड़ा न चाहने वाला। आभूषण बिक जाएँ और इसी दुख में माता का देहान्त, माता के देहान्त के बाद सवारी भी कम दामों में बिक जाए। पशुओं की मृत्यु, पिता की रोजी घटती रहे, बाहर के मकान से परेशानी।

शुक्र दशम भाव में—विवाह में धन प्राप्त, व्यापार प्राप्त, पत्नी के नाम व्यापार में बार-बार वृद्धि। माता सुखी परन्तु बहू की सेवा करनी पड़े। पत्नी सुन्दर, स्वयं सुन्दर तथा सुखी। भोग विलास का पूर्ण सुख। दैनिक रोजगार में लाभ ही लाभ। मकान पत्नी के नाम पर भी बने।

शुक्र एकादश भाव में—माता के मरकर भी प्राण लौट आवें, धन संग्रह होने में बड़ी कठिनाई, सवारी से गिरना, माता की आयु कम, मकान अधिक पुराना हो जाए तब मुरम्मत। उम्र के अन्तिम जीवन में जमीन मकान सुख सवारी का पुनः सुख प्राप्त या विदेश में सुखमय जीवन तथा धन संग्रह। नहीं तो दुकान मकान का खंडहर बन जाए, ठाठबाट न के बराबर, चतुराई जैसे धूल में मिल जाए, परन्तु बाद के जीवन में सभी सुख। पिता की रोजी घटती रहे।

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

शुक्र द्वादश भाव में—घबराना मत, मकान, दुकान, सवारी सुख और अनेक व्यापार तुम्हारे भाग्य में लिखे हैं, तथा माता तुम्हारी ही तरफदारी करेगी। जायदाद तुम्हारे नाम हो जाएगी। ईश्वरीय शक्ति की पूर्ण सहायता, पूर्वजन्म के कर्म का सुफल, परन्तु धर्म में दिखावट। पुरस्कार वितरण व समारोह कराने वाला। पिता की रोजी में उन्नति, भाग्योदय बारह बार।

कर्क लगन में शनि

शनि प्रथम भाव में—रोजी तथा नौकरी में आलस्य। पत्नी ने या ससुराल वालों ने नौकरी के लिए प्रयत्न किया, नौकरी साधारण, नौकरी निभे नहीं, अफसर से बने नहीं, नौकरी में आलस्य। रोजी के लिए बड़े-बड़े कष्ट उठाने पड़ें। पिता बीमार रहे, अफसर दुखी रहे, पिता को पेट के रोग, बाई छाती पर तिल।

शनि द्वितीय भाव में—आयु वृद्धि, पहले लाभ फिर घाटा, धनाढ्य, दैनिक रोजगार में मस्ती, शरीर में न्यूनता, सुखी, जब से पत्नी ने कदम रखा है तब से रोजी में दिन दूनी बरकत, मुनाफा अधिक खाने वाला। सन्तान से न बने, गूढ़ युक्तियों में पारंगत, विदेश में लाभ, पेट रोग से मुक्त। आयु भर मुनाफा, विवाह होते ही रोजगार खुलें। अगले जन्म में किसी स्त्री का धन लूटेगा।

शनि तृतीय भाव में—जब से विवाह हुआ है तभी से खर्च, घाटा, ऋण, बाहरी स्थानों में लाभ, इन्द्रिय में कमजोरी, गृहस्थ में कलह, धन कोष में हानि, कुटुम्ब में हानि। आयु कम, इलाज में बहुत खर्च, पेट के रोग, बाहर इलाज हो जाए। पिछले जन्म में इसने किसी स्त्री का अपहरण किया था जिसके शाप से इसका फलना-फूलना बंद हो गया है।

शनि चतुर्थ भाव में—विवाह से पहले पत्नी ने देख लिया था, विवाह होते ही उत्तम रोजी लग जाए। आयु पूर्ण, शरीर चिन्ता में, गूढ़ युक्तियों से कार्य, पिता को दुखी करे, अफसर को परेशान करे, भ्राता कष्ट में, देह में कमजोरी, साहसी, अन्य जगह शरीर को सुख मिले, खटमलों का प्रकोप, मुख पर तिल।

शनि पंचम भाव में—दीर्घ आयु में कुछ कमी, युक्तियों की संग्रह शक्ति। विवाह होते ही धन नाश, रोजी समाप्त, धन की परेशानी। पुरातत्त्व की प्राप्ति, दिनचर्या में आलस्य, पूर्व संचित धन की हानि, कुटुम्ब में कई देहान्त। पत्नी धन न ला सकी, आयु के अन्त में धन एकत्र। पत्नी का नाली पर झगड़ा, झगड़ कर चली जाए, परन्तु आ जाए। विवाह होते ही रोजी छूटी।

शनि षष्ठम भाव में—उद्योगपति, पुरुषार्थी, दिनचर्या में मस्त, आयु पूर्ण, सन्तान कष्ट में, स्त्री भोगादिक का सुख, बहन, भाइयों से झंझट, खूब खर्च, स्वार्थी, कटुभाषी, अपूर्व साहसी, भाग्यवान, धर्म में अरुचि। पत्नी अपने देवरों के पक्ष में बोले। भाइयों की उम्र में बाधा। दाईं भुजा पर तिल।

शनि सप्तम भाव में—विवाह होते ही मकान बने, सवारी प्राप्त हो तथा पिता को पेट के रोग होने लगें। माता में शक्ति बढ़े, माता की आयु अधिक, पत्नी चतुर गूढ़ युक्तियों वाली, शत्रुओं पर तथा रोगों पर विजय। स्थान जायदाद का सुख। पहले सुख फिर दुख, घर में मोटर या कार। कारखाने, लोहे का कार्य, तेल का कार्य, बहू सास की तरफदारी करे। गृहस्थ सुख। बन्दूक, पिस्तौल। भाग्योदय सात बार। दाहिनी छाती पर तिल।

शनि अष्टम भाव में—विवाह होने के बाद कटुभाषी हो गया, विवाह में विघ्न, पत्नी दुखी, पत्नी सन्तान को चाहती है परन्तु सन्तान करवट भी नहीं लेती। विवाह के बाद शिक्षा मंद, बच्चों की आयु दीर्घ से कुछ कम। बच्चों को बाद में सुख, अंग्रेजी कमजोर, विदेशी भाषा पढ़ने को मन न करे।

शनि नवम भाव में—शत्रु से बदला लेने के लिए हृदय में छिपी आग। पत्नी अन्य के ध्यान में, अन्य को उकसाती रहे। पत्नी को इलाज माफिक न आवे। आयु भर शत्रुओं से मुकाबला। खर्च बहुत, पत्नी के विषय में खर्च। दाएँ पैर पर तिल।

शनि दशम भाव में—पत्नी सुखी, बहादुर, पत्नी के आते ही मकान की इच्छा, पत्नी को भोग इच्छा अधिक। रोजगार में ससुराल से सहायता, भोगी, धर्म विषय में कमी, यात्राओं में लाभ। विवाह के बाद सवारी का सुख। सवारी से गिरे, मकान से गिरे, परन्तु चोट न लगे। ससुराल में बंदूक। पत्नी अपने मरने की धोंस देती रहे, इन्द्रिय पर अनेक तिल।

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

शनि एकादश भाव में—आयु दीर्घ, पत्नी व पुत्रों से चिन्ता, राजसमाज में उन्नति में रुकावट, नौकरी अवश्य छूटे। कर्मेष्ठी, विदेश में आपार धन प्राप्त। पत्नी के कारण नौकरी में हानि। जीवन भर बन्दूक पिस्तौल। बाएँ पैर पर तिल।

शनि द्वादश भाव में—आयु वृद्धि, भाग्यवान्, भाग्य में कछ असन्तोष भी। लापरवाह, पत्नी भाग्यवान् आई, ससुराल भी भाग्यवान्, भाग्य विदेश में खुले। नितम्ब पर तिल।

कर्क लग्न में राहु

राहु प्रथम भाव में—राजसमाज तथा नौकरी में महान् कष्ट। पिता तथा अफसर से झगड़ा। बाद में मान प्राप्त, कठिन परिश्रमी, बुद्धि में शाही ढंग की योजनाएँ।

राहु द्वितीय भाव में—कभी-कभी मुफ्त का साधन प्राप्त। अधिक लाभ के लिए गहरी युक्तियाँ। रोजगार में सतर्क, हक से अधिक मुनाफा खाना। प्रतापी, अगले जन्म में व्यापारी बनेगा तथा घाटा उठाएगा।

राहु तृतीय भाव में—शाही खर्च, खर्च के विषय में ऊँची-ऊँची योजनाएँ। आसानी से खर्च चलाना। बाहरी सम्बन्ध का ज्ञान, पिछले जन्म में बड़ा दानी था जिसके कारण अब शाही खर्च में सुख लूट रहा है।

राहु चतुर्थ भाव में—देह में अरिष्ट, देह चिन्ता, ऊँचे विचार, चतुराई के मानसिक कष्ट। अन्त में छिपी हुई युक्तियों से गहरा आनन्द।

राहु पंचम भाव में—धन कोष की हानि, कुटुम्ब की हानि। तीक्ष्ण भेदीले कर्म, धन की हानि के कारण कभी-कभी मूर्छा। चोरों का सा दंड भुगते। ऋणी, धन की भारी कमी।

राहु षष्ठम भाव में—साहसी शक्तिशाली, योजनाओं में सफलता, भाई-बहन की हानि। स्वार्थी, कार्य सिद्धि के लिए तत्परता। सावधान, धैर्यवान्। भाग्योदय छः बार।

राहु सप्तम भाव में—सुख शान्ति में बाधा, माता की आयु कम, सवारी अप्राप्त। सवारी से संकट, भूमि में कमी, बुद्धि बल से स्थान की

वृद्धि। अन्त में सुख, सवारी, मकान की नवीन मजबूती।

राहु अष्टम भाव में—सन्तान की कमी, विद्या प्राप्ति में घबराहट, आगे न पढ़ सके, कुछ गुप्त युक्तियों से सफलता, शब्दों में जचाव शक्ति। दिमाग में परेशानी। भुलक्कड़, परन्तु नवीन चतुरता तथा गुप्त ज्ञान से पाठ को याद कर लेना। तीसरे पन में बुद्धि खुले। रोजगार के प्रश्न के सामने पढ़ाई न हो सकी। अदृश्य शक्ति का वाणी पर वास। पहली सन्तान शीघ्र उत्पन्न।

राहु नवम भाव में—स्वार्थ सिद्धि में न्याय अन्याय की परवाह नहीं, शत्रु से गुप्त संकीर्ण चाल चलना, ननसाल में हानि। सावधानी युक्त स्वभाव, झगड़ों में परेशानी के बाद सफलता।

राहु दशम भाव में—स्त्री कष्ट, स्त्री से अशान्ति व निराशा, दैनिक रोजगार में दिक्कतें। रोजगार में संघातिक हानि। भोगादिक में कमी, अतृप्त वासनाओं की बाद में पूर्ति।

राहु एकादश भाव में—पुरातत्त्व की गुप्त खोज। उदर में रोग, दिनचर्या में चिन्तित। पहले हानि अथवा निराशा फिर लाभ व आशा। गूढ़ युक्तियों को और भी गूढ़ करके काम में लाने वाला, अन्दरूनी परेशानी।

राहु द्वादश भाव में—भाग्य सम्बन्धी हानि तथा निराशा, धर्म का बाहरी दिखावा, ओजस्वी प्रयोग। निराशाओं के बाद अन्त में आशा तथा भाग्य वृद्धि, प्रकृति से अधिक लाभ पाने की सोचना।

कर्क लग्न में केतु

केतु प्रथम भाव में—पिता कष्ट में, गुदा रोग, पिता से अलग, नौकरी राजसमाज में परेशानी, नौकरी छूटे, गुप्त शक्ति के आधार पर, नौकरी भी लग जाए तथा मान-मर्यादा बनी रहे।

केतु द्वितीय भाव में—रोजगार में गुप्त चतुराई के योग से लाभ। दृढ़ता से स्वार्थ सिद्धि। हक से अधिक मुनाफा खाना, फिर भी आमदनी की कमी। प्रयत्नशील, उद्योगी। पशु वर्ग मरते रहें, किसी पशु के शाप के कारण अगले जन्म में भी पशु मरते रहेंगे।

केतु तृतीय भाव में—खर्च में कठिनाई तथा अशान्ति। खर्च के

मामले में घोर संकट, अकाल जैसी स्थिति, खर्च के विषय में अनुचित रीति का प्रयोग। लघु धैर्य, पिछले जन्म से ही अपने पिता को दुखी रखता आ रहा है, इस कारण धन के विषय में संकट का सामना कर रहा है।

केतु चतुर्थ भाव में—देह की सुन्दरता में कमी, देह में दुर्बलता व कष्ट। सांघातिक मृत्युतुल्य मुसीबत। मानसिक चिन्ता, आन्तरिक शक्ति की मजबूती, गुप्त युक्तियों का अन्धाधुन्ध प्रयोग। हठी, अन्त में नाम व शक्ति की स्थिरता।

केतु पंचम भाव में—धनकोष में कई बार हानि। कुटुम्ब में कमी। धन बढ़ाने का अपार परिश्रम। इज्जत की चिन्ता के लिए भारी चिन्ता। अन्त में धन एकत्र कर ले।

केतु षष्ठम भाव में—पुरुषार्थ बल, बाहुबल। धैर्य, उन्नति, अधिक दौड़-धूप से अधिक सफलता। आशायुक्त होकर अन्धाधुन्ध बाहुबल का प्रयोग। कमजोर होते हुए आगे बढ़ने वाला, प्रभावशाली।

केतु सप्तम भाव में—घर छोड़कर परदेश भ्रमण, विदेश में सुख, घर में मकान, भूमि, सवारी आदि का नुकसान तथा माता की आयु कम। सुख साधन की कमी। हठयोग से गुप्त सुख, अनुभव, घोर संकट के समय भी महान् धैर्य, अन्त में सुख की मजबूती।

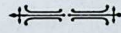
केतु अष्टम भाव में—विद्या सन्तान में हानि, बुद्धि की कमी, शिक्षा के समय बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ। शब्द बोलने में हिचकिचाहट, दिमागी चिन्ताएँ, तीक्ष्ण मिजाज। पढ़ने का बोझ, दिमाग सँभल न सके। बच्चों को पालना कठिन पड़ जाए।

केतु नवम भाव में—बहादुर, गहरी कठोर युक्तियों से युक्त, शत्रु का काल। मामा का नुकसान, शील का उलंघन। स्वार्थ सिद्धि में पाप-पुण्य न देखना, निडर, महान, बड़ा खतरनाक।

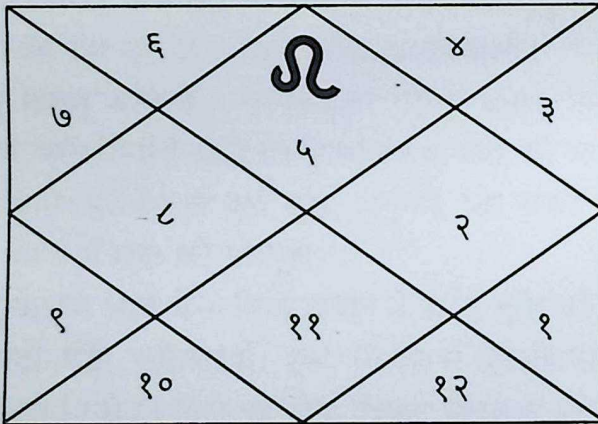
केतु दशम भाव में—दैनिक रोजगार में कठिनाइयाँ, महान् बाहुबल का गुप्त परिश्रम। रोजगार में घोर निराशा, पत्नी की आयु कम, पत्नी से परेशान तथा पत्नी क्लेशयुक्त, रोगिणी, गृहस्थी में परिश्रम, एक स्त्री से पार न पाना।

केतु एकादश भाव में—पेट के अन्दर अन्दरुनी शिकायत, गुदा रोगी, आयु में गहरे खतरे। पुरातत्त्व में हानि। भविष्य कहने की शक्ति। दिनचर्या में महान् परिश्रम, अन्त में किसी स्थिर शक्ति को पाना।

केतु द्वादश भाव में—भाग्योन्नति में बड़ी-बड़ी रुकावटें, भाग्य की निराशाएँ, देवतागण ध्यान न दें। अन्त में परिश्रम से भाग्य की उन्नति। धर्म में कमी, धर्म यात्रा में हानि। तामसी धर्म का पालन। गुप्त मन्त्रणा, गुप्त बाहुबल, दिखावटी धर्मात्मा।



सिंह लग्न



सिंह लग्न में सूर्य का फल

सूर्य प्रथम भाव में—विशेष भाग्यवान, सुन्दर तेजस्वी, माथा ऊँचा, भाई-बहनों की कोई परवाह नहीं, धर्म का विशेष ज्ञान, सैकड़ों शिष्य, यश, मान, प्रतिष्ठा वाला। भ्रमण में श्रेष्ठता, धार्मिक भ्रमण, आत्मज्ञान, ईश्वरीय ज्ञान, परोपकारी प्रसिद्धि। बन्दूक, पिस्तौल, नाम की मुहर। भाग्योदय पाँच बार।

सूर्य द्वितीय भाव में—मान, प्रतिष्ठा, प्रताप, सुख वृद्धि। पिता से

नीरसता, बड़प्पन, माता का सहायक, माता जैसा सुख, परिश्रमी, दौड़-धूप। मकान, भूमि की वृद्धि, स्वाभिमानी। पिता की तरफदारी करे परन्तु पिता इसकी बात को न माने।

सूर्य तृतीय भाव में—सुन्दर सुडौल देह, जन्म का व्यापारी, अधिक-से-अधिक लाभ। देह को सिंह के समान बलवान बनावे, सन्तान शिक्षित। वाणी में प्रभाव, दूरदर्शी, धनाढ्य। अगले जन्म में स्वर्णकार के घर जन्म लेगा तथा उत्तम शिल्पकार बनेगा।

सूर्य चतुर्थ भाव में—दुर्बल देह, जन्म से ही खर्च बढ़ा, ऋणी, आत्मा कमजोर, खर्च अधिक। शत्रु पर सिंह के समान आक्रामक। अन्य स्थानों में सुखी, प्रभावशाली व धनाढ्य, कुछ अकेलापन। भ्रमण की शक्ति परन्तु भ्रमण लाभकारी नहीं अन्य स्थान में विशेष लाभ। पिछले जन्म में इसने किसी तेजस्वी साधु की आत्मा को दुख पहुँचाया था, इस कारण धन घटता जाता है।

सूर्य पंचम भाव में—देह में ईश्वर का निवास, शेर जैसा प्रतापी तथा तेजवान चेहरा, भाग्य का बलवान। संसार की सभी वस्तुएँ इसीके लिए। लम्बी गौरवमयी देह, दैनिक रोजगार पर ओछी निगाह। स्वाभिमानी, देहाभिमानी, शूरवीर। जहाँ जाए वहीं कुर्सी मिले। अधिक न जीवे, जब तक जीवे मस्त रहे। भाग्योदय पाँच बार।

सूर्य षष्ठम भाव में—पिता के धन पर अधिकार, धनी, धन से वृद्धि, दिनचर्या में अमीरी। पुरातत्त्व का लाभ। मृत्यु में गौरव, स्वर्ग प्राप्ति। आयु उत्तम, कुटुम्ब का प्रभाव। जीवन की सहायक किसी पूर्वशक्ति का लाभ।

सूर्य सप्तम भाव में—पुरुषार्थी पर पुरुषार्थ की वृद्धि में असफलता। भाग्य में वृद्धि, ईश्वर में विश्वास। धर्म को महत्त्व, बहन भाइयों से असन्तोष। मानयुक्त परतन्त्रता। कभी-कभी महान् निराशाओं का योग। साहसी, भाग्यवान् तथा धनवान।

सूर्य अष्टम भाव में—माता की आयु उत्तम, जमीन, जायदाद, मकान का सुख, सवारी का उत्तम सुख, माता की सी सूरत। अपने स्थान में निवास। पिता से तथा व्यापार में नीरसता। राज्य से वैमनस्य। जनता में प्रभाव की

महान् शक्ति, निर्भय, शान्ति इच्छुक और स्वाभिमानी ।

सूर्य नवम भाव में—शिक्षा में डिग्री, सन्तान तेजस्वी और भाग्यवान् । वाणी तथा देह में महान् प्रभाव । विज्ञान तथा बिजली का विद्वान् । आत्म शक्ति से दूर-दूर की बातें सोचना । प्रभावशाली, प्रधान शिक्षक । सन्तान को बन्दूक मिल जाए ।

सूर्य दशम भाव में—शत्रुओं पर विजय, कुछ परतन्त्रता, दुखी । अधिक खर्च, ननसाल कष्टमय । मुसीबतों की परवाह नहीं । दाँव पेच का ज्ञान, बहादुर तथा क्रोधी, शत्रुओं से अक्सर टक्कर ।

सूर्य एकादश भाव में—दैनिक रोजी में झगड़ा । पत्नी के विषय में नीरसता । घर में तथा सांझे में परतन्त्र सा । आत्मा में अशान्ति, अतृप्त, दूरदर्शी, प्रभावशाली । देह में शत्रु द्वारा चिह्न । विवाह से पहले पत्नी को देखे परन्तु पसन्द न आवे ।

सूर्य द्वादश भाव में—अन्य स्थान में सुख तथा उम्र बढ़े । पेचीदा गूढ़ युक्तियों से कार्य कुशल । धन कमाने का पूरा ध्यान । देह में सुन्दरता की कमी परन्तु बड़प्पन । दिनचर्या में गौरव, कठिन परिश्रमी, मृत्यु ज्वर में, स्वर्ग गमन ।

सिंह लग्न में चन्द्रमा

चन्द्रमा प्रथम भाव में—भाग्य में खर्च ही खर्च लिखा है । भाग्य कमजोर । धर्म में भ्रमात्मक निष्ठा, देवी देवता साथ न दें, परन्तु अन्य स्थानों में भाग्य का उत्थान, दूर मन्दिरों में दर्शन करने से भाग्य बढ़े, वैसे पुरुषार्थ में कमी । मन में अशान्ति ।

चन्द्रमा द्वितीय भाव में—पिता कष्टमय, नौकरी देर से लगे परन्तु छूट जाए । अन्य स्थानों में नौकरी तथा व्यापार मिल जाए । स्थानीय व्यापार में हानि । राजसमाज में मान हानि । मकान, जायदाद माता इन सबमें कमजोरी परन्तु दूर निकल जाने से सबका सुख, सुखशान्ति में कमी । राजसमाज में खर्च । हेरा-फेरी के कामों में लाभ । चाचा-ताऊ की नौकरी के विषय में शिकायत तथा उलझन करें, इसका जन्म हुआ और पिता का कारोबार छूटा ।

चन्द्रमा तृतीय भाव में—स्थानीय व्यापारों में भारी हानि। चाचा-ताऊ द्वारा व्यापार तथा मुनाफे में चोट। जो कमावे सो खर्च हो जाए। विद्या में कमजोर। सन्तान भी खर्च करने वाली। बुद्धि में हेर-फेर की बातें। आवश्यकता की वस्तुओं में कमी, मन में दुखी परन्तु बाहर से प्रसन्न। अगले जन्म में मोती का व्यापार करेगा।

चन्द्रमा चतुर्थ भाव में—खर्च का धनी, खर्च करने पर कन्ट्रोल, खर्च करने के लिए पैदा हुआ। बाहरी सम्बन्धों के खर्च में भारी लाभ। बाहरी स्थानों से मन में प्रसन्नता। खर्च में गौरव व चमत्कार, खर्च रुक नहीं सकता। शुभ कामों में खर्च। ननसाल में कमजोरी, चौकस, नरमाई से काम ले। पिछले जन्म में बड़ा प्रतापी साधु ब्राह्मण था और प्रत्येक को आशीर्वाद देता था तथा औषधियों से दुःख दूर करता था।

चन्द्रमा पंचम भाव में—बाहरी स्थानों से अच्छा सम्बन्ध। भ्रमण, देह में कमजोरी, मन अशान्त, मानसिक चिन्ताएँ। सुन्दरता में कमी, प्रभावशाली खर्च। स्त्री स्थान के बाहरी सम्बन्ध में खर्च, दैनिक रोजगार में कमजोरी, कमजोर हृदय, भ्रमित मन। बाहरी स्थानों में मनोबल बढ़े।

चन्द्रमा षष्ठम भाव में—पिता का धन सब खर्च कर दिया। यदि यह खर्च अन्यत्र होता तो भाग्य खुल जाते, उम्र बढ़ जाती। कुटुम्ब में हानि। अधिक व्यय, दिखावटी अमीरी। ताऊ भी पिता के धन पर कब्जा दिखावे।

चन्द्रमा सप्तम भाव में—बाहुबल कमजोर, बहनें अधिक परन्तु बहनों का जीवन कष्टमय। मनोबल कमजोर, भाग्य वृद्धि, बाहरी दूसरे स्थानों के सम्बन्ध, बल पराक्रम बढ़ें। मन की कमजोरी छिपाना, भाई-बहनों पर अधिक खर्च।

चन्द्रमा अष्टम भाव में—माता की आयु कम, सुख शान्ति में बाधा, मकान-सवारी बिक जाए। मनोयोग से परिश्रम द्वारा अनेक दिक्कतें सहकर इज्जत पाने वाला। पिता के तुल्य किसी अन्य मनुष्य का सहारा पाना। घर के अन्दर अनेक प्रकार के मानसिक कष्ट।

चन्द्रमा नवम भाव में—बाहर बुद्धि बढ़े, बुद्धि तथा मनोबल द्वारा खर्च की संचालन शक्ति, सन्तान पर अधिक खर्च। सन्तान पक्ष में हानि।

विद्या में तथा ज्ञान में कमजोरी। हेर-फेर की बातों से दूसरे को चक्कर में डालना। दिमाग में खर्च सम्बन्धी परेशानी। चाचा-ताऊ इसकी किसी सन्तान को गोद में या नौकर रख लें। विचार में अनेक उधेड़-बुन, दूर की सोचना।

चन्द्रमा दशम भाव में—खर्च में परतन्त्रता, शत्रुओं पर, रोगों पर मित्रों पर विशेष खर्च। मन के अन्दर बन्धन सा। पेचीदा मामलों में मन को थकान, शत्रु से नरमाई, ननसाल में गरीबी, प्रभाव में कमी परन्तु शत्रु भी हानि उठावें।

चन्द्रमा एकादश भाव में—गृहस्थी में बहुत खर्च, पत्नी इसके चाचा-ताऊ के बहकावे में आ जाए। बाहरी स्थानों से रोजगार, स्थानीय रोजी में विशेष बेकार खर्च। चिन्तित, मन अशांत।

चन्द्रमा द्वादश भाव में—बेकार खर्च न हो, परन्तु खर्च फिर भी अधिक, मृत्यु के समय अधिक खर्च। खर्च की कमी महसूस। बाहरी स्थानों से सम्बन्धित गूढ़ विषय की जानकारी, धनकोष में कमजोरी, आयु में कमी। चिन्तित, चाचा-ताऊ का शीघ्र देहान्त।

सिंह लग्न में मंगल

मंगल प्रथम भाव में—माँ तो भाग्यवान् थी ही, यह पुत्र भी भाग्यवान् है, जमीन मकान सवारी और माता का सुख पूर्णरूपेण इसके भाग्य में लिखा है, भूमि द्वारा भाग्य चेतगा। जब यह उत्पन्न हुआ तभी मकान बना। धर्म का गहरा पालन। ईश्वर में अटल विश्वास। यशस्वी, मानयुक्त, घर में हथियार। पिता की रोजी में उन्नति। भाग्योदय आठ बार।

मंगल द्वितीय भाव में—भूमि पिता के नाम खरीदे, राज में सम्मान। भाग्य में सरकारी सेवा लिखी है, सवारी सरकारी, रहने को मकान सरकारी। वैभवयुक्त। इसकी विशेष उन्नति पूर्व जन्म के धर्मबल से है। सत्य शान्ति, प्रभावशाली, कर्मेष्ठी, पिता से माता की कम बनी। माता कहती है कि नौकरी कर।

मंगल तृतीय भाव में—व्यापार में भाग्योदय। दुकान मकान एक जगह, माता कहती है कि व्यापार कर। धन संग्रह में प्रकृति सहायक। सवारी

की दुकान, हथियारों की दुकान। शत्रु पर महान् प्रभाव, विद्या बुद्धि तथा सन्तान के सम्बन्ध में पूरी जानकारी। पूर्व जन्म के पुण्यों से सफलताएँ। अगले जन्म में भी बड़ा भाग्यवान, भूमिपति बनेगा यदि उत्तम दान पुण्य करता रहेगा।

मंगल चतुर्थ भाव में—भाग्य का कमजोर, सुख में कमी। सवारी में चोट, सीने पर चोट, माता की आयु कम, सुख शान्ति में बाधा तथा विशेष खर्च। मकान भूमि को हानि, शत्रुओं पर प्रभाव परन्तु अन्य स्थानों में पुरुषार्थ की वृद्धि तथा सुख शान्ति। अपने मकान में रह न सके, मंगली, पिछले जन्म में किसी की भूमि हड़प ली थी तथा यात्रा में किसी का धन लूट लिया था। हृदय रोग।

मंगल पंचम भाव में—मान-सम्मान, वैभव, प्रभाव, भूमि सवारी तथा हथियार युक्त। क्रोधी, भाग्य का बली। माता का प्यारा, पिता से अनबन। पत्नी को सतावे, मंगली, जब उत्पन्न हुआ तब से घर का भाग्य खुल गया। देह में दैवी शक्ति का वास, मनोकामना सिद्धि। सुन्दर, शूरवीर, नाम की मुहर।

मंगल षष्ठम भाव में—भाग्य का धनी, पिता के धन का अधिकार। माता के पास धनकोष की चाबी रहती है। कुटुम्ब में प्रभावशाली, विद्या बुद्धि में सज्जनता। बातचीत में सज्जनता तथा गम्भीरता। कुछ भूमि कुटुम्ब वालों को भी मिले। भाग्यशाली, ईश्वर प्रेम, दुर्गा जी का सेवक, देवों के दर्शन।

मंगल सप्तम भाव में—विशेष भाग्यवान, बाहुबल से सफलता, प्रकृति की सहायता से उन्नति पर अग्रसर। यश, प्रभाव, धार्मिक, ननसाल में बड़प्पन। पिता से नीरसता, सम्मान में वृद्धि, बहन भाई युक्त, साहसी। भाई भी भाग्यवान।

मंगल अष्टम भाव में—माता का पूर्ण सुख, माता क्रोधी। मकान सवारी का अपना सुख। अपने ही स्थान में भाग्योदय। जब से माता आई है तभी से कुटुम्ब का भाग्योदय, सुख में मस्त। रोजगार, राजसमाज तथा मान वृद्धि। भाग्योदय सात बार।

मंगल नवम भाव में—गूढ़ ज्ञानी, विद्या में बड़प्पन। माता इसके पुत्रों

को बहुत चाहती है। आयु पूर्ण, सुखी, व्यापार में बहुत लाभ। शिक्षा विभाग या रक्षा विभाग का मन्त्री, वाणी में सज्जनता।

मंगल दशम भाव में—ननसाल सुखी, शत्रु भंजन, पराक्रमी, साहसी। निरोग काया, तमोगुणी, माता की आयु कम। सुख शान्ति में कमी। भाग्योदय में रुकावटें, अन्य स्थान में सुख, भाग्योदय तथा धन लाभ, दैवी सहायता। धर्म की आड़ में कुछ नाजायज तरक्की, घुटने में चोट।

मंगल एकादश भाव में—माता बहू से बनाना चाहती है, परन्तु न बने, वैसे बहू माता ने ही पसन्द की। दैनिक रोजगार में सुखी होते हुए असन्तोष। मकान पत्नी के नाम, भाग्यवान, ससुराल भाग्यवान।

मंगल द्वादश भाव में—माता की आयु कम, सुख में कमी, मकान पुराना गिर जाए। यश प्राप्त न हो, दूसरे शहरों के योग से सुख, भाग्य वृद्धि। उन्नति के लिए बड़े-बड़े सुख त्यागना। गुप्त मार्ग से लाभ, पिता की रोजी में घाटा, पैरों में चोट।

सिंह लग्न में बुध

बुध प्रथम भाव में—भाग्यवान, भाग्य की शक्ति से अनेक व्यापार, अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति। धर्म शक्ति से विवेक द्वारा लाभ। धन की शक्ति से धर्म का पालन, पिता का धन भाग्य में लिखा है। पिता के धन से व्यापार यश व सफलता। छः बहन-भाई। माननीय, चतुर।

बुध द्वितीय भाव में—सरकार से लाभ, सरकार से व्यापार का लाभ, परमिट कोटे मिलें। पिता प्रसन्न होकर धन दे, धन की उन्नति में कुछ बंधनयुक्त व मानयुक्त। भूमि, मकान, सवारी व अनेक ऐश्वर्य, प्रतिष्ठित।

बुध तृतीय भाव में—भाग्योदय तीन बार। बड़े-बड़े कल कारखाने पिता के धन से नाम हो जाएँ। विवेकयुक्त, अनेक प्रकार के स्वतः लाभ, आवश्यकताओं की स्वतः पूर्ति। मिट्टी पकड़े सोना हो, प्रत्येक कार्य में लाभ। काम-धन्धों में पूरे कुटुम्ब को लगा दिया। मकान में दक्षिण-पूर्व में धन गढ़ा है। रोजगारों में व्यय सार्थक है। अगले जन्म में भी ठोस व्यापारी बनेगा।

बुध चतुर्थ भाव में—बहुत धन खर्च, बार-बार व्यापार में धन का

नुकसान। अनेक कार्यों के बहाने धन की हानि। जब से उत्पन्न हुआ है तब से अनेक काम-धन्धों में पिता का धन नष्ट होता रहा। कुटुम्ब सुख में हानि। बाहरी स्थानों से धन की प्राप्ति। प्रत्येक कार्य धन खर्च करने पर होते दिखाई देते हैं। खर्च करने से ही अमीरी का योग। पिछले जन्म में किसी कुटुम्बी की दूकान लूट ली थी, उसके शाप से अब संकट भोग रहा है।

बुध पंचम भाव में—प्रत्येक कार्य करने में चतुर। सूरत से ही धनाढ्य। विवेक की शक्ति, पिता के धन से दैनिक रोजगार में सफलता। स्त्री स्थान में महान् लाभ, नए-नए कार्य स्वतः सिर पड़ते रहें और उन सबमें लाभ। लक्ष्मी पुत्र, धन खेंचने की तरकीबों में चतुर।

बुध षष्ठम भाव में—विवेक बल से पिता के धन पर पूर्ण रूपेण अधिकार। श्रेष्ठ धन संग्रह, मोटी आमदनी, धन के मामलों में लापरवाह। भारी इज्जत, बड़ा कुटुम्ब, पूरा कुटुम्ब धनवान्। पिता ने कुछ धन जमीन में दबा दिया। मकान में उत्तर-पूर्व में धन गढ़ा है। भाग्योदय छः बार।

बुध सप्तम भाव में—बन्धुगण लाभ में, रोजगार भाईयों को। पिता का धन भाइयों को। भाग्य वृद्धि में, धन वृद्धि में कुछ बंधन सा। बाहुबली, पुरुषार्थी, बाहुबल से रोजगार। भाइयों के साझे में रोजगार। रोजगार सम्बन्धी अनेक प्रकार की उधेड़-बुन। भाग्यवान् व धनवान्।

बुध अष्टम भाव में—घर में ही कारोबार, घर में ही दुकान। माता का सुख, व्यापार में सवारियाँ भी हों। राजसमाज में मान। सर्विस मिल सकती है। कुटुम्बी माता की तरफ, पिता सुखी, पिता के धन से मकान बने। सजावट, आभूषण, सुन्दर कढ़े हुए वस्त्र आदि का सुख। बड़े भाई ने अपना धन माता को सौंप रखा है। स्वयं का धन भी माता के पास है।

बुध नवम भाव में—शिल्पकार, मस्तक में अनेक रोजगारों की योजना। वाक्-सिद्धि, सन्तान भी बड़े व्यापारी। ज्यों-ज्यों पुत्र उत्पन्न हुए त्यों-त्यों रोजगार बढ़े। विद्या बुद्धि से धन कमाना। बड़ी-बड़ी कीमती बातें कहना। गुणी, विद्यावान्, चतुर, साधारण वकील। स्वार्थ सिद्धि।

बुध दशम भाव में—जब से उत्पन्न हुआ है पिता का धन नष्ट होता रहा, व्यापार ठप्प होता रहा। धन मुकद्दमों में लग गया, व्यापार शत्रुओं पर

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

चला गया। कुछ कार्य मामा ने सँभाल लिया, खूब खर्च, गुप्त रूप से चतुर। स्थान बदल देने से व्यापार सही, धन प्राप्ति, सुखमय जीवन, फिर भी धन पास में नहीं रहेगा, ऋण से दबा। त्याग, संन्यास।

बुध एकादश भाव में—उत्तम रोजगार देखकर कुटुम्ब ने विवाह करवा दिया। जबसे विवाह हुआ ससुराल वाले भी मालामाल हो गए। पिता के धन को तथा आदमी को पत्नी सँभालकर रखती है। व्यापार पत्नी के नाम भी।

बुध द्वादश भाव में—धन कोष की हानि, रोजगार में घाटा, दुकान गिर जाए। अनेक युक्तियाँ होने पर भी कोई युक्ति काम न दे। ज्यों-ज्यों धन नष्ट हो या व्यापार में हानि हो त्यों-त्यों आयु कम दिखाई दे। धन की कमी हो, अन्य स्थानों में कारोबार चलेंगे तथा धन का सुख अवश्य प्राप्त होगा। त्याग, संन्यास।

सिंह लग्न में गुरु

गुरु प्रथम भाव में—भाग्य में विद्या, सन्तान भाग्यवान्, स्वयं का भाग्य कुछ कमजोर। पहले साले के पुत्र हुआ फिर अपने पुत्र हुआ। साले का पुत्र कमजोर, अपना पुत्र पुरुषार्थी, भाग्य में परेशानी। विद्या-बुद्धि की गुप्त शक्ति, दूरदर्शी, कानूनी, यश प्राप्ति में न्यूनता।

गुरु द्वितीय भाव में—पिता की आयु कम, राजसमाज में मान पाने के लिए बड़ी दौड़-धूप, धन की वृद्धि, आय वृद्धि। माता सुखी, भूमि मकान का सुख। कार्य कुशल, नौकरी में हानि, सन्तान को नौकरी, सन्तान का बाबा से मोह, ननसाल में हानि।

गुरु तृतीय भाव में—शिक्षित, सन्तान व्यापार से लग जाए। पाँच पुत्र व पुत्री। रोजगार में कमी, लाभ में परेशानी। अपना पैसा कम पटे। गृहस्थ में असुविधाएँ। भाई-बहनों से कुछ न्यूनता, सन्तान भाग्यशाली, जीवन सुखी, अगले जन्म में श्मशान से लाभ उठाने वाला बनेगा।

गुरु चतुर्थ भाव में—सन्तान में न्यूनता, सन्तान के पीछे महान् खर्च। सन्तान बहुत रकम बिगाड़ दे। शिक्षा में कमी, बाहरी स्थानों का ज्ञान, परन्तु

अन्य बाहरी स्थानों से गौरव तथा धन की प्राप्ति। पिछले जन्म में किसी की सन्तान का अपहरण किया था इसके कारण अब दुख भोग रहा है।

गुरु पंचम भाव में—आयु की साधारण कमी, परन्तु जीवन गौरवमय। सन्तान का तथा भाग्य का विशेष प्रेम। ईश्वरीय सहायता, देवताओं का प्रेम। पाँच गौरवशाली विद्वान पुत्र। अन्तर ज्ञान, पांडित्य, गृहस्थ में नीरसता, हृदय बल, स्वाभिमान, बड़प्पन।

गुरु षष्ठम भाव में—सन्तान पिता के धन पर काबू कर ले। अलमारी की चाबी पुत्र के पास। जीवन की दिनचर्या कुछ बन्धनयुक्त। सन्तान से परेशानी, धन का नुकसान भी, धन संग्रह भी। बाहरी स्थानों से विशेष लाभ। जन्म के बाद कुटुम्ब में पाँच मृत्यु।

गुरु सप्तम भाव में—पुरुषार्थी, उत्तम आयु, पाँच भाइयों में कमी, भाइयों को बड़प्पन, शिक्षित सन्तान से नीरसता, सन्तान भाइयों को प्राप्त, विद्या बुद्धि के बल पर भाग्योदय। दैनिक रोजगार में अभाव। मजबूत विचार।

गुरु अष्टम भाव में—माता की आयु कम, बच्चे अपनी दादी से लिपटे रहते हैं। सन्तान सवारी खरीदे तथा मकान बनवावे। जब घर बना तब पुत्र उत्पन्न हुआ। सुखी जीवन, अन्य शहरों में सुख शान्ति, धन संग्रह तथा सन्तान सुख। पुण्य कार्य में खर्च, कुछ बड़प्पन में कमी।

गुरु नवम भाव में—पाँच पुत्रों में कुछ कमी। गूढ़ विद्याओं का ज्ञाता, विद्या ग्रहण करने में कुछ परेशानी परन्तु फिर भी बुद्धिमान तथा विद्वान्। सन्तान को अन्य स्थानों में अधिक लाभ, उत्तम आय, दिमाग में योजनाएँ, बड़ी पेचीदी बातें। ज्योतिष, वैद्यक, कानून से प्रेम, सन्तान को भी यही शौक, वाक् सिद्धि। विदेश में डिग्री प्राप्त, विदेश में पाँच बार भाग्योदय।

गुरु दशम भाव में—विद्या की कमी, दिनचर्या में अशान्ति। शत्रु समान सन्तान, सन्तान शत्रु के गीत गावे, अपनी विद्या अपना शत्रु हो जाए। अपनी ही वाणी से मित्र शत्रु बन जाए, शत्रु भी धोखा खावे, शत्रुओं की उम्र कम। गुप्त चतुर, हृदय का शान्त, जीवन में मस्ती की कमी। उत्तम कार्यों में खर्च, मन्दिर की योजना।

गुरु एकादश भाव में—दीर्घायु, पत्नी की आयु कम, विदेश योग से

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

दैनिक रोजगार। रोजगारों में दिक्कतें, भाई-बहनों से नीरसता, भोगादिक का अनुचित लाभ, सन्तान के विवाह में कुछ बाधा, सन्तान गोद माँगी जाए।

गुरु द्वादश भाव में—अधिक आयु का योग, सन्तान कष्ट परन्तु सन्तान की भी आयु कुछ अच्छी। विद्या में कमी रह गई, सन्तान बीमार। दिनचर्या में पूरी मस्ती, खूब खर्च, माता के सुख में कमी। अन्य स्थान से डिग्री प्राप्त, धन वृद्धि का इच्छुक, कूटनीतिज्ञ, हृदय रोग न हो।

सिंह लग्न में शुक्र

शुक्र प्रथम भाव में—भाग्यशक्ति से सफलता। भाई-बहन सहायक, पिता भी स्वयं सहायक। चतुराई से, पिछले जन्म के कर्मयोगों से भाग्य वृद्धि व धन वृद्धि व सरकारी नौकरी। ईश्वरीय सहायताओं का चमत्कार। यश, प्रशंसा, राजसमाज में मान। बाहुबली, सज्जनता, प्रभावशाली। जब इसका भाग्योदय हुआ तब भाइयों का भी भाग्योदय हुआ तभी पिता का भाग्योदय हो गया।

शुक्र द्वितीय भाव में—बड़ी कूटनीति तथा चतुरता से सरकारी सेवा में उच्चपद। भाइयों को बहनों को भी राजसमाज से लाभ तथा पिता उच्च कुर्सी पर। उमंगों वाला, वैभवयुक्त, परिश्रमी, स्वाभाविक सरकारी सवारी। धर्म यात्राओं में भाई या बहन साथ जाएँ। भाग्योदय दो बार।

शुक्र तृतीय भाव में—उत्साही, कर्मशील, विद्यावान, भाइयों द्वारा रोजगार में सहायता, वस्त्र के कार्य, सुन्दरता संवरण के कार्य व्यापार में सुन्दरता, चमक, दमक। जवाहरात का काम। सरकारी सहायता, सरकारी धन का प्रयोग। चतुर, पिता द्वारा रोजगारों में सहायता, भाइयों से सांझा। अगले जन्म में खजान्ची बनेगा तथा पुनः सरकारी धन प्राप्त करेगा।

शुक्र चतुर्थ भाव में—अधिक खर्च, पिता का अधिक खर्च, भाइयों पर अनेक खर्च। पिता अपने भाइयों की तरफ झुके। भाइयों में कमी, पिता की आयु कम। नौकरी छूट जाए, इधर भाई का देहान्त, अन्य स्थानों के सम्पर्क से शक्ति प्राप्त। गुप्त शक्ति से कार्य। बल पुरुषार्थ में कमी, अफसर बहुत खुश। पिछले जन्म में अपने भाइयों को बहुत दुःख देता था इस कारण

बल की कमी है।

शुक्र पंचम भाव में—सरकारी नौकरी प्रभु ने लिखी है परन्तु नौकरी में नीरसता। अफसर जलता है। पिता चाहता तो है परन्तु फिर भी मन-मुटाव। भाइयों की भी शक्ति पर मन-मुटाव, व्यापार वृद्धि। देह में बड़प्पन और शोभा।

शुक्र षष्ठम भाव में—पिता अपने धन को सँभालकर रखता है। भाई पिता के धन पर हावी, नौकरी से धन प्राप्ति। दीर्घ आयु, चतुराई विशेष। नौकरी में कुछ नीरसता।

शुक्र सप्तम भाव में—विशेष पुरुषार्थी, भारी परिश्रम। राजसमाज में अतीव आदर। सात भाई-बहन। उद्योगी, नौकरी में उच्चपद, भाग्य वृद्धि। इधर भाई उत्पन्न हुआ उधर नौकरी लगी। यश, मान, चतुराई से उन्नति। बड़ा उत्साही, कार्य कुशल, साहसी।

शुक्र अष्टम भाव में—मकान, भूमि, सवारी का सुख, मकान में सजावटी सामान, मान प्रतिष्ठा, सुख, सरकारी मकान में निवास, पुरुषार्थ और गौरव। कार्य कुशल, भाई का कुछ मकान पर कब्जा।

शुक्र नवम भाव में—महान् शिक्षा शास्त्री, कानूनी, शिक्षा विभाग। सरकारी कार्य, कार्य कुशल, सन्तान को वजीफा, बहन भाई सब शिक्षित। पहले भाई उत्पन्न हुआ तब पुत्र भी उत्पन्न हुआ। पिता शिक्षित तथा गौरव मय, सन्तान बाहुबली, पिता सर्वज्ञ, बातचीत में प्रचुरता, वकील।

शुक्र दशम भाव में—पिता तथा भाई-बहन सब शत्रु समान, ये सब नुकसान पहुँचावे, इनसे मुकदमा, इनके पीछे विशेष खर्च। नौकरी में शिकायतें। अन्य स्थानों में रहने से पिता भाई सभी से मेल तथा नौकरी में लाभ और कोई शिकायत नहीं। बड़ा अफसर ही शरारती है।

शुक्र एकादश भाव में—पिता इसकी पत्नी को तरफदारी करता है। भाई-बहन भी पत्नी का ख्याल रखते हैं, परन्तु पत्नी की सास से नहीं बनती। कार्य कुशल, पुरुषार्थी, साहसी, चतुर, पत्नी भी पुरुषार्थी, दैनिक स्थाई कारोबार, लौकिक उन्नति। भोगादिक का विशेष सुख। पत्नी को भी सर्विस मिल सके।

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

शुक्र द्वादश भाव में—वैभवयुक्त, दीर्घ आयु, दूर-दूर के भ्रमण, मस्ती, नौकरी छूटी व लगी, भाई भागे व आ गए। इच्छा मृत्यु, जब भाई की मृत्यु हो तभी पिता की मृत्यु हो जाए।

सिंह लग्न में शनि

शनि प्रथम भाव में—भाग्य कमजोर, धर्म की हानि से प्रभाव की वृद्धि, स्त्री कमजोर, ईश्वर में कम विश्वास, विशेष पुरुषार्थ। धन के लिए महान् प्रयत्न, पेचीदा चालों से सफलता, अशान्त, यश व वृद्धि की कमी। शत्रु भी भाग्यहीन।

शनि द्वितीय भाव में—पिता का जीवन कष्टमय, नौकरी में शिकायतें। सुख और मकान की कमी। वैसे दैनिक रोजगार उत्तम। राज में मान, प्रयत्न से सफलता। स्त्री भोगादिक की महान् शक्ति, खूब खर्च, युक्तियों से उन्नति। दैनिक कार्यों की महानता से शत्रु पर प्रभाव, कार्य कुशल। पिता नौकरी के खिलाफ। छाती पर तिल।

शनि तृतीय भाव में—विवाह होते ही उत्तम रोजगार से लग गया, पत्नी की राय से रोजगारों में लाभ-ही-लाभ। रोजगारों में कठिनाईयाँ भी। पराक्रम तथा कठिन परिश्रम से कार्यों में लाभ। देह कमजोर, भारी युक्तियों से बड़े-बड़े फायदे, शत्रुओं पर प्रभाव, केवल व्यापारी वर्ग की शत्रुता। दिनचर्या में परेशानी, अधिक लाभ की इच्छा, विद्या में रोक, दीर्घ आयु। अगले जन्म में पत्नी के इशारे से इसकी दुकान लूट ली जाएगी। बाईं भुजा पर तिल।

शनि चतुर्थ भाव में—विवाह में बहुत खर्च, गृहस्थ जीवन में बहुत खर्च। रोग, शत्रु, मुकदमे पर बहुत खर्च। खर्च की ताकत से शत्रुओं पर प्रभाव। धन कोष की वृद्धि, अन्य स्थानों में दैनिक रोजगार में उत्तमता। भाग्य व ईश्वर को कम मानना, भाग्य कमजोर, धर्म में कमजोरी, अशान्ति। पिछले जन्म में अपनी पत्नी को बहुत सताता था, इस कारण अब पत्नी पर खर्च हो रहा है।

शनि पंचम भाव में—विवाह के लिए पत्नी कठिनता से राजी हो।

दैनिक रोजगार में कठिन परिश्रम, शत्रु से परेशानी, देह में रोग, पेट के रोग। कुछ घिराव सा गुप्त चिन्ता। कामेच्छा का विशेष योग। उन्नति के मार्ग में महान् पुरुषार्थ, भारी दौड़-धूप और युक्ति से कार्य। पत्नी से झगड़े का जीवन। मुख पर काला धब्बा।

शनि षष्ठम भाव में—रोग, शत्रु, मुकदमों पर धन व्यय। रोजी के पीछे धन व्यय। माता की आयु कम। मकान में अशान्ति, गृहस्थ में कुछ बंधनयुक्त अशान्त जीवन। मित्र लोग धन माँग कर ले जाएँ परन्तु कभी न लौटावें।

शनि सप्तम भाव में—महान् परिश्रमी, पहलवान, शत्रु पर विजय। ननसाल से लाभ। गृहस्थ जीवन प्रभावशाली, सन्तान पक्ष में अशान्ति, सन्तान कष्ट में। भाग्य व धर्म में कमी, बाहरी स्थानों में प्रभाव, शत्रु इसके भाई की इज्जत करें। पत्नी अपने देवरों के गीत गावें, दाहिनी भुजा पर अनेक तिल।

शनि अष्टम भाव में—माता की आयु कम, माता से क्लेश, सुख में कमी, विकास में कमी, सवारी से हानि, सुन्दरता की कमी। प्रभाव व उन्नति के लिए कठिन परिश्रम और पेचीदा तरकीबों से लाभ, धैर्यवान, रोगादिक संकटों पर विजय, हठी, उदर विकार से तथा मकान की हानि से माता की मृत्यु।

शनि नवम भाव में—शिक्षा मनचाही प्राप्त न हो, विदेशी विद्या में निपुणता। बुद्धिबल से दैनिक रोजगार में सफलता। भोगादिक की बड़ी योजनाएँ, सन्तान विषय की चिन्ता, वैसे अलौकिक ज्ञान। धन वृद्धि में महान् प्रयत्न, दिमाग में परेशानी, कार्य कुशल, शत्रु पर प्रभावित। नितम्ब काले।

शनि दशम भाव में—पत्नी शत्रु को मोहने की सोचे। पत्नी शत्रु जैसा व्यवहार करे। वैसे विवाह होते ही रोग शमन, शत्रु दमन। बहादुर, पहलवान, रोजी में बड़ी मेहनत, परिश्रम ही जीवन, दाहिने पैर में अनेक तिल।

शनि एकादश भाव में—भोगादिक की महान् शक्ति, पत्नी निरोग, ससुराल प्रभावशाली। पत्नी का वैमनस्यतामुक्त प्रभाव। भाग्य कमजोर, लापरवाही, यश में कमी, लौकिक व दैनिक कार्यों में मुस्तैदी। देह में

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

रोग, कष्टमय जीवन। सुख सवारी में बाधा, बड़ा मेहनती, इन्द्रिय पर अनेक तिल।

शनि द्वादश भाव में—पत्नी के आयु में कमी। दैनिक रोजगार में कठिनाइयाँ। विदेश आदि का योग, सन्तान कष्ट, विद्या में कमी, बातचीत में रूखापन, अधिक बोलना, उत्तम आयु, आयु में निराशाएँ, दिनचर्या में अशान्ति, राजसमाज में मान, उन्नति में वृद्धि, शक्तिशाली। शत्रु पर गुप्त चालों से कार्य, बाएँ पैर पर काला दाग।

सिंह लग्न में राहु

राहु प्रथम भाव में—भाग्य में अशान्ति व हानि, धर्मभीरु, ईश्वर भरोसे फिर भी हानि। यश की कमी पर अन्त में असफलता तथा शक्ति सम्पन्न, अनुचित स्वार्थ की पूर्ति। अन्त समय में भाग्य साथ दे।

राहु द्वितीय भाव में—पिता का जीवन कष्टमय तथा परिश्रमी, माता की आयु कम, स्वयं की भी आयु कम। नौकरी में दिक्कतें, पदोन्नति में रुकावट, इज्जत, आवास स्थान में घोर संकट, बड़ी दिक्कतों के बाद राजनीतिक तरकीबों से उन्नति का मार्ग तथा बड़प्पन प्राप्त।

राहु तृतीय भाव में—भारी, आमदनी, मुफ्त का सा धन प्राप्त, अनुचित कार्यों से विशेष लाभ। स्वार्थयुक्त, अधिक नफा की इच्छा, धन की सदा प्यास, यह धन की प्यास अगले जन्म में भी नहीं बुझेगी। भाग्योदय तीन बार।

राहु चतुर्थ भाव में—अधिक खर्च, धन की कमी से कष्ट, ऋणी, बाहरी स्थानों से भी परेशानी। मनोबल में चिन्ता, बहुत समय बाद खर्च तथा चिन्ताओं से मुक्त, पिछले जन्म में किसी मित्र की दुकान में चोरी पिछली दीवार तोड़कर की थी इस कारण ऋण रहता है।

राहु पंचम भाव में—कमजोरी, देह में कमी। चिन्ता, विवाह में परेशानी, विवाह के बाद भी परेशानी, असुन्दर, थकान, संकट, संघातिक चोट। छिपाव शक्ति से कार्य। कुशल, भयभीत। स्वार्थ की योजनाएँ।

राहु षष्ठम भाव में—धन वृद्धि के लिए गुप्त रूप से प्रयत्न, अन्य अनुचित धन का लाभ, धन के विषय में बार-बार हानियाँ, धनाढ्य। कुटुम्ब

में कमी, अशान्तप्रद, परिश्रमी।

राहु सप्तम भाव में—कटु युक्तियों की शक्ति, बाहुबली। बाहु पीड़ा, भाई-बहन से विग्रह, साहसी, शक्ति से रहित, कठिन कार्य करने में समर्थ। गुप्त चतुर, अन्त में सफलता, मुसीबतों की परवाह न करे, धैर्य शक्ति।

राहु अष्टम भाव में—माता की आयु कम। सुख में बाधा, शान्ति में कमी। सवारी से भय, मकान से गिरे, स्थान की कमी। बड़ी कठिनाइयों द्वारा सुख साधन प्राप्त (अन्तिम समय में)।

राहु नवम भाव में—पेचीदा असत्य भाषण से सिद्धि, सन्तान का दिमाग कमजोर, बुद्धि में भय। शिक्षा बोझिल, वाणी में तुतलापन, हकलापन, मन के भाव वाणी से ठीक प्रकार प्रकट न कर सके। मूर्खासी, अशान्त, सोच विचार में डूबा हुआ, सन्तान शीघ्र उत्पन्न, बाद में परिवार नियोजन।

राहु दशम भाव में—पत्नी दुखी, पत्नी से अशान्त। दैनिक रोजी में परेशान। इन्द्री सम्बन्धी विकार, अतृप्त वासनाओं की पूर्ति की इच्छा, गृहस्थ में महान् संकट, अन्त में कुछ मजबूती पाकर दैनिक व्यवस्था में सफल।

राहु एकादश भाव में—पत्नी दुखी, पत्नी से अशान्त। दैनिक रोजी में परेशानी। इन्द्री सम्बन्धी विकार। अतृप्त वासनाओं की पूर्ति की इच्छा, गृहस्थ में महान् संकट। अन्त में कुछ मजबूती पाकर दैनिक व्यवस्था में सफल।

राहु द्वादश भाव में—दिनचर्या में परेशानी। पेट के अन्दरूनी रोग, आयु में कमी, मृत्यु का भय, संघातिक हानि। बहुत-बहुत कठिनाइयाँ सहने के बाद अन्त में शान्ति प्राप्त। गुप्त चिन्तक।

सिंह लग्न में केतु

केतु प्रथम भाव में—भाग्य में दिक्कतें, उन्नति में रुकावट। धर्म पालन में हानियाँ, प्रभुनिष्ठा में कमजोरी, यश में कमी। उग्र धर्म का पालन, भाग्य की उन्नति के लिए महान् परिश्रम, आन्तरिक धैर्य, चिन्तित, अन्त में भाग्यशाली।

केतु द्वितीय भाव में—पिता को हानि, पिता की आयु कम, कारोबार में महान् परिश्रम, नौकरी में भय, इज्जत आबरू में घोर संकट, बड़े धैर्य से दिक्कतों के बाद उन्नति के मार्ग पर अग्रसर, गुप्त पुरुषार्थी।

केतु तृतीय भाव में—कारोबार में न्यून परिश्रम और न्यून लाभ, असन्तोष, अनुचित लाभ को तत्पर, गुप्त धैर्यवान्, विद्या में कमी, अगले जन्म में मछली की योनी प्राप्त करेगा।

केतु चतुर्थ भाव में—बहुत खर्च, बहुत कष्ट से घर चलाना, महान् कठिन परिश्रम, खर्च में घोर संकट। ऋण, बाहरी स्थानों में घोर परिश्रम पर भी अशान्ति, फिर अन्त में खर्च को ढकने की मजबूती प्राप्त, पिछले जन्म में बड़ा भाग्यवान् था परन्तु किसी की सहायता नहीं करता था।

केतु पंचम भाव में—देह में कमजोरी व देह में कमी, मृत्यु तुल्य खतरा। गुप्त रूप से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर, मान व गौरव में कमी, निज शक्ति के गुप्त बल से बड़ा प्रभाव, हेकड़, साहसी, दौड़-धूप वाला जीवन।

केतु षष्ठम भाव में—धनकोष की हानि, निराश न होने वाला। कुटुम्ब में कमी, लौकिक बुद्धि में महान् धैर्य। अन्त में धन की वृद्धि।

केतु सप्तम भाव में—बाहुबल की महान् शक्ति, परिश्रमी, अन्धाधुन्ध कार्यकुशलता, सफलता प्राप्ति की उमंग। साहसी, स्वार्थ सिद्धि, शक्तिशाली।

केतु अष्टम भाव में—उम्र कम, माता की उम्र कम, अपार कष्ट। जन्मभूमि का वियोग, स्थान परिवर्तन। सुख में बाधा, कम आराम, घोर संकट, अन्त में सुख की मजबूती। माता के देहान्त के बाद सुख।

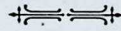
केतु नवम भाव में—अधिक न पढ़ सके। कष्ट (अन्त में सुख) ज्ञान की और बुद्धि की शक्ति से बाहर परिश्रम, दिमाग की शक्ति में अभाव, परेशानी। बात अडिग, अपनी बात को साफ-साफ न कह पाना।

केतु दशम भाव में—शत्रु व रोगों का नाश। ननसाल में हानि, महान् परिश्रम और बाहुबल से विजय। बड़ी-बड़ी मुसीबतों में धैर्यशील का उल्लंघन। बड़ा बहादुर, कठिन कार्य का पूरक, बड़ा प्रभावशाली।

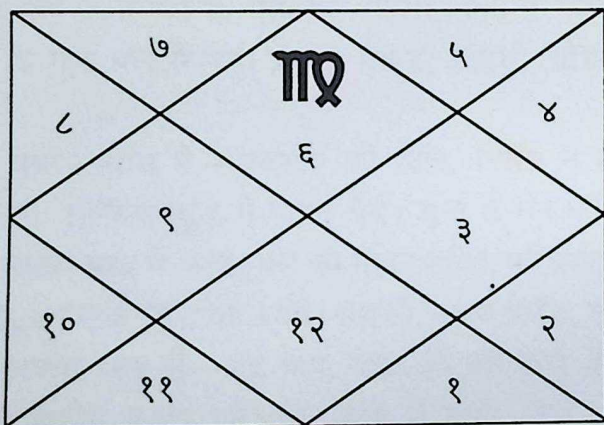
केतु एकादश भाव में—पत्नी की आयु बहुत कम, इन्द्रिय भोगादिक

की शक्ति। दैनिक रोजगार में बड़ी मेहनत, धैर्य से सफल। कभी रोजगार में घोर संकट। गुप्त साहसी।

केतु द्वादश भाव में—दिनचर्या में महान् परेशानी, पेट में कुछ अन्दरूनी बीमारी, गुदा रोग, आयु में संघातिक हानि। अन्त में बड़ी-बड़ी मुसीबतों के बाद निर्वाहक शक्ति प्राप्त।



कन्या लग्न



नोट : सूरत पिता पर, माता तथा निज पत्नी की राय एक।

कन्य लग्न में सूर्य का फल

सूर्य प्रथम भाव में—अन्य स्थानों के सम्पर्क से पुरातत्त्व का लाभ। अधिक खर्च, परन्तु खर्च पर कन्ट्रोल। संचित धन का खर्च, दिनचर्या में शानदार खर्च, मस्ती, विदेश का महान् योग, धन संग्रह को मामूली महत्त्व। किसी चाचा-ताऊ की शानदार मृत्यु। दिनचर्या में विशेष खर्च। दाहिने नेत्र में विकार।

६९३९९४४

सूर्य द्वितीय भाव में—भाग्य न के बराबर, भाग्य में खर्च ही खर्च, चाचा-ताऊ भाग्यवान। ईश्वर भक्ति में कमी, पुरुषार्थ कम। जब से उत्पन्न हुआ है खर्च के मारे पिता को दबना पड़ा, परन्तु फिर भी कभी-कभी बाहरी सम्पर्क से ईश्वर मददगार। सुयश तथा उन्नति के मार्ग में रुकावटें, न्यून धर्म की तरफ झुकाव।

सूर्य तृतीय भाव में—पिता खर्च करने के कारण गरीब, ऋणी, पिता की आयु कम, पिता का जीवन मुकदमों में, नौकरी छूटे। नौकरी के विषय में चाचा-ताऊ की शिकायत परन्तु बाहरी सम्पर्क से नौकरी, रोजगार, आमदनी सब ठीक तथा राजसमाज में वैभव भी बन जाए, राज्य की तरफदारी। बाहरी फैशन, नकल।

सूर्य चतुर्थ भाव में—आमदनी और खर्च बराबर। खर्च के कारण आमदनी रुक जाए। सन्तान पक्ष में हानि, विद्या में विशेष खर्च फिर भी कमी, वाणी में रूखापन, हेर-फेर से खर्च पर काबू, अगले जन्म में चन्द्रवंशी क्षत्रिय के कुल में जन्म लेगा तथा न्याय व नीति का पालन करेगा।

सूर्य पंचम भाव में—खर्च करने पर ड्यूटी, खर्च पर पूरा कन्ट्रोल तथा अधिकार, खर्च करने में निपुणता तथा वैभव, शत्रु पर खर्च से प्रभाव। रोगों का खर्च से इलाज, पिछले जन्म में वैभवशाली सेठ था और बड़ी सख्ती से रुपया वसूल करता था व सूद भी अधिक लेता था इस कारण इस जन्म में खर्च कर रहा है परन्तु खर्च पर कन्ट्रोल है क्योंकि पिछले जन्म में दानी भी था।

सूर्य षष्ठम भाव में—देह में दुर्बलता व गर्मी। खर्च की शक्ति से दैनिक रोजगार पर प्रभाव। अन्य स्थानों में आना-जाना। चिन्ता तथा क्रोध। अधिक खर्च से मकान बनाने की लालसा।

सूर्य सप्तम भाव में—पिता का धन स्वाहा, धनकोष कई बार समाप्त। उत्पन्न होने के बाद एक पिता के बराबर वाले व्यक्ति का देहान्त। इच्छायुक्त खर्च न कर सके। पेचीदा युक्तियों से कार्य, पुरातत्त्व की योजना का लाभ, अन्य स्थानों से हर तरह का लाभ।

सूर्य अष्टम भाव में—भाई-बहनों के विषय में जीवन भर खर्च,

खर्च से पराक्रम बढ़े, पुरुषार्थ बल के प्रयोग से खर्च आ पड़े, परिश्रमी, बड़ा भाई।

सूर्य नवम भाव में—सुख साधन, मकान भूमि, सवारी तथा माता पर विशेष खर्च। माता से वियोग, माता की आयु कम। मान वृद्धि में कमी, खर्च से नौकरी लगे तथा लगी रहे। मकान बनवाने में अधिक खर्च।

सूर्य दशम भाव में—बुद्धि में परेशानी। शिक्षा में विशेष खर्च, सन्तान पर जीवन भर खर्च, सन्तान सम्बन्ध में कुछ कष्टों का अनुभव, वाणी में घुमाव-फिराव की बातें, अपनी बातों को जोरदार बनाना, चंचल दिमाग, चिन्ता।

सूर्य एकादश भाव में—खर्च अधिक, रोगों तथा शत्रुओं के पक्ष में खर्च रोक न सके, खर्च के सम्बन्ध में अड़चन, कुछ झगड़े जो खर्च से शान्त। खर्च के विषय में कुछ अन्य स्थानों का सम्बन्ध। नेत्र पीड़ा।

सूर्य द्वादश भाव में—विवाह में विशेष खर्च, खर्च पत्नी पर, दैनिक रोजगार भी अधिक खर्च करने से चले। स्त्री की आयु कम, गृहस्थ सुख में अशान्ति। देह में दुर्बलता। हेर-फेर से कमजोर।

कन्या लग्न में चन्द्रमा

चन्द्रमा प्रथम भाव में—रोजगार एकदम बंद हो जाए। रोजगार में भारी नुकसान। पुरातत्त्व का लाभ, मानसिक कष्ट, अन्य स्थानों के सम्बन्ध से और मनोयोग के बल से लाभ। बायाँ नेत्र विकार।

चन्द्रमा द्वितीय भाव में—बड़े-बड़े ऊँचे कारोबार भाग्य में लिखे हैं। धर्म में विशेष श्रद्धा, किसी बड़े धर्म की खोज। लक्ष्मीशक्ति की प्राप्ति। उच्च मनोबल तथा उच्च भाग्यबल, पौरुष की कमी, तत्त्वग्राही, दूरदर्शी। उत्तम भाग्योदय दो बार।

चन्द्रमा तृतीय भाव में—सरकारी नौकरी या सरकार से प्राप्त उत्तम रोजगार, कोटा, परमिट इत्यादि। भाग्यवान्, लक्ष्मीपुत्र, पिता भी धनाढ्य, माता सुखी। जमीन, मकान, सवारी का सुख, मनोयोग से तरक्की। धन खर्च करके तुरन्त तरक्की। ठाट-बाट, राजसी भोग, मान प्रतिष्ठा, कर्मिष्ठी।

चन्द्रमा चतुर्थ भाव में—मनोयोग के बल से निजी कारखाने। जल, चाँदी, मोती के रोजगार, स्वमेव सफलता। दिव्य पदार्थ, सन्तान सुख। विद्या विवेक, नक्षत्रधारी, बेफिकर, स्थिर मन वाला। ग्राहक सौ दुकानें छोड़कर इसकी दुकान पर आवे। अगले जन्म में जौहरी बनेगा तथा सुख पाएगा। भाग्योदय चार बार।

चन्द्रमा पंचम भाव में—बहुत खर्च, रोजगारों में बहुत खर्च, रोजगारों में घाटा, दुकान बिक जाए, दिवालिया, ऋणी। दूर की बातें सोचना, शत्रु से शान्त रहना, कुछ रोग व झगड़े। ननसाल से लाभ की योजना। आमदनी में कमजोरी, नीरसतायुक्त। पिछले जन्म में किसी की जवाहरात की चोरी की थी जिस कारण सब धन संकट उठा रहा है।

चन्द्रमा षष्ठम भाव में—तन-मन से प्रसन्न, सुन्दर देह, शान्त, सुन्दर स्त्री। कल कारखाने, सुख भोग, बड़ा मान-सम्मान। विवाह होते ही ससुराल भी भाग्यवान् हो जाए। दिव्य पदार्थ प्राप्त, ऊँचा मनोबल, तेजस्वी, नामवर। विलास की इच्छा, कई रोजगार। सबमें लाभ ही लाभ।

चन्द्रमा सप्तम भाव में—बहुत धन कमाने वाला, बहुत धन संचय। बड़ा कुटुम्ब, जीवन में लाभ, उत्तम आयु। गूढ़ युक्तियों के प्रयोग से फायदा। बड़ा इज्जतदार अमीर। धन वृद्धि का महान् कारण बैंक में शेयर।

चन्द्रमा अष्टम भाव में—कारोबार भाईयों के हित में। कठिन परिश्रम से सामान्य लाभ, धर्म में श्रद्धा, ईश्वर से प्रेम, भाई से क्लेश। मन में अशान्ति, पुरुषार्थ में कमजोरी। परतन्त्रता युक्त रोजगार, चिन्तित। रोजगार की लाइन भाइयों को स्वयं सौंप दे।

चन्द्रमा नवम भाव में—रोजगारों की बढ़ोतरी तथा धन संग्रह से चार मंजिला मकान बनवाना। सुखपूर्वक आमदनी। मकान में दुकानें, भूमि लाभ। माता की दीर्घ आयु तथा जीवन सुखी। सवारी का आनन्द, राज में सम्मान, सुन्दर कर्म, वस्त्राभूषण युक्त। कुछ परमार्थ के लिए भवन निर्माण।

चन्द्रमा दशम भाव में—सन्तान व्यापार में प्रसन्न। बुद्धि द्वारा लाभ, विद्या प्राप्त, गुणी, मानसिक विचारों की प्रधानता, वाणी में शीलता। सन्तान से नीरसता। समझदार, मन में कुछ परेशानी, स्वतः अधिक लाभ।

चन्द्रमा एकादश भाव में—लाभ में कमजोरी, व्यापार से शत्रुता, मानसिक चिंताएँ। आमदनी के लिए परतन्त्र। झंझटयुक्त कर्म। ननसाल से थोड़ा लाभ, शत्रु से शान्ति पूर्ण वार्त्तालाप। बाहरी स्थानों में लाभ।

चन्द्रमा द्वादश भाव में—दैनिक रोजगार में खूब लाभ, कुछ-न-कुछ नित्य दान खाते में भी जमा करता रहे। पत्नी सुन्दर व धार्मिक। सुन्दर भोग-विलास, गृहस्थ में सुख-शान्ति, सुन्दर देह। ससुराल से भारी लाभ। विवाह के बाद ससुराल भी धनाढ्य हो गई, उत्तम रोजगार देखकर विवाह किया गया। चतुर, लौकिक कार्य में सफलता।

कन्या लग्न में मंगल

मंगल प्रथम भाव में—दीर्घायु, जीवन में गुप्त शक्ति का अधिकार। पुरातत्त्व का विशेष लाभ, धन लाभ में कमी, भाई की मृत्यु। विदेश के ससंग्रह से शक्ति-सम्पन्न; गुप्त कर्म के बल का भरोसा। खतरनाक, मस्त, समय का अधिक मूल्य प्राप्त। बड़ा नामवर, प्रभावशाली, कठिन परिश्रम से शक्ति का विकास। मंगली।

मंगल द्वितीय भाव में—पुरातत्त्व का लाभ, बहुत खर्च, माता को हानि, सुख में कमी, जीवन का समय शानदार। पुरुषार्थी, भाई सुखी, गलत रास्ते से मस्ती का लाभ। ईश्वर पर कम श्रद्धा।

मंगल तृतीय भाव में—इसके भाई-बहन व पिता को कष्ट। पुरातत्त्व का लाभ। देह में कष्ट, चेचक, भाई सन्तान को ऊँचा उठाना चाहते हैं, सुख-दुख का विशेष अनुभव, तीक्ष्ण भाषण, गूढ़ चालों द्वारा कर्म की उन्नति। उन्नति के लिए कष्ट। सुख में कमी, मानयुक्त प्रभावशाली, भाइयों को नौकरी परन्तु अपनी नौकरी छूटे।

मंगल चतुर्थ भाव में—रोजगार में भारी गड़बड़ी, लाभ में बहुत कमी, भाई रोजगार को बिगाड़ने पर उतारू। सन्तान बहादुर, धन संग्रह में हानि, गलत तरीके से लाभ पाना। विदेशी सम्बन्धों से उत्तम कारोबार तथा उत्तम लाभ। अगला जन्म विदेश में होगा तथा किसी जीव को गोली से मार देगा।

मंगल पंचम भाव में—बहुत खर्च, शत्रुओं को हानि, ननसाल में हानि। दैनिक रोजगार में हानि, एक भाई की हानि। आयु में संकट, चोट। विदेशी शक्ति का बड़ा भरोसा, काफी समय तक मृत्यु से टक्कर लेना। उदर में चोट। पिछले जन्म में मरते समय अपने भाइयों को कोस रहा था इस कारण संकट में है।

मंगल षष्ठम भाव में—उत्तम आयु, देह में चोट के निशान। चेहरे पर चेचक। पराक्रमी, ऊँचे दर्जे की कूटनीति, गहरी चाल। साहसी, माता की आयु कम, स्त्री क्लेश, भाइयों से नीरसता। जीवन का समय बड़ा शानदार। प्रसिद्ध, फिर भी इसे भाई चाहते हैं। मंगली।

मंगल सप्तम भाव में—जीवन में रईस, उत्तम आयु। भाई पिता के धन को हड़पना चाहे, धन संग्रह में कमी, कुटुम्ब की हानि, गहरी चाल, पुरातत्त्व का लाभ, नामवर, प्रभावशाली, बड़ा वाचाल।

मंगल अष्टम भाव में—तीन भाई, परेशानियों से महान् पुरुषार्थ, भाई को दबाव, कूटनीति, ननसाल तथा पिता को हानि। बाहुबल विशेष, साहसी, धर्मस्थान में हानि, भाग्य कमजोर, शत्रु पक्ष पर प्रभाव।

मंगल नवम भाव में—उत्तम आयु, जीवन में सुख, माता को प्रताड़ना, पत्नी पर दबाव। आमदनी में कुछ कमी, पति की आयु कम। पिता से क्लेश, लापरवाह, भाई माता की तरफदारी में। मंगली, कंधे में चोट।

मंगल दशम भाव में—शिक्षा में डिग्री, नामवर, शानदार जीवन, भाई-बहन सब पढ़े लिखे। विचित्र आविष्कारक, लाभ में कमी व लापरवाही। सन्तान बहादुर, सन्तान तथा भाइयों को रक्षा विभाग, वाणी में कला। बड़ी आयु, क्रोधी, जितना पढ़ना चाहता है उतना न पढ़ सके।

मंगल एकादश भाव में—भाइयों का शत्रु समान व्यवहार। ननसाल पक्ष में हानि। भाई का वियोग, शत्रुओं को आग से तपाना, कड़ुवा, प्रभाव से मुसीबत मोल ले ले। उत्तम आयु, जीवन के समय का तामसी प्रयोग। हेकड़, खूब खर्च। कुछ बंधन में व घिराव में। पिंडली में चोट फोड़ा।

मंगल द्वादश भाव में—मंगली, स्त्री क्लेश, पहली पत्नी न जीवे। भाई का पत्नी से प्रेम-प्यार। पिता को कष्ट, दैनिक कार्य में कठिन परिश्रम।

अच्छी आय, देह में परेशानी। मान उन्नति में महान् परिश्रम। राजसमाज में कड़ी मेहनत।

कन्या लग्न में बुध

बुध प्रथम भाव में—शरीर कृश, मृत्यु भय, आयु कम, पिता की आयु कम, अन्य स्थानों में सुखी। धन वृद्धि में लगा रहे, पुरातत्त्व का लाभ। अपना मत मानना, अपनी जान लड़ाकर उन्नति प्राप्त करना। मस्त जीवन, नौकरी छूटे।

बुध द्वितीय भाव में—भाग्यवान, धर्म कर्म में रत। पिता भी भाग्यवान, पिता से सहायता। कारोबार में सफलता, नौकरी लिखी है, राज में मान। सुन्दर सुसज्जित देह। उचित कर्म का पालन, बहनें अधिक। दैवी सहायता हर समय प्राप्त, राजसी ठाठ, नाम की मुहर लगे।

बुध तृतीय भाव में—केन्द्र में सरकारी नौकरी, वाणिज्य विभाग, पिता की सूरत पर, पिता के से गुण। अफसर प्रसन्न रहे, पिता देखकर प्रसन्न हो जाए। परिश्रमी, शोभायुक्त, बड़े कारोबार, राजसम्मान, मकान भूमि, माता का सुख। प्रबन्धक, स्वाभिमानी वैभवयुक्त। रजोगुणी, हाकिम मिजाज, शीलवान, राजनीतिज्ञ, उन्नतिशील, भाग्योदय तीन बार।

बुध चतुर्थ भाव में—माता का सुख, भूमि लाभ, मकान बने, शान्त वातावरण से परमसुखी, बाद में पिता से लाभ, राज्य कार्यों में उन्नति तथा अपना व्यवसाय भी लाभकारी। खूब आमदनी, खूब खर्च फिर भी संतुलित जीवन।

बुध पंचम भाव में—खूब खर्च, विदेश आदि में निवास, देह कमजोर। पिता कमजोर तथा पिता की आयु कम, कारोबार और मान-प्रतिष्ठा के लिए अन्य स्थान का सहारा, अन्य स्थान में अपनी शक्ति का उदय, शत्रु पक्ष में शान्तियुक्त। ननसाल में प्रेम अकेलापन, अशान्ति, कठिन परिश्रम से खर्च चलाना, पिछले जन्म में पिता पुत्र दोनों खूब खर्च करते थे इस कारण खर्च करने की आदत पड़ी हुई है।

बुध षष्ठम भाव में—पिता का प्यारा, सूरत और गुण पिता के,

सरकारी या प्राईवेट उच्च नौकरी, जँचाव का शरीर। राज ऐश्वर्य, बड़े कारोबार, पत्नी से लापरवाह। इन्द्रिय भोगादिक में कमी, स्वाभिमानी, देहाभिमानी। चतुर बुद्धिमान, कार्यकुशल, छोटे कार्य से नफरत। राजनीतिज्ञ, प्रबन्धक, उन्नतिशील, आत्मज्ञानी। भाग्योदय छः बार।

बुध सप्तम भाव में—धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि का मुख्य ध्येय, पिता पुत्र दोनों ही धन सँभालकर रखते हैं, चतुराई से धन एकत्र, माननीय, कार्यकुशल, कुछ घिराव में रहकर उन्नति।

बुध अष्टम भाव में—देहबल, बाहुबल, ईश्वरवादी, सुन्दर, पुरुषार्थी, स्वाभिमानी। बहनें अधिक, पिता भी भाई की ओर तथा स्वयं भी बहन-भाई की ओर।

बुध नवम भाव में—मकान, भूमि, सवारी, माता का सुख, सरकारी मकान व सवारी। मकान सरकारी किराए पर, माता-पिता की सुलह। स्वयं माता की ओर कभी पिता की ओर, सुन्दर सजावट का मकान, शान्तिपूर्वक उत्तम कारोबार, सुख के अनेक साधन, कर्मशील, सुन्दर देह। मकान पिता के नाम पर खरीदे।

बुध दशम भाव में—पिता पुत्र दोनों ही विद्वान्, बुद्धिबल से रोजगार। सन्तान सुख, आत्मज्ञानी, कानून में भी दखल, योग्य शीलयुक्त, महान् चतुर।

बुध एकादश भाव में—कुछ परतन्त्रता, ननसाल पक्ष में तरक्की, पिता कष्टमय, पिता और ननसाल वालों से वैमनस्य, उन्नति में बाधा, रोग, झगड़े मुफ्त में ही लगे, बहुत खर्च, घिराव व परेशानी, कुछ गौरव। सुन्दरता में कमी, पिछले पाप कर्मों का इस जीवन में भोग, शीलयुक्त।

बुध द्वादश भाव में—पत्नी देखकर विवाह, पिता पुत्र दोनों पत्नी देखने जाएँ, पर गृहस्थ में कुछ परेशानी, पिता से व स्त्री स्थान से कुछ कमी, असुन्दर। कारोबार कमजोर, मान-सम्मान की रक्षा बड़ी कठिनता से कर सके। सम्भोग की कमी। सुख की सेवा, कुछ परतन्त्रता सी, दम्बूपन, स्वाभिमानी, पत्नी से पिता भी दबे, स्वयं भी दबे।

कन्या लग्न में गुरु

गुरु प्रथम भाव में—गृहस्थ जीवन में कष्ट, पत्नी की शीघ्र मृत्यु, माता की आयु कम, पहले माता का देहान्त फिर पत्नी का देहान्त। दैनिक रोजगार में दिक्कतें। खूब खर्च, धन संग्रह की चेष्टा, बड़प्पन, पुरातत्त्व का सुख, उत्तम आयु। छिपी युक्तियों से रोजगार में लाभ, अशान्ति। सुख की कमी, छत से गिरे। हृदय बल से अन्यत्र लाभ-ही-लाभ।

गुरु द्वितीय भाव में—माता व पत्नी भाग्यवान्, जब से विवाह हुआ है दिन-दिन उन्नति हो रही है, भाग्य में जमीन, मकान, सवारी अपनी लिखी है। माता को तथा पत्नी को ईश्वरीय ज्ञान तथा ईश्वरीय शक्ति। सन्तान कष्ट, वाणी में कमी, दूरदर्शी, शान्ति प्रिय। बुद्धि में परेशानी।

गुरु तृतीय भाव में—माता कहती है कि नौकरी कर, पत्नी भी यही चाहती है। पत्नी को भी नौकरी मिल सकती है, प्रतापी, कर्मेष्ठी, राजसी, बड़े कारोबार, धनाढ्य। मकान सरकार को किराए पर या मकान सरकार को दान। सौन्दर्य, मान-सम्मान, शुभ कर्म, शत्रु पर वैभव, सुखी, शान्त, उन्नतिशील।

गुरु चतुर्थ भाव में—माता ने ही रोजगारों को बढ़ा दिया। पत्नी के पैर पड़ते ही कारोबार में आश्चर्यजनक तरक्की हुई। पाँच प्रकार की दुकान। एक सवारी रोजगारों में घूमने के लिए। सन्तान में कमी, बुद्धि में कमजोरी। पुरुषार्थ में सफलता, सुखयुक्त कर्म, बड़ा नफा, त्रुटियुक्त वाणी, मगन हृदय। पिता की रोजी में उन्नति। अगले जन्म में राजयोग प्राप्त करेगा तथा जल विभाग में उन्नति करेगा।

गुरु पंचम भाव में—बहुत खर्च। पहले पत्नी की मृत्यु फिर माता की मृत्यु क्योंकि सास-बहू के विचार एक से। मकान बिके या मकान गिरवी रखकर माता का क्रिया कर्म हो। अन्य बाहरी स्थानों के द्वारा सुख-साधन। आयु बड़ी, विवाह में खूब खर्च। माता खर्च चलाती रहे। पिछले जन्म में किसी की भूमि व पत्नी दोनों ही हड़प ली थी इस कारण कष्ट भोग रहा है।

गुरु षष्ठम भाव में—पत्नी ने इसे देखकर विवाह किया। माता का प्यारा। जमीन मकान इसीके नाम। माता तथा बहू दोनों मिलकर बात करती

हैं। सन्तान बुद्धि वाणी का कष्ट, भाग्यवान् प्रधान, गृहस्थ सुख, बड़प्पन, ज्योतिष का ज्ञान।

गुरु सप्तम भाव में—माता तथा पत्नी दोनों धन को दबाए हुए हैं, पहले माता धन दबाती थी अब पत्नी धन दबाती है। मकानों से धन प्राप्त। विवाह में उत्तम धन प्राप्त। माता के स्थान से तथा पत्नी के स्थान से कुछ बंधन सा। राजसमाज में सुख सम्मान। दिनचर्या में उमंग, उत्तम आयु, कुटुम्ब युक्त। शत्रु पर प्रभाव।

गुरु अष्टम भाव में—माता तथा पत्नी दोनों का झुकाव इसके भाई-बहन की ओर। सुखपूर्वक बहुत रोजगार। विदुषी स्त्री, अच्छा कद, सुख भोग, दिव्य पदार्थ। धर्म में श्रद्धा, भाई-बहन सुखी, भाई के नाम मकान, ससुराल वालों की इसके भाई का भी विवाह करने की इच्छा, भ्राता को सवारी प्राप्त।

गुरु नवम भाव में—बहू सास पर रीझ गई। सास ने बहू को अलग मकान दिलवा दिया। माता बहू सब सुखदायक। विवाह के बाद नौकरी मिल गई, माता को बहू पसन्द आ गई। उत्तम आयु, पुरातत्त्व का सुख, प्रतिष्ठा। भाग्योदय नौ बार।

गुरु दशम भाव में—गृहस्थ में संकट, माता, पत्नी, सन्तान तीनों में कमी व कमजोरी। दैनिक रोजगार में परेशानी, विद्या बुद्धि में कमजोरी, बोलने में हिचक, शान्ति में बाधा, शान्ति और सवारी सन्तान से छीन ली, व्यथित।

गुरु एकादश भाव में—माता किसी के गुण गावे पत्नी किसी के, माता तथा पत्नी की आयु कम। सुख शान्ति में कमी, खूब खर्च, भोग-विलास में कमी। रहन-सहन के स्थान में त्रुटि, माता तथा पत्नी शत्रु पक्ष की ओर, पिता की रोजी घटती रहे।

गुरु द्वादश भाव में—विवाह के लिए माता पत्नी को देखने गई, धन, सुख लाभ। विवाह के बाद सुख की वृद्धि, माता तथा पत्नी का हृदय बलवान, बड़े-बड़े रोजगारों की योजनाओं में सफलता। पत्नी के आते ही दुकानें बनें, कारखाने खुलें, चार दुकानें या चार कारखाने।

कन्या लग्न में शुक्र

शुक्र प्रथम भाव में—कुटुम्ब में किसी महिला का स्वर्गवास, भाग्य में दुर्बलता, धन की हानि, धर्म का ठीक पालन न हो, पर विदेशों आदि में झंझटों सहित सफलता, भाग्य उन्नति के लिए कूटनीति, उत्तम आयु, रईसी ढंग, पुरातत्त्व धन का लाभ, धर्म कर्म में व्यय सार्थक है।

शुक्र द्वितीय भाव में—बड़ा भाग्यशाली, कुटुम्ब के सभी व्यक्ति भाग्यशाली, धर्मात्मा, यश प्राप्त, दूरदर्शी, धन की शक्ति से धर्म करे, धर्म से धन की वृद्धि, उत्तम पुरुषार्थ, सफलता माथा चूमे, माननीय, ईश्वरवादी, मकान के दक्षिण-पश्चिम में धन गढ़ा है, साले से धन प्राप्त, भाग्योदय बार-बार बहुत उत्तम।

शुक्र तृतीय भाव में—भाग्य राजसमाज में खुले, उत्तम पद, राजसेवा, धन वृद्धि, पिता भी भाग्यशाली। जमीन जायदाद, का लाभ। आदरणीय, चतुर।

शुक्र चतुर्थ भाव में—चतुर बुद्धिमान, भाग्य में बड़े रोजगार, भाग्य में सरकारी धन। कर्म बल से लाभ-ही-लाभ, सन्तान सुख, अधिकतर लड़कियाँ, वस्त्राभूषण, दिव्य पदार्थ। लौकिक तथा पारलौकिक ज्ञान, बहुत चतुराई की बातें, दैवयोग से भी सफलता, दानवीर, श्रीमान, अगले जन्म में साहूकारा करेगा।

शुक्र पंचम भाव में—बहुत खर्च, भाग्य कमजोर, चाचा-ताऊ भाग्यवान। अन्य स्थानों के योग से काम चले, अपयश, अशान्ति, शत्रुओं को मित्र बनाना, ननसाल में उत्तमता, धन तथा भाग्य के मामले में नीरसता। धर्म की कुछ हानि, पिता का धन नष्ट होने के बाद कड़ी मेहनत से धन प्राप्ति। पिछले जन्म में किसी स्त्री का मोतियों का हार धर्म स्थान में चुराया था।

शुक्र षष्ठम भाव में—देह में कमजोरी, अधिक शारीरिक परिश्रम से धन कमाना, धन में स्वयं कमी करे, पत्नी बड़े घर की भाग्यवान्, भोगविलास की प्राप्ति में अधिकता। कुछ अड़चनों के बाद कठिन परिश्रम से तरक्की। बड़ी युक्तिवाला, भाग्य की कुछ कमजोरी, चतुरता कम काम दे।

शुक्र सप्तम भाव में—जन्म से ही भाग्यवान, लक्ष्मीपुत्र, पूरे कुटुम्ब

का भाग्य चेत गया। रईसीसुख, बहुत सुन्दर, उत्तम आयु, पुरातत्त्व लाभ। धर्म सम्बन्धी घिराव, पूर्व जन्म के पुण्यों द्वारा दिन दिन वृद्धि, शरीर में ईश्वर शक्ति का निवास, भगवान् के दर्शन, मकान में उत्तर-पूर्व में धन गढ़ा है, भाग्योदय सात बार।

शुक्र अष्टम भाव में—बहनें अधिक और सभी भाग्यवान्, स्वयं भी भाग्यशाली। पुरुषार्थ से कार्य, सुडौल, लौकिक पारलौकिक दोनों पालन, चतुर, उन्नतशील, दूरदर्शी।

शुक्र नवम भाव में—भाग्यवान्, कर्मेष्ठी, माता विदुषी, जमीन जायदाद, कुटुम्बी लोगों ने भी जायदाद बनाई, सुखपूर्वक धन प्राप्ति, धन से सवारी, कार्य कुशल राज में मान, उत्तम नौकरी, सुभोगी, साला अपने भानजों को समझता रहता है।

शुक्र दशम भाव में—चतुर भाग्यवान्, धर्म की पहचान, विद्यावान्, गुणी, कलाकार, ज्योतिष प्रेमी, नीतिज्ञ, पुत्रियाँ अधिक, माननीय बुजुर्गों ढंग। ईश्वरीय चमत्कार का अनुभवी, दूरदर्शी, दयावान्।

शुक्र एकादश भाव में—दिवक्तों से तथा पेचिदा चालों से धन प्राप्ति, धर्म तथा धन के जोर से शत्रु पर विजय। भाग्य में परेशानी, साला परेशान, खूब खर्च करने पर भी बेमजा, ननसाल भाग्यवान्, ईश्वर के विश्वास में कमी।

शुक्र द्वादश भाव में—उच्च भोगशक्ति, धनाढ्य, सुन्दर वस्तुओं के रोजगार, पत्नी सुन्दर, विदुषी तथा बड़ी भाग्यवान्, विवाह पर बहुत धन और मान प्राप्त, देह में कमजोरी, धर्म कार्य, साला अपनी बहन के पास रहना चाहता है, भाग्यबल से गृहस्थ में सुख और सुन्दरता, पत्नी पर व्यय सार्थक है, मकान में दक्षिण में आँगन की तरफ धन गढ़ा है, पत्नी को मिलेगा, साले ने अपना धन बहन को सौंप रखा है।

कन्या लग्न में शनि

शनि प्रथम भाव में—सन्तान कष्ट, सन्तान की उम्र कम, विद्या कम, बेढंगी व गुप्त कटु युक्तियाँ, छिपाव तथा झूठ के मामले में बड़ी योग्यता,

सेवा तथा चिन्ता, धन की प्रबल इच्छा, पुरातत्त्व की हानि। जीवन में बड़े-बड़े संकट, बड़ा बातूनी, नशा सेवन, उदर विकार, गुदा रोग।

शनि द्वितीय भाव में—बड़ा बुद्धिमान, भाग्यवान्। ननसाल से उन्नति, ननसाल भाग्यवान्। झगड़े तथा रोगादि में दक्षता, भाग्यबल तथा बुद्धिबल से शत्रु पर विजय। धर्म का ज्ञान, पाप पुण्य की व्याख्याकारक। भाई से शत्रुता, कायदे का पेचीदा युद्ध प्रिय। क्रोधी, साहसी।

शनि तृतीय भाव में—नौकरी में शिकायतें, पिता से शिकायतें, पिता रोगी, मुकद्दमों में घिराव। नौकरी के लिए शिक्षा पाई, नौकरी छूटे-लगे, बुद्धिबल से सम्मान तथा प्रभाव, युक्तियों से सफलता, खर्च सम्बन्धों में कुछ कड़वाहट, माता से अरुचि, उच्चकार्य प्रवीण, कारोबार में नित्य नई युक्तियाँ।

शनि चतुर्थ भाव में—विद्या रोजगार के लिए, पेचीदे मार्ग को भी हल करे, दिक्कतों को मोल ले, जीवन में अशान्ति, पुरातत्त्व की कमजोरी, देह में कमजोरी, कुछ घिराव, कुछ परतन्त्रता। साहसी, बुद्धिमान, चतुर, शत्रु भी अंत में लाभ पहुँचाए। अगले जन्म में मानव योनि मिलेगी, परन्तु दान करेगा तब। बाई भुजा पर काला दाग।

शनि पंचम भाव में—बेमजा खर्च से परेशान, सन्तान हानि, बुद्धि, विद्या में कमी, अन्य जगह पढ़ सकता है। अपने प्रभाव की कमी, धन पास न ठहरे, धर्म का ध्यान। ननसाल में हानि, कम बोलना। दूर की बातें सोचना, पिछले जन्म में किसी मगर के बच्चे को मार डाला था इस शाप से दुःख भोग रहा है, बाएँ मस्तक या नेत्र पर काला दाग।

शनि षष्ठम भाव में—विजयी, चिन्तित, गम्भीर विचार, सन्तान को बहुत प्यारा, विद्या बुद्धि उत्तम। इंग्लिश फेशन, दैनिक रोजगार में परेशानियाँ, सन्तान से कुछ वियोग, पुरुषार्थी, भाई से विरोध। पिता से तर्क द्वारा मतभेद, सम्मानयुक्त, देह में रोग, उद्यमी, तेजतर्रार, जब पुत्री उत्पन्न हुई तभी से झगड़ा हुआ तथा भाई बीमार पड़ा। पहलवान, मुख पर तिल।

शनि सप्तम भाव में—उच्चशक्ति की प्राप्ति, बड़ा परिश्रमी। माता की आयु कम, दिनचर्या में अशान्ति, आयु की लापरवाही, सन्तान पक्ष में कुछ दिक्कतों के साथ वृद्धि, कन्या अधिक, ननसाल पक्ष से कमी, कुछ

रकम ननसाल में फँसे, दाहिने नेत्र पर अनेक तिल।

शनि अष्टम भाव में—एक पुत्री को भाई पाले, भाई शत्रुओं की बातें में तथा रोगों से घिरा हुआ, पुरुषार्थी, हेकड़, झूठ को भी सत्य साबित करने वाला, साहसी, प्रभावशाली, पहलवान, सन्तान भी हेकड़, भाई पर बुद्धि का प्रभाव।

शनि नवम भाव में—बुद्धि के प्रभाव से मकान व सवारी की प्राप्ति, जब पुत्र उत्पन्न हुआ तब मकान बना, पुत्र सवारी खरीदे, ननसाल सुखी, माता-पिता के सुख में कमी, माता के स्थान में किसी अन्य स्त्री का सहयोग, सुखी शान्ति में कमी, पेचीदा बातें, छाती पर तिल।

शनि दशम भाव में—तेज बुद्धि, बाहरी प्रभाव से डिग्री, गुप्त युक्तियाँ, शत्रु पर बुद्धि द्वारा विजय, रोगों का तथा झगड़ों का ज्ञान, वकील, वैद्य, स्त्री कष्ट में, दैनिक रोजगार के पक्ष में क्लेश, क्रोधी। सन्तान शत्रु की बातों में, अंग्रेजी उत्तम। मामा की सहायता से कार्य, शरीर में मामा के गुण व्याप्त।

शनि एकादश भाव में—शत्रु पक्ष का दमन, सन्तान शत्रु से मिलकर उसका दमन करें या मित्र बनाले। पुत्र उत्पन्न हुआ और लोगों से शत्रुता बढ़ी। रोगों में विजय। ननसाल में सब विद्वान, भाई से विरोध, पेट के रोग। खर्च, क्लेश, विद्या छूट जाए, तामसी विद्या, संस्कृत का विरोध। आयु में खतरा, साहसी, क्रोधी, पहलवान, सन्तान की सूरत मामा पर।

शनि द्वादश भाव में—स्त्री पक्ष में क्लेश, पत्नी विदुषी। सन्तान से क्लेश, पत्नी के भाग्य द्वारा सन्तान प्राप्ति। माता से क्लेश, माता के स्थान पर किसी अन्य स्त्री का सहयोग। देह में रोग, मतलब की विद्या का संग्रह। धर्म में नुक्ताचीनी। पत्नी अन्य की बातों में आ जाया करे परन्तु बाद में सम्भल जाए। इन्द्रिय काली।

कन्या लग्न में राहु

राहु प्रथम भाव में—जीवन में बड़ी-बड़ी परेशानियाँ, आयु में घोर संकट। नाभि या गुदा रोग, हेकड़, कठिन परिश्रमी, गुप्त चालों से कार्य। अधिक धन की इच्छा, आयु कम।

राहु द्वितीय भाव में—भाग्य कमजोर, धर्म-हानि, यश कम, ईश्वर में श्रद्धा की कमी, दिखावटी श्रद्धा। भाग्य उन्नति के लिए युक्तियों से कार्य। भाग्य में भी घोर संकट परन्तु बाद में मजबूती। असत्य को सत्य करके दिखाना।

राहु तृतीय भाव में—पिता में नए ढंग से विशेषता पाना। व्यापार में नवीन युक्तियों से महानता। बाहरी दिखावे के अनुसार अपने ठाठ व वैभव में कमी। उन्नति के लिए पेचीदा कार्यवाही, होशियार, परेशानी की जरा भी परवाह नहीं। राजसमाज में गहरी युक्तियों से कार्य।

राहु चतुर्थ भाव में—खूब लाभ और लाभ में परेशानी भी, अचानक लाभ के कारण हानि भी। मानसिक चिन्ताएँ, थोड़े में अधिक नफा, बुद्धि योग से होशियारी के कार्य। वस्त्राभूषणों की कमी, प्रयोग करने के पदार्थों की कमी। अगले जन्म में शिकारी बनेगा तथा पक्षियों को सताएगा।

राहु पंचम भाव में—खर्च तथा कष्ट बहुत, परेशानियाँ, खर्च के विषय में कुछ अन्य स्थान का क्लेशित सम्बन्ध। अन्य स्थान सम्बन्धी असफलता। पूरी थकान, बड़ी कठिनता से ठिकाने पर पहुँचना। अधूरा लाभ, खर्च विषय में घोर संकट, अंत में खर्च के सम्बन्ध में मजबूती। पिछले जन्म में परिश्रमी लोगों से बहुत जलता था इस कारण कष्ट भोग रहा है।

राहु षष्ठम भाव में—चतुराई की बातें, छिपी युक्तियों से सफल, आंतरिक कमजोरी को छिपाकर सज्जनता प्रकट करना। देह में संकट, अधूरा सुख, पत्नी तथा रोजगार पर विशेष निगाह। नाम स्थायी रखने के लिए महान् प्रयत्न तथा महान् सफलता।

राहु सप्तम भाव में—निरन्तर धन-हानि। कुटुम्ब क्लेश, ऋणी, धन की चिन्ता। धन के लिए महान प्रयत्न, अन्त में धनवान।

राहु अष्टम भाव में—परिश्रमी, पराक्रमी, भाई से क्लेश। गुप्त युक्तियों से कार्य, मतलब में चौकस, उन्नति के लिए महान परिश्रम, परिश्रम से थकान, शक्ति में अधूरापन। स्वार्थयुक्त, साहसी।

राहु नवम भाव में—माता की तथा अपनी आयु कम, सुख शान्ति में कमी। निवास स्थान में संकट, मकान का वियोग। क्षुद्र मार्ग का अनुसरण।

गुप्त शक्ति का सुख, घोर संकटों के द्वारा सुख प्राप्ति ।

राहु दशम भाव में—विद्या, बुद्धि में कमजोरी, अशान्ति । गुप्त युक्तियों का योग, गूढ़ ज्ञान की शक्ति । सत्य-असत्य की पहचान । नशीली वस्तुओं का सेवन । क्रोध, शब्दों को गलत तरीके से तोल-तोलकर बोलने वाला । सन्तान कष्ट, हकलापन, जिह्वा मोटी । सन्तान शीघ्र उत्पन्न हो, बाद में परिवार नियोजन ।

राहु एकादश भाव में—प्रभावशाली, साहसी, ननसाल में हानि । लापरवाह, शत्रु को गुप्त युक्तियों से हराने वाला, रोगों पर विजय, झंझटों में फँसाव, गलत चालों से नाजायज फायदा । प्रभाव में अंदरूनी कमजोरी, दिखावे में मुस्तैदी, पेचीदा चालें, स्वार्थसिद्धि, होशियार ।

राहु द्वादश भाव में—पत्नी परेशान, कष्टमय, गृहस्थ की चिन्ता । विवाह देर में पर चट-पट । रोजगारों में कठिनाई, परिश्रम से रोजगार । रोजगार में संकट व छिपाव शक्ति से कार्य ।

कन्या लग्न में केतु

केतु प्रथम भाव में—जीवन में अशान्ति, घोर कठिनाइयाँ । नाभि के नीचे या गुदा में रोग । गुप्त कटु शक्ति, चिन्तित, जीवन को सफल बनाने के लिए तथा नाम पाने के लिए कठिन परिश्रम । गुप्तशक्ति की महानता ।

केतु द्वितीय भाव में—भाग्य कमजोर, दैवी सहायता न के बराबर । अड़चनें, सनातन का विरोध, अपने ढंग के नए तरीकों से धर्म को मानना । धर्म स्थल पर हठधर्मी । उन्नति के सम्बन्ध में दुःख के बाद बड़ी मजबूती । कार्य में तत्परता ।

केतु तृतीय भाव में—पिता की हानि, नौकरी में हानि, राज स्थान में परेशानी, व्यापार में दिक्कतें, बड़े स्थान के कार्यों में गिरावट । सम्मान रक्षा की चिन्ता, न्यून परिश्रम । उन्नति के मार्ग में छिपावट ।

केतु चतुर्थ भाव में—आमदनी में परेशानी परन्तु खूब लाभ, आमदनी के लिए मन में आघात, मन की कठोरता से खूब लाभ । प्रयोग के पदार्थों में कमी, लाभ स्थान में कमी सोचने वाला । इस जन्म में दान करे तो अगले जन्म

में चोर न बने।

केतु पंचम भाव में—खर्च के विषय में महान संकट, अन्य स्थानों में भी परेशानियाँ फिर भी साहस और बहादुरी, सफलता की ओर दौड़, खर्च के लिए महान परिश्रम पर अन्त में मजबूती। पिछले जन्म में स्त्रियों को बहुत परेशान करता था, उनका सर्वस्व लूटकर बुरे कर्म करवाता था इस कारण दुःखी है।

केतु षष्ठम भाव में—हेकड़, दुबलापन, कमजोरी, बड़ी-बड़ी युक्तियाँ। महानता पाने के लिए महान दृढ़ता, देह में कमी। अधाधुन्ध कार्यकर्ता।

केतु सप्तम भाव में—धन संग्रह में रुकावट। बँटवारा, कुटुम्ब में क्लेश, धन का अभाव, अन्त में धन संग्रह। धन वृद्धि के लिए महान परिश्रम।

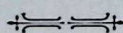
केतु अष्टम भाव में—बहुत पराक्रमी, भाई के पक्ष में हानि, बन्धु वियोग और अशान्ति, भारी साहसी, बहादुरी के कारनामे। भविष्य की परवाह न करे, शील रहित, अन्धाधुन्ध शक्ति का प्रयोग, उग्रगामी, निडर, स्वार्थी।

केतु नवम भाव में—मकान जायदाद पर हावी। माता के स्थान में विशेष आडम्बरयुक्त सुख, सुख साधनों के ग्रहण करने में दृढ़ता। वास्तविक शान्ति में कमजोरी, सुख का दिखावा, शील सन्तोष का उल्लंघन। माता की आयु कम, अपनी आयु कम, धैर्यवान।

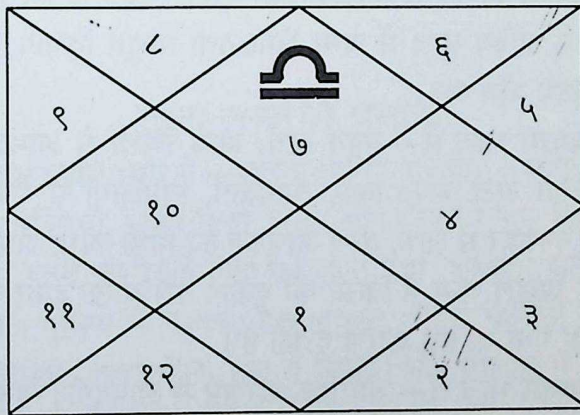
केतु दशम भाव में—कठोर बुद्धि, शिक्षा में बहुत कठिनाई, क्रोध। अपनी बात को सरलता से न समझा सकने वाला। सन्तान देर में प्राप्त हो। हेकड़, बुद्धि में चिन्ता, कुछ नशा, अपनी बात बड़ी बताना। युक्ति-युत, शील का उल्लंघन।

केतु एकादश भाव में—बल, पुरुषार्थ, निडर, स्वार्थसिद्धि। शत्रु को हराना, पहलवान, लापरवाही। ननसाल में हानि, रोगों की दमन शक्ति। न्याय-अन्याय की परवाह न करे, स्वार्थयुक्त, प्रभावशाली।

केतु द्वादश भाव में—स्त्री कष्ट, ससुराल कष्टमय, गृहस्थ सम्बन्धी कठिनाइयाँ, रोजगार में कठिन परिश्रम। स्त्री भोग में तीव्रता, अधूरा सुख। आन्तरिक धैर्य से कार्य।



तुला लग्न



तुला लग्न में सूर्य

सूर्य प्रथम भाव में—प्रभावशाली दैनिक रोजगार। ससुराल से विशेष लाभ। पत्नी भी लाभ की बातें करें तथा धन सम्भाल कर रखे, आमदनी पर कन्ट्रोल पत्नी का, विशेष भोग। काम की अधिकता से देह में परेशानी, भोग की अधिकता से कमजोरी। कृश देह, ऊँचा कार्य, बड़ा परिश्रमी।

सूर्य द्वितीय भाव में—आमदनी के लिए परेशान, विदेश आदि में लाभ। कुछ बन्धन व कुछ प्रपंच से कम लाभ, लाभ के कारणों से परेशान,

धन संचय का बड़ा ध्यान, गूढ़ युक्तियों से लाभ, परिश्रमी जीवन। कुटुम्ब की बढ़ोत्तरी की इच्छा।

सूर्य तृतीय भाव में—भाग्यशक्ति से मुफ्त की सी आमदनी, धर्म के सम्बन्ध में दूरदर्शी, भाग्यशक्ति से बड़े-बड़े फायदे। दैवयोग से असम्भव लाभ, ईश्वर प्राप्ति के योग। तेजस्वी, प्रभावशाली, रोजगार भाग्य में लिखे हैं, धनाढ्य।

सूर्य चतुर्थ भाव में—पिता के संकेत से लाभ ही लाभ, नौकरी में बहुत लाभ, माननीय, धनाढ्य। मातृसुख में नीरसता, घर जमीन के विषय में भी नीरसता। राजसी ठाठ-बाट, बड़ों के से कार्य, हर कार्य में दूरदर्शिता।

सूर्य पंचम भाव में—बहुत लाभ, मजबूत आमदनी, अमूल्य लाभ, प्रकाशवान् कार्य, सन्तान पक्ष से दिक्कत। वैमनस्यता से विद्या प्राप्त, नीरस बोलना। प्रभाव से ही आवश्यकताओं की पूर्ति, विद्युत व स्वर्ण के कार्य, अगले जन्म में क्षत्रिय कुल में जन्म लेगा तथा विद्युत विभाग में अफसर बनेगा, भाग्योदय पाँच बार।

सूर्य षष्ठम भाव में—बहुत खर्च, अन्य स्थलों से आमदनी, अपने स्थान में रोजगार लूटा जाए। ऋण, त्यागव्रती, विपक्षियों से मैत्री में लाभ उठाने वाला। ननसाल से लाभ, वस्त्र आभूषण का थोड़ा लाभ, अपना रोजगार स्वयं बिगाड़े, पिछले जन्म में किसी की दुकान उसे धोखा देकर बेच दी थी और रकम खा गया था इस कारण दुःखी है।

सूर्य सप्तम भाव में—शारीरिक परिश्रम से आमदनी। न्यून आमदनी, देह में कमजोरी, दैनिक रोजगार में मजबूती, पत्नी प्रभावशाली। पत्नी से विशेष लाभ की योजना, विशेष भोग, लाभ में कुछ परतन्त्र सा। मान सम्मान में कमी, गृहस्थ धर्म उन्नत, चिन्तित, कृशगात, नित्य ही रोजगार में हेर-फेर का विचार।

सूर्य अष्टम भाव में—धन संग्रह, मोटी आमदनी, कुटुम्ब लाभ के सामने आराम न करे। पुरात्व का लाभ, प्रत्यक्ष में धनी, प्रकाशवान, दिव्य पदार्थों का संग्रह। लाभ के उपयोग में कुछ बन्धन सा। वैसे लाभ में मजबूती।

सूर्य नवम भाव में—बल पुरुषार्थ, बड़ा प्रभाव, परिश्रम की प्रशंसा

प्राप्त एवं साहसी, स्वयं बड़ा भाई, धर्म से भी लाभ। आमदनी की शक्ति से भाग्यवान्, बलवान्, धर्मवान्, साहस से सदा लाभ। पुरुषार्थवादी, लाभ के कारणों में बड़ी स्फूर्ति।

सूर्य दशम भाव में—घर में ही दुकान परन्तु नीरसता युक्त। सुखपूर्वक लाभ की योजना में कुछ कमी। मकान की सहायता से नौकरी, इज्जतदार।

सूर्य एकादश भाव में—बुद्धि से खूब लाभ, विद्या में आलस्य फिर भी विद्या प्राप्त, रोजगार के लिए शिक्षा। सन्तान से भी अशान्ति, पहले पुत्र उत्पन्न। लाभ प्राप्ति के कारणों से अशान्ति और थकान, दिमाग में गरमी। स्वार्थसिद्धि की बातें, तेज बोलने वाला।

सूर्य द्वादश भाव में—परतन्त्र कर्म से लाभ। झगड़े, झंझटों में फायदा, शत्रु से विजय, ननसाल से फायदा। खूब खर्च, लाभ के सम्बन्ध में अन्य स्थानों से सम्पर्क। रोजगार पर शत्रु का कब्जा हो फिर प्रयत्न करने से हट जाए।

तुला लग्न में चन्द्रमा

चन्द्रमा प्रथम भाव में—शानदार दैनिक रोजगार, उज्ज्वल व्यवसाय। मनोयोगी व परिश्रमी, सुन्दर पत्नी, सुन्दर भोग। स्वयं सुन्दर, विवाह के बाद मान उन्नति, पत्नी को देखने पिता को जाना पड़ा। इज्जदार ससुराल में सब नौकरी पेशा। गृहस्थ में ऐश्वर्य, उत्साहयुक्त, चतुर, कर्मेष्ठी। व्यवहारिक ज्ञान की उत्तमता, व्यवसायिक ज्ञान में सिद्धि। भोग विलास में मन।

चन्द्रमा द्वितीय भाव में—नौकरी लगे भी छूटे भी। पिता मरण के बाद एक बार जीवित। दिखावटी शान, धन की कमजोरी, आन्तरिक ज्ञान। विदेश आदि से मान और विदेश आदि में उन्नति, नौकरी के साधन। सुखमय मृत्यु, मृत्यु के समय सावधान।

चन्द्रमा तृतीय भाव में—सरकारी नौकरी भाग्य में लिखी है। भाग्यशाली, धर्म-कर्म वाला, शुभ कर्मों में मन, मनोबल तथा भाग्यबल से उत्तम कारोबार, पिता से लाभ। जब तक पिता जीवित है तब तक भाग्य में दिन-दिन उन्नति, तत्त्व खोजी, बड़े-बड़े कार्यों में सफलता। यश प्राप्त

ऐश्वर्यवान् ।

चन्द्रमा चतुर्थ भाव में—सरकारी नौकरी अपने आप मिले । जहाँ के लिए मन में विचारे वही नौकरी प्राप्त हो, प्रतापी, ऐश्वर्यवान्, मानी-दानी । पिता दयालु तथा बड़ी उम्र, उच्च योजनाएँ, सदा उन्नति, राजसी ठाठ, माता का सुख । सवारी, शान्त हुक्मरान । कर्मेष्ठी भाग्योदय बार-बार ।

चन्द्रमा पंचम भाव में—सरकार की तरफ से बड़े-बड़े रोजगार, ऊँचे-से-ऊँचा लाभ, पिता का ध्यान रोजगारों पर । आकाशीय कार्य, बुद्धि व विद्या सुख शान्ति से प्राप्त, सन्तान सुख, सन्तान को व्यापार, सदा प्रसन्न । राजमानी, मानयुक्त । पिता न ही कारोबारों में डाला । अगले जन्म में भी सरकारी धन पर तथा पद पर सुशोभित रहेगा ।

चन्द्रमा षष्ठम भाव में—पिता की आयु कम, नौकरी थोड़े दिन, इधर पिता का देहान्त उधर नौकरी छूटी । अधिक खर्च, पिता के क्रिया-कर्म में अधिक खर्च । अन्य स्थान में कारोबार की योजना, मान सम्मान में कमी । अपनी शान गुमान में खर्च, प्रभुत्व दर्शाना, शत्रु पर भी खर्च, मन में प्रभाव की कमी । पिता ने दुकान नाम करवा दी । पिछले जन्म में इसने अपने पिता को बहुत कष्ट दिया था । इस कारण अब न पिता की सहायता प्राप्त है और न सरकार की ।

चन्द्रमा सप्तम भाव में—प्रतापी, ऐश्वर्ययुक्त, माननीय, पिता का प्यारा । पिता की जगह प्राप्त, प्रशंसनीय कर्म, कर्मों में शोभा सुन्दर । ऊँचे विचार व योजनाएँ, भोग-विलास का उत्तम आनन्द, शानदारी से रोजगार, मानयुक्त, राजसमाज में मान । शीघ्र नौकरी का पत्र मिले । शान्त हृदय, ऊँचा मन ।

चन्द्रमा अष्टम भाव में—सरकार द्वारा धन में हानि, धन की कमी, पिता द्वारा धन का नुकसान, मान सम्मान में कमजोरी । मानसिक कष्ट धन के अपव्यय से, पुरातत्त्व का फायदा, लापरवाही से दिनचर्या । आयु में तरक्की, गुप्त रूप से कर्म । न्यून शक्ति, लघु कुटुम्बी, गुढ़ युक्तियों के साधन से लाभ ।

चन्द्रमा नवम भाव में—पुरुषार्थ तथा मनोयोग से कार्य सिद्धि । सरकारी

नौकरी भाई बहनों को, मान सम्मान, पिता भाइयों की तरफ, भाग्यशाली। सरकार की तरफ से भाइयों द्वारा भाग्योदय, मन में मगन। धर्मरत, ईश्वर में श्रद्धा, आदर्श विचार, उद्योगी।

चन्द्रमा दशम भाव में—सरकारी विभाग मकान में किराए पर, नौकरी घर बैठे मिले, जमीन मकान का सुख, सरकारी सवारी। कार्य में आलस्य, ऊँचे मानसिक विचार, राज में मान-सम्मान, सुख का विशेष अनुभव।

चन्द्रमा एकादश भाव में—कार्य करने की प्रमुख युक्तियाँ, रजोगुणी, विद्वान। नौकरी के लिए शिक्षा, पिता भी पढ़ाएँ। उन्नत योजनाएँ, हमेशा सोचते रहना, स्वाभिमान, अपनी बात को बड़ी रखने वाला। लौकिक कर्म का ज्ञान तथा ध्यान, स्वार्थ बुद्धि से मान, पिता को सुख में कमी।

चन्द्रमा द्वादश भाव में—मान प्रतिष्ठा में कमी, नौकरी छूटे, पिता की शक्ति में कमजोरी, मनोयोग के परिश्रम से उज्ज्वल व्यापार। खर्च अधिक, खर्च रोगों में और शीलवान शत्रुओं में। मान सम्मान की रक्षा में परेशानी। ननसाल से लाभ, उन्नति में रुकावट, गुप्त शक्ति का साहस, बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ ही लाभ।

तुला लग्न में मंगल

मंगल प्रथम भाव में—मंगली, धन की शक्ति से रोजगार में पूरा लाभ, तमाम धन पत्नी के कन्ट्रोल में। धन प्राप्ति के लिए निरन्तर परिश्रम। मान के संबंध में कुछ कमी, देह में बंधन, दृढ़ पत्नी, ससुराल से धन लाभ, ससुराल भी मालदार। पिता व राजसमाज में कमजोरी, उच्च कारोबार में कमजोरी। जन-बल युक्त, हथियार वाले महकमे में कार्य। पत्नी पर व्यय सार्थक है।

मंगल द्वितीय भाव में—धन की हानि, पुरातत्त्व धन की प्राप्ति, दैनिक रोजगार में बड़ी परेशानियाँ, दिक्कतों व गूढ़ता से रोजगार, रोजगार में दूसरे स्थानों का सम्बन्ध। पत्नी की आयु कम, मंगली, कुटुम्ब क्लेश। भाई-बहन के स्थान पर बन्धन सा। आमदनी पाने के लिए बड़े-से-बड़े कष्ट साध्य प्रयत्न, हथियार से चोट, पत्नी दक्षिण पश्चिम में धन गाढ़कर

स्वर्ग सिधारी।

मंगल तृतीय भाव में—पत्नी भाग्यवान्, भाग्य में पिता का धन खूब लिखा है, धन-जन की शक्ति, अन्य स्थानों का भी फायदा। खूब खर्च, पूर्ण सुख, माता की आयु बड़ी, मकान भूमि की प्राप्ति। धार्मिक आचरण, न्यायोक्त धन की इच्छा। हथियार वाले महकमे में कार्य, बार-बार उन्नति। पत्नी यात्राओं में धन खर्च करती है। पत्नी ने मकान के दक्षिण पश्चिम में धन गाढ़ रखा है।

मंगल चतुर्थ भाव में—धन व रोजगार की कमजोरी। राज समाज में आदर की कमी। पत्नी व पिता में भी धन की कमी, ओछे रोजगार से आजीविका। पत्नी कहती है कि यह नौकरी छोड़ दो। भोग विलास में कमी, आलसी अकर्मण्य। अपमान की मामूली परवाह।

मंगल पंचम भाव में—धन-जन की शक्ति से उत्तम आमदनी। पिता के धन से रोजगार। ससुराल के धन से लाभ, रोजगार पत्नी के नाम, मोटा लाभ। बुद्धिमान, प्रभावशाली, झंझटयुक्त कर्मों से फायदा। साहसी, धन कमाने को मामूली बात समझे, बेफिकर, धारा प्रवाह बँधी आमदनी, अगले जन्म में बड़ा निरंकुश बनेगा तथा सोने की स्मगलिंग करेगा, पत्नी ने धन दक्षिण-पूर्व में गाढ़ दिया।

मंगल षष्ठम भाव में—पत्नी की आयु कम, जन की हानि, गृहस्थ में अशान्ति। रोजगार में भी हानि तथा विशेष खर्च भाई व रोजगार के मामले में बन्धन सा। विपक्षियों पर प्रभाव, धन का अभाव, अन्य स्थानों में रोजगार में कुछ विशेषता। पहले कुटुम्ब में जवान मृत्यु हो फिर पत्नी का देहान्त। पिछले जन्म में लूटपाट के कार्य करता था इस कारण अब धन-जन की हानि उठा रहा है। पत्नी के धन की चोरी, कटि में चोट।

मंगल सप्तम भाव में—धनवान, आदरणीय। पत्नी की पसन्द पर विवाह, देह में दुर्बलता, मंगली, कीमती रोजगार, बड़ी योग्य सुन्दर स्त्री। आदर्श भोग, सुखी, जमीन जायदाद विवाह होने के बाद बना है। देह में रक्त विकार। निरन्तर परिश्रमी, पत्नी अपना धन पूर्व दिशा में रखती है फिर इसी को सौंप देती है।

मंगल अष्टम भाव में—पत्नी धन को सम्भाल कर रखती है। धन जन शक्ति सम्पन्न। पत्नी क्रोधी, सुख का घाटा, भोग विलास की फुर्ती। पुत्र सुख, सन्तान से सहायता। तेज वृद्धि, सन्तान पक्ष में कुछ बन्धन, भाग्यवान्, परिश्रमी, पुरातत्त्व से लाभ, मकान में उत्तर पूर्व में धन गड़ा है। पत्नी का धन उत्तर-पूर्व में गढ़ा है। भाग्योदय तीन बार।

मंगल नवम भाव में—धन जन की बाहुबल से तरक्की। प्रभावशाली पत्नी। भ्रातृ पक्ष में बन्धन, पिता से असन्तोष, मान वृद्धि, राज समाज में कुछ कमी। उत्साही, प्रयत्नशील, साहसी, उत्तम कद, परिश्रम से धन प्राप्त। पत्नी का धन उत्तर-पूर्व में है।

मंगल दशम भाव में—घर में पत्नी की प्रभुता, पत्नी ने आते ही तीन मंजिल का मकान बनवाया। माता का सुख, पिता से वैमनस्य। माता पत्नी की झट मान रोती है। राजसभा में उन्नति, रक्षा विभाग, कैपटन। गृहस्थ सुखी, भोग-विलास का आनन्द, भूमि सवारी पर व्यय सार्थक है। मकान में उत्तर में आँगन की तरफ धन गड़ा है।

मंगल एकादश भाव में—बुद्धि बल से धन कमाना। अधिक खर्च से बुद्धि में कुछ परेशानी। सन्तान की विरोधक भावनाएँ। धन बुद्धि से अन्य स्थानों का लाभ, अमीरी का अनुभव। दिनचर्या में परेशानी, बोलचाल में गरमी, स्वार्थ युक्त, पत्नी बुद्धिमान। विवाह के बाद विद्या रूक गई।

मंगल द्वादश भाव में—धन रोगों पर व शत्रुओं पर खर्च। पत्नी का शत्रु समान व्यवहार। शत्रुओं पर विजय, ननसाल से सहारा। देह में कुछ विकार, भोग-विलास में कमी। अपना प्रभाव रखने के लिए धन व रोजगार की कमजोरी सहने वाला। पत्नी विपक्षियों की ओर तथा फैसला चाहती है। पत्नी का धन चोरी में गया। पैरों में चोट।

तुला लग्न में बुध

बुध प्रथम भाव में—पत्नी भाग्यवान्। विवाह में बहुत खर्च, गृहस्थ का आनन्द। रोजगार से उन्नति, जब से पत्नी आई है भाग्य भी बढ़ गया तथा खर्च भी। अन्य स्थान के सम्पर्क से और युक्तियों से भाग्य वृद्धि। पत्नी

कमजोर। सकाम कर्म, स्त्री धार्मिक, रोजगार में हानियों के साथ लगातार वृद्धि।

बुध द्वितीय भाव में—भाग्य में क्लेश, खर्च कठिनता से चले, धर्म में कमजोरी। मृत्यु का समय सुन्दर। किसी अन्य दूसरे के स्थान में भाग्यबल प्राप्त हो।

बुध तृतीय भाव में—अपूर्ण भाग्यशाली, यश प्राप्त, अन्य स्थानों में तो स्वतः भाग्य वृद्धि। प्रकृति की सहायता, सावधानी से खर्च का संचालन। धर्म में भी व्यापार, ईश्वर पर भरोसा, ईमानदार, पहले भाग्य की चिन्ता फिर सुखी। साहसी, युवावस्था में वृद्धि को प्राप्त। भाग्योदय स्वदेश में तीन बार और विदेश में छह बार।

बुध चतुर्थ भाव में—भाग्यवान, प्रतापी, राजसमाज में भाग्य उदय। उत्तम कर्म, उत्तम प्रतिष्ठा। पिता के विषय में कुछ कमजोरी, धर्म में कमजोरी। नौकरी भी छूट जाए। इज्जतदार।

बुध पंचम भाव में—भाग्य तथा अन्य स्थान की शक्ति से खूब लाभ। उत्तम विवेक, बुद्धिबल से आमदनी। डिग्री, दूरदर्शी, सन्तान पक्ष में कमी के साथ सफलता, न्यायपूर्वक कार्य, आमदनी कमजोर, मीठा मृदु भाषी, भाग्यवान्, चतुर। अगले जन्म में नक्काशी का कार्य करेगा।

बुध षष्ठम भाव में—बहुत खर्च, भाग्य सम्बन्धी कई बार हानियाँ। मान भंग। अन्य स्थानों से तथा विवेक शक्ति से भाग्योदय, तीर्थ यात्रा में खूब खर्च। दिखावटी धर्म का पालन। प्रभाव में कमी, डरपोक, शत्रुओं से विवेक की ओछी चाल चलने वाला। पिछले जन्म में यह व्यक्ति तीर्थों में चोरी करता था इस कारण अब इसका भाग्य साथ नहीं देता है।

बुध सप्तम भाव में—बड़ा भाग्यशाली, शानदार खर्च। देह का आनन्द पर कुछ दुबलापन अन्य स्थानों के सम्पर्क में बहुत लाभ, साला साथ रहना चाहे। गृहस्थ का आनन्द, रोजगार में सफलता, धर्म के विषय में ऊँचे विचार, मान प्रतिष्ठा, परम विवेकी, न्यायप्रिय, कोमल स्वभाव। दूर की सोचना। नाम की मुहर बने।

बुध अष्टम भाव में—धनवान, आदरणीय। धन संग्रह में खर्च, भाग्य

के द्वारा धन का आनन्द। अन्य स्थान के सम्पर्क से धन बढ़े, भाग्यशक्ति का चमत्कार, धन से धन पाने वाला। धार्मिक यात्राओं में धनोपार्जन। चाचा, ताऊ भी कुछ पिता का धन ले बैठे। प्रभु के दर्शन।

बुध नवम भाव में—पुरुषार्थ से भाग्य की वृद्धि, अन्य स्थानों के सम्पर्क से उन्नति। सनातन धर्म का पालक, धार्मिक शक्ति का ज्ञान, भाग्य शक्ति का ज्ञान। भाई बहन में कमी, साहसी। चाचा, ताऊ भाइयों की तरफ।

बुध दशम भाव में—भाग्यशाली, सुखी, सुख के लिए खर्च, माता पर खर्च। अन्य स्थानों में सुख प्राप्त, मान प्रतिष्ठा, भूमि का सुख देर में मिले। बुद्धिबल से भाग्योदय। धर्म का कर्म रूप में पालन।

बुध एकादश भाव में—धर्म विषय का दूर तक ज्ञान। विद्या, बुद्धि वाणी के हेर-फेर से भाग्योदय, कम सन्तान अच्छा सुख। नीतिज्ञ, विवेकी। अन्य स्थानों में बुद्धि भाग्यबल से सुख प्राप्त।

बुध द्वादश भाव में—भाग्यहीन, अपयश, दम्बू, मजबूरियों के चक्कर में बहुत खर्च और इससे भाग्य में हानि, शत्रु से अशान्ति। धर्म में हानि, गुप्त तथा ओछे धर्म का पालन। भाग्य पर अफसोस, सत्य पर खर्च से परेशान। अन्य स्थानों से सदा बड़ा सम्बन्ध। गुप्त चाल।

तुला लग्न में गुरु

गुरु प्रथम भाव में—दैनिक रोजगार इज्जत से, सफल परिश्रमी, कार्य कुशल। पत्नी धर्मात्मा, केन्द्र से लाभ, मान तथा बल, भाई बहन न्यून, उद्योगपति। अंत में महान शक्ति को प्राप्त, शत्रु पक्ष का दमन। हृदय की शक्ति में विजय। पहले इसका विवाह हुआ और दूसरे वर्ष भाई का भी विवाह हो गया, भाई का पत्नी की तरफ झुकाव। पत्नी ने ही देवर का विवाह करवाया।

गुरु द्वितीय भाव में—शक्ति कमजोर, डरपोक, गुप्त शक्तियों से कार्य, शत्रु से दबकर रहे। पुरातत्त्व शैली से चलने वाला। भ्राता तथा ननसाल पक्ष में कमजोरी, खूब खर्च, अन्य स्थान से शक्ति प्राप्त, धन संचय की बड़ी योजना, माता, भूमिसुख में बड़ी कमजोरी।

गुरु तृतीय भाव में—भाग्यवान्, भाई का विवाह हुआ और इसका भाग्य खुल गया। कुछ अड़चनों सहित भाई का सहयोग। शत्रु की परवाह नहीं, अपनी भुजाओं का भरोसा, धर्म बल का सहारा, सनातन शक्ति की पूजा, बुद्धि में तीव्रता, अच्छी ननसाल, ननसाल भी भाग्यवान्। प्रभावशाली, कई भाई।

गुरु चतुर्थ भाव में—प्रभावशाली, माता से अलग, पिता की तरक्की। पिता की दीर्घ आयु, सरकारी नौकरी में उच्चपद, कानून या वैद्यक, महान प्रतिष्ठा। ऊँची युक्तियों से विजय। ननसाल में उच्च घराना। स्वाभिमानी बहादुर, जिसकी सब पूजा करें, कारोबार की विशेषताओं द्वारा सुख शान्ति में बाधा, धन वृद्धि, पेचीदा चालों का बड़ा माहिर। भाई को भी राजसम्मान। भाग्य उदय चार बार।

गुरु पंचम भाव में—पुरुषार्थ बल से रोजगार, विवेक से धन कमाना, सफल उद्यमी। पत्नी भी गौरवमयी, सन्तान से वैमनस्य, चतुर, भोग वस्तुओं की प्राप्ति को पूरी शक्ति लगाने वाला। भाइयों द्वारा रोजगार पर कब्जा। अगले जनम में क्षत्रिय परिवार में जन्म लेगा तथा साधु हो जाएगा।

गुरु षष्ठम भाव में—भाई की आयु कम। पुरुषार्थ में कमजोरी, दब्बू, छिपी शक्ति के भरोसे को बड़ा मानने वाला, भाई से विरोध, ननसाल कमजोर, छिपी युक्तियों से शत्रु को पराजय। अन्य स्थान के योग से व कुछ परतन्त्रता से खर्च की पूर्ति, आलसी। भाई की मृत्यु के बाद ऐसा मुकद्दमा लगे कि जीवन उसी में उलझ जाए। पिछले जन्म में यह व्यक्ति बढ़ई था तथा चतुरता से अधिक धन हरण करता था इस कारण से इस जीवन में सुख नहीं लिखा।

गुरु सप्तम भाव में—प्रभावशाली कार्य, बड़ा बुद्धिमान, गौरव युक्त, चतुर नीतिज्ञ, युक्ति बल, बाहुबल, पुरुषार्थ से सफलता, स्वार्थ सिद्धि पहले और धर्म पालन बाद में। देह में दिक्कत परेशानी, सन्तान से वैमनस्य। विपक्षियों पर युक्तिबल से विजय।

गुरु अष्टम भाव में—परिश्रम तथा दौड़ धूप से धन प्राप्त, धन की ताकत से शत्रु पर प्रभाव। भाई का हक पिता के धन पर, शत्रु तथा मुकद्दमे

भी धन क्षय करा दें, हृदय बलवान, कीमती योजनाएँ, बड़ी फुर्ती, राज सम्मान, पिता की उन्नति। पेचीदा शक्ति का भण्डार।

गुरु नवम भाव में—चार भाई, उत्तम पुरुषार्थी। पहलवान, ननसाल का सहयोग। परिश्रम में सफलता, साहस, भाई की जगह निज सत्ता का अधिकार, धर्म सम्बन्ध में साधारण ध्यान।

गुरु दशम भाव में—माता की आयु कम, सुख में कठिनाइयाँ, अत्यधिक परिश्रम से तरक्की, घर में चैन न मिले, अधिक खर्च, सुख स्थान में कमी, बन्धन का सा रूप, कारावास जैसा, गुप्त साहस, भाई मकान पर हक दिखाए, शत्रु का मकान पर मुकद्दमा।

गुरु एकादश भाव में—बुद्धि बल से शक्तिप्राप्त, देह में बल, भाग्यवान्, बुद्धि तथा सन्तान का लाभ, सन्तान सुख प्राप्त करने में बड़ी कठिनाइयाँ। शिक्षा के समय बुद्धि में थकान। सन्तान दृढ़ी, कार्य प्रवीण, भाई को पुत्रवत पालन करने में थकान का अनुभव करें।

गुरु द्वादश भाव में—पुरुषार्थी, पिता की उन्नति, ननसाल सुखी, भाई पक्ष में शक्ति भी, वैमनस्य भी, पेचीदा मार्ग शक्ति, विपक्षी को हराने वाला धैर्यवान्, खूब खर्च। अन्य स्थानों में खर्च का प्रबन्ध, अपने कार्य में कुछ बन्धन सा।

तुला लग्न में शुक्र

शुक्र प्रथम भाव में—देह की महान शक्ति से रोजगार, अच्छी आय, सुन्दर देह। आत्मदर्शी, कूटनीतिज्ञ, बड़ा चतुर, सम्पूर्ण शक्ति से कार्य की सम्पन्नता, प्रतिष्ठा, स्त्री सम्बन्ध में कुछ क्लेश, दूरदर्शी, स्वाभिमानी, भोगी।

शुक्र द्वितीय भाव में—सुन्दरता में कमी, दुर्बलता, उत्तम आयु, कूटनीतिज्ञ। थोड़ी उम्र में ही वृद्धापन, गूढ़ज्ञान की शक्ति, पुरातत्त्व का लाभ, धन के लिए प्राण-प्रण से चेष्टा। शानदार जीवन, दैनिक कलाओं की ख्याति, गुप्त साहस।

शुक्र तृतीय भाव में—भाग्यवान्, उत्तम आयु, लापरवाही, भाग्यवादी, परिश्रमी, उन्नति करने के लिए प्राण-पण से चेष्टा, साले को मृत्यु समान

कष्ट, फिर भी भाग्य कमजोर, अन्यत्र भाग्य फले, बहन भाइयों से प्रेम की कमी। सुखी देह, चतुर, माननीय, नाम की मुहर बने।

शुक्र चतुर्थ भाव में—राजसी जीवन, सरकारी सहायता, प्रभुता सम्पन्न, मान गुमान, बड़ी आयु, माता सुख, परिश्रम से जमीन, मकान सवारी का सुख, गूढ़ कार्य, मान वृद्धि में कठिनाई, हठधर्मी, पिता को बहुत चाहे।

शुक्र पंचम भाव में—जीवन में लाभ ही लाभ परन्तु लाभ में नीरसता, उत्तम रोजगार पर फेल हो जाए, परिश्रम और खून पसीने की कमाई, धोखा दे जाए। पुरातत्त्व का लाभ, बड़ी युक्तियों का प्रयोग, रोजगार फेल होते ही हृदय रोग हो जाएगा, अगले जन्म में ब्राह्मण परिवार में जन्म लेगा व पुलिस में भर्ती होगा।

शुक्र षष्ठम भाव में—देह में कमजोरी, असुन्दरता, देह के विषय में खूब खर्च, आयु में कमी, आत्मा में अशान्ति, छिपी शक्ति का महान प्रयोग, गहरी चालें, खर्च में महान संकट, ननसाल का सहारा, दिनचर्या में दुख। अन्य स्थान में कष्ट। जब-जब बीमार होगा तब मृत्यु भय बन जाएगा। पिछले जन्म में साड़ी बेचने वाला व्यापारी था तथा बड़ी भारी ठगी करता था इस कारण देह से असुन्दर है तथा खर्च बड़ा भारी है।

शुक्र सप्तम भाव में—इच्छा मृत्यु। आत्म विकास, अधिक शानदार आयु, माननीय, उच्चतम रीति से कार्य, देह कमजोर, शारीरिक तथा आत्मिक बल से दैनिक कार्य। आत्मज्ञानी, दूरदर्शी। कूटनीतिज्ञ, प्रभावशाली, सुख-दुख से गृहस्थ धर्म संचालन। भाग्योदय सात बार।

शुक्र अष्टम भाव में—उत्तम आयु, पुरातत्त्व का लाभ। धनकोष की इच्छानुसार वृद्धि। सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग। आदरशील धनाढ्य परन्तु कभी-कभी धन हानि, किसी अन्य की क्रिया में धन लगे। आत्मयोग से वृद्धि। लौकिक उन्नति में कुछ आत्म समर्पण सा तथा कुछ बन्धन सा।

शुक्र नवम भाव में—कठिन परिश्रम से व्यक्तित्व प्रकट। प्राणपण से भाग्यवृद्धि, उत्साही, भाई की कमी, धर्म में श्रद्धा भी, कमी भी, चतुर। एक भाई का देहान्त हुआ तो दूसरा भाई उत्पन्न हुआ।

शुक्र दशम भाव में—सुखपूर्वक शानदार जीवन, बड़प्पन, मकान

दुकानें, जमीन जायदाद। घर बैठे साम्राज्य को पाने की योजना। पुरातत्त्व का लाभ। इधर मकान बनवाया उधर माता का देहान्त हुआ अथवा माता की आयु कम।

शुक्र एकादश भाव में—स्थिर बुद्धि, शरीर का विशेष ज्ञान। गूढ़ आत्मज्ञानी। सन्तान पक्ष में कष्ट साध्य सुख, उत्तम आयु, गम्भीरतापूर्ण गहराई से बातें। सिद्धान्त सिद्धि में आत्मशक्ति का पूरा प्रयोग, दूरदर्शी, कूटनीतिज्ञ। कठिन समस्याओं का हल, इधर पुत्र की मृत्यु हुई उधर शिक्षा देने से मन हट गया। रोजगार प्रधान।

शुक्र द्वादश भाव में—वीर, बहादुर, महान कूटनीति, शत्रु भी बहादुर परन्तु सब मित्र बन जाएँ तथा एक संगठन में रहे। मस्त, खर्च की कमी व शिकायत। मामूली परतन्त्रता व परतन्त्रता में स्वतन्त्रता। परेशानियों पर विजय। अन्य स्थानों से हानि, एक मुख्य शत्रु तो मर कर भी जी उठा।

तुला लग्न में शनि

शनि प्रथम भाव में—पत्नी को परेशान करे, पत्नी से कम सुख, माता की आयु कम, माता शीघ्र वृद्धा हो जाए, गृहस्थ जीवन में क्लेश, बुद्धि में परेशानी। सुख प्राप्ति का साधन बना लेना, सन्तान दुःखी, शिक्षा से भी मन हटे, थोड़ी विद्या से ही सुख। भाग्यशाली, दैनिक रोजगार में क्लेश, गुप्त चाल। इधर मकान पर संकट तो उधर पुत्र पर संकट।

शनि द्वितीय भाव में—दूरदर्शी, विद्या प्राप्त होने में कमी, सन्तान प्राप्त होने में कमी, माता की आयु कम, माता का वियोग। सुख शान्ति की आहुति लगाकर बुद्धि योग द्वारा अन्य स्थानों में सुख प्राप्त। इधर माता का मरण उधर पुत्र का मरण। अन्यत्र चले जाने से पुत्र बच जाएगा। गूढ़ ज्ञानी, पिता की रोजी में कमी।

शनि तृतीय भाव में—माता भाग्यवान्, विद्या में श्रेष्ठता, पुत्र, भाग्यवान्। सुखी, धर्म ज्ञानी। धर्म कार्य के लिए सवारी प्राप्त, शास्त्रीय कला, गुणी, चतुर नीतिज्ञ, लाभ कम। परन्तु इच्छा लाभ, पुरुषार्थी, मस्त, ननसाल से वैमनस्य। न्यायी, धर्म में स्थाई बुद्धि तथा धर्म के लिए भवन निर्माण, योग

शास्त्र व संगीत में गहरा अध्ययन।

शनि चतुर्थ भाव में—पिता के सुख की कमी, माता दीर्घजीवी, सन्तान नौकरी करें परन्तु नौकरी छूटी रहे, चतुर। उन्नति के लिए मतलबी बातें। फौलाद बनाना, खूब खर्च, रजोगुणी, पत्नी स्थान में त्रुटि, स्त्री को कष्टकारक वाणी द्वारा। मकानदार, मकान में तालाब।

शनि पंचम भाव में—विद्या अधिक, डिग्रीधारी भी। देह में महानता, बुद्धि बल से बड़े रोजगार। माता ने रोजगारों पर बल दिया, पुत्र भी रोजगारों को प्रोत्साहन देते हैं, पर पुत्रों को व्यापार में कमी, लाभ में कुछ परेशानी। अगले जन्म में विद्युत के कार्य करेगा परन्तु वे कार्य चल नहीं पाएँगे।

शनि षष्ठम भाव में—माता तथा पुत्रों पर विशेष खर्च बीमारी में, माता की मृत्यु के बाद पुत्र भी मृत्यु तुल्य कष्ट में। पुत्र के इलाज में बहुत धन लगे। बुद्धि में परेशानी, अन्य दूसरे स्थान में सुख शान्ति। सुख की कमी, धन कोष में वैमनस्य। खर्च की शक्ति से भाग्यवान, धर्म में रुचि, न्यायी, बेहद परेशानी होने पर भी धैर्य तथा साहस से कार्य। पिता की रोजी में कमी, माता की मृत्यु, पिछले जन्म में अपने पुत्रों से मारपीट कर धन छीनता था इसलिए अब इसके पुत्र इसे खाए जा रहे हैं।

शनि सप्तम भाव में—सुन्दर, सुडौल, पहलवान, सुख भोगी। माता दीर्घजीवी, पुत्र दीर्घजीवी, विद्या में प्रथम डिग्री, सवारी का बचपन में ही सुख, बड़े कारोबार। घरेलू मामलों में वाणी द्वारा कष्ट। सात मंजिल का लोह मण्डित मकान। देह का पूरा सुख, स्वाभिमानी, मस्त, सन्तान का विशेष प्रेम। सब सन्तान जीवित रहे, पिता की रोजी में उन्नति। भूमि मिली तो पुत्र भी मिले। जब उत्पन्न हुआ तब पिता ने भी व नाना ने भी मकान बनवाया।

शनि अष्टम भाव में—माता मरकर पुनः जी पड़े। लड़-झगड़ के पुत्र धन कोष पर कुछ अधिकार कर लें। बुद्धि बल से तथा मकान से धन प्राप्ति, खूब लाभ। गूढ़ योग, पुरातत्त्व का लाभ, धन पर ताला पहले माँ लगाती है अब पुत्र लगाते हैं।

शनि नवम भाव में—पुरुषार्थी, भाई को पढ़ाना, विद्या, बुद्धि और विवेक के बल पर भाग्योन्नति, माता भाइयों की ओर, पुत्र चाचा की ओर।

भाई बहन भी विद्यावान। शीलरहित निःसंकोच बात कहना। अधिक खर्च। माता तथा इसके पुत्रों की एक राय। दाहिनी भुजा पर काला चिह्न।

शनि दशम भाव में—अपनी लोहे की सवारी, कारें, रेल का डिब्बा अपना। शत्रु शीघ्र मरते जाएँ। बेहद सुखी, अन्त में पुत्र प्रत्येक कार्य पर और जायदाद पर स्वमेव कब्जा कर लें, मकानों की लाइनें, घर में ही कारखाने। पत्नी इसे क्लेश से बचाती रहे। केवल सुख प्राप्ति करने को उत्पन्न हुआ। भाग्योदय तीन बार। सन्तान की सूरत माता पर।

शनि एकादश भाव में—क्लास में फर्स्ट, उत्तम डिग्री, सन्तान और माता सभी विद्वान। माता अपने पोतों से चिपकी रहे, माता पोतों को पढ़ाए। सुन्दर भाषण, पत्नी को धमकाए, धन संग्रह में कमी। दैनिक रोजगार में कुछ कमी अनुभव। रोजगारों के विषय में पत्नी न माने।

शनि द्वादश भाव में—माता बीमार पड़े तो पुत्र भी बीमार, मित्रों की सोसाइटी के कारण विद्या में रुकावट, मकान का गिरना, माता का देहान्त और एक पुत्र का देहान्त डेढ़-दो वर्ष के अन्दर। ननसाल में अतीव वृद्धि, शत्रु पक्ष की वृद्धि। वृद्धा अवस्था में माता भी शत्रुवत। जवानी में पुत्र भी शत्रुवत, खूब खर्च, चतुर, पुरुषार्थी, भाई से वैमनस्य। गूढ़ ज्ञानी, पिता की रोजी में घाटा, दाहिने पैर पर काला चिह्न।

तुला लग्न में राहु

राहु प्रथम भाव में—स्त्री कष्ट, रोजगार और गृहस्थ में बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ, स्त्री को कठिन आघात। दैनिक रोजगार में अधूरा सुख, इन्द्रिय विकार, भोग प्राप्ति में मुफ्त के से साधन। पत्नी बहुत परेशान।

राहु द्वितीय भाव में—जीवन में बहुत कष्ट व चिन्ताएँ। मृत्यु की चिन्ता, अड़चनें। पुरातत्त्व में हानि, गूढ़ ज्ञान की गहरी युक्तियाँ। उदर विकार, गुदा रोग। नाम अमर करने का विशेष साधन। आयु के विषय में मार्मिक आघात। माता की शीघ्र दुःखमय मृत्यु।

राहु तृतीय भाव में—भाग्य की वृद्धि के लिए गहरी युक्तियाँ, भाग्यवानी दिखावे की। धर्म की लम्बी चौड़ी बातें माता से सीखीं, यथार्थताओं

में कमजोरी। भाग्य से कुछ अनाधिकार सफलता, भेदीला, प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष स्थित। भाग्योदय तीन बार।

राहु चतुर्थ भाव में—पिता में विषय में हानि, चिन्ता, राजसमाज में संकट। ये संकट माता के स्वर्गवास के बाद समाप्त हो जाएँ। उन्नति के लिए प्रयत्नशील, मान प्रतिष्ठा की कमी। व्यापार के लिए अनेक कष्टसाध्य कर्म, मानसिक क्लेश, प्रतिष्ठा पर आघात, नौकरी पर आघात। अन्त में उन्नति स्वशक्ति द्वारा।

राहु पंचम भाव में—माता की राय से बहुत लाभ, कुछ परेशानियाँ भी। विशेष लाभ की प्रबल इच्छा, स्वार्थ सिद्धि के ही लक्ष्य। आमदनी संकट लेकिन अन्त में मजबूत, आमदनी माता के बाद। विचित्र युक्तियों का प्रयोग। अगले जन्म में इसका स्वर्ण का कार्य फेल हो जाएगा।

राहु षष्ठम भाव में—बहुत खर्च, खर्च के स्थान में अधूरापन, खर्च में शानदारी का ढंग। अन्त में खर्च में बहुत मजबूती। माता की अंत्येष्टि में बहुत खर्च। अन्य स्थान से शक्ति प्राप्त। माता ने बहुत धन बिगड़वा दिया। पिछले जन्म में माता समान किसी महिला का धन हरण कर लिया था इस कारण अब धन का कष्ट पा रहा है।

राहु सप्तम भाव में—चतुराइयों से कार्य, होशियार, ख्याति प्राप्त। मस्तिष्क में चिन्ता, युक्ति बल, गहरा लाभ, स्थिर लाभ पाने की चेष्टा। डर, गुप्त कमजोरी, देह पर आघात। जीवन में कुछ समय निराशा, माता अधिक सताए, मकान में रह न सके।

राहु अष्टम भाव में—धन का नाश। माता के कारण, मकान के कारण, सवारी के कारण तथा सुख के कारण धन बर्बाद। कुटुम्ब में कमी, धन जन पर बड़े-बड़े आघात। माता के बाद धन एकत्र हो, फिर बेफिकरी, निराशाओं के बाद सफलता। धन प्राप्ति के लिए कोई नया मार्ग।

राहु नवम भाव में—कमजोर पुरुषार्थ। भाई की हानि, माता के हाथों से भाई को कुछ आपत्तिजनक दवा दे दी जाए। गुप्त साहस से कार्य, शक्ति को ही श्रेष्ठ मानना। आलसी, व्यस्त कार्यक्रम के कारण थकान। भुजाओं में कमजोरी, अन्दरूनी डर।

राहु दशम भाव में—माता अपने आप प्राणघात की कोशिश करे। सुख साधन में कमी व अड़चनें, सुख में हानियाँ, सुख के लिए गहरा प्रयत्न। माता के बाद भूमि मकान सवारी के सभी सुख प्राप्त।

राहु एकादश भाव में—विद्या में कठिनाई। बुद्धि से गुप्त भेदों की युक्तियाँ, सन्तान पक्ष में बुद्धि की कमी। छिपाव शक्ति से गौरव माने, अन्त में विद्या से कुछ गहरे फायदे से विशेष लाभ ठीक, सुख देरी से। सन्तान पक्ष में गहरे आघात। दिखावटी चतुराई में बड़ा जोर। माता को पोता देखने में बहुत देर।

राहु द्वादश भाव में—प्रभावशाली, निडर, रोगादिक दिक्कतों पर विजय, शत्रु पक्ष परास्त। प्रभाव की उन्नति में बड़े-बड़े प्रयत्न, बड़े धैर्य व साहस से कार्य, गहरी युक्तियों में होशियार। ये सब बातें तब तक हैं जब तक माता जीवित है। ननसाल में कुछ हानि।

तुला लग्न में केतु

केतु प्रथम भाव में—पत्नी की आयु बहुत कम। गृहस्थी की चिन्ता, दैनिक रोजगार में हानि तथा आग लग जाए, आग लगने का पत्नी को भारी खतरा। रोजगार से सम्बन्ध विच्छेद, पत्नी से सम्बन्ध विच्छेद। रोजगार में दूसरे का सहारा, गुप्त भेद की क्रियाओं से काम निकालना। रोजगार को मजबूत बनाने के लिए प्रयत्नशील। अन्त में मजबूती।

केतु द्वितीय भाव में—जीवन में अशान्ति, गुप्त धैर्य। पुरातत्त्व की हानि। विशेष शक्तिप्रयोग संचय। दिनचर्या में कुछ अधूरापन, आयु में कमजोरी। पेट में रोग, गुदा रोग। शान गुमान। विशेष कार्य यादगार के लिए।

केतु तृतीय भाव में—भाग्य में निराशाएँ, अफसोस। धर्म की कमजोरी। यात्रा में आग लगने का भय। ओछे धर्म का पालन। भाग्य सम्बन्धी बड़े-बड़े आघात, बड़ी-बड़ी कठिनताओं से भाग्य की बिडम्बना। पत्नी केतु का दान करे तो निश्चय भाग्य में वृद्धि हो।

केतु चतुर्थ भाव में—पिता की आयु कम। विवाह के बाद नौकरी छूटे। बहू पिता की इज्जत न करें। कारोबार में नुकसान। मान रक्षा के लिए

बड़े-बड़े संकट। गुप्त शक्ति का संचार, हठधर्मी, पीछे न हटना। आखिर में मजबूती, वेषभूषा तथा वस्त्र में कमी। राज विरोधी, मानसिक चिन्ता।

केतु पंचम भाव में—आमदनी के लिए भारी प्रयत्न। मुफ्त का सा लाभ। आमदनी में कुछ बाधा। अग्नि द्योतक कार्य। परेशानियाँ, घबराए नहीं, गुप्त शक्ति, स्वार्थ सिद्धि, मुस्तैदी। अन्त में बहुत मजबूती, विवाह के बाद बड़े रोजगारों में घाटा। अगले जन्म में विद्युत की दुकान में आग लग जाएगी।

केतु षष्ठम भाव में—मजबूत ढंग से हमेशा एक सा खर्च। अन्य स्थान से शक्ति प्राप्त। खर्च में कमजोरी, प्रकट में दिलेरी। अशान्ति, खर्च के विषय में भविष्य का प्रबन्ध। विवाह के बाद धन का बहुत नुकसान तथा खामखाँ बेकार बहुत खर्च, विवाह में बहुत खर्च। पिछले जन्म में इस व्यक्ति ने अपनी प्रेमिका का धन हरण किया था इस कारण धन का काफी नुकसान उठा रहा है।

केतु सप्तम भाव में—देह में कमजोरी, अधूरापन शरीर में। बहादुर, दौड़धूप, परेशानियाँ। अपने स्थान पर स्थिरता से डटे। हठयोगी, स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी का भय न माने। पत्नी आग सी लगाती रहे। ससुराल वाले आदर न करें।

केतु अष्टम भाव में—धन कोष की हानि, धन के विषय में दुःखी, ऋणी। कुटुम्ब में हानि, धन जन पर विपत्तियाँ। दृढ़ता से उद्योग, अधिक परिश्रम। विशेष युक्तियों से धन प्राप्त, दौड़ धूप। गुप्त शक्ति से कार्य बनाये।

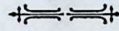
केतु नवम भाव में—बड़ा भारी पुरुषार्थी, साहसी कार्य, दौड़ धूप बेहद, उत्साही, आगे बढ़ने वाला, महान वीरता, पुरुषार्थ की पराकाष्ठा। कठोर व लम्बी भुजाएँ। गुप्त शक्ति का बल, चलता पुर्जा। पत्नी अपने देवर को चैन न लेने दे।

केतु दशम भाव में—माता की आयु कम। अपनी आयु कम। पत्नी माता को चैन न लेने दे। सुख की कमी, सवारी में आग लगने का भय, भूमि सम्बन्धी बड़ी-बड़ी निराशाएँ परन्तु हिम्मत न हारना, अन्त में मजबूती। स्थान से बाहर भी रहे। सुख साधनों में बहुत कमी, हिम्मत से सुख।

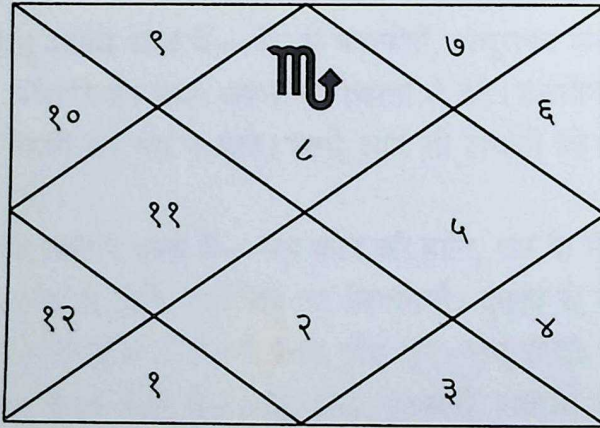
केतु एकादश भाव में—विद्या न के बराबर। बुद्धि के सम्बन्ध में

अन्दर मजबूती लेकिन अपने विचारों को समझा न सके। सन्तान कष्ट और सन्तान बहुत देर में, बुद्धि में चिन्ता। विद्या की योग्यता बाद में मजबूत ढंग से पाना। सिद्धान्त पर अटल, गुप्त योजनाएँ। पत्नी अपनी सन्तान को बेहद सताती रहे।

केतु द्वादश भाव में—शत्रुओं पर बड़ा प्रभाव। ननसाल में क्लेश। दिक्कतों पर और रोगों पर विजय, बहादुर, धैर्यवान, शील उल्लंघन, स्वार्थ सिद्धि। विजय की गुप्त योजनाएँ। साहस से विफलता का मुकाबला। हर एक के साथ जीत के सौदे को पकड़ना, निडर। पत्नी भी कुछ शत्रुओं को दबा दे।



वृश्चिक लग्न



वृश्चिक लग्न में सूर्य

सूर्य प्रथम भाव में—महापराक्रमी, शत्रु पर विजय। हेकड़, पिता का विरोध, ननसाल में प्रभाव। खर्च में कमजोरी, न घबराने वाला, बड़ी युक्तियों से प्रतिष्ठा बनाने वाला, युक्तियों का ही कारोबार, झगड़ों में बड़ा साहस, पिता भी मुकद्दमें में उलझा हुआ पर विजय में अग्रसर।

सूर्य द्वितीय भाव में—शानदार दैनिक रोजगार, कठिनाइयाँ होते हुए रोजगार में बड़प्पन। स्त्री वैमनस्यता, कर्मशक्ति के योग से मान प्राप्त।

भोगादिक में कुछ कमी। गृहस्थ कर्म में ही अपनी शोभा समझना, चतुर, पिता की रोजगार शक्ति को पाना।

सूर्य तृतीय भाव में—पिता की आयु कम, नौकरी देर से मिले व छूट जाए। गूढ़ युक्तियों से उन्नति में चेष्टा। विदेश आदि के योगों में धन प्राप्ति, आयु वृद्धि, कुटुम्ब वृद्धि, छोटे कर्मों को परिश्रम से करे। राज स्थान में मान हानि। पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त।

सूर्य चतुर्थ भाव में—भाग्यवान्, प्रतापी, धर्म-कर्म वाला, पिता भी भाग्यवान्, ईश्वरीय शक्ति के चमत्कार। पुरुषार्थी, भाग्य को प्रधानता दे। पिता का प्यारा, भाई से न्यून प्रेम। राजसी ऐश्वर्य, कीर्तिवान्, दूरदर्शी। तत्त्वखोजी, परोपकारी, ज्ञानी।

सूर्य पंचम भाव में—राज में वैभव, गजटेड अफसर, प्रतापी, प्रबन्धक, कार्य में तेजी। पिता को मान, पिता मनमानी करें, माता से विरोध, सुख में अशान्ति, सवारी से कष्ट। ऊँची कुर्सी, शिकायतें करने वाले क्षमा माँग लें। भाग्योदय पाँच बार।

सूर्य षष्ठम भाव में—व्यापार में खूब लाभ, बड़ी शान की कमाई, पिता व्यापार को साथ चलाए। विद्या में डिग्री, सन्तान वैभव, बहुत चतुराई, राजनीति में अच्छा वक्ता, उत्तम कार्य। शत्रु भी मित्र बनकर साझी हो जाएँ। अगला जन्म वणिक के परिवार में होगा तथा सरकारी ठेके मिलेंगे।

सूर्य सप्तम भाव में—पिता का बहुत खर्च। पिता विषय पर बहुत खर्च, पिता की आयु कम। नौकरी स्वयं छोड़े, इधर पिता का देहान्त उधर नौकरी छूटी। कारोबार मान प्रतिष्ठा की हानि। खर्च में क्लेश, आलसी, दबू, छिपी ताकत से गुप्त योजनाएँ। अन्य स्थानों के प्रभाव से दिन-दिन तरक्की। पिछले जन्म में किसी सिपाही को गोली मार दी थी जिसके कारण इस जन्म में भी इसे पुलिस परेशान करती है।

सूर्य अष्टम भाव में—राजसी ऐश्वर्य, मान सम्मान, बहादुर, हुकूमत। पिता का प्यारा, ऊँचे कर्म, सुन्दर वस्त्राभूषण, प्रतापी। मुख पर तेज, बड़े लोगों से मेल-जोल। नौकरी दिलाने वाला, राज्य से पुरस्कार।

सूर्य नवम भाव में—राज समाज में अपूर्व धन प्राप्त, कारोबार में

महानता, पिता द्वारा वृद्धि, बड़े कर्म, धन कमाने के लिए पूर्ण शक्ति का प्रयोग, पुरातत्त्व की गहरी खोज। पैतृक लाभ, उद्योगी, मानयुक्त कर्मशक्ति से जीवन में प्रकाश।

सूर्य दशम भाव में—पुरुषार्थी, परिश्रमी, भाई से वैमनस्य, उद्योग में उन्नति। भाग्यवान्, धर्म कर्म का पालन। परिश्रम से यश, साहस का भरोसा, भाई नौकरी ढूँढ़ने में बहुत परेशान, उनको नौकरी देर में मिले।

सूर्य एकादश भाव में—घर पर ही प्रकाशवान कर्म परन्तु कुछ नीरसता। मकान, भूमि में भी मन कम लगे। कोई अफसर घर पर आकर खुश न हो। हुकूमत से हटना पड़े। माता को डपटे।

सूर्य द्वादश भाव में—सरकारी नौकरी तथा कानून का बड़ा ज्ञान, राजनीति का ज्ञाता, सरकार से वजीफा, विद्या में डिग्री, सरकार स्वयं आगे पढ़ाए। सन्तान सुख, सन्तान को नौकरी, स्वार्थी, लौकिक पद्धति के अनुकूल चलने वाला, वाक्पटु, किसी अफसर से यदि कुछ कह दे तो वह मान ले, परन्तु अफसरों की भी माननी पड़े।

वृश्चिक लग्न में चन्द्रमा

चन्द्रमा प्रथम भाव में—धर्म तथा ईश्वर में कम श्रद्धा। मानसिक कष्ट, भाग्य के सम्बन्ध में कुछ घिराव सा, अधिक खर्च के साधन। शत्रु पक्ष से शान्ति से सफलता, स्वार्थ सिद्धि के लिए न्याय की परवाह न करें। मन के अन्दर पेचीदा युक्तियाँ, नौकरी में शिकायतें, सस्पेन्स, पद में न्यूनता।

चन्द्रमा द्वितीय भाव में—बड़ा भाग्यशाली, विवाह बड़े भाग्यवान घर में, विवाह के बाद जैसे भाग्य के दरवाजे खुल गए, धर्म का सामान्य पालन, पत्नी धर्मशील। देह में कमजोरी, मन में उमंग, कामशक्ति उत्तम।

चन्द्रमा तृतीय भाव में—भाग्य की कमजोरी से मानसिक कष्ट, नौकरी में दूर तबादला, नौकरी छूट जाए, बड़ी परेशानियाँ। धन वृद्धि में अपयश, उत्तम आयु, दमा, पिता की आयु कम, भाग्य में अवनति।

चन्द्रमा चतुर्थ भाव में—बड़ा भाग्यशाली, यशवान, धर्म का सुन्दर पालन, ईश्वरवादी, भाग्य के कारनामों में मग्न, न्याय को प्रधान मानना,

धार्मिक योजनाओं में भाग्य वृद्धि। दूर की सोचने वाला, दैवी शक्ति प्राप्त, पुरुषार्थ से सफलता, आनन्दी जीव, भाग्य उदय चार बार।

चन्द्रमा पंचम भाव में—पिता भाग्यवान्, सुन्दर कर्म, सुन्दर कारोबार, भाग्यबल से सम्मान, राज-गौरव, ऊँची उन्नति, यशस्वी, प्रतापी, माता से सहायता।

चन्द्रमा षष्ठम भाव में—भाग्य में ऊँचे-ऊँचे व्यापार लिखे हैं। शिक्षा में डिग्री, सत्य का ध्यान, सन्तान सुख, कन्या अधिक, अनेक विद्याओं का लाभ, दयालु, भाग्यवान्, अधिक लाभ प्राप्त वाला, भाग्य ही व्यापार को सम्भाले, अगले जन्म में किसी वणिक परिवार में जन्म लेगा तथा अर्क व आइसक्रीम का कार्य करेगा।

चन्द्रमा सप्तम भाव में—भाग्य साथ न दे, देवता प्रार्थना पर ध्यान न दें, अधिक खर्च, अगले जन्म में संकटों का सामना, यश की कमी, धर्म में कम विश्वास, भाग्य की अवनति से मानसिक कष्ट, कमजोर धर्म का पालन। अधिक खर्च करने से भाग्य की सहायता, ननसाल से तथा शत्रु से कुछ सान्त्वना, बहुत देर से भाग्योदय। पिछले जन्म में यह व्यक्ति एक गवैया के वाद्य छीन लाया था, अतः मनोबल टूटा हुआ है तथा भाग्य साथ नहीं देता।

चन्द्रमा अष्टम भाव में—भाग्य की कमजोरी, मानसिक चिन्ता, देह में दुबलापन, गृहस्थ का पूरा ध्यान, स्त्री में विशेष रुचि, धर्म का अधूरा पालन। यथार्थ उन्नति में रुकावट, दिल की कमजोरी, दैवगति पर अफसोस।

चन्द्रमा नवम भाव में—भाग्यवान्, धनवान्, बहुत धन संग्रह, कुटुम्ब का आनन्द, भाग्य के चमत्कार का अभाव, आयु दीर्घ, दिनचर्या में गौरव, मानसिक विचारों से भाग्य की वृद्धि। साले की भी धन वृद्धि, प्रभु के दर्शन।

चन्द्रमा दशम भाव में—उत्साही कर्मपरायण, ईश्वर भक्त, धर्म बल, सतोगुणी, शक्ति का सदुपयोग, मगन मन, बहनें अधिक, ऊँचे विचार, दूरदर्शी, पुरुषार्थ में कुछ नीरसता। साला एक और भाई का विवाह कराना चाहे।

चन्द्रमा एकादश भाव में—भाग्यशाली, सुखी, धर्म कर्म का पालन, माता भूमि सवारी का सुख, घर में ही भाग्योदय, मगन मन, कर्मैष्टी, ईश्वरवादी।

चन्द्रमा द्वादश भाव में—विद्यावान, बुद्धिमान, दूरदर्शी, तत्त्वज्ञाता, धर्मात्मा, सत्यवादी, सुन्दर भाग्यवान सन्तान, जब-जब सन्तान उत्पन्न हो तब-तब भाग्योदय, ईश्वर भक्ति व धर्म ज्ञान, भाग्य से सुन्दर-सुन्दर लाभ। वाक् सिद्धि, मृदु-भाषी, गुणी। बुद्धि में दैवी शक्ति का वास।

वृश्चिक लगन में मंगल

मंगल प्रथम भाव में—पराक्रमी, आत्मज्ञानी, आत्माभिमानी, दृढ़ शरीर, शत्रु व मुसीबतों की परवाह न करने वाला, उन्नतिशील, विजेता। परिश्रम द्वारा बहुत मान। कुछ परतन्त्रता सी पर उसमें भी ख्याति, भाग्य कमजोर। ननसाल में भी रहे। देह में कुछ परेशानी, दिक्कत तथा थकान का योग। सावधान, मस्तक में चोट परन्तु इलाज हो जाए।

मंगल द्वितीय भाव में—पत्नी से वैमनस्य, रोजगार में महानता। साहसी, भोगी, इन्द्रिय सुख, स्वाभिमानी, देहबल। इन्द्री में कुछ रोग, पिता का आदर करने वाला। राज समाज में पुरुषार्थ द्वारा सफलता, पेचीदा चालें, इज्जतदार जीवन। विवाह के लिए लड़की पसन्द न आए। मंगली।

मंगल तृतीय भाव में—देह को कष्ट, हृदय में दाह। अन्य स्थान में रहने वाला, दुःखी, ननसाल में हानि, छोटा कद, आमदनी का बड़ा ख्याल। इससे पहले इसका शत्रु साहसी, गुप्त शक्ति, भेदीली बातें, मान अपमान की परवाह न करे, अधिक गुमान, मंगली। वक्ष में चोट।

मंगल चतुर्थ भाव में—कमजोर भाग्य, देह में कमजोरी, धर्म में कमजोरी, पुरुषार्थी, माता तथा ननसाल में कमजोरी। भूमि का अधिकार पाने के लिए प्रयत्नशील। अन्य स्थानों का भी सम्पर्क। ईश्वर व यथार्थ धर्म में कम श्रद्धा, भाई को महत्त्व दे, देर सवेर में भाग्योदय।

मंगल पंचम भाव में—प्रतापी, राजसुख, शत्रु भी सरकारी नौकरी में, रक्षा विभाग। देह में सुन्दरता व तेज, प्रभावशाली, होशियार प्रबन्धक, बुद्धि के कार्य। पिता की तरक्की हुई जब उत्पन्न हुआ। पिता से कुछ विरोध,

मान-प्रतिष्ठा। नाम पानेवाला, आत्मबल, मजबूती से बोलना, यशस्वी। मामा के यहाँ शिशुकाल।

मंगल षष्ठम भाव में—देह के परिश्रम से बहुत आमदनी। शत्रुओं तथा रोगों द्वारा कारोबार में अड़चनें। उत्तम पुरुषार्थ। अधिक नफा खाने वाला। ननसाल से लाभ, ननसाल वाले व्यापारी, सन्तान से परेशानी, सावधान। विपत्तियों में विजय, देह में कमजोरी, क्रोधी। अगले जन्म में सेना में कार्यरत रहेगा तथा वीर बनेगा।

मंगल सप्तम भाव में—मंगली। देह में कष्ट, कमजोरी, खर्च की परेशानी, झंझटों में खर्च, ननसाल से अधिक खर्च। अन्य स्थान में रहने वाला, भाई को चाहने वाला, हृदय में अशान्ति। चंचल हृदय, भ्रमण, भोग प्राप्ति के लिए विशेष प्रयत्न। पिछले जन्म में यह व्यक्ति डाकू था तथा वणिकों को लूटा करता था जिसके कारण अब स्वयं काया से दुःखी है तथा मुकद्दमों से परेशान है। वस्ती में चोट।

मंगल अष्टम भाव में—मंगली। प्रभावशाली, दृढ़ शरीर, बड़ा गुस्सा। देह में गरमी, कुछ रोगी की सी शक्ल। माता को पीड़ा दे। मकान व सुख शान्ति में विघ्न, पत्नी से क्लेश। दैनिक रोजगार में दिक्कतें, परेशान। बहादुरी व आत्मबल से बड़े-बड़े कार्य करें। ननसाल से सहायता, साहसी, पहलवान।

मंगल नवम भाव में—शारीरिक परिश्रम से धनवान्। धन संग्रह के लिए विशेष दौड़-धूप। धनकोष में कुछ कमी, कुछ रोग व बन्धन, जबरदस्त बातें, उत्तम विद्या, सन्तान से विचार न मिलें, दिनचर्या में शान। भाग्य कमजोर, शुद्र धर्म वाला।

मंगल दशम भाव में—प्रभावशाली, महान कार्य करने वाला। उच्च कोटि का परिश्रमी। अखाड़े में कोई टक्कर न ले सके। ननसाल वालों ने पहलवानी सिखाई। शत्रुओं पर विजय, धर्म तथा भाग्य में कमजोर। व्यापार तथा प्रतिष्ठा में तरक्की। प्रयत्नशील, पिता से तू-तू, मैं-मैं। भाइयों पर प्रभुत्व, स्वाभिमान।

मंगल एकादश भाव में—मंगली। माता से मारपीट, माता दुःखी। सुख में घाटा, अपने स्थान में रहना व सुख शान्ति चाहना, पत्नी विरोध।

परिश्रम से रोजी, देहबल से बहुत लाभ, पिता से विरोध। राज समाज में कुछ मान। भूमियुक्त, कुछ जमीन ननसाल वालों को दिलवाए परन्तु यह कार्य कम लाभ का, पिंडली में चोट।

मंगल द्वादश भाव में—बुद्धिमान, चतुर, भेदनीति में होशियार। वीरता की बातें, विजय के लिए क्रोध, पुरातत्त्व सिद्धान्तों को मानने वाला। गौरव मुक्त, खर्च अधिक, अन्य स्थानों में सम्पर्क, वाणी में शक्ति। पुत्र रत्न प्राप्ति परन्तु पुत्र से विचार न मिलें। देह में रोग, शीलता का उल्लंघन। ननसाल वाले इसकी सन्तान को पालें।

वृश्चिक लग्न में बुध

बुध प्रथम भाव में—आमदनी की परेशानी। परतन्त्रता का योग, खर्च अधिक, दुकान बिक जाए या दिवाला। अन्य स्थानों से सम्बन्ध, ननसाल से न्यून सहयोग। गूढ़ युक्तियों से कार्य।

बुध द्वितीय भाव में—दैनिक रोजगारों में कष्ट। स्त्री से लाभ, व्यापार पत्नी के नाम, पत्नी से छिपा हुआ क्लेश। विवाह के बाद जीवन का आनन्ददायक समय। पब्लिक जानकारी में आकर कार्य, जटिल विचारों से अधिक लाभ। रोजगार से जीवन में गौरव, परिश्रमी, कर्मवान। पत्नी की मृत्यु के बाद एक मास में ही जातक की मृत्यु।

बुध तृतीय भाव में—दीर्घ आयु। गूढ़ तत्त्व का विवेक से हल। पुरातत्त्व का विशेष अधिकार, अन्य स्थान से अधिक लाभ, लाभ के कारण जीवन की दिनचर्या में रौनक। धन संग्रह के लिए पूर्ण शक्ति, जीवन में मस्ती, गौरव, लापरवाही। देहान्त के बाद व्यापार समाप्त।

बुध चतुर्थ भाव में—विशेष सुन्दर, आमदनी भाग्य में लिखी है। धर्म का ज्ञान, धर्म कर्म में व्यापार की मोहर, पुरुषार्थी, दिनचर्या में आनन्द। आयु में वृद्धि, यश में कमी, गूढ़ विवेक, स्वार्थी। भाग्य में कुछ कमजोरी भी, कुछ भाग्य सम्बन्धी प्रकाशन।

बुध पंचम भाव में—सरकारी नौकरी अवश्य मिलेगी तथा अवश्य हटेगी। मान प्रतिष्ठा, राज से लाभ। क्लेशयुक्त लाभ की योजना, उत्तम आयु,

❖ रावण संहिता ❖

१४३

प्रभावशाली कर्म, विवेकबल, राजनीतिज्ञ, पद व उन्नति के विषय में कुछ रुकावटें।

बुध षष्ठम भाव में—पुरातत्त्व का महान लाभ। बड़े-बड़े रोजगार, कल-कारखाने भाग्य में लिखे हैं। जीवन में मस्ती, विद्या, बुद्धि में कुछ कमजोरी। सन्तान से क्लेश, छिपाव की बातों से मतलब निकालने वाला। लापरवाह, कड़वी बोलचाल। अगले जन्म में बड़ा भाग्यशाली सेठ बनेगा तथा कल-कारखानों में प्रसिद्धि पाएगा।

बुध सप्तम भाव में—अधिक खर्च। अन्य स्थानों से बहुत लाभ। पुरातत्त्व की संचित विभूति का महान लाभ, बाल्यकाल में अशान्ति, दूर से सम्पर्क से लाभ, लाभ में कमी। आयु में निराशाजनक योग। स्वतः बहुत खर्च, कुछ झगड़ों में व रोगों में अधिक खर्च। पिछले जन्म में इसने वस्त्रों की चोरी की थी इस कारण मूल्यवान वस्त्रों से वंचित है तथा आयु की चिन्ता रहती है।

बुध अष्टम भाव में—विवेक शक्ति के द्वारा रोजगारों में विशेष लाभ। क्रोधयुक्त, सौम्य प्रकृति, आयु उत्तम, शानदार जीवन, गहरी गुप्त चाल, देह के कठिन परिश्रम द्वारा लाभ। आमदनी द्वारा गृहस्थी का पूरा ध्यान। अपनी मृत्यु को अपने आप बुलाए।

बुध नवम भाव में—युक्तियों से धन संग्रह, विवेक से सफलता। पुरातत्त्व का बहुत लाभ, बड़ी आयु, धन संग्रह में कमी, रईसी। पैतृक लाभ में कमी, रोजगारों से धन जुड़े, कभी धन रोजगारों में ही खप जाए।

बुध दशम भाव में—सौम्य, पुरुषार्थी, गूढ़ विवेक। पुरातत्त्व का सुन्दर फल। आयु की वृद्धि, बहन, भाइयों में कमी, धर्म में कुछ स्वार्थ। नीतियुक्त, एक बहन का निधन, रोजगार भाइयों के पक्ष में।

बुध एकादश भाव में—अपने स्थान में कुछ बाधाओं सहित रोजगारों में लाभ। दिनचर्या के कारण सुख के साधनों में कमी, माता की आयु कम। मान सम्मान युक्तिबल से प्राप्त। गूढ़ युक्तियों से विशेष सुख।

बुध द्वादश भाव में—विद्या बुद्धि की कमजोरी। सन्तान से हानि की आशा, सन्तान रोजगारों तथा आमदनी पर कोई ध्यान न दे, अधिक लाभ के

लिए चिन्तित, कटुभाषी, छिपाव वाला। गुप्त व गहरी योजनाओं से आमदनी में तरक्की।

वृश्चिक लग्न में गुरु

गुरु प्रथम भाव में—कुछ परतन्त्रता से धन कमाना व विद्या प्राप्त करना। धन में व विद्या में कमी, अन्य स्थान में पढ़ने से दिमाग खुल जाए। सन्तान शत्रु सम व्यवहार करे, सन्तान की कम आयु, खूब खर्च, अपनी बात ठीक प्रकार न कह सके। हृदय कमजोर। ननसाल से शिक्षा की सहायता। धन शत्रु पक्ष की ओर।

गुरु द्वितीय भाव में—विद्या में कमी। सन्तान से न बने। दैनिक रोजगार में परिश्रम से व पत्नी की सहायता से अधिक लाभ। धन को पत्नी सम्भालकर रखती है, पत्नी के आने से धन की बढ़ोत्तरी। पत्नी में कुछ नीरसता।

गुरु तृतीय भाव में—थोड़ा धन, थोड़ी विद्या, थोड़ी सन्तान। कुछ सन्तान को मरण तुल्य कष्ट। हृदय रोग, अशान्ति, अधिक खर्च। धन कमाने में बहुत परिश्रम व परेशानी। कूटनीति तथा गुप्त योजनाओं से कार्य निकालना, किसी बुजुर्ग का देहान्त। मकान में दक्षिण-पश्चिम में धन गड़ा है।

गुरु चतुर्थ भाव में—अपार धन भाग्य में लिखा है। ज्यों-ज्यों सन्तान प्राप्त होती गई त्यों-त्यों भाग्य बढ़ता गया तथा तरक्की होती गई और धन भी बढ़ता गया। धर्म गुरु, धार्मिक यात्राएँ और उनसे भाग्य वृद्धि। शास्त्रीय ज्ञान, ज्योतिष ज्ञान, प्रतिष्ठा, दूरदर्शी, सनातन धर्मी, आत्मज्ञानी। धर्म कर्म में व्यय सार्थक है। भाग्योदय पाँच बार।

गुरु पंचम भाव में—राज समाज से बुद्धि योग द्वारा धन प्राप्ति। धन द्वारा सर्विस प्राप्त। मान प्रतिष्ठा, बहुत धन कमाए, पिता धन को सम्भाल कर रखे। सन्तान को भी सरकारी नौकरी, बड़प्पन, ऐश्वर्य, उत्साही, राजयोग।

गुरु षष्ठम भाव में—मूल्यवान विद्या में डिग्री। बुद्धियोग से व्यापारों में अनेक लाभ। सन्तान को भी व्यापार प्रिय। अधिक धन लगाकर बड़े-बड़े व्यापार, दानाई से बातचीत। स्त्री भोगादिक में वृद्धि, बड़ों की कृपा प्राप्त।

धनवान, इज्जतदार, धन तथा सन्तान की शक्ति से व्यापार में उत्तमता। इस जन्म का गढ़ा हुआ धन अगले जन्म में प्राप्त करेगा।

गुरु सप्तम भाव में—धन का अधिक नुकसान। किसी बुजुर्ग की मृत्यु। सन्तान अधिक खर्च करने वाली, पुत्री की आयु कम। अल्प विद्या में कठिनता तथा बहुत खर्च, गलत तरीके से बातचीत, घुमाव फिराव की बातें। सुख शान्ति में कमी, शत्रु पर मित्रता का प्रभाव, अमीरी ढंग। पिछले जन्म में इसके वाणों द्वारा मृग शावकों का हनन हुआ था इस कारण अब सन्तान तथा विद्या बन्धन की कमी है।

गुरु अष्टम भाव में—धनवान, धर्मज्ञ, नीतिज्ञ। योग्य सन्तान, पुत्र के द्वारा तरक्की। सन्तान को पिता बहुत प्यारा, सन्तान माता से खिन्न, चार पुत्र। न्याय की इच्छा, गुणी, आत्मज्ञान, दूरदर्शी, सनातन धर्मी, प्रभु में निष्ठा। ठीक जचाव की बातें, ज्योतिष में रुचि।

गुरु नवम भाव में—विद्या बुद्धि के बल से धन संग्रह। डिग्री, बहुत होशियार, प्रभावशाली, कुटुम्ब से सभी विद्यावान, मान-प्रतिष्ठा। पिता की आयु अधिक तथा धन वृद्धि। पहले स्वयं धन सम्भाले, फिर सन्तान धन सम्भाल कर रखे। राज-समाज से लाभ, शिक्षा व सन्तान पक्ष में कुछ बन्धन सा, राजयोग। मकान में उत्तर पूर्व में धन गढ़ा। पुत्र का धन भी इधर ही है।

गुरु दशम भाव में—धन जन की हानि। विद्या में कमजोर। धर्मवान ईश्वरवान, धन भाइयों को, हृदय कमजोर, धन सन्तान के विषय में न भाइयों से बने, न पत्नी से बने, एक पुत्र गोद माँगा जाए।

गुरु एकादश भाव में—धनाढ्य, आदरणीय, आयु उत्तम, खूब खर्च। सुख साधनों में कमी, माता से विचार न मिले, पिता को सुख। अमीरी ढंग, भूमि को कायम रखने में बड़ी दिक्कतें। सन्तान को घर अच्छा न लगे।

गुरु द्वादश भाव में—पिता का धन सन्तान ने शीघ्र सम्भाल लिया, धन से खूब विद्या प्राप्ति की। डिग्री, विद्वान, अध्यात्मिक ज्ञान, सनातन धर्म, ईश्वर में भरोसा, भाग्यवान्, वाक्-सिद्धि, वाणी में विशेष कला। राजयोग, शास्त्रीय ज्ञान का सागर, पुत्र पर व्यय सार्थक। मकान में उत्तर पश्चिम में धन गढ़ा है।

वृश्चिक लगन में शुक्र

शुक्र प्रथम भाव में—पत्नी से विरोध, पत्नी के सुखों में घाटा। दैनिक रोजगार में बहुत कमी, रोजगार में हानि, परेशानी, बन्धन व परतन्त्रता सी, अन्य स्थान का सहयोग। गृहस्थ सुख में कंटक से, भोग में कमी। रोजगार में झगड़ा, खर्चा सहकर कुछ युक्तियों द्वारा खर्च चलाना। पत्नी के विषय में मुकद्दमा।

शुक्र द्वितीय भाव में—बाहरी स्थानों के सम्पर्क से बहुत रोजगार। रोजगार की मजबूती के लिए बहुत शानदार खर्च, दौड़-धूप। स्त्री व गृहस्थ का खूब आनन्द, खूब खर्च, खूब भोग, भोग विलास में अनेक खर्च। खर्च का कार्य बाद में पत्नी सम्भाले। पत्नी विशेष चतुर तथा कानूनबाज।

शुक्र तृतीय भाव में—पत्नी की आयु कम। दैनिक रोजगार कई बार नष्ट हो जाए, रोजगार को अन्य स्थानों के सहयोग से व बड़े परिश्रम से खर्च करके चलाने वाला, फिर भी रोजगार में कमी। धन वृद्धि की चेष्टा। कामेन्द्री में सुख की कमी। गृहस्थ में बड़े-बड़े झंझट। पत्नी कमजोर, शीघ्र वृद्धा।

शुक्र चतुर्थ भाव में—रोजगार अन्य स्थानों के सम्पर्क से, धार्मिक सम्बन्ध से व भाग्यबल से पाने वाला, रोजगार व भाग्य में कुछ कमजोरी। ईश्वर व पुरुषार्थ दोनों को माने, भाग्यवान्। भाग्य बढ़ाने के लिए तथा धार्मिक कार्यों में विशेष खर्च। भाग्य के विषय में विशेष खर्च करने से भाग्य बढ़े।

शुक्र पंचम भाव में—दैनिक रोजगार में उच्चता, कुछ कमजोरी भी और परेशानी भी, सरकारी नौकरी। मान-प्रतिष्ठा में अशान्ति, स्त्री पक्ष में कमजोरी, माता का सुख। मकान भूमि सवारी का सुख। कुछ दिनों को मकान व सवारी सरकारी। पिता से अशान्ति पत्नी के कारण। खर्च करने से नौकरी मिले परन्तु छुट जाए।

शुक्र षष्ठम भाव में—छोटे रोजगार अधिक धन लगाने से बड़े हो जाएँ और इन रोजगारों के लिए पत्नी की राय। खर्च बहुत, अधिक चतुराई से

कार्य करना पड़े। भोगादिक में कमी, सन्तान वृद्धि। अधिक बोलकर प्रभाव जमाने वाला, अगले जन्म में औषधि निर्माण के कार्य करेगा।

शुक्र सप्तम भाव में—पत्नी की आयु कम लेकिन मरकर जी पड़े। गृहस्थ में भारी खर्च, विवाह में भारी खर्च, ठाठ बाट से विवाह, परन्तु खर्च पर कन्ट्रोल। भोग-विलास में बहुत खर्च, शत्रु से शान्ति का इच्छुक। अन्य स्थानों में अधिक प्रभाव, ननसाल से न्यून सहयोग। पिछले जन्म में अपनी पत्नी होते हुए अन्य की पत्नी से भी विवाह कर लिया था। इस कारण इसके धन पर चोट रहती है व पत्नी दुःखी रहती है।

शुक्र अष्टम भाव में—अन्य किसी दूसरे स्थान से उत्तम दैनिक रोजगार। शानदारी से खर्च, हेर-फेर से उत्तमता, अपने पर अधिक खर्च, देह में कमजोरी, रोजगार के कारण भ्रमण। कुशल, चतुर, दूरदर्शी। सुन्दरता का इच्छुक। विवाह से पहले पत्नी इसे देखने का प्रयत्न करे।

शुक्र नवम भाव में—धन संग्रह में कमजोरी, धनकोष की हानि, पत्नी धन सम्भालकर रखना चाहती है। ससुराल वालों की दृष्टि धन की तरफ। कुटुम्ब में हानि। अन्य स्थानों से तथा अधिक खर्च से रोजगारों में वृद्धि।

शुक्र दशम भाव में—रोजगार के लिए दौड़-धूप व पुरुषार्थ। अन्य स्थान से रोजगार में वृद्धि, उन्नति की चेष्टा। गृहस्थ का आनन्द। खर्च भाई बहनों पर, भाई व बहनों की पत्नी तरफदारी करती है। रोजगार में न्याय का ख्याल। दैनिक रोजगार में भाइयों का भाग।

शुक्र एकादश भाव में—अपने मकान में दैनिक रोजगार। सुखी, माता, जमीन, सवारी पर बहुत बेकार का खर्च, भोग तथा खर्च का आनन्द। पिता से वैमनस्य, उन्नति में रुकावट। पत्नी ने मकान खरीदवाया, उसमें विशेष खर्च हुआ।

शुक्र द्वादश भाव में—चतुराई, कला, कानून डिग्री, काट-छाँट करने वाला, वाक् चतुर तथा वाक्-सिद्धि। आमदनी में कमी। पत्नी विद्वान्। पढ़ाई में बहुत शानदार खर्च, सन्तान सब शिक्षित। अधिक भोग-विलास, अधिक खर्च सन्तान पर और इससे बुद्धि परेशान, बुद्धि के द्वारा अनोखे प्रयत्न।

वृश्चिक लग्न में शनि

शनि प्रथम भाव में—भाई तथा माता की आयु तथा सुख में कमी। भाई, बहन व माता शत्रुता का व्यवहार करें और वे सब एक होकर रहें। गुप्त साहस, ननसाल में हानि। शत्रु मर्दन पर शत्रुओं से कभी-कभी क्लेश। अधिक खर्च, अपना मकान त्यागना पड़े, गलत योजनाओं से सफलता। पिता की रोजी में कमी। पहले भाई का देहान्त फिर ढाई वर्ष बाद माता का स्वर्ग-गमन। माता की मृत्यु के बाद विवाह।

शनि द्वितीय भाव में—माता पत्नी को देखने जाए। पत्नी जमीन जायदाद वाली। दैनिक रोजगार में बहुत सुख, उत्साहपूर्वक कार्य, दूसरों को सुख पहुँचाना, भाई भी पत्नी की तरफदारी करें। अकस्मात पत्नी के नाम मकान। सवारी का गृहस्थ में सुख, पत्नी सवारी लेकर आए।

शनि तृतीय भाव में—भाई, बहन, माता की आयु में कमी। मकान भूमि सवारी में कमी। पुरुषार्थ में कमजोरी। आयु वृद्धि, पिता की आयु माता से कम। वाचाल, विदेश गमन, धन वृद्धि के लिए बड़े-बड़े प्रयत्न।

शनि चतुर्थ भाव में—भाई बहन तथा माता सभी भाग्यवान्। स्वयं बड़ा भाग्यवान्। मकान भूमि सवारी का पूर्ण सुख। ऊँचे स्तर की सवारी। यश, साहस, पुरुषार्थ। ननसाल को सहायता। धर्म ईश्वर तथा भक्ति में सुख मानना। अधिक परिश्रम से घबराना, ज्यों-ज्यों मकान बनाए त्यों-त्यों भाग्यवान् बनता जाए। धार्मिक भ्रमण में माता और भाई बहन का साथ रहे।

शनि पंचम भाव में—पुरुषार्थ से प्रभाव, बहुत खर्च। माता कहती है कि नौकरी मत कर। अन्य स्थानों के सम्पर्क से कुछ मजबूती। जमीन, जायदाद का स्वामी। उन्नति में कठिनाइयाँ। हठयोगी, तामसी, भोग तथा स्त्री का सुख प्राप्त। बाएँ वक्ष पर काला चिह्न।

शनि षष्ठम भाव में—पुरुषार्थ से आमदनी, भाइयों का साझा। परिश्रम तथा लाभ के कारणों से सुख-सम्बन्ध में तथा देह और आत्मा के मध्य कुछ अशान्ति। वाणी में चंचलता। आमदनी में वृद्धि, सुखी, आमदनी माता या भाइयों के नाम से बढ़े। सवारी का व्यापार। अगले जन्म में भूमि काटकर बिक्री करेगा (कोलोनाइज़र) तथा खूब धन कमाएगा।

शनि सप्तम भाव में—माता का तथा भाइयों का अधिक खर्च। माता और भाई खर्च को सम्भाले, जमीन मकान की बिक्री। भाई तथा माता की आयु कम। धन की कमजोरी, धन हानि। उन्नति में लगा रहे। दूसरों का भी साहस रखने वाला। शत्रु पक्ष पर गुप्त चाल चलने वाला। पिछले जन्म में किसी की मशीन की चोरी की थी जिसके कारण धन-भूमि व भ्राता कष्ट भोग रहा है।

शनि अष्टम भाव में—विशेष पुरुषार्थी, उत्साही, रोजगार में तरक्की, पिता से क्लेश। राज समाज से न बने। माता का प्यारा, भाइयों का प्यारा। पुरुषार्थ के समय भाई साथ देते हैं। लम्बी भुजाएँ, हठी, साहसी, परिश्रमी, पहलवान।

शनि नवम भाव में—पहले धन की हानि फिर धन का सुख। माता ने कुछ धन सम्भाल रखा है। भाइयों का बँटवारा। भाई तथा बहनों का बन्धन। कुटुम्ब की हानि फिर वृद्धि। सुखी, वाहन का सुख, वाहन धन-कोष के कार्य में वृद्धि करे।

शनि दशम भाव में—बड़ा परिश्रमी व पुरषार्थी। भाई बहनों का हित। भाइयों के कारण से बहुत अधिक खर्च। भाग्यवान्, माता ने पहलवान बनाया। विद्या व गुणों का संग्रह। अन्य स्थान से सुख, प्रगति का आनन्द। दाहिनी भुजा पर अनेक तिल।

शनि एकादश भाव में—जमीन, मकान, सवारी, माता का पूर्ण सुख। रेल में अपनी सीट रिजर्व। माता की आयु अधिक, भाई माता की कृपा पर। शत्रु से अशान्ति, देह व आत्मा के सुख की कमी, गुप्त दाव। पेट का निरोग। दाहिनी ओर वक्ष पर एकत्रित तिल।

शनि द्वादश भाव में—भाई, माता और स्वयं सभी विद्यावान्। सन्तान पक्ष में वृद्धि पर भी नीरसता। धन-संग्रह का विशेष प्रयत्न। सदा जमीन मकान के विचार। किसी सवारी के व्यापार की उधेड़ बुन।

वृश्चिक लग्न में राहु

राहु प्रथम भाव में—प्रभावशाली, शत्रु पर विजय। ननसाल में हानि।

स्वार्थ-सिद्ध योजनाएँ। हेकड़, अश्लील, असंतोष, सतर्क, कूटनीतिज्ञ, धैरवान्। भाइयों के प्रभाव से शत्रु पर विजय। भाइयों की आयु कम तथा भाई भी शत्रुवत् व्यवहार करने लगें।

राहु द्वितीय भाव में—भाइयों से पत्नी परेशान, स्वयं भी परेशान, गृहस्थ सम्बन्ध में परेशानी। चतुराईयों से तथा भरपूर चेष्टा से दैनिक रोजगार में उन्नति, भेदनीति से सफलता।

राहु तृतीय भाव में—जीवन में शान गुमान, गहरी चाल, गहरे विचार। आयु में तरक्की, अन्दरूनी कमी। बड़ा मैदान नापने वाला, चिन्तित। पुरातत्त्व पर अनधिकार चेष्टा।

राहु चतुर्थ भाव में—भाग्य में चिन्ताएँ। शील का पालन न हो, मानसिक कष्ट, अपयश, लम्बे समय में भाग्य में कुछ सुख फिर भी अशान्ति तथा विघ्न। गहरे तत्त्व की खोज। भाइयों को भी भाग्य में चिन्ता।

राहु पंचम भाव में—पिता स्थान में हानि। राजयोग में कंटक, उन्नति में विफल। व्यापार में झंझट, उन्नति प्राप्ति में बड़े-बड़े परिश्रम। कटु तीक्ष्ण को कार्य में लाना। धर्म कर्म का पालन न हो, नौकरी छूटना। भाइयों को भी राजसमाज में हानि।

राहु षष्ठम भाव में—बहुत धन कमाना। मुफ्त का सा माल मिलता रहे। किसी-न-किसी युक्ति से मजबूत तह पर पहुँचना फिर भी प्रगति में कुछ कमी। स्वार्थ में सिद्धि, सत्य-असत्य व न्याय की परवाह न करे। भाई भी रोजगार से लगे। अगले जन्म में मूर्ति चुराने का कार्य करेगा तथा दण्ड पाएगा। भाग्योदय छह बार।

राहु सप्तम भाव में—बहुत खर्च, खर्च के विषय में बहुत परेशानियाँ। अन्य स्थानों के सम्पर्क से भेद युक्तियों से कार्य निकालना, खर्च के मामले में कुछ मुफ्त की सी योजनाओं से फायदा। भाइयों का भी विशेष खर्च। पिछले जन्म में यह व्यक्ति बहुत कम तोलता था इस कारण खर्च चलाने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ रहा है तथा धन की हानि हो रही है।

राहु अष्टम भाव में—देह में दुर्बलता, देह में आघात, कठोर नीति का गुप्त रीति से प्रयोग। शील का पालन न हो। महानशक्ति को प्राप्त।

अनाधिकार सफलता का इच्छुक, मुसीबतों में भी निराश न होना। साहसी, चतुर, क्षमतावान।

राहु नवम भाव में—धन जन की हानि, ऋणी, धन विषय में अपमान। शुद्र कर्म, धन पाने के लिए बहुत प्रयत्नशील, गरीब, महान निराशाओं के बाद कुछ तत्त्वशक्ति की प्राप्ति। भाइयों से धन का नुकसान।

राहु दशम भाव में—बड़ा पराक्रमी, साहसी, फुर्ती। परिश्रम से महान शक्ति की प्राप्ति। निराशाओं से न घबराना, युक्तियों से सफलता। भाई का विरोध, कमजोरी पर धैर्य से कार्य। विजयी, बहादुर प्रकृति।

राहु एकादश भाव में—माता की आयु कम, अपनी आयु व सुख की कमी। भूमि में विघ्न। झंझटयुक्त घरेलू वातावरण। अशान्त, सुख साधन के लिए अधिक प्रयत्न। सुखशक्ति को पाकर ही मानने वाला।

राहु द्वादश भाव में—बड़ी तीव्र बुद्धि। स्वार्थ की बातें, सन्तान कष्ट, शिक्षा में कठिनाईयाँ, बुद्धि में चिन्ता। कटु भाषण, विद्या की गहराई तथा तत्त्व की खोज। लापरवाही, अपने विचार को ठीक मानना।

वृश्चिक लग्न में केतु

केतु प्रथम भाव में—वीर, बहादुर, शत्रु पर विजय, बेपरवाह। रोगों को व परेशानियों को मुस्तैदी से हटाने वाला। ननसाल में हानि। अपने बचाव का गहरा उपाय, गहरी युक्ति, स्वार्थ सिद्धि, शील की परवाह न करे, विचार में कमजोरी, निडर।

केतु द्वितीय भाव में—स्त्री कष्ट, बेचैनी, दैनिक रोजगार में परेशानियाँ। परिश्रमी तथा धैर्यशाली संकटों पर भी निराश न हो। गृहस्थ में कठिनाइयाँ, बड़ी-बड़ी युक्तियों तथा साहस से कार्य। अधिक मैथुन। अन्धाधुन्ध शक्ति का प्रयोग। पत्नी को रोगों से तथा शत्रुओं से परेशानी।

केतु तृतीय भाव में—जीवन में बहुत दुःख, अशान्त। गूढ़ संकीर्ण युक्तियों को काम में लाना। पुरातत्त्व की हानि। आयु कम। गुदा रोग, दिनचर्या का बेढंगा तरीका। कब्ज की शिकायत। जीवन के समय का कुछ दुरुपयोग। अन्दरूनी साहस।

केतु चतुर्थ भाव में—भाग्य में अशान्ति। उन्नति के विकास की बहुत देर तक प्रतीक्षा। धर्म में कमजोरी, भाग्य का अफसोस। भाग्य पर आघात, अन्त में भाग्य की मजबूत शक्ति। कमजोर धर्म का पालन। यात्रा में कष्ट।

केतु पंचम भाव में—पिता को कष्ट, क्लेश, आयु कम। राज समाज में बाधा, मान में रुकावट। व्यापारादि में बड़े झंझट, उन्नति के लिए बड़े-बड़े परिश्रम। सफलता में बहुत देर। इज्जत में कमी, साहसी धैर्यवान।

केतु षष्ठम भाव में—उत्तम आमदनी, दृढ़ता। धन पाने के लिए अन्धाधुन्ध शक्ति का प्रयोग। भविष्य की परवाह न करके स्वार्थसिद्धि। आमदनी पर कभी-कभी गहरा आघात, बहादुरी से फायदा। अगले जन्म में अन्न भूने का कार्य करेगा और प्रसन्न रहेगा।

केतु सप्तम भाव में—बहुत खर्च, धैर्यता। खर्च के मामले में गहरा आघात, खर्च चलाने में असमर्थ, परेशानियाँ, अन्य स्थान का सहयोग। अन्धाधुन्ध शक्ति का प्रयोग करने पर भी कुछ असफलता। पिछले जन्म में यह व्यक्ति गुण्डागीर में मस्त था इस कारण गुण्डे इसका पीछा अब भी नहीं छोड़ते।

केतु अष्टम भाव में—देह में कमजोरी, देह में घाव। अन्दरूनी धीरता, परवाह न करे, वीर वेश, ज्ञान की कमी, गुप्त युक्ति से फायदा। कामशक्ति अधिक, अधिक परिश्रम। अधिक परेशानी, चिन्तित, गम्भीर। आरम्भ में पेट के रोग।

केतु नवम भाव में—युक्तियों से धन वृद्धि की कोशिश। कुटुम्ब वृद्धि का बखेड़ा। धन की कमजोरी, धन पाने की ऊँची योजना, ऊँचा दाव। धन के सम्बन्ध में गहरी मुसीबत।

केतु दशम भाव में—बहादुर, लम्बी भुजाएँ, परिश्रमी, बन्धु बिछोह। असफलताओं में भी उत्साहयुक्त, आगे बढ़ना जीवन का लक्ष्य। स्थिर रहने वाले कार्य को ही करना। स्वार्थयुक्त युक्तियाँ।

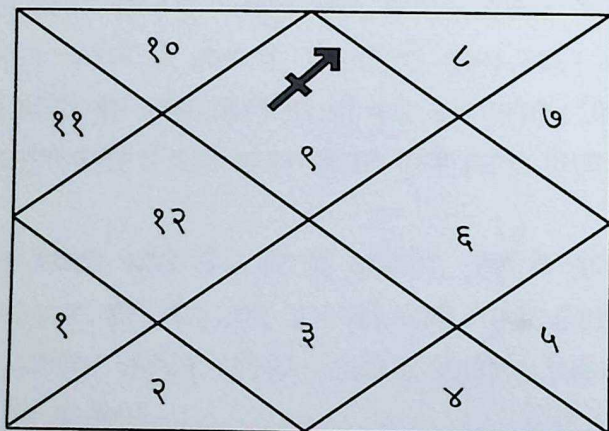
केतु एकादश भाव में—माता का जीवन कष्टमय, आयु कम। मकान सुख की कमी, सवारी की परेशानी। जन्म स्थान से अलग। सुख के लिए

अनेक युक्ति व परिश्रम । घर के वातावरण में अशान्ति ।

केतु द्वादश भाव में—विद्या, कमजोर, बुद्धि में चिन्ता । शिक्षा में बड़ी-बड़ी अड़चनें । विद्या ग्रहण में धैर्यमयी । सन्तान कष्ट, वाणी से ठीक न बोल सके । बोलचाल में हेकड़ी, बुद्धि में कमी, गुप्त रीति से बातचीत । शील का उल्लंघन, हठी, फिर भी डिग्री ।



धनु लग्न



नोट : सूरत माता पर, पत्नी व पिता की राय एक।

धनु लग्न में सूर्य

सूर्य प्रथम भाव में—महाबुद्धिमान, बहुत विद्यावान, डिग्री, धर्म का ज्ञानी, सन्तान भी महाभाग्यशाली, पहला पुत्र, वाणी में प्रभाव, प्रभाव की दिमाग में गर्मी। आमदनी में कमजोरी। लाभ के लिए उदारता का त्याग। बातों की उदारता, ऊँची तरकीबें, इधर पुत्र हुआ उधर साले के पुत्र हुआ, तथा दोनों का भाग्य खुल गया। भाग्योदय पाँच बा-

सूर्य द्वितीय भाव में—भाग्य में दिक्कतें व घिराव। धर्म पालन में कमी, शत्रुओं पर प्रभाव, रोगों पर काबू, परिश्रम से भाग्योदय, अधिक खर्च, अन्य स्थान से लाभ, प्रभु में कम विश्वास, ननसाल में प्रभाव, तामसी धर्म, प्रभावशाली।

सूर्य तृतीय भाव में—विवाह के बाद भाग्यवृद्धि, सुन्दर गृहस्थ धर्म पालन। रोजगार में लाभ का अवसर कुदरती मिले। पत्नी प्रार्थना करे, तो प्रभु सुने, पत्नी धार्मिक यात्राओं की ओर।

सूर्य चतुर्थ भाव में—भाग्य में हानि, भाग्य का विकास देरी से व विदेश से सम्बन्धित। पुरातत्त्व का बड़ा लाभ। आयु वृद्धि, यश व प्रशंसा की कमी, मृतक धर्म का पालन। तरकीबों से स्वार्थ को चलाना।

सूर्य पंचम भाव में—धर्मात्मा, न्यायकारी, यश प्राप्त। स्वमेव भाग्य वृद्धि। शीलरहित परोपकार। समदर्शी, होनहार को बड़ा मानने वाला। प्रतापी, प्रतिष्ठित, माथा चौड़ा और ऊँचा।

सूर्य षष्ठम भाव में—राज समाज में प्रभावशाली पद। अपने अफसर की भी तरक्की। मान-सम्मान प्राप्ति, यश व सफलता, पिता की उन्नति। धर्म का पालन, माता जमीन मकान सवारी और सुख सभी भाग्य में लिखे हैं। न्यायी हुक्मरान।

सूर्य सप्तम भाव में—धर्म तथा भाग्य सम्बन्ध में साधारण लाभ, बुद्धि प्रखर तथा धर्म का ज्ञान। विद्या में प्रकाश, सन्तान शक्ति, भाग्योदय में देरी। आमदनी में परतन्त्रता, परेशानी व बन्धन सा, आत्मा रोजगारों को पूरी तरह नहीं चाहती। अगला जन्म अहीर परिवार में होगा तथा दूध की बिक्री करेगा।

सूर्य अष्टम भाव में—भाग्य सम्बन्धी हानियाँ, प्रभु टेर कठिनता से सुनेंगे। अन्य स्थानों में भाग्योदय, चक्कर काटना। यश की कमी। तीर्थों में धर्म कर्म, शत्रु पर प्रभाव, भाग्य पर अफसोस, खर्च के संचालन में भाग्य का सहयोग। पिछले जन्म में सिंह था मार्ग चलते हुए दो साधुओं को खा गया इस कारण इस जन्म में अपार कष्ट भोग रहा है।

सूर्य नवम भाव में—भाग्यशाली, प्रतापी, तेजस्वी, सुन्दर देह,

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

देदीप्यमान चेहरा, दया धर्म पालक, प्रभु में श्रद्धा, भाग्य के अनोखे चमत्कार।
 दैव सदा सहायक, यश, मान, गौरव, रोजगार में सफलता। मिट्टी पकड़े
 सोना होए। गृहस्थ में गौरव, साले को बहुत प्यारा, नाम की मुहर बने।

सूर्य दशम भाव में—भाग्य में कुछ बन्धन सा, धन असमंजस के
 साथ प्राप्य। कुटुम्ब से रूखापन। धन संग्रह में कठिनाइयाँ, पुरातत्त्व का
 लाभ। आयु में वृद्धि, उन्नति में रुकावट, देरी से भाग्योदय। जीवन का
 सुचारू रूप। साला भी कुछ धन का नुकसान पहुँचा दे। प्रभु के दर्शन
 विलम्ब से प्राप्त।

सूर्य एकादश भाव में—पुरुषार्थ से तथा कठिनाइयों से भाग्य वृद्धि,
 परिश्रम से सफलता, साहसी। भाई बहन भी भाग्यवान्। यशस्वी, तत्त्वखोजी।
 प्रभु में श्रद्धा बड़े भाई के समान।

सूर्य द्वादश भाव में—भाग्यशाली, जमीन जायदाद, माता सुखी व
 भाग्यवान, पिता से लाभ। सुख साधन व सवारी, साधन स्वमेव प्राप्त। धर्म
 यश, सुन्दर, कर्मेष्ठी, प्रभावशाली।

धनु लगन में चन्द्रमा

चन्द्रमा प्रथम भाव में—सन्तान कष्ट, सन्तान की आयु कम, विद्या
 ग्रहण में कठिनाइयाँ, विद्या-संग्रह में कमी। उत्तम आयु, पैतृक ज्ञान, मनोयोग
 से शिक्षा, गहरी युक्तियाँ गहरे विचारों में परिणित, मन बुद्धि में चिन्ता।
 जीवन का समय शानदार। सन्तान को दूर की यात्राएँ।

चन्द्रमा द्वितीय भाव में—जीवन में प्रभाव, खर्च में बहुत कमजोरी,
 शत्रु पर शान्ति से प्रभाव। ननसाल सुखी। जीवन में घिराव सा, मस्त, निर्भय,
 शील रहित। उत्तम आयु।

चन्द्रमा तृतीय भाव में—गृहस्थ में कठिनाइयाँ, पत्नी की आयु कम।
 स्त्री पक्ष में गुप्त वेदना। रोजगार में परेशानियाँ, पुरातत्त्व का लाभ, मनोबल
 ऊँचा, रोजगार में फायदा। देह में परेशानी, मस्ती, रौनक, रोजगार में दूर
 स्थान का सम्पर्क। स्त्री पक्ष में मानसिक कड़ाई।

चन्द्रमा चतुर्थ भाव में—जीवनकाल शानदार, सुन्दर आयु। प्रसिद्धता,

मनोयोग का गहरा ज्ञान। जीवन में पूर्ण चमत्कार उत्पन्न करने वाली युक्तियाँ। पुरातत्त्व का पूर्ण ज्ञान। पैतृक लाभ, धन कोष में हानि, संचित विभूतियों तथा अदृश्य गुप्त वस्तुओं से लाभ, आयु पूर्ण।

चन्द्रमा पंचम भाव में—धर्म में हानि, पुरातत्त्व की संचित विभूति का आनन्द। आयु में वृद्धि, मनोयोग के प्रपंच से भाग्य वृद्धि। प्रभु पर कम भरोसा। भाग्य की उन्नति में कंटक। जीवन में निर्वाह के लिए उत्तम साधन। भाग्य की उन्नति में देर व दुःख। भाई बहन से कंटक। दिखावटी शान्ति सन्तोष।

चन्द्रमा षष्ठम भाव में—पिता की आयु कम, आयु की वृद्धि। जीवन का समय शानदार। मान व उन्नति में बहुत देर। नौकरी भी छूट जाए। ऊँचे प्रपंच। पुरातत्त्व का विकास। राज समाज में झंझट। गहरी चालवाला। माता के सुख में कमी।

चन्द्रमा सप्तम भाव में—पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ, उत्तम आयु, जीवन में रौनक, आमदनी व लाभ में कठिनाइयाँ, रोजगार फेल हो जाए। मनोयोग की गहरी युक्तियों से फायदा। सन्तान क्लेश, विद्या में रुकावटें, लापरवाही। लाभ की लाइन में शील सन्तोष का हनन। अगले जन्म में नाविक बनेगा तथा समुद्री व्यापार में प्रवीण होगा।

चन्द्रमा अष्टम भाव में—जीवन में क्लेश और खर्च, अशान्तियाँ। आयु में कमी, दूसरे स्थानों में अशान्ति। मस्ती में कमी, पुरातत्त्व की कमी, पुरातत्त्व की हानि, विपक्षियों पर प्रभाव। भ्रमणयुक्त, चिन्तित, छोटा मन। बड़ी युक्तियों से कार्य। पिछले जन्म में मगरमच्छ था या मछलियों को बहुत सताता था। एक बार एक स्नान करती हुई बाला का (नदी में) पैर पकड़ लिया, उसकी माँ के विलाप के कारण कष्ट भोग रहा है।

चन्द्रमा नवम भाव में—दीर्घ आयु, पुरातत्त्व का लाभ, ऊँचा ज्ञान, मनोयोग, गूढ़ रहस्यों का आदर्श जीवन। गुप्त शीतल चिन्ताएँ, देह में कमजोरी, सुन्दरता में कमी। रोजगार में परेशानी, स्त्री स्थान में भी परेशानी। मन में शक्ति व चिन्ता का समावेश। मस्त जीवन अर्थात् जीवन में शान।

चन्द्रमा दशम भाव में—जीवन की दिनचर्या का अमीरी ढंग। धन संग्रह की हानि। पुरातत्त्व का लाभ। अखरने वाली कमी, कुटुम्ब में हानि।

गूढ़ समस्याओं के सम्बन्ध में मनोयोग की महान शक्ति। अच्छी आयु। धन प्राप्ति के लिए बहुत आडम्बर व कठिनाइयाँ।

चन्द्रमा एकादश भाव में—भाई बहन की हानि का योग। शीतल कठिन पुरुषार्थ। पुरातत्त्व के सम्बन्ध में मनोबल से तरक्की। गूढ़ गुप्त विषय की शक्ति का भरोसा। धर्म की हानि, भाग्य में वर्तमान में परेशानी। भविष्य में कमजोरी। कठिन परिश्रम की दौड़-धूप, कुछ बन्धन, मस्त। बड़ी-बड़ी युक्तियाँ।

चन्द्रमा एकादश भाव में—माता की आयु कम, सुख की कमी, पुरातत्त्व का सुख। मकान गिर जाए। आयु उत्तम। घरेलू सुख की हानि। जीवन की दिनचर्या में सुख, पिता से परेशानी, गूढ़ युक्तियों द्वारा मनोबल से सुख के साधन। उदर विकार से मुक्ति, मस्त, लापरवाह।

धनु लग्न में मंगल

मंगल प्रथम भाव में—बुद्धि की बातों की बड़ी काँट-छाँट, सन्तान विषय में बहुत कारामद खर्च। सन्तान कष्ट। पुत्र शीघ्र उत्पन्न। उलट फेर की बातें, दूसरों को चक्कर में डालना, बातों की मजबूती, जीवन में चिन्ता। पुरातत्त्व शक्ति की हानि। विद्या में कमी के बाद विद्या योग, डिग्री, अन्य स्थान का मजबूत सम्पर्क, कमजोर, हेकड़। सन्तान हठी व क्रोधी।

मंगल द्वितीय भाव में—सन्तान कष्ट ऐसा कि सन्तान शीघ्र रोगी हो बार-बार। विद्या में अचानक कमी। खर्च अधिक। खर्च में परतन्त्रता। शत्रु दमन। देह में गर्मी व कमजोरी। भाग्य कमजोर। ननसाल पक्ष में हानि। सहनशीलता का उल्लंघन। सन्तान का शत्रु समान बर्ताव, शत्रु पक्ष में विशेष खर्च। मुख पर चोट व फोड़ा।

मंगल तृतीय भाव में—पहली पत्नी न बच सके। मंगली। रोजगार में हानि, नौकरी छूटे। मान सम्मान में कमजोरी। अन्य स्थान के सम्पर्क में अच्छा मान। विद्या में कमी, देह में गर्मी व क्रोध और कमजोरी। पत्नी के सम्बन्ध में विशेष खर्च।

मंगल चतुर्थ भाव में—मंगली। सन्तान पर विशेष खर्च, खर्च विषय

से बड़ा कष्ट। जीवन में अशान्ति। धन जन की वृद्धि के लिए कठिन चेष्टाएँ। पुरातत्त्व की हानि। आयु की कमी। बुद्धि के हेर-फेर में खतरनाक चालें। गहरे छिपाव। भ्राता कष्ट, पेट में विकार, लाभ विषय में बड़े प्रयत्न, हृदय पर चोट। विद्या में कमी।

मंगल पंचम भाव में—बुद्धि व भाग्य की उत्तम शक्ति से विशेष खर्च। धर्म कार्यों पर खर्च। सन्तान सभी भाग्यवान्। पहले अपने पुत्र उत्पन्न हो फिर साले के भी पुत्र उत्पन्न हो। भाग्य में कभी-कभी हानि। भूमि में कमी, सुख शान्ति में कमी। भाग्योदय देरी से दूर स्थान पर प्राप्त हो।

मंगल षष्ठम भाव में—राज भाषा का जानकार। तेज बुद्धि। सन्तान उत्पन्न हो और कुछ समय बाद पिता (बाबा) का देहान्त। अधिक शानदार खर्च। मान उन्नति व पद में रुकावटें। दौड़-धूप से फिर मान सम्मान। प्रबन्धक, देह में कमजोरी, अन्य स्थान के सम्पर्क से अच्छाई। कटुता व कठोरता के योग, यश भी अपयश भी।

मंगल सप्तम भाव में—बुद्धि से लाभ, विद्या में कमी। शत्रु को हानि। सन्तान में कमी के बाद फल प्राप्ति। ननसाल में हानि। लाभ खर्च का भारी योग। हिसाब से चलना। लाभ में कटु व तीक्ष्ण बुद्धि। धन का तथा कुटुम्ब का आडम्बर। हेर-फेर से लाभ। सदैव चेष्टारत। सन्तान व्यापार चलाकर छोड़ दे। अगले जन्म में विदेशों से व्यापार करेगा।

मंगल अष्टम भाव में—सन्तान पक्ष में अधिक खर्च। सन्तान की आयु कम, देर से उत्पन्न होने वाली सन्तान जिए। स्त्री स्थान में हानि, भ्राता पक्ष में हानि, रोजगार में नुकसान। पुरुषार्थ में कमजोरी, अन्य स्थान का सम्बन्ध, सदा बुद्धिबल से मजबूत। हेर-फेर की बातों से लाभ। भ्रमित बुद्धि। गलत तरीके से बहस। ननसाल में हानि। सन्तान खर्चीली। मंगली, अगले जन्म में भेड़िया बनेगा। लिंग पर फोड़ा परन्तु ठीक हो जाए।

मंगल नवम भाव में—भ्रमणकारी, देह से कमजोर, बुद्धि की विशेष उलट-पलट। चक्कर की बातें। माता पक्ष में हानि क्लेश, जीवन की दिनचर्या में अशान्ति, मंगली, पुरातत्त्व की हानि, खर्चीला, विद्या सन्तान पक्ष में कमी। अन्य स्थानों का आदर्श सम्पर्क बुद्धि द्वारा प्राप्त। सन्तान पिता को कम चाहे।

मंगल दशम भाव में—हानि लाभ का विचित्र योग। अन्य स्थानों के सम्पर्क से बुद्धि योग द्वारा विशेष धन प्राप्ति। धन का अधिक खर्च होकर बुद्धि द्वारा लाभ। ऊँची व गहरी बुद्धि। वाणी के जबरदस्त उलट फेर। सन्तान पक्ष में कुछ बन्धन सा। जीवन की दिनचर्या में क्लेश। भाग्य व धर्म पर विचारों में उलट-फेर।

मंगल एकादश भाव में—भ्राता की आयु कम, भाई बहन पर विशेष खर्च बल, पुरुषार्थ में कमजोरी। शत्रु पर प्रभाव। सन्तान भाई को। व्यापार में उलट फेर। मान में कमी, हेकड़ बुद्धि। साहसी, धर्म सम्बन्धी उलट-फेर की बातें।

मंगल द्वादश भाव में—माता-पिता की आयु कम। माता दुःखी, माता पर विशेष खर्च। मकान जायदाद को हानि। मकान पुराना पड़ जाए। स्त्री कष्ट, मंगली, रोजगार में उलट फेर व हानि। अन्य स्थान के सम्पर्क से बुद्धि द्वारा लाभ, विद्या में कमी। खर्च सुख से चले। अनेक स्थानों में रहना। मकान व सवारी से भय।

धनु लग्न में बुध

बुध प्रथम भाव में—पत्नी और पिता दोनों ही इसकी सन्तान को विशेष प्यार तथा देख-भाल तथा शिक्षा का सुन्दर प्रबन्ध करते हैं। पिता से व्यापारिक ज्ञान प्राप्त। ससुराल से व्यापारिक योजनाएँ, सन्तान सुख। बुद्धि प्रभावशाली। भोग वैभव की बड़ी इच्छा, लौकिक कार्यों में विशेष दखल। मान का ध्यान, चतुर।

बुध द्वितीय भाव में—पत्नी तथा पिता से वैमनस्य सा। पत्नी व पिता रोगी तथा शत्रु की तरफ स्वयं फँसे। व्यापार में दिक्कत। परतन्त्रता युक्त कर्म। ननसाल से कुछ सहारा। मान सम्मान में कमी। भोग-विलास में कमी, आलसी स्वभाव। गृहस्थ जीवन में दबाव सा प्राप्त। गुप्त चतुराई युक्त जीवन शैली।

बुध तृतीय भाव में—पिता का पत्नी की तरफ विशेष प्रेम व पिता की राय से शानदार रोजगार। गृहस्थ में उत्तम आनन्द, चतुर पत्नी, पत्नी तथा

पिता के विचार एक। सुन्दर वेषभूषा, विवेकी, कारोबार की तारीफ। रोजगार प्रणाली में शोभा। पत्नी को नौकरी मिल सकती है। पत्नी प्रसन्न।

बुध चतुर्थ भाव में—पिता व पत्नी की आयु कम। पिता पत्नी दोनों का शरीर कमजोर। विवाह के कुछ समय बाद पिता का देहान्त। नौकरी छूटी, व्यापार में परेशानी, गुप्त गूढ़ चतुराई के योग। विदेश के कार्य के योग। धन वृद्धि की पूर्ण चेष्टा। भोग-विलास में बहुत कमी, गृहस्थ में क्लेश व अपमान, आलसी। व्यवहारिक प्रणाली में गलत चलना इस बात से जीवन में कुछ शान समझना।

बुध पंचम भाव में—पिता का भाग्य खुलते ही विवाह हुआ पत्नी बड़ी भागशालिनी आई और कुछ ही समय में स्वयं का भी भाग्योदय हो गया। साला भी भाग्यशाली। भाग्यबल से रोजगार। गृहस्थ धर्म का सुचारू रूप से न्यायोचित पालन, धर्म कर्म में श्रद्धा। भाई बहनों का सुन्दर सहयोग, सुन्दर, विवेकी। उत्तम पुरुषार्थ, रोजगार में योग्यता। धर्म पालक भी। संयमी, भाग्यवान, राज समाज से लाभ।

बुध षष्ठम भाव में—पत्नी इसके पिता की बहुत सेवा करती है, पिता प्रसन्न, बड़े व्यापार या उच्चपद, पत्नी सुन्दर तथा प्रभावशाली। उच्च ससुराल, लौकिक व्यवहार में उन्नति, चतुरता के कामों में उन्नति, सुख शान्ति में बाधा, भूमि स्थान में कमी, माता की आयु कम, अधिक भोग विलास, चतुर, अधिक-से-अधिक उन्नति के लिए पूरे प्रयत्न। बड़े कारोबार, भाग्योदय छह बार।

बुध सप्तम भाव में—विवाह होने के बाद व्यापारिक ज्ञान बढ़ गया। पिता तथा ससुराल की मदद से व्यापार में बहुत लाभ। बुद्धि विवेक से कर्मों में अनेक प्रकार के लाभ। सुन्दर पत्नी। पिता भी लाभ में, विद्या में ऊँचा ज्ञान। सन्तान सुख, भोग विलास। राज समाज से सम्बन्धित कार्य में लाभ। सुन्दर पदार्थ प्राप्त, अधिक लाभ पाने के लिए महान प्रयत्न। अगले जन्म में मन्त्री पद प्राप्त करेगा।

बुध अष्टम भाव में—पत्नी तथा पिता का भारी खर्च, दोनों कमजोर। विवाह के बाद पिता दिन-दिन कमजोर होता गया। खर्च बढ़ता गया, व्यापार

में हानि। नौकरी छूटे। पत्नी तथा पिता की आयु कम। पिता के देहान्त के बाद पत्नी का भी देहान्त। राज समाज के कार्यों में कमजोरी। उन्नति में बाधा, लौकिक कार्यों का अधूरा ज्ञान। अन्य स्थान की चतुराई से रचना। पिछले जन्म में धोबी था।

बुध नवम भाव में—समाज में शोभा, सुन्दर देह। विशेष ज्ञान। कार्य कुशल, कर्मेष्ठी। लौकिक व्यवहार में पारंगत। गृहस्थ में मान तथा आदर्श। भोगी विलासी। स्वभाव में अहं भाव, चतुर, परिश्रमी, प्रबन्धक। पिता तथा पत्नी दोनों का प्रेम। विवाह पत्नी की पसन्द पर।

बुध दशम भाव में—पहले पिता इसके धन को सम्भाल कर रखते थे अब पत्नी धन को सम्भाल कर रखती है। व्यापार में भारी कमाई। पुरातत्त्व का लाभ। स्त्री व गृहस्थ में कुछ बन्धन सा। बड़े-बड़े कीमती कार्य। राज समाज से सहायता। परम विवेकी, चतुर। पिता से धन प्राप्त फिर ससुराल से भी धन प्राप्त।

बुध एकादश भाव में—महान पुरुषार्थ से कर्म। भाई बहन की शक्ति का सहयोग। गृहस्थ में वृद्धि, व्यापार में सफलता, उत्साही, कुशल, कर्मेष्ठी। धर्म कर्म का पालन। राजसी ठाठ-बाट। बड़ा मान, सुन्दर कद। महान परिश्रम, सौम्य शक्ति, महान चतुराई से कार्य, स्वाभिमानी, परम विवेकी पिता तथा पत्नी इसके भाइयों को अधिक चाहते हैं।

बुध द्वादश भाव में—स्थान व मान में हानि। गृहस्थ में शान्ति, पिता से क्लेश। भूमि की कमी, बाहरी दिखावे में शान, दैनिक रोजगार में कमी। बड़े व्यापारों में वृद्धि, कुछ उत्साही तथा आलसी पत्नी के विषय में कमजोरी। न पिता की माता से बनती है न पत्नी की। मकान में पिता पत्नी रहना चाहते हैं तथा माता को अन्य जगह रखना चाहते हैं।

धनु लग्न में गुरु

गुरु प्रथम भाव में—बुद्धिमान, स्वाभिमानी, गौरवमय, सन्तान युक्त, बुद्धि विद्या से उन्नति व ख्याति। बुद्धि व सन्तान के कारण से हृदय में सुख। अन्तर्ज्ञानी, नीतिज्ञ, शान्तिप्रिय धार्मिक, खूब लाभ, शास्त्री, विवेकी, भाग्यवान्,

जायदाद वाला। माता अपने पोतों को पढ़ाती है। जब पुत्र उत्पन्न हो तब मकान बने और सवारी बने।

गुरु द्वितीय भाव में—सुख शान्ति में बाधा, देह में कमजोरी। परतन्त्रता सी, बन्धन सा, रोग-युक्त। माता की व अपनी आयु कम। माता बीमार पड़े तो स्वयं भी बीमार पड़ जाए और ननसाल में भी कोई बीमार पड़ जाए। कुटुम्ब का क्लेश। पिता की उन्नति। परिश्रम व कर्म बल से प्रभाव, धन की कमजोरी, अधिक खर्च। गुप्त नीतिज्ञ, होशियार। सावधान, अन्य स्थानों से लाभ। पिता की रोजी घटती रहे।

गुरु तृतीय भाव में—सुखपूर्वक बहुत रोजगार। देह में गौरव, गृहस्थ जीवन में महानता, सुख-योग। सुन्दर प्रभावशाली पत्नी। भाई बहन से वैमनस्यता, घर की जायदाद। लौकिक कर्म की कला व बड़प्पन, स्वाभिमानी। माता बहू को बहुत चाहती है। विवाह होने के बाद मकान बना तथा सवारी का भी प्रबन्ध हुआ।

गुरु चतुर्थ भाव में—माता की आयु कम परन्तु गौरव से देहान्त। गूढ़ युक्तियों के बल से अपूर्व शक्ति का मजा, जीवन की दिनचर्या में रौनक। उल्लास, धन-जन की कमजोरी। खूब खर्च, शानदार जीवन। आत्मस्थित की कमजोरी, जमीन जायदाद वाले सुख के साधन प्राप्त, मृत्यु का पहले पता चल जाए।

गुरु पंचम भाव में—भाग्यवान्, गुणवान्, माता भाग्यवान्, शास्त्रीय ज्ञान, धर्माचरण, प्रभु में श्रद्धा, विद्या बुद्धि पर अधिकार। सुन्दर देह, भूमि मकान, यश, प्रभाव, सुख के बहुत साधन। सन्तान सुख, भाई-बहन से कुछ वैमनस्य, भाग्य को बड़ा मानने वाला। सवारी भाग्य में लिखी है। अपनी सवारी से माता को धार्मिक यात्रा कराए, नाम की मुहर बने।

गुरु षष्ठम भाव में—बड़े व्यापार या ऊँचा पद, राज में सम्मान। जमीन कुछ सरकार को किराए पर। अपनी सवारी सरकारी काम में, सुख साधन धन-जन की कुछ कमी। नम्र, गुमानी, कर्मैष्टी। जब उत्पन्न हुआ तो पिता ने मकान बनवा लिया। उन्नति की तरफ सतत प्रयत्नशील।

गुरु सप्तम भाव में—लाभ परिश्रम से पैदा करना। दुकान के पास

ही निवास। रोजगारों की तरफ ध्यान भी और वैमनस्य भी। रोजगारों में माता का सहारा। विद्या व बुद्धि पर अच्छा अधिकार। सन्तान सुख। गृहस्थ का उत्तम सुख। रोजगार में बरक्कत। मेहनत से बचाव, उद्योगी। अगले जन्म में जहाज का कप्तान बनेगा।

गुरु अष्टम भाव में—सुन्दरता की कमी, कमजोरी, अधिक खर्च, अन्य स्थान में उन्नति तथा सुख पाना, जीवन में उल्लास। पुरातत्त्व का गहरा ज्ञान। हृदय दुखी, शत्रु से शान्तिपूर्वक कार्य, भ्रमणकारी, माता की आयु कम, स्वयं बहुत खर्चीला। पिता की रोजी घटती रहे। पिछले जन्म में साधु था तथा महिलाओं को धोखे से खूब लूटा करता था, इस कारण दुःख भोग रहा है।

गुरु नवम भाव में—बहुत सुखी, माता तथा मातृ भूमि में श्रद्धा। जहाँ जाए वहीं मान सम्मान। आदरणीय, शान्ति प्रिय। सुन्दर भोजन, मिष्ठान, स्त्री सुख, अपने स्थान पर ही निवास तथा सर्व सुख, सन्तान सुख, भाग्यवान्, पहले मकान बना फिर पैदा हुआ। पाँच मंजिल का मकान बनवाए। माता जैसा रूप। पिता की रोजी में उन्नति। भाग्योदय पाँच बार।

गुरु दशम भाव में—धन संग्रह के लिए जान लड़ा देना, धन की कमजोरी, धन की प्राप्ति के लिए सुख की परवाह न करना। ज़मीन जायदाद की कमी। कुटुम्ब क्लेश, मान युक्त। जब तक माता जीवित है स्वयं मकान न बनवा सके।

गुरु एकादश भाव में—पुरुषार्थ से सुखी, धन लाभ, भाग्य का सुख, माता भाइयों की ओर, हृदय से धर्म पालन। प्रभु में निष्ठा, लाभ के लिए बहुत परिश्रम। परिश्रम से मकान। गृहस्थ सुख का लौकिक आनन्द, उद्यमी, स्वयं ही बहनों-भाइयों की पालना करे परन्तु भाइयों के प्रेम में कमी।

गुरु द्वादश भाव में—सुख का निवास, जमीन जायदाद, प्रधानता, सुख के बहुत साधन, महाआनन्द गौरव, उत्तम आयु, पुरातत्त्व का विशेष सुख, अधिक खर्च। बाहरी स्थानों के सम्पर्क से धन प्राप्त। अपने स्थान में निवास, पाँच मंजिला मकान। माता जैसा रूप। भाग्योदय नौ बार।

धनु लग्न में शुक्र

शुक्र प्रथम भाव में—शत्रु पक्ष की बुद्धि का प्रभाव, सन्तान पर भी शत्रु का प्रभाव, सन्तान रोगी, सन्तान पर मुकद्दमे। बुद्धि बल तथा चतुरता से रोजगारों में बहुत लाभ, विद्यावान परन्तु विपक्षियों के कारण तथा रोगों (मानसिक) के कारण विद्या में रुकावट। पेचीदा युक्तियों से लाभ। सन्तान में कमी, शत्रु पक्ष को केवल बुद्धि योग से हरा देने वाला।

शुक्र द्वितीय भाव में—प्रभावशाली, झगड़े झंझटों से फायदा, आमदनी के सम्बन्ध में कुछ कठिनाइयाँ। आमदनी में कमी आ जाए परन्तु प्रभाव में कमी न आए। अधिक खर्च, परतन्त्र सा, ननसाल से लाभ, क्रोधी, होशियार, अन्य स्थानों का सम्पर्क फिर विपक्षी कुछ रोजगार पर कब्जा कर लें।

शुक्र तृतीय भाव में—लौकिक कार्य कुशल, परिश्रम व कठिनाइयों से व चतुराईयों से लाभ, पत्नी से सहयोग परन्तु पत्नी शीघ्र अन्य की मान ले। घर में चोरी, दैनिक रोजगार में कमी। स्त्री पक्ष से झगड़ा व वैमनस्य, स्त्री में कला, सुन्दरता व थोड़ा सा नखरा, स्त्री में रोग व कमजोरी। मानी, चतुर, कुशल।

शुक्र चतुर्थ भाव में—आमदनी के लिए बहुत परेशानियाँ, रोजगार लगभग मर सा जाए तब अन्य स्थान में व्यापार के साधन और उन्नति। पत्नी की आयु कम, कठिन गूढ़ युक्तियों से कार्य, पुरातत्त्व का लाभ। लाभ में बहुत कमी, ननसाल में जवान महिला की मृत्यु, जीवन की दिनचर्या में रौनक, नीतिज्ञ, शत्रु स्वयं दब जाएँ।

शुक्र पंचम भाव में—उत्तम लाभ, उत्तम भाग्य, रोजगारों में ईश्वरीय सहायता, परन्तु उन्नति के मार्ग में कुछ दिक्कतें। भाग्य में कभी-कभी निराशाएँ। धर्म की आड़ में फायदा। पुरुषार्थ की वृद्धि। भाइयों से अच्छा सम्पर्क। धर्म में अरुचि।

शुक्र षष्ठम भाव में—पिता रोगी तथा दुःखी, पिता से क्लेश, व्यापार की उन्नति के पक्ष में कमजोरियाँ। माता सुखी व दीर्घ आयु वाली, मकान भूमि संवारी का सुख व संकट। संचित पाप के फल भुगतना, पिता के देहान्त

के बाद व्यापार पनपे।

शुक्र सप्तम भाव में—बहुत आमदनी, कुछ रुपया मारा जाए, ऊँची तरकीबों से विशेष लाभ और लाभ-ही-लाभ। ननसाल से फायदा। विद्या तथा सन्तान पक्ष में अड़चनें। शत्रु से भी लाभ। धन प्राप्ति के लिए पाप पुण्य का ख्याल न करें। अधिक आमदनी के कारण बीमार। अगले जनम में जवाहरात में खेलेगा तथा सुख पाएगा। भाग्योदय पाँच बार।

शुक्र अष्ठम भाव में—बहुत खर्च। अन्य स्थान से परिश्रम द्वारा लाभ, सम्पूर्ण लाभ को खर्च कर देने के कारण धन की कमी, परेशानियों में खर्च, हेर-फेर व युक्तियों से कार्य चलाना। कुछ कमजोरी से शत्रु पर प्रभाव, ननसाल में हानि, होशियार। पिछले जन्म में मन्दिर की पूजा के पैसे चोरी से बटोर लाता था इस कारण से धन की चिन्ता है।

शुक्र नवम भाव में—शारीरिक श्रम से आमदनी, देह में वीर्य रोग, उच्च चतुरता, स्वार्थ का ध्यान, अधिक कामवासना, पत्नी से झगड़ा, होशियारी से बहुत कमाई, धन प्राप्ति के लिए परिश्रम की परवाह न करना। झगड़े तलब मामलों में पड़कर फायदा, शृंगाररस प्रिय, प्रभावशाली।

शुक्र दशम भाव में—धन की वृद्धि, बहुत आमदनी, धन संग्रह। न्याय अन्याय को त्याग कर धन एकत्र करना, उत्साही, पुरातत्त्व का लाभ। ननसाल भी धनवान। धन सम्बन्ध कभी-कभी झगड़ा, कुछ धन हानि। दुकान के खजाने में कुछ परतन्त्रता सी।

शुक्र एकादश भाव में—पुरुषार्थ व युक्तियों से बहुत लाभ। सुन्दर शक्ति, बलशाली व प्रभावशाली। भाई से कुछ सहयोग व मन मुटाव, दौड़-धूप व साहस से बहुत लाभ, धर्म में अरुचि, कलापूर्ण शक्ति के कारण बेफिकरी।

शुक्र द्वादश भाव में—घर में ही कारोबार, बहुत आमदनी, जमीन जायदाद, माता सुखी, माता की इच्छा से सुन्दर मकान बने। सुन्दर वस्तुओं का भोग, दिव्य भोजन, पिता तथा मान सम्मान में कुछ कमी, मकान पर विपक्षियों का दावा। भाग्योदय दस बार।

धनु लग्न में शनि

शनि प्रथम भाव में—कुछ धन सन्तान की तरफ, भाई के कुछ विचार सन्तान की तरफ परन्तु भाइयों की सन्तान से कुछ कम बने। बुद्धि व कठिन परिश्रम से धन की वृद्धि, धन की चिन्ता, धन के सम्बन्ध में कुछ कड़ुवा बोलना। कुछ छिपाव बुद्धि से कार्य। सन्तान में कमी, क्लेश, बोलचाल की शब्द-शैली में कमी। अधिक मुनाफे की इच्छा।

शनि द्वितीय भाव में—धन का शत्रुओं में तथा रोगों में नुकसान। भाई से विरोध, भाई का सहयोग भी। कुछ गुप्त युक्तियों से पुरुषार्थ द्वारा धन लाभ। शत्रु दमन, ननसाल से सहायता, खर्च में कमजोरी, जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी, बहादुर, दबंग, हेकड़, पहलवान।

शनि तृतीय भाव में—रोजगार में तरक्की, परिश्रम से कमाई, देह में कुछ कमी, भाई पत्नी को तरफदारी में, माता का क्लेश, सुख में बाधा, यश की कमी, पत्नी सावधान व दूरदर्शी, तामसी, धर्मपालन, भोगी, विलासी। रोजगार की वृद्धि के लिए धन की तथा परिश्रम की पूरी शक्ति लगाना।

शनि चतुर्थ भाव में—धन जन की कमी, भाई की आयु में कमी। धन हानि, दुःखी, कुटुम्ब क्लेश, पुरातत्त्व का लाभ, बुद्धि व विद्या में कमी, सन्तान-चिन्ता, आयु वृद्धि, छिपाव बुद्धि तथा गूढ़ युक्तियों से युक्त। बाएँ पैर पर तिल।

शनि पंचम भाव में—भाग्य बल, पुरुषार्थ बल, धन वृद्धि, भाई का सहयोग पर कुछ अलकसाहट, भाइयों के भाग्यशाली होने में कुछ कमी। धर्म में अरुचि, भाग्य को मानते हुए पुरुषार्थ की प्रधानता। धन व परिश्रम से प्रभाव को स्वतः पा लेना। शत्रुओं पर दबाव, रोग तथा परेशानियों पर फतह, ननसाल से सहयोग।

शनि षष्ठम भाव में—अपनी शक्ति से पराक्रम से तथा धन से राज सत्ता पर प्रभुत्व, पुरुषार्थ से बहुत उन्नति, शान, गुमान, बहुत खर्च, प्रभावशाली रोजगार, अन्य स्थानों में, शक्ति में वैमनस्य, स्त्री के स्थान में महानता व बन्धन, पिता इसके पुरुषार्थ से प्रसन्न, कारोबार में पूर्ण शक्ति का प्रयोग।

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

शनि सप्तम भाव में—रोजगार में भाई का धन लगे, धनाढ्य। अनेक रोजगार, लोहा तथा तेल के कारखाने, लाभ के लिए कटु भाषण। विद्या बुद्धि में कमी, देह में कुछ कमी व परेशानी। कुछ बन्धन सा, भ्राता का उत्तम योग, सन्तान में कमी व क्लेश, ऊँचे दरजे का कुटुम्ब, शक्ति का लाभ, धनवान, अधिक मुनाफाखोर, साहसी धन-जन से लाभ, भाइयों के उत्तम रोजगार, बड़े रोजगारों में व्यय सार्थक है। अगले जन्म में बड़ा ज्ञानी-मानी शुद्ध होगा। मकान में दक्षिण-पूर्व में धन गड़ा है, भाग्योदय सात बार।

शनि अष्टम भाव में—धन खर्च, धन की कमी, ऋण, अन्य स्थान के सम्पर्क में धन लाभ, धन जन की अधूरी शक्ति, भाग्य कमजोर, धन की चिन्ता, यश में कमी, शील सन्तोष का पालन न हो सके। भाई का विरोधी, शत्रु पर प्रभावशाली। पिछले जन्म में इसने अपने भाइयों का धन हरण किया था इस कारण धन पास नहीं ठहरता है।

शनि नवम भाव में—परिश्रमी, पुरुषार्थी, धन वृद्धि, भाई-बहन का सुख, कुछ अशान्ति, देह बल से बड़े-बड़े कार्यों में कुशल, मान, उन्नति, साहस से कार्य, बड़े कारोबार, उत्साही, पत्नी व पिता की शक्ति का मजा कुछ वैमनस्यता के साथ। भाई बहन भी साथ ही चिपके रहें। मुख पर काला चिह्न।

शनि दशम भाव में—भाइयों का धन संग्रह पर अधिकार, धनवान् पुरुषार्थ से धन संग्रह, मकान जमीन की वृद्धि परन्तु माता की आयु कम, सवारी थोड़े दिन रुके। जीवन की दिनचर्या में अशान्ति, सुख साधनों में कमी पुरातत्त्व का लाभ। कुटुम्ब की वृद्धि, दिखावे में सुखी, मकान में उत्तर पूर्व में धन गड़ा है। भाग्योदय दो बार।

शनि एकादश भाव में—पैतृक सम्पत्ति पर भाई का अधिकार, भारी पुरुषार्थी, ओछी बुद्धि व कटु भाषण, विद्या में कमी, सन्तान पक्ष में कमी व क्लेश, अपना ही बहुत खर्च। यश की कमी, धर्म में अश्रद्धा, भाई-बहन की वृद्धि पर कुछ बन्धन सा, बड़ी मेहनत तथा पुरुषार्थ, मकान में उत्तर पूर्व में धन गड़ा है। दाहिनी भुजा पर अनेक तिल।

शनि द्वादश भाव में—धन के सम्बन्ध में अजीब सुख-दुःख, माता की आयु कम, विमाता के योग, मकान जायदाद की पहले हानि फिर वृद्धि।

भाई से कुछ अशान्ति, पिता से लाभ। रोग व झगड़ों में धन के प्रभाव से सुन्दर शक्ति की प्राप्ति, देह से अशान्तप्रद।

धनु लग्न में राहु

राहु प्रथम भाव में—विद्या तथा सन्तान में कमी और कष्ट, बुद्धि में गुप्तशक्ति, शील का उल्लंघन, शब्दों की सत्यता दर्शाना, सत्य असत्य की परवाह न करे, बुद्धि तथा वाणी से गहरी चालें, गहरा स्वार्थ, अन्त में विद्या बुद्धि व सन्तान का ठोस लाभ, धन के कारण विद्या में रूकावट।

राहु द्वितीय भाव में—शत्रु-दमन, पराक्रमी, प्रभावशाली, ननसाल में हानि, मुसीबत की परवाह न करे, विपक्षियों से मुकाबला, शील का उल्लंघन, धैर्य से कार्य, लापरवाह, कूटनीतिज्ञ, कभी-कभी बड़ी मुसीबतों का सामना करने पर अपने अन्दर शक्ति की कमजोरी।

राहु तृतीय भाव में—रोजगारों में महान युक्तियों से कार्य तथा तरक्की। उन्नति के लिए बड़ी भारी दौड़ धूप। लम्बी योजनाएँ, सच्चाई तथा सभ्यता दर्शाकर कार्य करने वाला, वृद्धि व लावण्यता, अधिक भोग, चलता पुर्जा, रोजगारों में व पत्नी में दिलचस्पी, धन पत्नी की ओर।

राहु चतुर्थ भाव में—जीवन में बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ, पेट व गुदा रोग, कब्ज, पुरातत्त्व की हानि, गूढ़ युक्तियों के प्रयोग से परेशानियाँ, गुप्त चिन्ताओं का सामना, विदेश आदि की यात्रा में भी कष्ट। एक बार धन बिल्कुल नष्ट हो जाए, बाद में उत्थान।

राहु पंचम भाव में—भाग्य की चिन्ता, उन्नति में रुकावटें, धर्म के वास्तविक ज्ञान को न समझना, हेर-फेर से कार्यकुशल, देर में भाग्य प्राप्त, यश तथा बरक्कत की कमी, धन से भाग्योदय।

राहु षष्ठम भाव में—बड़ी-से-बड़ी जोखम में कूदना, धैर्य से अपने कार्य पकड़ना, पिता से अधूरा सुख, कारव्यवहार में गुप्त तरकीबों का प्रयोग। चतुराइयों से मान और उन्नति। राजकाज में सत्यता दर्शाकर लाभ उठाना, समाज के कार्यों में सफलता व परेशानी। धन से नौकरी प्राप्त। नौकरी चलायमान। भाग्योदय तीन बार।

राहु सप्तम भाव में—आमदनी में दृढ़ता, अधिक लाभ के लिए गुप्त तरकीबें, कठिन कार्य से लाभ की नींव को मजबूत करना। जोखिम उठाने में हिचकना। सत्य-असत्य की परवाह न करे। लाभ के विषय में पूर्ण स्वार्थी। धन लगाकर विशेष लाभ, अगले जन्म में चोरों द्वारा खूब धन कमाएगा।

राहु अष्टम भाव में—बहुत खर्च के कारणों से बहुत कष्ट व क्लेश। इनसे बचने के लिए बड़ी-बड़ी तरकीबें, कठिनाई से कार्य। अन्य स्थानों में भी परेशानी। खर्च को युक्ति तथा साहस से पार करना। खर्च संचालन के बड़े प्रयत्न। खर्च पूर्ति के लिए सत्य-असत्य तथा आराम की परवाह न करने वाला, धन क्षय, कोई उधार ले जाए तो वापिस न करे। पिछले जन्म में इसने एक गौ को भूखा प्यासा मार डाला था इस कारण अब परेशान है।

राहु नवम भाव में—देह में कष्ट व परेशानी, सुन्दरता की कमी, देह में आघात या देह में जोखिम पाने वाला। गुप्त शक्ति से अधिक कार्य। उन्नति व मान रक्षा के लिए बड़े कष्ट। अनाधिकार लाभ के लिए बड़ी-बड़ी जोखिम उठाना। मान सम्मान में कमी। कभी-कभी परतन्त्रता का योग, धन पर काबू।

राहु दशम भाव में—बार-बार धन हानि और बार-बार धन प्राप्ति। कुटुम्ब क्लेश। धन वृद्धि के लिए गहरी युक्तियाँ, साहस तथा दृढ़ता। धन के कारणों से बहुत-बहुत सन्ताप, धन वृद्धि के लिए जोखिम उठाना, अन्त में धन वृद्धि की मजबूती। धन के लिए गुप्त शक्ति का प्रयोग।

राहु एकादश भाव में—भारी पुरुषार्थी, साहसी, पहलवान, दौड़-धूप वाला, कठिन कार्य को भी पूरा करना, गुप्त युक्तियों से बल में प्रयोग, भाई से अनबन, पौरुष में कमजोरी भी, अन्त में पुरुषार्थ से उन्नति पा लेना। कुछ धन पर भाइयों का अधिकार।

राहु द्वादश भाव में—माता की आयु कम, स्थान हानि और क्लेश, सुख में बाधा, भूमि, मकान, सवारी के सम्बन्ध क्लेश। बड़ी-बड़ी अशान्तियाँ, सुख के लिए विचित्र युक्तियों का प्रयोग। अन्य का सहारा देखना, माता से तथा जन्म भूमि से विछोह। अन्त में कठिन प्रयत्न से अन्य जगह में सुख साधन की प्राप्ति। कुछ धन माता तथा भूमि पर बिगड़ जाए। सवारी के विषय

में बार-बार धन बिगड़े।

धनु लग्न में केतु

केतु प्रथम भाव में—बुद्धि में परेशानी तथा कमी, सन्तान कष्ट तथा कमी, शिक्षा के समय बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ, परन्तु गहराई तक पहुँचना, ठीक तौर से बात न कर सके। कटु भाषी, बुद्धि में तेजी। शील, सत्य से दूर, गहरा स्वार्थी, हठी, अन्त में कुछ सहूलियतें, कठिन परिश्रम तथा तंगी द्वारा धन प्राप्त।

केतु द्वितीय भाव में—बहादुर, साहसी, शत्रु दमन, ननसाल में हानि, विपक्षियों पर विजय, कूटनीति, महान परिश्रम, उन्नति की गुप्त गहरी योजनाएँ, भविष्य की मजबूती की अमर आशा, बुद्धि की ओर दौड़ना, शील की कमी, स्वार्थी, सन्तान से शत्रुता, विजयी।

केतु तृतीय भाव में—स्त्री स्थान में महान संकट, गृहस्थ क्लेश व कमी, परतन्त्रता सी। रोजगार में महान परिश्रम करके भी कमी, थकान, कठिनता से गुजारा। भोगादिक में बड़ी भारी कमी, लौकिक कठिनाइयों का सामना बड़े धैर्य से करे। उन्नति के लिए गुप्त गहरी चालें। सन्तान अपनी माता को सताए।

केतु चतुर्थ भाव में—जीवन में महान कष्ट, पेट या गुदा में कष्ट, दिनचर्या में परेशानियाँ, जीवन सार्थक करने के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएँ। आयु में हताश, पुरातत्त्व की हानि, जीवन के मूल्य की कमी तथा वेदना, हेकड़, धैर्यवान। अन्त में कुछ मजबूत शक्ति का संचार।

केतु पंचम भाव में—भाग्य में परेशानी, संकट, यश की कमी, धर्म की हानि, धर्म का ज्ञान प्राप्त न हो। प्रभु में विश्वास की कमी, परलोक की परवाह न करे। भाग्य उन्नति के लिए बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना बड़े धैर्य से करे।

केतु षष्ठम भाव में—पिता की आयु कम, व्यापार नौकरी में परेशानी, उन्नति के लिए दृढ़ता तथा धैर्य से कार्य, उन्नति के पथ पर डटा हुआ, स्फूर्ति व अन्ध विश्वास के साथ आगे बढ़ना, गुप्त ज्ञान तथा कर्मयोग के साहस से

कार्य करना। स्वार्थयुक्त, अन्त में उन्नति।

केतु सप्तम भाव में—अनेक लाभ, धन प्राप्ति के लिए हठधर्मी व गुप्त युक्तियाँ, अधिक लाभ का भी प्रयत्न। धन प्राप्ति की स्थाई योजना बनाना। मुफ्त के साधन, स्वार्थ सिद्धि, लाभ के सम्बन्ध में हृदय में छिपी हुई स्थिर भावनाओं का सदैव स्थान देते रहने से सदा लाभ उठाने वाला। सन्तान भी रोजगार को सम्भाले। अगले जन्म में बड़ा प्रसिद्ध साहूकार होगा।

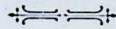
केतु अष्टम भाव में—जीवन भर खर्च, स्थिर खर्च, अन्य स्थानों में भारी परिश्रम व परेशानियाँ सहकर मजबूत लाइन बनाना। कठिन-से-कठिन प्रयास। खर्च के सम्बन्ध में बड़ी लापरवाही, अन्धाधुन्ध शक्ति का प्रयोग, खर्च विषय में बड़े-बड़े संकट। गुप्त धारणाओं में मजबूती, साहसी। सन्तान खर्चीली, पिछले जन्म में भट्टे का मालिक था। ईटे भरते समय एक बिल्ली का बच्चा भी भट्टे में आ घुसा और जब आग दी गई तो वह निर्दोष भी जल भुन गया। वह पाप लगा है।

केतु नवम भाव में—बहादुर, लम्बा कद, बड़ी दौड़-धूप, हेकड़ी हठधर्मी, अन्धविश्वास व लापरवाही, अन्दरूनी बड़ी मजबूती, देह में कमी, सुन्दरता में कमी, अपने को बड़ा मानना। गहरी युक्तियाँ, गुप्त शक्ति, स्वार्थ युक्त, कम बोलना, देह में कभी-कभी आघात व संकट, सन्तान, दुःखदायी।

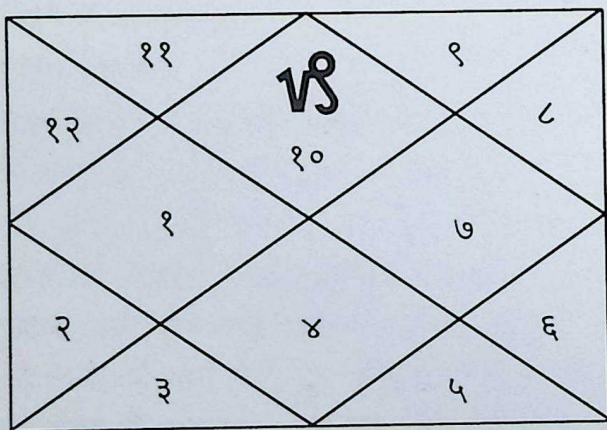
केतु दशम भाव में—धन सम्बन्धी संकट, कुटुम्ब की हानि, बँटवारा, धन के विषय में भारी धैर्य, धन वृद्धि के लिए अन्धाधुन्ध शक्ति का प्रयोग। धन संग्रह में अधूरापन, धन की अमर शक्ति के लिए भारी प्रयत्न, अन्त में अनेक आपत्तियों के बाद मजबूत धन शक्ति की प्राप्ति। सन्तान धन बिगाड़े।

केतु एकादश भाव में—भाई की आयु कम, पुरुषार्थी, लम्बी भुजाएँ, उन्नति के लिए भारी दौड़-धूप और प्रयत्नों से तथा साहस से उन्नति की तरफ दौड़ना, शक्ति के अन्दर कुछ कमजोरी भी। कमजोरी की परवाह न करना। अपने में शक्ति का संचार अनुभव, विजयी, बलिष्ठ। पुत्र उत्पन्न होने के बाद भाई को हानि।

केतु द्वादश भाव में—माता की आयु कम, अपनी आयु कम, सुख कम, माता दुःखी, माता का वियोग, जन्मभूमि का वियोग, दूरवासा, अशान्ति, मकान, सवारी का कष्ट, सुख पाने के लिए गुप्त साधन, कठिन परिश्रम, बड़ी-बड़ी जोखम, अन्त में मजबूती। हठ धर्मी, धैर्यवान, पुत्र उत्पन्न होने के बाद माता का देहान्त।



मकर लग्न



मकर लग्न में सूर्य

सूर्य प्रथम भाव में—गुप्त धन की प्राप्ति, माता मर कर जी उठे, आयु वृद्धि, पिता से क्लेश, मान प्रतिष्ठा में कमी, राजसमाज में कमजोरी, गुप्त शक्ति का भण्डार, जीवन की दिनचर्या में मस्त, छोटे कर्म वाला, तत्परता, जमीन जायदाद नष्ट होकर फिर से अधिक बन जाए। विदेश में मकान।

सूर्य द्वितीय भाव में—सन्तान की आयु कम, विद्या की कमी, बोल

चाल में क्रोध व कटुता, बुद्धि में परेशानी, विदेश जाने के विचार, शान की बातें, युक्तिबल, चिन्ता, पुरातत्त्व की कठिन जानकारी, शील की कमी, कन्या का देहान्त ।

सूर्य तृतीय भाव में—प्रभावशाली, क्रोधी, दिनचर्या में गौरव, उत्तम आयु, शत्रु का मान-मर्दन, ननसाल में हानि, पुरातत्त्व का सामान्य लाभ, रोगादि व झंझटों से (वैद्य और वकील) जीवनाधार शक्ति को प्राप्त करने वाला, गूढ़ युक्तियों की सुलझाकर पेचीदा प्रभाव शक्ति उत्पन्न करना, धैर्यवान । मामा की मृत्यु ।

सूर्य चतुर्थ भाव में—दीर्घायु, स्त्री पक्ष में क्लेश व परेशानियाँ, रोजगार में कठिनाइयाँ, रोजगार की लाइन में पुरातत्त्व का प्रभाव, रोजगार में गहरी युक्तियाँ, देह में थकान, परेशानी, भोग सम्बन्धी कमी व क्लेश, रोजगार में विदेश का सम्बन्ध, अजीब भयानक कार्य, पत्नी की आयु कम ।

सूर्य पंचम भाव में—आयु अधिक, प्रभावशाली जीवन, पुरातत्त्व का लाभ, अपनी दिनचर्या से दूसरों को कुछ तपन पहुँचाने वाला, धन संग्रह के अनेक साधन, फिर भी धन की कमी, धन हानि, कुटुम्ब क्लेश, भेद शक्ति, रहन सहन में गौरव, भविष्य की परवाह न करे, तेज ।

सूर्य षष्ठम भाव में—आयु में वृद्धि, भाग्य में बहुत हानि, भाग्य बनाने से भी न बने, यश में कमी, धर्म स्थान की हानि, पुरातत्त्व का लाभ, भाग्योदय के लिए बड़े-बड़े प्रयत्न, परेशानियाँ, भाई की कमी तथा क्लेश, सज्जन, स्वार्थमय धर्म पालन । विदेश में भाग्य चमके ।

सूर्य सप्तम भाव में—पिता की आयु कम, पिता को क्लेश, आयु कम, व्यापार में परेशानियाँ व परिश्रम, नौकरी न मिले या छूट जाए, ओछा कर्म, मान-प्रतिष्ठा में कमी, मान प्रतिष्ठा पर आघात, राजसमाज में क्लेश अशान्ति, भूमि का पैतृक लाभ, सुख साधन की वृद्धि के लिए गुप्त युक्तियों से लाभ, दिनचर्या में अशान्ति ।

सूर्य अष्टम भाव में—उत्तम आयु, सुन्दर, दिनचर्या में प्रभाव, दिनचर्या का व पुरातत्त्व लाभ, लाभ में गूढ़ योजनाएँ, कटु युक्तियों से लाभ, सन्तान हानि व क्लेश, विद्या कम व परेशानी, बातचीत में छिपाव व कटुता, कभी-

कभी लाभ में हानि। इस जन्म में दुकान में आग लग जाए। अगले जन्म में वायुयान सम्बन्धी व्यापार विदेशों से करेगा।

सूर्य नवम भाव में—पुरातत्त्व की हानि, जीवन के प्रभाव में कुछ कमी, आयु में कमजोरी अधिक खर्च। गुप्त शक्ति से हानि, शत्रु पर प्रभाव। ननसाल में हानि, दिनचर्या में अशान्ति। खर्च में कठिनाइयाँ, प्रभावयुक्त विधि से खर्च सँभाले। नाभि के नीचे पेट के अन्दर विकार, चाचा या ताऊ की शीघ्र मृत्यु। पिछले जन्म में किसी विदेशी का बटुआ चुरा लिया था इस कारण अब खर्च के लिए बहुत तंग है।

सूर्य दशम भाव में—देह में कमी व परेशानी, कठिन कार्य। देह में सुडौलता व विकार, गर्मी के रोग। आयु में वृद्धि, जीवन में अशान्ति, पुरातत्त्व का लाभ। स्त्री के स्थान में क्लेश। रोजगार में परेशानियाँ। सुन्दरता व रंगरूप की कमी, क्रोधी, गुप्त शक्तियुक्त।

सूर्य एकादश भाव में—धन संग्रह में हानि। कुटुम्ब में जवान मृत्यु, धन कष्ट। पुरातत्त्व का लाभ, जीवन में अमीरी। गुप्त शक्ति से धन का नाजयाज प्रयोग, कुछ अखरने वाली कमी। धन संग्रह के लिए बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ, अन्त में कुछ प्राप्ति।

सूर्य द्वादश भाव में—आयु वृद्धि, पुरातत्त्व का लाभ। भाग्य तथा धर्म में कुछ हानि, भाई की हानि तथा क्लेश। बल पुरुषार्थ में कमजोरी, बाहरी तौर से कुछ तेजी व मजबूती। तमोगुण मार्ग का अनुगामी, गुप्त शक्ति से फायदा, एक भाई की हानि।

मकर लग्न में चन्द्रमा

चन्द्रमा प्रथम भाव में—विवाह के बाद मकान बना, मकान बनाने की पत्नी की इच्छा, गृहस्थ सुख, सुन्दर स्त्री, माता का सुख, ससुराल से सुख व सवारी, सुन्दर भोग विलास, सुखपूर्वक रोजगार में मनोबल से तरक्की, पिता की उन्नति व पिता से लाभ, सामाजिक कार्यों में चतुरता व कुशलता, राज में मान, मगन मन, आनन्दी स्वभाव।

चन्द्रमा द्वितीय भाव में—रोजगार का ऊँचा ज्ञान, पत्नी व बच्चों पर

बलिहारी, सन्तान बड़ी सुन्दर, मजबूत वृद्धि, बुद्धिमान पत्नी, काम वासना अधिक, लौकिक व्यवहारों में दक्षता, सन्तान से सहारा, जोरदारों से बातचीत, आमदनी में कमी, लापरवाही, कार्यकुशल, भोगी, पत्नी विद्वान्, सन्तान शीघ्र प्राप्त, जब-जब सन्तान उत्पन्न हो, तब-तब लाभ में कमी।

चन्द्रमा तृतीय भाव में—रोजगार में परेशानियाँ व परिश्रम, परतन्त्रता का रोजगार, रोजगार में गुंडो से बाधा, पत्नी दुखी, पत्नी बहकावे में आ जाए, ससुराल कष्ट में, अधिक खर्च, मनोबल से रोग व शत्रु से बचाने का उपाय, ननसाल में कमी, स्त्री से मानसिक विरोध, झगड़ा। पत्नी शत्रु की तरफदारी करती रहेगी।

चन्द्रमा चतुर्थ भाव में—सुन्दर स्त्री, उत्तम ससुराल। खूब भोग विलास, अपना कार्य, रोजगार में चमक व प्रशंसा, रोजगार की स्थिर सफलता पर गौरव, गृहस्थ सुख, हृदय में व मन में शान्ति। स्त्री मस्त, बेफिकर तथा मनमानी करने वाली और ऐसी पत्नी से मुग्ध, सौन्दर्य प्रेमी, लौकिक कार्य कुशल।

चन्द्रमा पंचम भाव में—स्त्री की हानि, मानसिक क्लेश, भोगादिक में कमी, रोजगार कई बार मर सा जाए, पानी में डूबना, मनोयोग के गूढ़ ज्ञान से रोजगार का कार्य, रोजगार में विदेश के सम्पर्क से गहरा लाभ, धन वृद्धि का ध्यान, पुरातत्त्व से कार्य, दिनचर्या में रौनक, गुप्त ज्ञानी।

चन्द्रमा षष्ठम भाव में—पत्नी बहुत भाग्यवान्, साले-साली भी बहुत भाग्यवान। भोगादिक में सात्विकता, सौम्य पत्नी, मनोयोग से इन्द्रिय संयम। धर्म के वास्तविक कार्यों में कमी, मन में विकार, बहन भाई भाग्यशाली, भाग्य से रोजगार में सफलता। विवाह के बाद धार्मिक यात्रा।

चन्द्रमा सप्तम भाव में—शानदार ऊँचे व्यापार, उच्चपद, मान-सम्मान, मनोयोग से उन्नति, इन्द्रिय भोग; राज समाज, व्यापारिक कार्य में गौरव, गृहस्थ में आदर, माता-पिता का सहारा, पत्नी को गौरव, पत्नी को सर्विस मिल सकती है। स्त्री से सुख। विवाह होते ही नौकरी मिले या पदोन्नति मिले। आशाओं के मुकाबले में कुछ कसर।

चन्द्रमा अष्टम भाव में—स्त्री से साधारण लाभ, मन को अशान्ति,

लाभ प्राप्ति करने को मन न करे, व्यापार में लाभ में कटंक, गृहस्थ-संकट, पत्नी को विषैले रोग, आमदनी की कमी, मन में दुख, बुद्धि विद्या में बरकत, बोलचाल में तेजी, मन में आलस्य। सन्तान सुख व तरक्की, लाभ में परतन्त्रता सी। अगले जन्म में व्याध के परिवार में जन्म लेगा तथा केकड़े तथा बिच्छुओं से शरीर पालन करेगा।

चन्द्रमा नवम भाव में—पत्नी की आयु कम, पत्नी के विषय में विशेष खर्च, विवाह में बहुत खर्च, रोजगार बहुत खर्च से चले, साझों में घाटा, बाहरी शक्ति से रोजगार पनपे, गृहस्थ में परेशानियाँ, शत्रु से शीतलता, अशान्ति, अकेलापन, अन्य के सहारे से या चाचा-ताऊ के सहारे से गुजारा। रोजगार चाचा-ताऊ को। पिछले जन्म में यह व्यक्ति लकड़ियों की चोरी करता था तथा उन्हें बेच देता था, इसलिए परेशान है।

चन्द्रमा दशम भाव में—मनोयोग के ऊँचे तरीके से ऊँचे रोजगार, पत्नी सुन्दर व सुखदायक पर कुछ पत्नी विषय में कमी भी। बहुत भोग, कामवासना, रंग कुछ गोरा, बड़प्पन, मन की शान्ति में कुछ अशान्ति भी। विवाह पत्नी की राजी पर कुछ बेराजी पर। ससुराल वाले बहुत चाहें।

चन्द्रमा एकादश भाव में—रोजगार में धन जमा, ससुराल से लाभ, मनोबल से धन संग्रह, विवाह के बाद धन संग्रह, विवाह में उत्तम धन प्राप्त, पत्नी धन को सँभालकर रखती है। स्त्री सुख में कुछ कमी, कुटुम्ब से मन मुटाव, पापतत्त्व द्वारा धन की कुछ प्राप्ति। मन में कुछ अशान्ति।

चन्द्रमा द्वादश भाव में—रोजगार की उन्नति के लिए बड़ा परिश्रम, मनोबल से पुरुषार्थ बल, प्रभावशाली सुन्दर पत्नी, भोग की विशेष इच्छा, उन्नति का बड़ा ध्यान, भाग्यवान, बहन भाइयों का योग, पत्नी भाई बहन की तरफदारी में।

मकर लग्न में मंगल

मंगल प्रथम भाव में—जमीन जायदाद से आमदनी, मकान में ही आमदनी का ढंग, रोजगार के सम्बन्ध में आलस्य, पत्नी से तथा पत्नी को सुख का घाटा, मंगली, मकान बना और पत्नी बहुत बीमार हुई, सवारी मुफ्त

की सी अपने नाम हो जाए, मान-सम्मान, राजसमाज में सुख, घर में हथियार, अपने सुख व लाभ के सामने किसी अन्य की न सोचे। तीन मन्जिल का मकान। भाग्योदय तीन बार।

मंगल द्वितीय भाव में—माता ने इसे पढ़ाया, सन्तान सुख, पुरातत्त्व का सुख, परेशानी के मार्ग में भी लाभ, दूसरे स्थानों के सम्बन्ध से भी लाभ, अधिक खर्च, विद्या बल से सुखी, सदा लाभ की योजनाएँ।

मंगल तृतीय भाव में—परतन्त्रता के प्रभावशाली कर्म, माता की आयु कम, सुख साधन में कमी, रोग तथा विपत्तियों से जूझकर सुख साधन प्राप्त करना, अधिक खर्च, देह में सुन्दरता व गौरव, आत्मा सुखी, स्वार्थ सिद्धि, पेचीदा युक्तियों से लाभ। लाभ का कुछ अंश शत्रुओं की ओर, कुछ लाभ मामा की ओर, पिता की रोजी घटती रहे। वक्ष में चोट।

मंगल चतुर्थ भाव में—मंगली, पत्नी परेशान, पत्नी को इसकी माता बहुत परेशान करे, माता कष्ट में, रोजगार कमजोर, गृहस्थ सुख में घाटा, देह में बड़प्पन, धन व मान वृद्धि का प्रयत्न करने पर भी असफलता। अन्त में धन का सुख, इन्द्रिय सुखों में छिपाव।

मंगल पंचम भाव में—बहुत परिश्रम से बहुत अधिक लाभ के लिए कूटनीति मन में। अशान्ति, धन प्राप्ति के लिए बड़े-बड़े सुखों को त्याग दे। माता की आयु कम, माता का वियोग, भूमि व सवारी सुख में कमी, सावधान न रहने पर दुर्घटना से मृत्यु। साहसी, जीवन की दिनचर्या में सुख। उदर में चोट।

मंगल षष्ठम भाव में—भाग्यवान्, भाग्य से बड़े-बड़े सुख साधन, भूमि सवारी का पूर्ण सुख, खूब खर्च, अन्य स्थानों से लाभ, स्वार्थयुक्त धर्म पालन, माता धर्म की देवी, दैवी सहायता, भाई का सुख, पुरुषार्थी, मस्त, बेफिकर।

मंगल सप्तम भाव में—आमदनी सरकार से, रोजगारों में बहुत लाभ, व्यापार त्याग कर नौकरी करे, राज में लाभ, पिता से लाभ, सन्तान का सुख, विद्या का सुख, दुकान के पास ही निवास, मान-सम्मान से आत्मा में गौरव, देह में सुन्दरता, भूमि लाभ, बुद्धि पर भरपूर जोर, प्रभावशाली कर्म,

प्रभावकारी बोलचाल ।

मंगल अष्टम भाव में—बहुत सुखद साधन व बहुत लाभ, मकान बनाते-बनाते दुकान बना बैठे, धन संग्रह की कठिनाइयाँ, कुटुम्ब में वैमनस्य, विद्या, सन्तान सुख, शत्रु पर प्रभाव, जमीन में बहुत प्रसन्न । विपत्तियों पर विजय, झंझट वाले मामलों से फायदा । स्वतः ही भूमि लाभ । पिता की रोजी में उन्नति । अगले जन्म में व्याध बनेगा तथा बड़े-बड़े शिकार किया करेगा । भाग्योदय तीन बार ।

मंगल नवम भाव में—मंगली, माता की आयु कम, आमदनी में कमजोरी, अन्य स्थान के सम्पर्क से लाभ व सुख, गृहस्थ सुख में घाटा, भाई से उत्तम सम्पर्क, पुरुषार्थ से लाभ, अधिक खर्च, खर्च के कार्यों से ही लाभ, इन्द्रिय भोगादिक के सुखों में घाटा, रोजगारों का घाटा देखकर माता का देहान्त । पिता की रोजी घटती रहे । पिछले जन्म में टुक से टक्कर मारकर किसी की दुकान गिरा दी थी इसलिए अब रोजगारों को खो बैठा है ।

मंगल दशम भाव में—बहुत सुखी, बहुत जायदाद, माता की आयु पूर्ण, माता को सबसे अच्छा लगे, सुन्दर सुडौल देह, मस्ती, लापरवाही, क्रोध तथा हठ, रोजगार में कमी, मुफ्त का सा लाभ, पत्नी से न बने, मंगली, भोगादिक में कमी, गुप्त युक्तियों से सुख के साधन । जब-जब मकान बने तब-तब मुफ्त का सा धन प्राप्त हो । पिता की रोजी में उन्नति । भाग्योदय तीन बार ।

मंगल एकादश भाव में—धन लाभ, भूमि लाभ, आमदनी जोड़ने में लगा रहे, इस कारण सुख के साधनों में कमी, सन्तान व विद्या का सुख, दिनचर्या में सुख, भाग्यवान्, धन में सुख दीखे । माता रकम को बंधन में डाल दे ।

मंगल द्वादश भाव में—बल पुरुषार्थ में वृद्धि, भ्राताओं वाला, माता से और भूमि से लाभ, सुखद परिश्रम से खूब लाभ, शत्रु पर प्रभाव, लापरवाह, खाँमखाँ छेड़ने वाला, माता मकान इसके भाई के नाम कराना चाहती है ।

मकर लग्न में बुध

बुध प्रथम भाव में—माता मर कर जी पड़े, मकान सस्ता बेचना पड़े

परन्तु फिर बन जाए, भाग्यशक्ति से सुख, ननसाल से मदद, शत्रुओं से व रोगों से सुख में कमी, रोगी होने पर मकान बदल दे तो ठीक, सुखद धर्म का पालन, शत्रु शत्रुता करे पर पराजय पावे ।

बुध द्वितीय भाव में—भाग्य में विद्या प्राप्ति, धर्म का उत्तम ज्ञान, सन्तान चतुर, विद्या अलौकिक, समयानुसार भाग्य की सहायता। दैव की सहायता। सन्तान योग, बहुत लाभ, सन्तान पक्ष में कुछ झंझट। पुत्र उत्पन्न हुआ तो भाग्य खुला परन्तु शिक्षा का शौक समाप्त हो गया।

बुध तृतीय भाव में—पहले भाग्य कमजोर फिर खूब भाग्यवान्। भाग्योदय में कुछ मजबूत रुकावटें, ननसाल में वृद्धि। पेचीदा धर्म का पालन। विवेक तथा भाग्यशक्ति से ही रोगों पर शत्रुओं पर विजय। अधिक खर्च। दाना दुश्मन, शान्ति युक्त, क्रोध, तीर्थयात्रा में चोरी हो जाए।

बुध चतुर्थ भाव में—भाग्य तथा परिश्रम व विवेक से रोजगार में तरक्की, रोजगार में दैनिक अवस्था का सुधार, गृहस्थ में मामूली अड़चनें परन्तु आनन्द व सफलता, पत्नी भाग्यवान् तथा धर्म परायण, सामान्य धर्म का पालन। रोजगार में पेचीदा युक्तियों से लाभ। मामा विवाह कराने के प्रयत्न में।

बुध पंचम भाव में—भाग्य कमजोर, परेशानियाँ, सुयश में कमजोरी, पूर्व संचित धरोहर का लाभ। अनुचित मार्ग से भाग्यवृद्धि के साधन। ननसाल से कमजोरी, धन की वृद्धि के लिए बड़ी-बड़ी युक्तियाँ। उत्तम आयु, स्वार्थी, शत्रु मरे हुए से। दमा रोग से मृत्यु।

बुध षष्ठम भाव में—भाग्यशाली, शत्रु भी भाग्यशाली, भोगों में विशेष आराम व सुख प्राप्ति। पेचीदा युक्तियों से महान लाभ। सतोगुणी कर्म की आड़ में रजोगुणी कर्म। छिपाव शक्ति से सज्जनता के ढंग से नाजयाज लाभ। मान व सत्कार, भाई से विरोध, बल पुरुषार्थ में कमजोरी। विवेक व ज्ञान से उन्नति।

बुध सप्तम भाव में—उत्तम सरकारी नौकरी में शत्रुओं के दबाव से खलबली। पिता मर कर जी पड़े। भाग्यवान्, राजसमाज से कुछ अड़चनें परन्तु लाभ, चतुरता से मान वृद्धि। भाग्य से उन्नति स्वतः प्राप्त। ननसाल

से सहायता। गुप्त युक्तियों से कार्य, भाग्य तथा विवेक के कारण राज में मान।

बुध अष्टम भाव में—भाग्य से विवेक से खूब लाभ, धार्मिक लाभ, चतुराई से भाग्यवानी, आमदनी से बेफिकरी। विद्या बुद्धि का उत्तम योग। रसायन प्रेमी, धर्म-कर्म में स्वार्थ का अधिक ध्यान। ननसाल व्यापार में मदद दे। उत्तम विवेक, प्रभावशाली, शत्रु भी लाभ पहुँचावे। रोगों में सुख का अनुभव। अगले जन्म में वैज्ञानिक बनेगा तथा रसायन क्रिया से उदर पालन करेगा।

बुध नवम भाव में—धर्म में खर्च करने पर भी यश न मिले। अधिक खर्च, शत्रु पक्ष पर अधिक खर्च। प्रभाव विवेक की कमी। ननसाल में गरीबी। अन्य स्थान के सम्पर्क का सहारा, भाग्योदय में बड़ी-बड़ी परेशानियाँ। कमजोर तकदीर के कारण झगड़े व शत्रुता, छिपी चतुराईयों से प्रभाव का प्रयत्न। पिछले जन्म में देवताओं को बोली हुई भेंट नहीं चढ़ाई इस कारण देवगण साथ नहीं देते।

बुध दशम भाव में—विशेष भाग्यवान्, दैव की शीघ्र बार-बार सहायता, सौम्य, प्रभावशाली, धर्मज्ञ, उच्च विवेक। देह में साधारण रोग। ननसाल से उत्तमता। गृहस्थ का विवेक से पालन लौकिक व पारलौकिक दोनों का ध्यान। परिश्रम व भाग्य से मान सम्मान, ईश्वर में विश्वास। शत्रुओं पर स्वयं विजय। नाम की मुहर बने।

बुध एकादश भाव में—धनाढ्य, भाग्य तथा परिश्रम व विवेक के द्वारा सफलता, शक्ति में साधारण कमी, जीवन में धन को बड़ा मानना, कुटुम्ब में विद्रोह। दैव संयोग से आवश्यक तरक्की। पुरातत्त्व व ननसाल से लाभ, स्वार्थ सिद्धि। कुछ धन पर विपक्षियों का काबू। प्रभु के दर्शन।

बुध द्वादश भाव में—आलस्य, शक्ति कम, परिश्रम के कार्यों में दिक्कतें। ईश्वर को सहायक मानने वाला। शत्रु पक्ष से परेशानी। भाई-बहन की आयु कम, भाई से क्लेश, भाग्योदय में देरी, दबकर चले। ननसाल वाले इसके भाई को चाहें। भाग्य भी भाइयों को फले।

मकर लग्न में गुरु

गुरु प्रथम भाव में—मकान, भूमि, सवारी के कार्यों में खर्च, वैसे माता की आयु कम तथा भूमि की बिक्री। भाई माता की तरफ। अन्य के द्वारा घर बैठे लाभ, सुख शान्ति में बाधा, खर्च की अधिकता। सुख प्राप्ति के लिए विशेष खर्च के कारण अशान्ति। भाई से सुख में बाधा।

गुरु द्वितीय भाव में—बुद्धि विवेक व परिश्रम से खर्च को पूरा करें। खर्च सन्तान विषय पर व शिक्षा पर। विद्या में कमी, सन्तान की कमी, भाई की अधूरी शक्ति। अन्य स्थान से बुद्धि द्वारा उन्नति। भाग्योदय के लिए बराबर प्रयत्न। सुन्दरता की कमी। खर्च अधिक होने से हृदय में अशान्ति। बड़प्पन की बातें, चतुर, भाई को विद्या।

गुरु तृतीय भाव में—शत्रु पक्ष में तथा रोगों में विशेष खर्च। भाई शत्रु समान व्यवहार करे, भ्राता की आयु कम, खर्च विषय में तथा भाई के विषय में परतन्त्रता सी। उन्नति के लिए बहुत प्रयत्न, प्रभाव में कमी, धन संग्रह की कमी। दानार्थ से दुश्मनी, आलसी, गुप्त युक्तियों से कार्य।

गुरु चतुर्थ भाव में—रोजगार में पुरुषार्थ। अन्य स्थान के सम्पर्क से खूब रोजगार, खूब खर्च। पत्नी विषय पर शानदार खर्च, पत्नी अपने देवर के विवाह को भी प्रयत्न करे। भाई की पत्नी की ओर झुकाव। भाई को तथा इसको गृहस्थ का उच्चतम सुख। दैनिक रोजगार की उच्चता, रोजगार में बड़प्पन। थकान, उत्तेजना व स्फूर्ति।

गुरु पंचम भाव में—भाई की आयु कम, पुरुषार्थ में कमी, किसी के देहान्त पर खर्च। खर्च के सम्बन्ध में दिक्कतें। विदेश योग से खर्च का संचालन। सुख वृद्धि के विशेष प्रयत्न, धन संग्रह में कमी, बड़प्पन का ढंग। भाई को हृदय रोग। भाई परदेश में।

गुरु षष्ठम भाव में—भाई भाग्यवान परन्तु भाई का कम सहयोग, पुरुषार्थ से धर्म व भाग्य की वृद्धि, साहसी व लापरवाही। स्वास्थ्य व सुन्दरता की कमी। लौकिक बुद्धि में कमी, हृदय में कुछ धार्मिक ज्ञान, पुरुषार्थ से वृद्धि का ध्यान।

गुरु सप्तम भाव में—भाई को सर्विस, अपनी सर्विस छूटे। पिता की

आयु कम, गरीबी। मान-प्रतिष्ठा में पद में कमी। उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न। भाई से नीरसता, खर्च अधिक, प्रभाव वृद्धि के लिए हृदय से प्रयत्न। अन्य स्थान के सम्पर्क से उत्तम लाभ, धन की कमी व हानि। अन्त में कुछ बड़प्पन प्राप्त।

गुरु अष्टम भाव में—भाई-बहन को अनेक रोजगार, अपने लाभ तथा बल वृद्धि में कमी। कारोबार में बहुत खर्च करना पड़े फिर भी पार न पड़े। अन्य स्थानों से बड़प्पन व लाभ। स्त्री जाति की सुन्दरता का हृदय में बड़ा ध्यान। दौड़-धूप से चमत्कार, विद्या व सन्तान में नीरसता व कमी। अगले जन्म में किसी मन्दिर की सेवा में पुजारी भर्ती होगा, तथा हर समय भयभीत रहेगा।

गुरु नवम भाव में—अधिक खर्च, खर्च पर कन्ट्रोल, खर्च में परतन्त्रता। बन्धु-बान्धवों पर बड़ी शान से खर्च। पुरुषार्थ की कमी, भाई की आयु कम, अधिक खर्च हो जाने के भय से भाई को हृदय रोग। अन्य के सहारे से शक्ति का लाभ। गूढ़ युक्तियाँ, भ्रमणकारी, अशान्त हृदय। पिछले जन्म में यह व्यक्ति बिना किसी कारण हर एक को छेड़ता तथा सताता था इस कारण इस जन्म में चिन्तित तथा अशान्त रहता है। मकान बने।

गुरु दशम भाव में—देह में दुर्बलता व कष्ट व देह पर विशेष खर्च। भाई-बहन चिपके से रहें परन्तु नीरसता। देह की सुन्दरता में कमी, बड़प्पन में कमी। अन्य स्थान का नाजायज दबाव, परतन्त्रता का सा योग। स्त्री स्थान में प्रसन्नता, रोजगार में वृद्धि करने वाला, सन्तान पक्ष में कुछ शक्ति व कुछ कमी पाने वाला। खर्च जीवन भर पीछा न छोड़े, खर्च के कारण परेशान।

गुरु एकादश भाव में—धन हानि व धन की कमी, अन्य स्थानों से धन प्राप्त। भ्राता का दबाव धन पर, भ्राता से कुछ अनबन धन के विषय में, पुरुषार्थ में कमी, परतन्त्रता। मान उन्नति के लिए बहुत कर्म। दौड़ धूप, कुटुम्ब में किसी वृद्ध की मृत्यु। जीवन में कुछ शान परन्तु पूर्ण सफलता न मिले।

गुरु द्वादश भाव में—खर्च भाई के सिर। खर्च करने पर पुरुषार्थ

बढ़े, बहुत खर्च। अन्य स्थानों से शक्ति, स्वतन्त्रता में कमी, परिश्रम व पुरुषार्थ से लाभ। गृहस्थ व रोजगार के सम्बन्ध में उत्साह, तरक्की की विशेष इच्छा। भाई का जीवन व खर्च शानदार परन्तु आयु में कमी।

मकर लग्न में शुक्र

शुक्र प्रथम भाव में—उच्च विद्या से सुख तथा उच्च राजपद से अधिक सुख, माता-पिता का सुख, ऐश्वर्य प्राप्त। सन्तान सुख, भूमि मकान, कुछ मकान सरकार को किराए पर। राजसी विद्या का ज्ञान, उन्नति, चतुराईयों से सरलतापूर्वक सफलता, सुन्दरता तथा कला का निवास, स्थान में मेल। शान्ति, गौरव, प्रतिष्ठित। पुत्र ने अपनी दादी को प्रसन्न कर दिया। शोभायुक्त।

शुक्र द्वितीय भाव में—राजपद, सन्तान को राजभाषा तथा राजनीति का ज्ञान। पहले सर्विस लगी और लगभग तभी कन्या प्राप्त हुई। बुद्धि व कला से पद व बड़प्पन, शान गुमान। शृंगार, सुन्दरता तथा मादकता पसन्द। हाजिर जवाब। कन्याएँ बड़ी सुन्दर व शृंगार प्रिय।

शुक्र तृतीय भाव में—पिता से वैमनस्य, पुत्रों से वैमनस्य, अपनी विद्या तथा कला भी नुकसान पहुँचा जाए। विद्या में परतन्त्रता, अधिक खर्च, नौकरी छोड़नी पड़े, इधर पुत्र बीमार पड़ जाए। पेचीदा बातें, गुप्त युक्तियों से शत्रु को नीचा दिखाना। रोगों पर दिक्कतों से काबू। नौकरी में विरोध, चतुर, तन्त्र विद्या की युक्ति।

शुक्र चतुर्थ भाव में—सन्तान अपनी माता की ओर, पिता भी पुत्रवधू की ओर। बड़ी शक्ति का रोजगार, रोजगार में शान, पिता की सहायता तथा पुत्रों की सहायता। राजनीतिक रोजगार में सफलता। व्यवसायिक बुद्धि की योग्यता, गृहस्थ में शान, लौकिक कार्यों में दक्षता, कार्य प्रवीण।

शुक्र पंचम भाव में—पिता की आयु कम, सन्तान की आयु कम, अन्य स्थान से गूढ़ ज्ञान का पालन। भेद बुद्धि से कार्य, छिपाव से बातें। राज समाज में थकान। नौकरी छूटे, धन वृद्धि का ध्यान, पुरातत्त्व की शक्ति। कूटनीति का पालन, बुद्धि में परेशानी।

शुक्र षष्ठम भाव में—भाग्य कमजोर, पिता व पुत्रों की तरफ से

कमजोरी व नीरसता। अधूरा भाग्यवान् भी तथा अधूरी विद्या की शक्ति। धर्म कर्म में कमजोरी, बल पुरुषार्थ की वृद्धि। व्यापार में कमजोरी, अकर्मण्यता। धार्मिक युक्तियों के सम्बोधन से उन्नति का मार्ग बने।

शुक्र सप्तम भाव में—सभी सन्तान राजपद पर आरूढ़। शासन शक्ति प्राप्त, न्यायाधीश, उच्च शिक्षा, पुत्र की महान् शक्ति। सुखी, जमीन-जायदाद, भूमि व सरकारी सवारी का सुख, बड़ा ऐश्वर्य, बड़े कारोबार। सुन्दरता व कला का पारखी, गौरव, प्रभाव, बड़प्पन, योग्यता, चातुर्य, स्वाभिमान, कर्मिष्ठी, ज्यों-ज्यों सन्तान उत्पन्न हुई, त्यों-त्यों नौकरी में उत्तमता। भाग्योदय सात बार।

शुक्र अष्टम भाव में—व्यापार, राजनीति, विद्या, कला, सन्तान, व बातों से बड़ा लाभ। शृंगारप्रिय, उन्नति व वृद्धि के लिए बहुत जोर, भोगविलास व ऐश्वर्य के सुगम साधन, माननीय, चतुर, कर्मिष्ठी। पिता व पुत्र सभी व्यापार पर जोर देने वाले। स्वयं सरकारी खजाने के कार्य का इच्छुक। अगले जन्म में कॉलेज का प्रोफेसर बनेगा तथा वकालत पढ़ाएगा।

शुक्र नवम भाव में—खर्च बहुत, पिता की आयु कम, सन्तान की आयु कम, सन्तान धन बिगाड़ने वाली। विद्या की कमी, परतन्त्रता का कार्य। मान-प्रतिष्ठा की कमी, अन्य स्थान का सम्बन्ध, घुमाव-फिराव की बातें। व्यापार में नौकरी में, राजसमाज में हानि तथा बहुत खर्च। आलसी, खर्च की पूर्ति चतुराईयों से की जाए। पिछले जन्म में अध्यापक था और विद्यार्थियों को सताया करता था।

शुक्र दशम भाव में—प्रतिष्ठित, चतुर, बुद्धिमान, ऊँचे उत्तम कार्य, बड़ा व्यापार, बुद्धि विद्या का बहुत लाभ, पिता से लाभ, राजसमाज से लाभ। सन्तान सुख प्राप्त, सुन्दरता व कला पसन्द, ठाठबाट व सजधज, ज्योतिष से प्रेम। जब-जब सन्तान उत्पन्न हुई तब-तब मान मिला।

शुक्र एकादश भाव में—बहुत धन संग्रह, पिता के धन संग्रह का तथा पुत्रों के धन संग्रह का यही स्वामी। पहले पिता के पास धन की चाबी थी अब पुत्रों के पास अलमारी की चाबी रहती है। पुरातत्त्व का लाभ, पेंशन। दिनचर्या में रौनक व मान-प्रतिष्ठा परन्तु इनमें कभी-कभी कुछ कमी भी।

शुक्र द्वादश भाव में—प्रभावशाली, सुन्दर डील-डौल, पराक्रमी, राजपद का पराक्रम। उच्च विद्या, सन्तान सब विद्यावान् व पराक्रमी, रौब से बातें। भाग्यवृद्धि में कमी, मस्त, प्रबन्धक, कलाधारी। बहन-भाई बहुत सुन्दर। सन्तान चाचा की ओर, पिता इसके भाईयों की ओर।

मकर लगन में शनि

शनि प्रथम भाव में—सुख में कमी, अशान्ति, माता कष्ट में, माता की आयु कम, शत्रु पर प्रभाव, जन्म से ही पिता की वृद्धि। उन्नति के लिए बहुत प्रकार के कर्म। जमीन जायदाद में कमी। उत्तम धारणा, अपनी सवारी का भारी प्रयत्न, माता का वियोग। धन जमीन में दबा हुआ। दाहिने वक्ष पर काला चिह्न।

शनि द्वितीय भाव में—सुन्दर, बुद्धिमान, चतुर, विद्यावान्। बुद्धि से तथा धन से लाभ। देह के प्रभाव से बड़े-बड़े लाभ। रोजगार के मामलों में आत्मशक्ति से कार्य। बड़ी वजनदार कीमती बातें। स्त्री से वैमनस्य, अधिक भोगी। सन्तान शक्ति का कीमती लाभ, प्रबन्धक। धन सन्तान पर निछावर।

शनि तृतीय भाव में—शत्रु पर विजय, प्रभावशाली, कुछ परतन्त्रता, जीवन की दिनचर्या में परेशानी, खर्च में विशेषता, भाई से वैमनस्य, अधिक परिश्रमी, पहलवान, उन्नति के लिए बहुत प्रयत्न, धन संग्रह में कमी, सतर्क, शत्रु को उसके घर पर जाकर मारे। शत्रुओं के विषय में धन क्षय। कुटुम्बी जन से वैमनस्य, वीर।

शनि चतुर्थ भाव में—स्त्री में आसक्ति, रोजगार में दिलचस्पी, परन्तु स्त्री तथा रोजगार से कुछ वैमनस्य। लौकिक कार्य मुस्तैदी से, भाग्य वृद्धि के लिए बहुत प्रयत्न। माता की आयु कुछ कम, सुख की कमी, भूमि व्यापार के लिए बिक जाए। देह में सुन्दरता व पराक्रम, पहलवानी। तन मन धन से पत्नी का वफादार। इन्द्रिय पर कालापन।

शनि पंचम भाव में—विदेश आदि में निवास, पिता शीघ्र मर जाए तो अच्छा ऐसी इच्छा। देह में कष्ट, धन हानि, संग्रह में कठिनाई, पीठ पीछे बुराई-भलाई पाने वाला।

शनि षष्ठम भाव में—भाग्यवान्, धर्मवान्, पुण्यात्मा, सुन्दर देह, अधिक लाभ आमदनी के विषय में वैमनस्यता, शत्रुओं पर प्रभाव, रोग दोष पर काबू, प्रभु में विश्वास, भाई-बहन से कटुता, पुरुषार्थ में कमी, धर्म व भाग्य की शक्ति से धन प्राप्त तथा दैवशक्ति की सहायता प्राप्त, कुटुम्ब वाला, नाम की मुहर बने।

शनि सप्तम भाव में—दिव्य देह, बड़ा प्रभाव, उच्चपद, राज में मान, पिता की तरक्की, माता को कष्ट, सुख में कमी, पत्नी पक्ष में अशान्ति। रोजगार में कुछ सफलता व कुछ असफलता, खर्च अधिक, वैभव व भोग, ऊँची भावना व ऊँचे कर्म, धर्म की सहायता से ऊँचा पद, मान मर्यादा। राजकाज या नौकरी में व्यय सार्थक। मकान के दक्षिण में आँगन की तरफ धन गढ़ा है। भाग्योदय तीन बार।

शनि अष्टम भाव में—धन लाभ की उन्नति में ही लगा रहे, बहुत धन व बहुत नाम। आत्मबल व देहबल। सुन्दर, देहशक्ति से आमदनी। विद्या बुद्धि में तत्त्व की बातें, सन्तान से शान्ति। जीवन में नीरसता, स्वार्थयुक्त। वजनदार बात, ऊँचे विचार, पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ विरोध। धन लगाकर बड़े रोजगार बनें, अगले जन्म में इंजीनियर बनेगा।

शनि नवम भाव में—बहुत खर्च, अन्य स्थान में निवास, हृदय में अशान्ति, देह में दुर्बलता, अन्य स्थानों के योग से धन प्राप्ति, धन वृद्धि के लिए बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ सहन करना, यश प्राप्त, धर्म को मानना, भ्रमणकारी आदत, खर्च की अधिकता से दुख अनुभव, खिन्न हृदय। पिछले जन्म में अपने परिवार वालों को भूखों मारता था इस कारण अशान्त है तथा भ्रमण करता है।

शनि दशम भाव में—धन स्वतः आता रहे, पिता का धन स्वतः प्राप्त। कीमती वस्त्र धारण, उत्पन्न होने के बाद पिता की उन्नति, बड़े कारोबार। भाई की कमी, समाज में नाम व मान, आत्मबल, देहबल, धन उन्नति के लिए बड़ी तरकीबें, दैनिक रोजगार में दिक्कतें। गृहस्थ में वैमनस्य, शरीर पर व्यय सार्थक है। मकान में पूर्व में आँगन की तरफ धन गढ़ा है, स्वयं का धन भी पूर्व में है। भाग्योदय तीन बार।

शनि एकादश भाव में—धन संग्रह में चिन्ता, धनाढ्य, धन के लिए जान लड़ा देने वाला, कुटुम्ब की वृद्धि, भूमि सवारी की कमी माता की आयु कम, जीवन की दिनचर्या में अशान्ति। पुरातत्त्व के स्थान में वैमनस्य, आवश्यक पदार्थों को अरुचिकर पाने वाला। देह में कुछ बन्धन व घिराव, धन को ही परमतत्त्व समझे, मकान में उत्तर पूर्व में धन गढ़ा है।

शनि द्वादश भाव में—प्रभावशाली, पुरुषार्थी, कठिन परिश्रमी, बहन भाईयों से सुख में कमी। बुद्धि तथा सन्तान पर अधिक शक्ति लगाने वाला, बुद्धि व वाणी से आत्मचिन्तन, अधिक खर्च। खर्च में नीरसता, पुरुषार्थ से धन कमाना। धर्म का ध्यान, भाग्यबुद्धि, ईश्वरवादी, भुजा में कालापन।

मकर लग्न में राहु

राहु प्रथम भाव में—माता को कष्ट, माता से वियोग। भूमि स्थान की कमी, सवारी की चोरी। सुख में कमी, आमोद प्रमोद का अभाव, सुख शान्ति पर कभी गहरा अघात। सुख पाने के लिए बड़े युक्तिपूर्ण कर्म व छिपी शक्ति का सहारा, थोड़े परिश्रम से सुख का लाभ। दूसरों के सुख से भी लाभ।

राहु द्वितीय भाव में—सन्तान कष्ट, विद्या में कमी परन्तु विद्या के आन्तरिक तत्त्व को ग्रहण करने वाला, विद्या के बल से स्थाई लाभ, परन्तु विद्या बुद्धि में कुछ अधूरापन। दुख का अनुभव, कुछ नशा, बोलचाल में बड़ी सफाई, कुछ रुखेपन से चतुराई से बोलना, झूठ-सत्य का विचार न करना। स्वार्थी, अपनी बात बड़ी रखने वाला, स्वयं पढ़ाई को रोकने वाला।

राहु तृतीय भाव में—प्रभावशाली, शत्रु का दमन, महान, विजयी, चतुराई व कूटनीति के द्वारा उन्नति, हेकड़ी, लापरवाही, मतलबी, परेशानियों की परवाह न करे। रोग को नष्ट करने वाला, ननसाल में प्रभाव, स्वार्थी। शील सन्तोष का उल्लंघन, निर्भय, तेज।

राहु चतुर्थ भाव में—पत्नी परेशान, स्त्री पक्ष में कष्ट व क्लेश, भोगादिक पक्ष में कमी व क्लेश, रोजगारों में कन्टक, अधिक लाभ का प्रयत्न, गृहस्थ में मानसिक चिन्ताओं का बड़ा सामना, चंचल चित्त, कुछ अनाधिकार चेष्टा।

राहु पंचम भाव में—नाभि के नीचे पेट के अन्दर बीमारी व परेशानी, जीवन की दिनचर्या में क्लेश, आयु पर आघात, आयु की कमी। पैतृक धन व पुरातत्त्व की हानि, गुप्त व गहरी चालों का कठिनाई रूप से प्रयोग, आने-जाने के विदेश आदि के योग, धन वृद्धि के लिए बड़ी-बड़ी युक्तियाँ, परिश्रम से शक्ति प्राप्त।

राहु षष्ठम भाव में—भाग्य की उन्नति के लिए बड़ी-बड़ी युक्तियाँ, भाग्य पर कभी बड़ा सा धक्का। भाग्य की उन्नति के लिए साहस तथा जोखिम उठाना। बाहरी धर्म का अच्छा पालन, बड़ा चतुर चालाक। अन्त में भाग्य मजबूत।

राहु सप्तम भाव में—पिता के स्थान में कमी व अशान्ति, व्यापार की उन्नति में बाधाएँ। व्यापार कार्यों में बड़ी गुप्त योजनाओं को बड़ी होशियारी से प्रयोग करना। बड़े परिश्रमी मार्ग से जोखिम कार्यों द्वारा उन्नति। राजसमाज से कुछ परेशानियाँ, अपनी इज्जत की मजबूती का बड़ा ख्याल। अपनी नौकरी स्वयं बिगाड़ ले।

राहु अष्टम भाव में—अधिक-से-अधिक लाभ के लिए अधिक प्रयत्न, धन की प्राप्ति में सन्तोष प्राप्त न हो। धन प्राप्ति न हो, प्राप्ति में अनाधिकार चेष्टा, मुफ्त का साधन चाहना, धन के लिए गूढ़ प्रयत्न। लाभ के मामले में बड़ी-बड़ी परेशानियाँ, स्वार्थ सिद्धि में बड़ा मजबूत, आमदनी के हित में रात-दिन की परवाह न करे। अगले जन्म में धनाढ्य परिवार में जन्म लेगा।

राहु नवम भाव में—खर्च विषय में बड़ी परेशानियाँ। ओछे खर्च से काम चलाना, गुप्त कमजोर क्रियाओं द्वारा खर्च का संचालन अन्य स्थान के सम्बन्ध में क्लेश, गलत व अप्रशंनीय मार्ग में भी खर्च, खर्च में कुछ कंजूसी। खर्च विषय में गुप्त बदनामी व संकट का सामना, पेचीदी युक्तियों से कार्य करने को जन्म लिया। पिछले जन्म में धन लूटता था इस कारण परेशान है।

राहु दशम भाव में—देह में नशा-परेशानी, देह में कमी, चतुराई व छिपाव की शक्ति से उन्नति। अपने में महान् शक्ति को प्राप्त करने की चेष्टा, सदा के लिए निर्भर रहने का मार्ग ढूँढ़ना, अपने अन्दर कुछ अधूरापन।

परेशानियों के बाद मजबूती। स्वार्थ सिद्धि में सत्य-असत्य की परवाह न करे, परेशानियाँ पिछले जन्म के कर्मों के कारण।

राहु एकादश भाव में—धन हानि, धन बुद्धि की चिन्ता, धन संग्रह के लिए बड़े-बड़े कठिन कार्य। धन के विषय में कभी-कभी महान् आपत्तियाँ। कुटुम्ब में विग्रह व कमी। गुप्त शक्ति का प्रयोग से स्वार्थ सिद्धि। अन्त में कुछ मजबूती। धन का नुकसान स्वयं करे।

राहु द्वादश भाव में—साहसी प्रभावशाली। भाई के स्थान में कमी व क्लेश, निज पुरुषार्थ बल में नाजायज लाभ। अपने को जाति में रखने का मार्ग बनाने वाला। साहस पर कभी-कभी आघात, गुप्त युक्तियों का प्रयोग। सावधान, होशियार, शक्ति सम्पन्न, तेज, स्वयं अपने को मजबूत बना ले।

मकर लग्न में केतु

केतु प्रथम भाव में—माता की आयु में कमी, अपनी आयु में सुख में कमी, जन्म भूमि से वियोग, अशान्ति अनेक प्रकार के दुःखों का सामना। संकटों में बड़ा धैर्य। मकान और भूमि में कन्टक। गुप्त चतुराई से तथा साहस व धैर्य से अन्त में सफलता में मजबूती। स्वयं दुखी।

केतु द्वितीय भाव में—आन्तरिक ज्ञान विद्या में कठिनाइयाँ, धैर्य से विद्या ग्रहण। विद्या में कमी व असफलता, बोलचाल में सफाई तथा सुन्दरता की कमी, सन्तान कष्ट, मस्तक में अशान्ति। सत्य-असत्य की परवाह न करके गुप्त युक्तियों से कार्य। माता के देहान्त के बाद सब कुछ ठीक।

केतु तृतीय भाव में—ननसाल में हानि, शत्रु व रोग से क्लेश, शत्रु की भेद युक्ति छिपाव के कारण नुकसान पहुँचे। पेचीदा तरकीबों से प्रभाव, युक्तिबल, शक्ति का नाजायज प्रयोग। निन्दा प्राप्त, स्वार्थी, औछी चाल से रोग व मुसीबतों पर काबू।

केतु चतुर्थ भाव में—पत्नी के विषय में कन्टक व हानियाँ, गृहस्थ में संकट व झंझट, रोजगार में विफलताएँ। इन्द्रियों के भोगादिक पक्ष में कमी, रोजगार की बड़ी-बड़ी मुसीबत सहते-सहते निराशा को आशा में बदलना, गुप्त साहस, मानसिक आघात, माता के देहान्त के बाद सबकुछ

ठीक ।

केतु पंचम भाव में—नाभि के नीचे पेट में खराबी, जीव की दिनचर्या में परेशानियाँ, आयु पर बड़े-बड़े आघात, पुरातत्त्व की संचित शक्ति को हानि, आयु के भविष्य के सम्बन्ध में चिन्ता और रोग, गुप्त खतरनाक शक्ति को धारण करने वाला । स्थाई सहारे के लिए कठिन परिश्रम, यात्रा में कष्ट । माता की आयु कम फिर सबकुछ ठीक ।

केतु षष्ठम भाव में—धर्म पालन में आन्तरिक कमजोरी, परेशानियाँ, भाग्य की मजबूती के लिए कठिन-से-कठिन प्रयत्न । भाग्योदय में देरी, बड़े भोलेपन से गुप्त शक्ति व धैर्य के साथ स्थिर साधन । सुयश में कमी, धर्म में स्वार्थ युक्त । माता के देहावसान के बाद सबकुछ ठीक ।

केतु सप्तम भाव में—पिता की आयु में कन्टक, पिता को अधूरा सुख, पिता को इसकी माता परेशान रखती है । व्यापार की उन्नति के लिए कठिन प्रयास । माता कहती है यह नौकरी छोड़ दे । गुप्त युक्तियों से कार्य, उन्नति में असफलताएँ, साहसी, धैर्य में आगे, राज से परेशानी, स्वार्थयुक्त ।

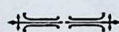
केतु अष्टम भाव में—धन प्राप्ति के लिए बड़े-बड़े कठिन कार्य और उनसे बहुत लाभ । मुफ्त का सा धन चाहे । उद्योगी पर मामले में वित्त से अधिक मुनाफे की इच्छा । गुप्त युक्तियों का प्रयोग, आवश्यक आमदनी से भी सन्तुष्ट न हो । स्वार्थ युक्त, अन्त में मजबूती, अगले जन्म में भी मजबूती बनी रहेगी तथा चिन्ता रहित हो जाएगा ।

केतु नवम भाव में—अन्धाधुन्ध खर्च । बाहरी स्थान से शक्ति प्राप्त । खर्च बढ़ाने में माता तथा भूमि व सवारी का विषय । दिलेरी से खर्च संचालन, खर्च का वेग नहीं रुकता । बाहरी व्यक्तियों से अन्धविश्वास । गुप्त शक्ति व युक्ति के बल से खर्च की पूर्ति । खर्च की पूर्ति मकान से हो । पिछले जन्म में किसी की भूमि पर बिना कुछ दिए बाहुबल से कब्जा कर लिया था ।

केतु दशम भाव में—हठी, निर्भय, देह में कमी । परेशानियाँ, अपने को नामवर करने में बदनामियों की परवाह न करना । मुसीबतों की परवाह न करे । कामवासना अधिक, लौकिक उन्नति के लिए गुप्त शक्ति से काम, सुन्दरता की कमी, साहसी, स्वार्थी । माता ने ध्यान न दिया ।

केतु एकादश भाव में—धन की कमी, धन वृद्धि के लिए हठधर्मी, धन के लिए कठिन प्रयत्न। जोखम सहज सहना, संकटों का सामना, साहस व गुप्त शक्ति के बल से प्यार। कुटुम्ब में क्लेश व कमजोरी। अप्रत्यक्ष रूप से लाभ उठाने पर प्रत्यक्ष होने वाला, माता के देहान्त बाद सब ठीक।

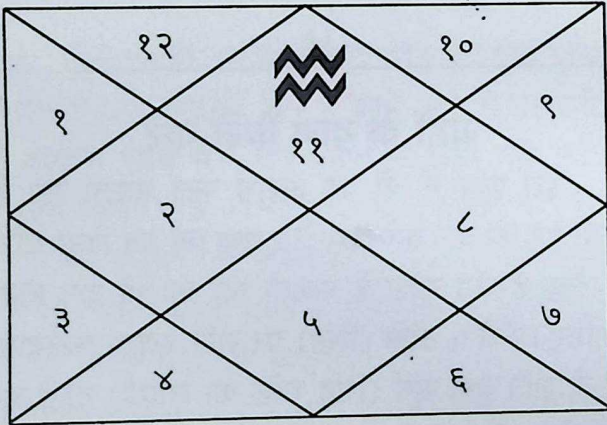
केतु द्वादश भाव में—भारी पुरुषार्थी, भारी परिश्रम, साहस। बहन-भाइयों को हानि। कठिन कार्य को सफल करने में बहादुर, असफलताओं का सामना करने के लिए आन्तरिक धैर्य। पेचीदा चालों द्वारा कुछ-न-कुछ स्थिर शक्ति प्राप्त। भुजाओं पर भरोसा। निज शक्ति में अन्दरूनी कमी। माता ने साहसी बनाया।



ग्रहों के दान कैसे करें

इस ग्रन्थ में जो ग्रह अशुभ फल बतला रहा है उसी ग्रह का दान करना चाहिए तथा वह ग्रह जिस राशि में बैठा है उस राशि के स्वामी ग्रह का भी दान होना चाहिए। जैसे ५ अंक (सिंह) पर शनि अशुभ फलदाता है तो शनि तथा सूर्य (सिंह राशि का स्वामी) दोनों का ही थोड़ा-थोड़ा दान कर देना चाहिए।

कुम्भ लग्न



कुम्भ लग्न में सूर्य

सूर्य प्रथम भाव में—प्रभावशाली, पराक्रमी। स्वयं बड़ा भाई। बाहुबल से बड़े-बड़े रोजगार। पत्नी बहुत सुखी तथा प्रभावशाली, गृहस्थ की व भाई की शक्ति की महानता, भोगादिक की अधिकता। भारी दौड़-धूप, धर्म तथा भाग्य कमजोर। पुरुषार्थ के मुकाबले भाग्य की शक्ति को न्यून समझने वाला, पत्नी का इसके अन्य भाइयों पर प्यार।

सूर्य द्वितीय भाव में—विवाह के बाद सुख साधन बढ़ गए परन्तु

सास-बहू की नहीं बनती इसलिए सुख में अशान्ति। रोजगार में मान-सम्मान। ससुराल में मान, पिता सहायक। राज समाज से लाभ। पदोन्नति के लिए बराबर कर्म करने वाला। पत्नी को सवारी से साधारण टक्कर।

सूर्य तृतीय भाव में—पत्नी बुद्धिमान, पत्नी अपने बच्चों को बहुत चाहे। बच्चे छोटे भाई से लगभग बराबर। व्यापारिक विद्या, प्रभावमय बातें। बुद्धि में कामवासना। ससुराल व पत्नी से बुद्धि के परामर्श का लाभ, तेज बोलने वाला। लाभ का बराबर चिन्तन, लौकिक दैनिक कार्य की योग्यता।

सूर्य चतुर्थ भाव में—पत्नी से झगड़ा। पत्नी अन्य को उकसाती रहे फिर भी शत्रु मर्दन। पत्नी स्वयं झगड़ों को निपटावे, रोजगार में परेशानियाँ। विपत्तिनाशक, प्रभावकारी प्रकाश देने वाला, रोग शत्रु व मुसीबतों पर विजय।

सूर्य पंचम भाव में—प्रभावशाली रोजगार, प्रभावशाली पत्नी, पत्नी मस्त। देह में कुछ परेशानी, भोगादिक में प्रभाव, बड़े ठाठ, लौकिक व दैनिक कार्यों की बड़ी मुस्तैदी। गृहस्थ में प्रभाव शक्ति, समाज में चमत्कारिक कार्य, भोगादिक में मनमानी, इस कारण अशान्ति।

सूर्य षष्ठम भाव में—स्त्री के विषय में अशान्ति व क्लेश, पत्नी की आयु में कमी, भोगादिक में कमी, ससुराल की कमजोरी, रोजगार, कई बार ठप्प। विदेश आदि का सम्बन्ध। गृहस्थ में कुछ विद्रोह। रोजगार में कुछ गूढ़ व प्रभावशाली योजनाएँ। धन वृद्धि के लिए भारी परिश्रम। इन्द्रिय विकार।

सूर्य सप्तम भाव में—विवाह के बाद भी भाग्य कुछ कमजोर रहा, रोजगार भी न चमक सके, धर्म पालन में कमी, गृहस्थ के दैनिक कार्य के कारण भाग्य में रुकावटें। भाग्य के मुकाबले पुरुषार्थ को महत्त्व, बहन-भाई का सुख, भोगादिक में कमी, लौकिक व धार्मिक दोनों कार्य करने से एक का भी पालन न हो सके। पत्नी धर्म के कार्य में बाधा बनती है।

सूर्य अष्टम भाव में—दैनिक रोजगार में कुछ हथियारों का साथ तथा बड़े उच्च ढंग से विवाह के बाद नौकरी प्राप्त। सुख भोग, राज में मान, प्रबन्धक, लौकिक व सामाजिक कार्यों में बड़ी शान। गृहस्थ में गौरव, माता तथा सुख की कमी। दैनिक रोजगार के कारण से सर्विस, ससुराल की सहायता से सर्विस का योग।

सूर्य नवम भाव में—दैनिक रोजगार में भारी आमदनी। विवाह के बाद रोजगार बड़े तथा रोजगारों में ससुराल की सहायता। सन्तान विद्या का लाभ। भोगादिक का सुख व लाभ। बड़े प्रभाव से बातचीत करके व्यापार में लाभ। गृहस्थ से अनुपम लाभ। लौकिक कार्यों की प्रवीणता। दिमाग में तेजी। अगले जन्म में जज के परिवार में जन्म लेगा और सुखी जीवन व्यतीत करेगा।

सूर्य दशम भाव में—पत्नी की आयु कम, पत्नी विषय पर बहुत खर्च। रोजगारों में विशेष खर्च, परन्तु लाभ कम। विवाह के बाद खर्च-ही-खर्च, विवाह में भी खर्च। गृहस्थ में अशान्ति तथा भोगादिक में कमी व खर्च। अन्य स्थान से व्यापार का कटु सम्बन्ध। भोगादिक में भी अन्य स्थान का सहारा। विपत्तियों में रोगादिक पर विजय। लौकिक कार्यों में चतुराई की कमी। पिछले जन्म में किसी स्त्री का धन खाया था इस कारण सन्तप्त है।

सूर्य एकादश भाव में—प्रभावशाली पत्नी, देह में कमी, पत्नी को पसन्द न आवे। भोग विलास की शक्ति। रोजगारों में भरपूर शक्ति से काम। पत्नी का दबाव, पत्नी का आदर करे, पत्नी भी अपना आदर खूब करावे। लौकिक व दैनिक कार्यों में महानता। बड़ी तेजी, बड़े-बड़े कार्य करने में उत्साह।

सूर्य द्वादश भाव में—रोजगारों से विशेष धन प्राप्ति तथा धन संग्रह। विवाह में धन प्राप्ति और फिर धन संग्रह होता रहे, पत्नी का ध्यान धन संग्रह पर, पत्नी ही धन सँभाल कर रखती है परन्तु स्त्री स्थान में तथा भोगादिक में कुछ बन्धन। दिनचर्या में प्रभाव व प्रकाश, पुरातत्त्व के सम्बन्ध में प्रकाश। कीमती कार्य करेगा, बड़े कुटुम्ब वाला।

कुम्भ लग्न में चन्द्रमा

चन्द्रमा प्रथम भाव में—मनोबल से महान् पुरुषार्थ, उत्साह, परिश्रम, प्रभाव, प्रभाव से शत्रु दमन, साहस तथा पेचीदा तरकीबों से उन्नति, भाई को वैमनस्य करना पड़े। धर्म में ध्यान, बड़ी दौड़ धूप, शक्तिवान, भ्राता को दया, राजयक्ष्मा। भाई के जिम्मे झगड़े व कन्टक।

चन्द्रमा द्वितीय भाव में—सुख शान्ति में बाधाएँ, शत्रु की परवाह न करे, मातृ स्थान में मनोयोग का झंझट, भूमि में कमी, ननसाल से भूमि प्राप्ति के योग, मान तथा उन्नति के सम्बन्ध में कमजोरी। राज सम्बन्धी परेशानी, मनोयोग की शक्ति के महान् प्रपंच से सुख अनुभव, बड़ा लापरवाह।

चन्द्रमा तृतीय भाव में—सन्तान को विद्रोह करना पड़े। सन्तान को झंझट व रोग। सन्तान की आयु कम, विद्या बन्द हो जाए, बुद्धि में परेशानी, मनोयोग की गूढ़ शक्ति से लाभ, पेचीदा चालों से शत्रु से बचाव। मन के अन्दर गुप्त डर, आशंकाएँ, धन लाभ के लिए बड़ी-बड़ी तरकीबें, अशान्त, भ्रमित, हेर-फेर से बातें। अन्य लोगों का तुरन्त प्रभाव।

चन्द्रमा चतुर्थ भाव में—मनोयोग की स्थिर शक्ति से बहुत लाभ। शत्रु से सावधान व विजयी, ननसाल में सौन्दर्य। मन में कुछ घिराव व निर्भयता, मुसीबतों की परवाह न करे अधिक खर्च, मन में गूढ़ युक्तियाँ, ठंडी आग के कार्य। अन्य स्थान के सम्बन्ध में प्रभाव, दाना दुश्मन, खर्च में भी प्रभाव से काम लेने वाला।

चन्द्रमा पंचम भाव में—अन्य की बातों में पत्नी आ जाए। स्त्री स्थान में कुछ झगड़ा व वैमनस्य, झगड़े से विवाह। स्त्री भोगादिक में कमी, मनोयोग से भोग का चिन्तन। भोग के सम्बन्ध में युक्तियों से काम, देह में बन्धन व परेशानी, रोग, पत्नी को शीतल रोग, रोजगार में परतन्त्रता, युक्तियों से कार्य।

चन्द्रमा षष्ठम भाव में—शत्रु से परेशानियाँ तथा शत्रु भी परेशान, प्रभाव में कमजोरी, मनोबल कमजोर। दुःख सहते हुए भी जीवन को प्रभावशाली बनाना। उदर विकार, पुरातत्त्व में कमी। अशान्त मन, ननसाल में हानि, धन वृद्धि के लिए बड़ी-बड़ी कोशिशें। ऐसा शीतल रोग जो मृत्यु पर ही नष्ट हो।

चन्द्रमा सप्तम भाव में—भाग्य में परेशानी, पिछले जन्म के कर्मानुसार कोई रोग, मनोबल से शत्रु पर प्रभाव, शिकायतों से उन्नति में रुकावट, धार्मिक प्रपंच के कार्य। मनोयोग से तथा पेचीदा तरकीबों से उन्नति का मार्ग। पुरुषार्थी, बहन भाई से वैमनस्य। ननसाल भाग्यवान्। क्षमा शान्ति से भी मित्रता चाहना।

चन्द्रमा अष्टम भाव में—पिता को बड़ी-बड़ी दिक्कतें व हानियाँ, राज मान प्रतिष्ठा के विषय में बड़े धक्के। युक्ति बल से सुख व भूमि की प्राप्ति। सच्चे सहयोगियों की कमी। कपटी जनों के कारण व्यापार तथा उन्नति में रुकावटें। मनोयोग से और परिश्रम से युक्तियों से बहुत हेर-फेर के बाद तरक्की, शत्रु से अशान्ति। पूर्व संचित पापों का प्रायश्चित।

चन्द्रमा नवम भाव में—मनोयोग के सुन्दर परिश्रम से लाभ ही लाभ, सुन्दर नीति से शत्रुओं पर प्रभाव। ननसाल व्यापार में सहायक। प्राप्ति के स्थान में कुछ मानसिक झंझट। मुफ्त के से धन की इच्छा। सन्तान परेशान, विद्या में कमी, बुद्धि से कार्य, गुप्त चालों में मगन। रोग दोष की परवाह न करे। अगले जन्म में खाद्य पदार्थों में अपना धन व्यय करेगा।

चन्द्रमा दशम भाव में—शत्रु तथा रोगों के विषय में खर्च, शत्रु से अशान्ति, छिपी युक्तियों से कार्य। अधिक खर्च से परेशान, फिर भी खर्च पर प्रभाव। अन्य दूसरे स्थान से व मनोयोग से प्रभाव की रक्षा। ननसाल कमजोर। बाहरी स्थान में परेशानियाँ, मन में अशान्ति व दुर्बलता, शत्रुओं पर भी बहुत खर्च। पिछले जन्म में लूटने वाले गिरोह में सम्मिलित था तथा यात्रियों को लूटता था।

चन्द्रमा एकादश भाव में—शत्रु पक्ष में मनोयोग से मान, देह में परेशानी, सर्द रोग, मन में विकार, ननसाल का प्रेम। मनोयोग की पेचीदा आदर्श शक्ति का बल। कुछ घिराव, पत्नी से मानसिक झगड़े। गुप्त क्रोध, गुप्त चतुराई से रोजगार में परिश्रम व लाभ।

चन्द्रमा द्वादश भाव में—मनोयोग की शक्ति से धन प्राप्त। धन संग्रह में परेशानियाँ, शत्रु पर धन क्षय, शत्रु से धन की आमदनी, मालदार ननसाल। कुटुम्ब में विग्रह, अमीरी से शत्रु पर प्रभाव। मन में कुछ बन्धन, आयु शानदार, झंझटों से लाभ। मनोयोग की शक्ति से पुरातत्त्व में लाभ।

कुम्भ लग्न में मंगल

मंगल प्रथम भाव में—पिता शक्तिशाली, स्वयं बहादुर तथा साहसी, पिता ने पहलवान बनाया। राजसमाज में हुकूमत। हथियार वाला विभाग।

स्थिर परिश्रम से महान् कर्म। राज्य का संचालन। शत्रु को पराजय माननी ही पड़े। गुप्त शक्ति, राजसी धर्म-कर्म का पालन, तीन भाई, लम्बी भुजाएँ, तीव्र तीक्ष्ण गति, प्रतापी, पुरुषार्थवादी।

मंगल द्वितीय भाव में—भाई माता की तरफ, माता को थोड़ा सुख, मंगली, पुरुषार्थ से धीरे-धीरे बैठे तरक्की। राजसमाज में बड़ी शान, मकान जायदाद, उत्तम कार्य व्यवहार, प्रभावशाली रोजगार, स्त्री पर प्रभाव, स्त्री भी प्रभावशाली, पत्नी अपनी सास की न माने, सुखद कर्म से आमदनी में वृद्धि। प्रभावशाली, मुख पर चोट।

मंगल तृतीय भाव में—राजसी विद्या, उत्तम ज्ञान, पिता व भाई का सहारा, खर्च बहुत, दिमाग में तेजी व हुकूमत, उत्तम लाभ, जीवन में गौरव, सन्तान कष्ट तथा सन्तान सुख भी, कानून की बातें, अन्य स्थान के सम्पर्क में बड़ी रौनक, पुरातत्त्व का लाभ, शील का पालन न कर सके।

मंगल चतुर्थ भाव में—भाई तथा पिता दोनों ही विरोधी, परतन्त्रता पूर्वक कर्म, गुप्त शक्ति का बल, शत्रु को धोखे से मारना, ननसाल झंझटों में, मान व पद में रुकावटें, देह में थकान, भाई की उन्नति का भारी ख्याल, बाहरी स्थान में कुछ इज्जत, उत्साह में कमी, आलस्य, पेचीदा युक्तियों का प्रयोग। हृदय पर चोट।

मंगल पंचम भाव में—मान प्राप्त, बड़े रोजगार व्यवसाय, कारोबार में स्थाई आदर, राज समाज की शक्ति व बहन-भाई का योग, कार्य में हुकूमत व प्रबन्ध, देह में थकान व मान, पिता-बहू का ख्याल रखता है। धन वृद्धि के लिए भारी शक्ति का उपयोग। पत्नी पर प्रभाव, रोजगार में नित्य रूप से बड़े कार्यों को सँभालना, भाई भी पत्नी की रक्षा करता है। आदर्श भाई तथा पिता की मान हानि।

मंगल षष्ठम भाव में—पिता की आयु कम, बहन-भाई क्षीण, महान् परिश्रम से कार्य, विदेश आदि के योग, परेशानियों व परिश्रम से वृद्धि। गुप्त गूढ़ युक्तियों से तरक्की, साहसी, धनवान, मान-प्रतिष्ठा में कमी, बल के लिए साधना, परिश्रम में बराबर लगे रहना, पोशाक में कमी, दिनचर्या में प्रभाव, कटि में चोट।

मंगल सप्तम भाव में—भाग्यशाली, भाग्य शक्ति से पुरुषार्थ, धर्म-कर्म का पालन, बहुत खर्च, पिता भी भाग्यवान् पर बहुत खर्च, अन्य स्थानों के सम्पर्क से मान व व्यापार में उन्नति, सुख व मकान की शक्ति, भाई-बहन का योग, पिता के कारण भाग्योदय, बल पुरुषार्थ का ख्याल। राज समाज में मान, दैवशक्ति का सहारा, प्रभावशाली।

मंगल अष्टम भाव में—प्रतापी, स्वतन्त्र कारोबार, राज में मान, शासन, देह में थकान, पुत्र शक्ति की महानता, सुखी, मकान व भूमि का सहयोग, मकान सरकार को किराए पर, मूल्यवान वस्त्र, राजसी विद्या, दिमाग में व बोलचाल में गर्मी, कानूनी, भाई भी सर्विस में लगें, मंगली, भाग्योदय तीन बार।

मंगल नवम भाव में—पिता की उत्तम आमदनी, भाई भी आमदनी से लगें, स्वयं के बड़े भारी व्यापार, भाइयों का व्यापार में लाभ, राजसमाज से खूब लाभ, खजांची, पुरुषार्थ व कर्म से बड़े-बड़े लाभ, धन संग्रह की भरपूर शक्ति, बुद्धि में तेजी, सन्तान सुख, ननसाल कमजोर, शत्रु पर गुप्त शक्ति से सफलता, वस्त्राभूषणों की शोभा, प्रभावशाली, अगले जन्म में खजांची बनेगा।

मंगल दशम भाव में—मंगली, अधिक खर्च, पिता की आयु कम, भाई की भी आयु कम, कारोबार में बार-बार नुकसान, अन्य दूसरे स्थान में सफलता, अन्य के सम्बन्ध से मान प्राप्त, गुप्त शक्ति से कार्य, ननसाल कमजोर, खर्च की शक्ति से बल स्फूर्ति, पत्नी पर प्रभाव, भाई तथा पिता का बहुत खर्च, पिछले जन्म में बड़ा तेजस्वी था तथा नौकरों के साथ अभद्र व्यवहार करता था। घुटने में चोट।

मंगल एकादश भाव में—देहबल व पुरुषार्थ व कर्मबल से उन्नति, भाई व पिता की सहायता परन्तु भाई व पिता का इसी पर बोझ, मकान भूमि का लाभ, गर्मी का विकार, राज्य में अच्छाई व मग्न, पत्नी को सहायक, वीर्य दोष, जीवन की दिनचर्या में गौरव, पुरातत्त्व की शक्ति, भाई व पिता से कुछ अलकसाहट भी, पिता अन्य का वृक्ष कटवा दे।

मंगल द्वादश भाव में—पिता का धन प्राप्त, आदर मान प्राप्त, पिता ने बहुत धन संग्रह करके इसे सौंपा, धन प्राप्ति के लिए शक्तिशाली कर्म,

भाई कुछ बन्धन में, धर्म-कर्म का ध्यान, दिनचर्या में मान प्रतिष्ठा, विद्या सन्तान सुख, बुद्धि वाणी की उन्नति, भाग्योदय का भरपूर प्रयत्न, भाई का धन संग्रह में भाग।

कुम्भ लग्न में बुध

बुध प्रथम भाव में—बुद्धि विद्या में बल प्राप्त, सन्तान पक्ष में क्लेश, बहन-भाई से दिमागी क्लेश, आयु में वृद्धि, भाई की आयु में कमी, बड़ा होने पर पुत्र अपने चाचा पर हाथ उठाए, पुरातत्त्व का लाभ, महागूढ़ ज्ञान से भाग्योदय, विवेक शक्ति के बल से लौकिक व पारलौकिक विषय पर जोरदारी से बोलना, यात्रा में वृद्धि व साहस से कार्य, लापरवाह।

बुध द्वितीय भाव में—माता-पोते को गोद में ले तो समझ ले कि दिन पूरे हो गए, आयु वृद्धि, जीवन में आराम, सन्तान सुख में थोड़ी सी कमी, भूमि मकानादि की हानि, वृद्धि में गूढ़ विवेक की शक्ति, मनोरंजन, पिता स्थान, व्यापार स्थान तथा उन्नति का स्थान कष्ट साध्य होगा।

बुध तृतीय भाव में—अपार विद्या वृद्धि, सन्तानशक्ति पर सन्तान की आयु सुन्दर पर कम, गूढ़ विवेक से धन का लाभ, सन्तान का विदेश योग, पाश्चात्य सभ्यता की शक्ति कायदे की बातों में छिपाव शक्ति, दूसरों पर बातों पर प्रभाव, पुरातत्त्व से लाभ, दिनचर्या में बुद्धिमानी, दिमागी झंझट व परेशानी।

बुध चतुर्थ भाव में—सन्तान की आयु कम, सन्तान रोगी, सन्तान से विद्रोह, विद्या में कमी, बुद्धि में परेशानी, जीवन की दिनचर्या में शील, आयु पर बड़े-बड़े प्रहार, जीवन विघ्न बाधा में, समय का बन्धन, दूसरों को साहस बँधाना, गूढ़ विवेक, उदर विकार, पुरातत्त्व की कमी, खर्चीला।

बुध पंचम भाव में—पत्नी विद्वान्, स्वयं गुणी, सन्तान पत्नी की ओर, स्त्री स्थान में कुछ परेशानी, स्त्री की आयु कम, ज्यों-ज्यों बच्चे होते जाएँ पत्नी क्षीण होती जाए, गूढ़ युक्तियों से कार्य, पुरातत्त्व का लाभ, स्त्री से आसक्ति, लौकिक व्यवहार उत्तम, मान, इन्द्रिय भोगादिक में कुछ कमी दैनिक कार्य प्रणाली को चतुरता से पूरा करे, रोजगार में बार-बार हानि।



बुध षष्ठम भाव में—पुरातत्त्व शक्ति प्राप्त, दिनचर्या में मस्ती, आनन्द, विद्या में कमी, सन्तान को आयु कम, अपने सामने कई बच्चों का देहान्त, बातों के द्वारा रंग जमावे, धन की लापरवाही, मस्त। असत्य को भी सत्य करके दिखावे। चतुर।

बुध सप्तम भाव में—पुरातत्त्व सम्बन्धी ज्ञान तथा पूर्व संचित धन का लाभ, सुन्दर आयु, भाग्यवान्, विद्या से धार्मिक ज्ञान। बुद्धि में लौकिक अलौकिक विवेक की महान् शक्ति, दूरदर्शी, धर्म में कुछ कमी, भाग्य में चिन्ता। बहन-भाइयों से परेशानी, बोलचाल में चतुर, सन्तान भाग्यवान्, धार्मिक, दूर के सफर परन्तु लाभ कम।

बुध अष्टम भाव में—लौकिक विद्या की शक्ति, सन्तान शक्ति, उत्तम आयु, दिनचर्या में प्रभाव। पिता की आयु कम। कारोबार में दिक्कतें। राजसमाज में परेशानी, नौकरी त्याग के योग, बुद्धि विवेक से पद पर जमा रहे। गुप्त उन्नति, गुप्त युक्तियों से उन्नति, समाज में प्रतिष्ठा। सन्तान को भी अच्छी नौकरी।

बुध नवम भाव में—विद्या उत्तम, सन्तान लाभ, पूर्व संचित धन का लाभ। पुरातत्त्व की गूढ़ युक्तियों से तथा विवेक से बड़ा लाभ। जीवन में मनोरंजन, पुत्रों के मनोरंजन के कार्य, चतुर, स्वार्थ सिद्धि, यथार्थ लाभ में कुछ कमी। जीवन निर्वाह से चिन्ता रहित। दूर व्यापार में बहुत लाभ। अगले जन्म में वणिक् बुद्धि से अपार धन प्राप्त करेगा।

बुध दशम भाव में—सन्तान हानि, सन्तान पर विशेष खर्च, विद्या पर खर्च बहुत, परन्तु विद्या कम। विद्या की बिक्री, आयु कम, पूर्व संचित पुरातत्त्व की कमजोरी। दिनचर्या में अशान्ति, बोलचाल में गुप्त विवेक। प्रभाव में कमजोरी। देहान्त पर विशेष खर्च। अन्य स्थानों से खर्च की दिक्कतें व सहायता। शत्रु से समभाव। पिछले जन्म में बड़ा क्रोधी था तथा अन्य बच्चों को बहुत पीटा करता था।

बुध एकादश भाव में—उत्तम आयु, दिनचर्या में शान, पुरातत्त्व की संचित शक्ति का फायदा। विद्या व बुद्धि का विकास। सन्तान परेशान, सन्तान से लाभ भी, गूढ़ युक्तियों से व विवेक से गहरी चालों से कार्य। देह में

परेशानी, सन्तान से परेशान, पत्नी से परेशानी। रोजगारों में चतुरता से कार्य।

बुध द्वादश भाव में—विद्या में कमी। सन्तान को बन्धन सा, धन कोष में कमी, कुटुम्ब में क्लेश, विवेक कम। पुरातत्त्व के गूढ़ ज्ञान का बड़ा दावा, पूर्व संचित धन की हानि। दिनचर्या में बन्धन भी, मस्ती भी। आयु वृद्धि। विद्या के संकीर्ण मार्ग से निर्वाह, बुद्धि का हठयोग। सन्तान का चाबी पर कब्जा।

कुम्भ लग्न में गुरु

गुरु प्रथम भाव में—धन तथा रोजगार भाईयों को। स्वयं का पुरुषार्थ से रोजगार। ससुराल से व्यापार विषय की सहायता, स्त्री सुन्दर व गौरवमयी, मूल्यवान परिश्रम। धर्म का पालन, अनेक लाभ। वस्त्राभूषण, भाग्य की तरक्की, सौन्दर्य प्रेमी, पत्नी में आसक्त। भाईयों के रोजगार का वैभव इसकी पत्नी को देखता है।

गुरु द्वितीय भाव में—धन संग्रह माता के पास। रोजगार घर में, व्यापार के विशेष लाभ। सुन्दर सजावट वाला मकान बने। इधर रोजगार खुलें उधर सवारी भी खरीदी जाएँ। माता को बन्धन सा, आमोद-प्रमोद, खर्च को कम करने की चेष्टा। पुरातत्त्व से सम्बन्धित लाभ, राजसमाज से लाभ। धन के कारण से सुख, जायदाद।

गुरु तृतीय भाव में—धन संग्रह के वैभव से उत्तम शिक्षा, सन्तान धनाढ्य। बुद्धि तथा वाणी से मूल्यवान बातें, पुस्तकें, लेखन, खूब लाभ। भाग्य की तरक्की। देह व धर्म का आदर, बड़प्पन। सन्तान को धन की सहायता। हृदय तथा धन से विद्या में विशेष कला। चतुर, गम्भीर।

गुरु चतुर्थ भाव में—ननसाल धनाढ्य। खर्च में कमी का योग, धन का दुरुपयोग। अचानक मुफ्त का सा धन प्राप्त। गलत संकीर्ण तरीके। अधिक परिश्रम, बड़े प्रपंच से लाभ, शत्रु को भी धन लाभ। विपक्षियों को भी रोजगार दिलावे। राजसमाज से लाभ। ननसाल से धन प्राप्ति। मकान में उत्तर पश्चिम में धन गढ़ा है जो भाई को मिलेगा।

गुरु पंचम भाव में—धन की शक्ति से बड़े रोजगार, रोजगारों में

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

खूब लाभ। विवाह के बाद पत्नी धन की मालिक बनी तथा रोजगार पत्नी के नाम से चालू हुआ। धन तथा रोजगार का पत्नी पर प्रभाव व गौरव। भोग विलास के लाभ। बंधी आमदनी पर्याप्त रूप में। पुरुषार्थी, बड़प्पन।

गुरु षष्ठम भाव में—धन-जन की हानि, आमदनी के लिए बड़े परिश्रम, परदेश गमन, फिर भी साधारण आमदनी। पुरातत्त्व सम्बन्धित गूढ़ धन प्राप्त। खर्च में कमी, गुप्त खर्च में भी कमी। गुप्त खर्च के योग। अन्य स्थानों में कमजोरी व संकीर्णता। आयु वृद्धि, बड़प्पन। धन की सहायता समय-समय पर प्राप्त। बहुत सा धन मारा जाएगा।

गुरु सप्तम भाव में—उत्तम भाग्य से धन बढ़े व रोजगार बढ़े और धन तथा रोजगार के प्रभाव से भाग्य वृद्धि हो। भाग्य व धर्म की सहायता। विद्या बुद्धि व चतुराई। लोक-परलोक दोनों का ध्यान। बल पुरुषार्थ। हृदय में भक्ति भावना। धन के कारण से देह में कुछ बन्धन सा, स्वाभिमान।

गुरु अष्टम भाव में—बड़े कार-व्यापार, भारी धन लाभ, बड़ी इज्जत, राज से लाभ, मान प्राप्त। माता की सेवा। शत्रु, रोग व दिक्कतों को हटाने वाला, सन्तान प्रभावशाली। हृदय की शक्ति से कर्म, गौरवमय, प्रतापी। धन से तथा व्यापार से राजमान प्राप्त। कुटुम्ब से आदर बढ़े।

गुरु नवम भाव में—खूब धन लगाकर बड़े-बड़े स्थिर व्यापार। भारी लाभ, बड़ी इज्जत, राज से मान, धन की सिद्धि। सन्तोषी, सन्तान विद्वान्। मूल्यवान् परिश्रम, बुद्धि में कला, स्वतः व्यापार प्राप्त, स्वतः धन प्राप्त। बड़े-बड़े रोजगारों में व्यय सार्थक है। अगले जन्म में सरकारी बैंक का गवर्नर बनेगा। मकान में दक्षिण पूर्व में धन गढ़ा है। भाई के सांझे में कार्य। भाग्योदय पाँच बार।

गुरु दशम भाव में—धन की कमी। रोजगारों की हानि, रोजगार गिरवी भी रख दिए जाएँ। अन्य दूसरे स्थान का संकीर्ण सम्पर्क। तमाम आमदनी खर्च हो जाए, धन की कमी, धन नष्ट व्यापारों में। नाजायज तौर से धन खर्च। दूसरों को प्रलोभन देकर धन प्राप्त। विपक्षियों पर धन का प्रभाव। कुटुम्ब में कमी व क्लेश। वस्त्राभूषणों से गरीबी, धन लुट गया। पिछले जन्म में दुकानों के ताले तोड़ता था इस कारण दुखी है।

गुरु एकादश भाव में—देह तथा परिश्रम से धन की प्राप्ति । सम्मान, सन्तान विद्या प्राप्त, बोलचाल में बड़प्पन, मतलब की बातें । बुद्धि से फायदा, धर्म के सम्बन्ध में ज्ञान । भाग्य, रोजगार, पत्नी से लाभ, प्रभावयुक्त, विपत्तियों में भी आवश्यकताओं की पूर्ति ।

गुरु द्वादश भाव में—बड़े-बड़े व्यापारों से धन संग्रह । आमदनी जोड़ने की विशेष हृदय ये चेष्टा । ननसाल धनाढ्य । शत्रु पर प्रभाव, बड़ा प्रपंच, परिश्रम, पिता से लाभ, राजकाज में लाभ, आदर । आयु में धन की वर्षा, बड़ा धनाढ्य कुटुम्ब, प्रतिष्ठित । जहाजों से सोना आता है । मकान के उत्तर-पूर्व में धन गढ़ा है । पिता के धन में सांझा । भाग्योदय पाँच बार ।

कुम्भ लग्न में शुक्र

शुक्र प्रथम भाव में—पुरुषार्थ से सुखपूर्वक भाग्य की तथा पद की उन्नति । जमीन मकान जायदाद । धर्म का पालन । जमीन मकान सवारी का सुख भाई को भी । माता भाई की तरफदारी में । दूरदर्शी, चतुर, यश प्राप्त । दैवी शक्ति का सहयोग । न्यायशक्ति से कार्य । लोक-परलोक दोनों का पालन, उन्नतिशील, शान्ति प्रिय ।

शुक्र द्वितीय भाव में—धर्म-कर्म वाला । मकान भूमि का योग । सवारी अपनी, दैवी शक्ति से सुख । सामर्थ्य का संचार, मान-सम्मान, धार्मिक कार्यों से सर्वसुख, चतुर, राज समाज से सुख । घर में ही भाग्योदय । बहुत सुन्दर सज्जित मकान । इधर मकान बना उधर भाग्योदय हुआ । भाग्योदय सात बार ।

शुक्र तृतीय भाव में—विद्या बुद्धि के योग से भाग्योदय । धार्मिक व दैविक ज्ञान । उत्तम सन्तान सुख । विद्या की महान् कला । भाग्य के सम्बन्ध का ज्ञान । वाणी से परमार्थ पालन, लेख कला, सुयश, शील सन्तोष, सत्यवादी, दूरदर्शी । माता द्वारा इसके पुत्रों को ज्योतिष विद्या जो पिछले जन्म का कर्म फल है ।

शुक्र चतुर्थ भाव में—धर्म विरुद्ध कार्य, भाग्य कमजोर । शत्रु बड़े भाग्यवान् । माता तथा भाग्य दोनों ही विरोधी । माता की आयु कम, सुख

शान्ति में बाधा, सवारी शत्रु समान। भारी पेचीदा युक्तियों से परिश्रम तथा अशान्ति से भाग्योदय। कलाधारी रचनात्मक उपायों से सफलता। न्याय-अन्याय की परवाह न करें। स्वार्थ सिद्धि, बहुत खर्च, अन्य स्थानों से सफलता। रोगों की दवा धर्मार्थ दे। पिता की रोजी घटती रहे।

शुक्र पंचम भाव में—गृहस्थी का सुख पर मिठास की कमी। माता का पत्नी की तरफ झुकाव परन्तु माता अपना अपमान समझती है। रोजगार में परिश्रम से भाग्योदय। लौकिक भोगसुख, मकान भूमि का सुख, देह में सुख। मान यश, विलक्षण चतुराईयों से कार्य। गृहस्थ में कुछ परमार्थ धर्म का पालन, रोजगार में सन्तोष व सत्यता। पत्नी भाग्यवान्।

शुक्र षष्ठम भाव में—धर्म की कमजोरी। माता की आयु कम। मकान भूमि जायदाद धीरे-धीरे सब समाप्त। अन्य जगह मकान बने। ईश्वर की कृपा न हो, भाग्य में अशान्ति, धन को ही ईश्वर समझे, गुप्त चालें। जीवन में अशान्ति। माता के देहान्त के बाद भाग्योदय। पिता की रोजी घटती जाए।

शुक्र सप्तम भाव में—बड़ा भाग्यशाली, धर्मज्ञान, यश प्राप्त, माता भाग्यवान्, भूमि, जायदाद, सुख व सवारी का पूर्ण सौभाग्य, दैवी शक्ति की सहायता। प्रभु में निष्ठा। भाई-बहन, पुरुषार्थी, दूरदर्शी, परमज्ञानी, चतुर। जब तक माता जीवित है तब तक सोना बरसेगा, पोते भी भाग्यवान्, यशस्वी। पिता की रोजी में उन्नति। भाग्योदय सात बार।

शुक्र अष्टम भाव में—भाग्यबल से, बड़ी पदवी से, राजसमाज में प्रभुत्व। पिता भी भाग्यवान्, जमीन जायदाद, राजसी सुख। धर्म-कर्म पालन। व्यापार कार्य में उन्नति। चतुराई व योग्यता से कार्य, न्याय व शान्ति, कला पूर्ण महान् कार्य, स्वार्थ व परमार्थ का बराबर ध्यान। दैवी शक्ति का सहारा। आदरणीय, यशस्वी, माता कहती कि उत्तम नौकरी कर।

शुक्र नवम भाव में—भाग्य की शक्ति से भारी लाभ। माता ने रोजगार पर जोर दिया। भूमि सवारी अपनी, आमदनी के योग से धर्म लाभ। अन्न-वस्त्राभूषण आदि का सुख, विद्या में कला, बोलचाल में सज्जनता शीलता, दूरदर्शी, विवेकी, स्वार्थ-परमार्थ का सुख, अगले जन्म में भूमिपति

बनेगा तथा सवारी रखेगा।

शुक्र दशम भाव में—माता के कारण तथा भाग्य लेख के कारण जीवन भर खर्च। खर्च से परेशान व सुख त्याग, पूजा त्याग। माता की आयु कम, भूमि व निवास में कमी, सुख में घाटा। खर्च से कुछ परमार्थ, अन्य स्थान के सहयोग से उन्नति, भाग्य में देर-सवेर चतुराई से, सज्जनता से दूर स्थान के सम्पर्क से सुख। यश में कमी, माता के देहान्त के बाद भाग्योदय। पिता की रोजी में कमी। पिछले जन्म में मकानों के ताले तोड़ता था।

शुक्र एकादश भाव में—सुख भोगी, आदर्श जीवन, जमीन जायदाद, खानपान, वस्त्राभूषण, उत्तम पदार्थ समय पर प्राप्त, उत्तम धर्म पालन, दैवी सहायता, देह में मग्न व सज्जनता। सुन्दरता, चतुरता, विभूतियाँ युक्त। देवी गुणों का ज्ञान, दूरदर्शी, गृहस्थ। स्त्री व रोजगार के सम्बन्ध में कुछ वैमनस्यता। नाम की मुहर देर में बने।

शुक्र द्वादश भाव में—कुबेर के समान सुखी, धनाढ्य। सुख शान्ति में कुछ बन्धन, बहुत कुटुम्ब पर सब सुखी। पुरातत्त्व की कमजोरी, माननीय। ऊँचे दरजे का भाग्य व ऊँचे दरजे का धन संग्रह। कला पारखी, कलावंतों को पुरस्कार प्रदान करने वाला, प्रभु के शीघ्र दर्शन, भाग्योदय सात बार।

कुम्भ लगन में शनि

शनि प्रथम भाव में—गुप्त रीति से परिश्रम, थकान, देह में कमजोरी, छोटा कद, सुन्दरता की कमी। बहुत खर्च, खर्च रोकने पर भी बहुत खर्च, भाई-बहनों पर खर्च, अपने बाहुबल पर खर्च। भाई की आयु कम। संकीर्ण मार्ग का अनुसरण। सन्तान विद्या विषय में हानि, भाग्य वृद्धि व धर्म-कर्म, गुप्त साहस। दाहिनी भुजा में कालापन।

शनि द्वितीय भाव में—प्रभावशाली, आत्मज्ञानी, सुन्दर देह। माता के कष्ट में सेवा, अन्य स्त्रियों का मातृतुल्य सहारा, मकान भूमि की कमी, सुख में अशान्ति। स्वतन्त्रता, दिक्कतों पर व शत्रुओं पर प्रभाव। शत्रु मरते चलें। स्वाभिमान की रक्षा। माता पर विशेष खर्च। जमीन महँगी खरीदे। बाहरी कारणों से परेशानी, अन्य स्थानों से मान व ख्याति। चाचा-ताऊ मकान

पर कब्जा करना चाहें। माता की आयु कम।

शनि तृतीय भाव में—विषयों पर खर्च करके अधिकार। आत्मज्ञान की शक्ति, विद्या में फिर भी कमी। सन्तान की रोगों में बहुत सेवा। सन्तान की आयु कम। स्त्री और धन के विषय में वैमनस्य, सन्तान से गौरव, रोजगार में कठिनाइयाँ। बातचीत में आत्मबल युक्त हेर-फेर। खर्च के कारण धन हानि। विद्या रुके, चाचा-ताऊ के कारण विद्या रुके। पिता को बन्धन।

शनि चतुर्थ भाव में—प्रभावशाली कार्य, परतन्त्रतामय महानता को प्राप्त। सुन्दरता में कमी, घिराव, परेशानियों में बड़ा धैर्य। भाई कमजोर, शत्रु की परवाह न करे। पहलवान। जीवन में गौरव। खर्च कम करते हुए भी खर्च बढ़े। पेचीदा युक्तियों का आत्मबल से प्रयोग। स्वार्थी, दया का त्याग।

शनि पंचम भाव में—गृहस्थ में परेशानी, पत्नी परेशान। पत्नी में आसक्त। कमी व वैमनस्य। रोजगार में घुसकर काम करना, फिर भी रोजगार पसन्द न आए। रोजगारों में हानि तथा फिजूल खर्च। पत्नी की बीमारी में साधारण सेवा, धर्म का ध्यान। लोक-परलोक दोनों की पूर्ति, रसिक। आत्मबल से सुख, चाचा-ताऊ से पत्नी व व्यापार में कष्ट।

शनि षष्ठम भाव में—गुप्त शक्ति, खतरनाक कार्य। बड़ी आयु, देह में परेशानी, सुन्दरता में कमी। प्रभु से मृत्यु माँगे परन्तु बहुत देर में सुनी जाए। कठिन कार्य, पिता से वैमनस्य, पिता की आयु कम, विद्या, सन्तान सुख। पुरातत्त्व का लाभ, कटु युक्तियों को बुद्धि व वाणी और कर्म से प्रयोग करे। धन की कमी। चाचा-ताऊ की मृत्यु।

शनि सप्तम भाव में—सुन्दर, सुडौल, भाग्यवान्। धन व लाभ के लिए कठिन परिश्रम। धार्मिक आचरण, बड़ी सज्जनता। शत्रु पर प्रभाव। भाई की कमी, पुरुषार्थ में कमी, खूब खर्च, अन्य स्थानों का सम्पर्क। पेचीदा मार्ग, आत्म शक्ति से लाभ, मस्त निडर। चाचा-ताऊ भी भाग्यवान्। नाम की मुहर शीघ्र बने। भाग्योदय सात बार।

शनि अष्टम भाव में—प्रभावशाली कर्म। अन्य स्थानों में आत्मबल व देह बल द्वारा बड़ी कठिनाई से बहुत खर्च करने पर आदर प्राप्त। पिता की

आयु कम। पत्नी से न बने, नौकरी में कमी, देह में कमजोरी व हुकूमत। दैनिक रोजगार में नुकसान, परेशानी, कर्मेष्ठी। चाचा-ताऊ राजसमाज का सुख देखना नहीं चाहते तथा पिता से विद्रोह रखते हैं।

शनि नवम भाव में—बहुत धन लगाकर बहुत धन पैदा करने वाला। चाचा-ताऊ आमदनी पर हावी, बहुत खर्च, खर्च कम करने की चेष्टा। पुरातत्त्व का गहरी चाल से लाभ। आत्मबल से भी लाभ की वृद्धि। सन्तान सुख, विद्या सुख, स्वास्थ्य लाभ में कमी। अगले जन्म में रत्नों की खुदाई करेगा।

शनि दशम भाव में—बहुत खर्च, जान बूझकर खर्च, देह में दुर्बलता, देह पर खर्च। अन्य स्थान में आत्मबल कमजोर, धन की चेष्टा, भाग्य वृद्धि। धर्म पालन। बाहरी स्थानों में मान, अन्य स्थानों में अधिक खर्च से उन्नति। शत्रु पर प्रभाव, धन हानि, कुटुम्ब हानि व वृद्धि। अशान्त हृदय। ध्यान चाचा-ताऊ की तरफ। पिछले जन्म में लोगों का बहुत धन खाया है इसलिए दुखी है।

शनि एकादश भाव में—देह में शक्ति पर कमजोरी भी। देह पर पूर्ण खर्च, जीवन भर अधिक खर्च। चाचा-ताऊ भी नाचते रहें। सुन्दरता, आत्मबल, स्वाभिमान, परिश्रम, ख्याति, भ्रमण, अन्य स्थानों में आदर, शानदार खर्च। भाई बहुत परेशान व शीघ्र मृत्यु। पुरुषार्थ की कमी। पत्नी व पिता से क्लेश। राज-काज में भी कमजोरी तथा नौकरी बदलती रहे। पिछले जन्म का ज्ञान।

शनि द्वादश भाव में—धन वृद्धि में जीवन लगा रहे फिर भी धन संग्रह की हानि लगी रहे। अन्य स्थानों में भी धन हानि, देह में कुछ बंधन व परेशानी। माता व भूमि सम्बन्धी लाभ, सुख प्राप्ति का बहुत ध्यान, अधिक लाभ के लिए अनेक साधन। दिनचर्या में गौरव, पुरातत्त्व का खोजी, चाचा-ताऊ भी इसके द्वारा धन प्राप्त करें।

कुम्भ लग्न में राहु

राहु प्रथम भाव में—महान पुरुषार्थी। भाई को कष्ट क्लेश, उन्नति

के लिए बड़ी दौड़-धूप। स्वार्थ के लिए गुप्त युक्ति की बातें, शक्ति पर बड़े आघात फिर भी साहस व होशियारी से कार्य। गुप्त रूप से बड़ी शक्ति के संचय में उच्च लाभ के लिए असम्भव सामर्थ्य से भी कार्य लगन। बड़ा प्रभावशाली। बाहुबल पर खर्च।

राहु द्वितीय भाव में—माता की आयु कम। सुख की कमी, क्लेश, माता से विलग। सुख प्राप्ति के लिए गुप्त रूप से गुप्त युक्तियों का प्रयोग। बहुत दिक्कतों के बाद सुख प्राप्ति। मकान भूमि की व्यवस्था में कमी व क्लेश, सुख शान्ति में घोर संकट। अनाधिकार चेष्टा। भूमि, सवारी पर बहुत धन की हानि।

राहु तृतीय भाव में—अधिक बोलने वाला। दिमाग में तेजी व होशियारी, दूसरों को मूर्ख बनाने की चेष्टा। विद्या उच्च ग्रहण परन्तु देर में। गुप्त युक्तियों की शक्ति का भरोसा, बुद्धि की यथार्थता में कुछ कमी। मतलबी बातें, सत्य असत्य की परवाह न करे, सन्तान कष्ट, अपने को महान् विद्वान् कहे। सन्तान विद्या पर बहुत खर्च व बहुत प्राप्ति।

राहु चतुर्थ भाव में—ननसाल में हानि। शत्रु पर प्रभाव, शत्रु से चिन्ताएँ भी, गुप्त युक्तियों से पेचीदा कार्य का हल। परवाह न करे, बचाव का साधन। गहरी गूढ़ चालें, स्वार्थ सिद्धि। सावधान पहलवान। दिल कमजोर। विपक्षियों द्वारा धन हानि।

राहु पंचम भाव में—पत्नी की आयु कम, पत्नी से व सुसराल से क्लेश। पत्नी के विषय में बहुत खर्च। गुप्त नीतियों से व चालों से कार्य। भोगादिक पक्ष में कमजोरी व रोग, रोजगार में संकट व हानियाँ। अधिक परिश्रम का कार्य, गृहस्थ में झंझटों का समावेश, गृहस्थ व रोजगार से व सुसराल से नाजायज लाभ उठाने वाला।

राहु षष्ठम भाव में—जीवन निर्वाह चतुराइयों से, कठिनाइयाँ, क्लेश व गौरव भी, गहरी युक्तियों से गूढ़ लाभ, जीवन निर्वाह चतुराइयों से। पेट के नीचे के भाग में रोग, गुप्त शक्ति व साहस का भरोसा। लम्बी चौड़ी बातें, और इनके विचार, मरते-मरते इलाज में बहुत खर्च।

राहु सप्तम भाव में—बड़ी-बड़ी युक्तियों से भाग्य वृद्धि। भाग्य

में मुसीबतें, सुयश में कमी, दैवी शक्ति का भरोसा न रहे। दुनियादारी की लाइन का बड़ा समझने वाला। धन संग्रह में कमजोरी, धर्म की कमी, स्वार्थ पूर्ति के लिए चाहे जैसे धर्म का पालन। धर्म का दिखावा हमेशा करे। भाग्य की कमजोरी को सदा के लिए दूर करने वाला। भाग्य वृद्धि के लिए खर्च।

राहु अष्टम भाव में—पिता को कष्ट, पिता की आयु कम, पिता पर बहुत खर्च। चाचा-ताऊ नुकसान पहुँचावे। कारोबार में परेशानियाँ, झंझटों में लिप्त। राजसमाज के कार्यों में दिक्कतें। सामान्य पदोन्नति में रुकावटें, हर तरह की उन्नति के लिए बड़ी भारी युक्तियाँ। कठिन कर्मयोग से कार्य। उन्नति में कई प्रकार की हानियाँ। ऊँचा दाँव लगाने वाला।

राहु नवम भाव में—गुप्त योजनाओं से गुप्त चालों से भी थोड़ा लाभ। प्रकट आमदनी में कमी व असन्तोष, कुछ अनुचित अनाधिकारी। थोड़े लाभ के लिए भी गुप्त रूप से प्रयत्न। अपने लाभ के लिए अन्य के नुकसान की परवाह न करना। अपने लाभ का गुप्त चिन्तन, प्रयोग की वस्तुओं में कमी। आमदनी के लिए परेशानियों वाला कार्य करने वाला। अगले जन्म की दशा उत्तम रहेगी। सुखी रहेगा।

राहु दशम भाव में—बेकार के खर्च की योजनाएँ, खर्च के कारणों से दुख व संकट। खर्च की लाइन में बड़ी युक्तियों से दृढ़ता से कार्य, अनेक प्रकार के विचारों से गुप्त रूप से कार्य। अन्य स्थानों से झंझट व परेशानियाँ। दिखावे की कमी, बाहरी वातावरण में गहरी युक्तियों से कार्य। पिछले जन्म में मछलियों से तेल निकाला करता था। उन जीवों हत्याओं के कारण दुखी रहता है।

राहु एकादश भाव में—देह में परेशानी व कुछ कमी। मुसीबतों का सामना, चतुराई व गुप्त युक्तियों से कार्य। नामवरी को प्राप्त करने के लिए भारी प्रयत्न। अमर नाम चाहने वाला, घोर संकटों में भी धैर्य से कार्य।

राहु द्वादश भाव में—धन की भारी हानि, कुटुम्ब में क्लेश व कमी। बड़ी-बड़ी मुसीबतें, धन का सहारा लेना व कर्ज लेना। धन पर गहरा आघात। धन की कमी को पूरा करने के लिए बड़े-बड़े प्रयत्न। धन के पक्ष

में बड़प्पन, गौरव व सज्जनता। धन पक्ष में अंदरूनी कमजोरी। गुप्त वेदना सहने वाला। अशान्त।

कुम्भ लग्न में केतु

केतु प्रथम भाव में—महान् पुरुषार्थी, साहसी। भाई को अशान्ति व क्लेश। बाहुबल व दौड़-धूप की शक्ति। कठिन कामों को अन्ध विश्वास व साहस से पूरा करे। कार्यों में गुप्त योजनाएँ गुप्त शक्ति से असम्भव कार्य। शक्ति में कमी फिर भी बली।

केतु द्वितीय भाव में—माता की आयु कम, माता दुखी। भूमि मकानों के झंझट। सुख, साधनों में कमी, सुख प्राप्ति के लिए बड़े-बड़े झंझट। गुप्त रूप से बड़ी-बड़ी चतुराईयाँ। सुख व उन्नति के लिए गुप्त संकल्प। बराबर परिश्रम करते रहना। जन्मभूमि से परिवर्तन, दुःख में बड़ा धैर्यवान। भाई भी माता को परेशान करे।

केतु तृतीय भाव में—असत्य से कार्य। विचारों में गुप्त योजनाएँ, विद्या व बुद्धि में कमी। बुद्धि में भय, सन्तान कष्ट, शिक्षा के समय कठिनाइयाँ। छिपाव से बातें, संकीर्ण विचार, जरूरत से अधिक आकांक्षाएँ। दिमाग में परेशानी व थकान, याददाश्त में कमी। आर्त तथा गुप्त बुद्धि। भाई दिमाग पर प्रहार करे।

केतु चतुर्थ भाव में—ननसाल में हानि, शत्रु विजय। शत्रु से परेशानी, हर प्रकार की दिक्कतों को व दोनों को दबाने की शक्ति, दिक्कतों से घिराव व झंझट। शत्रु की परवाह करे, मुकाबले में बहादुरी। शत्रु को परास्त करने में गुप्त शक्ति से कार्य। शीलरहित स्वार्थयुक्त। झगड़े व झंझट को ठीक प्रकार न समझते हुए अपना वार कर देना। भाई भी बली।

केतु पंचम भाव में—स्त्री कष्ट, झंझट परेशानियाँ। ससुराल से परेशानियाँ, बड़ी परेशानियों से दैनिक कार्य। महान् परिश्रम। संचातिक हानियाँ, गुप्त साहस से व प्रभाव शक्ति से परेशानी। इन्द्रिय भोगादिक में कमी, परन्तु भोगादि की उम्र भर शक्ति। लौकिक कार्यक्रम की बड़ी जानकारी। हिम्मत व हेकड़ी से कार्य। भाई भी पत्नी को धमकावे।

केतु षष्ठम भाव में—जीवन की दिनचर्या में परेशानी, पुरातत्त्व की हानि, गुप्त शक्ति का बल। गूढ़ विषय का आन्तरिक ज्ञान, जीवन में कठिनाइयाँ, सहकर चिर स्थाई शक्ति को प्राप्त करना, आयु तथा जीवन में कठिन संघर्ष। साहसी, प्रभावयुक्त, भ्राता कष्ट।

केतु सप्तम भाव में—यश में कमी, भाग्य में परेशानियाँ। भाग्योन्नति के कार्यों में बिना विचारे फुर्ती से कार्य। तामसी धर्म का पालन, गुप्त चतुराई से भाग्योन्नति, स्थाई मजबूती के लिए मुसीबत की परवाह न करे। स्वार्थ सिद्धि में धैर्य से सफलता। भ्राता भी भाग्योन्नति के लिए अनेक प्रयत्न करे।

केतु अष्टम भाव में—पिता को कष्ट, पिता को हानि। व्यापार में मुसीबत, झगड़े, राजसमाज में परेशानी। मान-सम्मान व पदोन्नति में रुकावटें। इज्जत बनाने के लिए बड़ी-बड़ी परेशानियाँ, गुप्त शक्ति के बल से धैर्य के साथ कार्य, बड़ा परिश्रमी। गुप्त हिम्मत व उग्रकर्मिणी।

केतु नवम भाव में—गुप्त महान शक्ति से खूब धन लाभ, विशेष लाभ के लिए अनाधिकार की भी परवाह न करे। स्वार्थ सिद्धि के सामने किसी बात का भय न माने, मुफ्त का सा बहुत लाभ, दूसरे के नफा नुकसान का ध्यान न करे। लाभ के स्थान में अन्धाधुन्ध हाथ मारने वाला। प्रभाव से लाभ। आमदनी में मस्ती। इन कर्मों के कारण अगले जन्म में इसे अन्य का धन चुकाना पड़ेगा।

केतु दशम भाव में—खर्च की अधिकता, भाई धन बिगाड़ दे। खर्च शक्ति का गुप्त बल, खर्च के कारण कुछ झंझट, परेशानी व कष्ट। बाहरी मामलों में परेशानी, अन्य स्थानों में गुप्त व स्थिर शक्ति से कार्य। बिना सोचा-विचारी के अन्धाधुन्ध शक्ति का प्रयोग, खर्च की तेजी न रोक सके। पिछले जन्म में एक राजा के किले पर झंडे की रक्षा करता था और वहीं से जीवों को मारता रहता था।

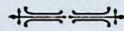
केतु एकादश भाव में—देह में दृढ़ता, देह में कमी। बहादुरी का बाना। आन्तरिक बल, अपने मार्ग से निस्संकोच जाना। अपने सिद्धान्त के सामने दूसरों की भलाई बुराई न करे। बड़े-बड़े संकट सहकर भी शक्ति

२१४

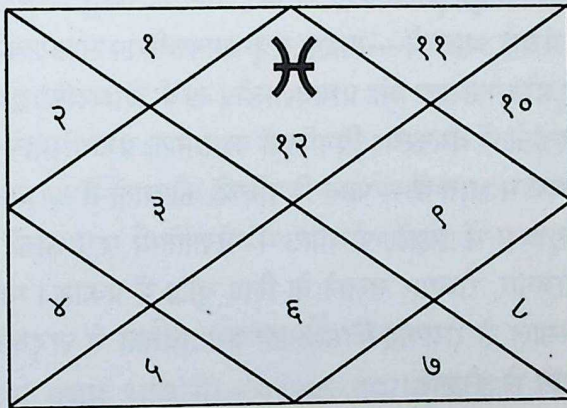
❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

प्राप्त, देह में आघात। गहरी मुसीबतों का सामना, दृढ़ संकल्पी, देह में शोहरत।

केतु द्वादश भाव में—धन संग्रह में कमी, धन स्थान में हानियाँ, कुटुम्ब में विग्रह, अशान्ति, धन प्राप्ति के लिए संकट। धन के अभाव से बड़ा कष्ट। परन्तु बड़े साहस से कार्य, गुप्त शक्ति से लाभ, बड़प्पन की लाइन में अन्ध विश्वास। दृढ़ संकल्प। धन के लिए महान परिश्रम।



मीन लग्न



नोट : सूरत पिता पर। माता व पत्नी की राय एक।

मीन लग्न में सूर्य

सूर्य प्रथम भाव में—महान् परिश्रम से बहुत धन प्राप्त, धन शक्ति से प्रभावशाली, अमीरात का योग। कुटुम्ब में विग्रह व प्रभाव। शत्रु को वश में करने के लिए युक्तियों का खजाना। दिनचर्या में अशान्ति। पुरातत्त्व की शक्ति भी कुछ हानि भी, झगड़े झंझटों में भी धन प्राप्त। शक्ति द्वारा धन का नुकसान पर शत्रु धन देकर जाए।

सूर्य द्वितीय भाव में—पुरुषार्थी, दौड़-धूप, भाग्य वृद्धि। धर्म का आदर। भाई-बहन से विरोध, परिश्रम से थकान, साहसी, शत्रु पर प्रभाव। परिश्रम व पुरुषार्थ से यश प्राप्त। ननसाल सहायक, चतुर, प्रतापी। भाई शत्रु के प्रभाव में।

सूर्य तृतीय भाव में—पिता मातृ स्थान में झगड़ा व झंझट, मकान भूमि पर झंझट। मकान में बदमाश घुस आवें। सुख की कमी। शत्रु पर शान्ति पूर्वक कामयाबी। राजसमाज में मान, सस्पेन्शन। शान्ति व परिश्रम से सफलता।

सूर्य चतुर्थ भाव में—विद्या में कमी। किसी के कहने से या बातों में आकर पढ़ाई छूट जाए। सन्तान रोगी, विरोधी तथा संकट में, बुरी पार्टी का प्रभाव, बुद्धि में परेशानी, शत्रु पर बुद्धि द्वारा विजय, हेकड़ी से लाभ। रोजगार में सन्तान के द्वारा शत्रुओं की चालें, परेशानियों को हटाने के लिए जब तब बुद्धि में प्रकाश जागृत हो।

सूर्य पंचम भाव में—महान् शत्रु दमनशक्ति। संसार की किसी भी शक्ति से न डरे। ननसाल भी प्रभावशाली। खर्च में अरुचि तथा नीरसता। अन्य दूसरे स्थानों में वैमनस्य। विपक्षियों पर हमेशा प्रभाव रखने का ख्याल।

सूर्य षष्ठम भाव में—पत्नी विपक्षियों की बातों में आ जाती है। पत्नी से विरोध। गृहस्थ में झंझटें, रोजगार में परेशानियाँ व रुकावटें। प्रभाव व परिश्रम से रोजगार, रोजगार चलाने के लिए बुद्धि में प्रकाश। भोगादिक पक्ष में कमी, ननसाल से रोजगार में सहायता तथा विवाह में लड़कों को पसन्द करना। परिश्रम से परेशान।

सूर्य सप्तम भाव में—पुरातत्त्व व प्रभाव में कमी, ननसाल में हानि। शत्रु की शीघ्र मृत्यु, जीवन में अशान्ति, उदर विकार, शत्रु पक्ष में कूटनीति से कार्य। धर्म में कमजोरी। आयु पर बड़े-बड़े संकट। धन वृद्धि के लिए महान् परिश्रम।

सूर्य अष्टम भाव में—उत्तम भाग्य, प्रभाव वृद्धि। उत्तम भाग्य का शत्रु पर प्रभाव। भाग्य में कुछ रोगों द्वारा तथा विपक्षियों द्वारा परेशानियाँ। सुयश में कमी। ननसाल भाग्यवान्। गुप्त चालों से सफलता, प्रपंचमय उग्र धर्म को मानने वाला। भाई-बहन में विरोध, यात्रा में चोर धन को लूटे।

सूर्य नवम भाव में—प्रभाव के साथ महान् परिश्रम से आदर प्राप्त। प्रभाव व परिश्रम से राजसमाज में लाभ। नौकरी में शिकायतें परन्तु नुकसान न हो। राजसमाज में बड़ा कार्य करने वाला। मकान भूमि सम्बन्धी परेशानियाँ। उग्र कर्मेष्ठी, दफ्तर में चोरी।

सूर्य दशम भाव में—बड़े परिश्रम से लाभ, विपक्षी रोजगार में नुकसान पहुँचावे। पेचीदा युक्तियों से सफलता, अनाधिकार लाभ, ननसाल से कुछ लाभ। सन्तान से परेशानी, विद्या में असुविधा। बुद्धि में क्रोध व छिपाव। स्वार्थ सिद्धि में तत्परता, बड़ा होशियार। आमदनी को अधिकतर अन्य व्यक्ति खाते-उड़ाते रहें। अगले जन्म में सिपाही बनेगा।

सूर्य एकादश भाव में—प्रभाव में कमजोरी। विपक्षियों पर खर्च, शत्रुता स्वयं कम होती रहे। ननसाल को हानि, अन्य दूसरे स्थान में भी क्लेश। छिपा हुआ गुस्सा व क्रोध, चाचा-ताऊ को नुकसान। पिछले जन्म में दादागीरी करता था इस कारण अब विपक्षियों से परेशान है।

सूर्य द्वादश भाव में—प्रभावशाली। शत्रु पर आदर्श युक्तियों से व दैहिक प्रभाव से विजय। ननसाल बहुत चाहे। देह में रोग झंझट, अशान्ति, कुछ घिराव व बन्धन, भारी क्रोध। प्रत्येक परेशानी की दमनशक्ति। हठ योग। पत्नी से झगड़ा, भोगादिक में कमी, प्रतापी, रोजगार में परेशानियाँ।

मीन लग्न में चन्द्रमा

चन्द्रमा प्रथम भाव में—मनोबल तथा बुद्धि द्वारा विद्या ग्रहण व प्राप्ति। कुटुम्ब की वृद्धि में सुखी, सन्तान धन पर काबू कर ले, सन्तान विषय में कुछ बन्धन। आयु का आनन्द, दिनचर्या में रौनक, पुरातत्त्व में बुद्धि योग द्वारा लाभ। मन की शक्ति से गूढ़ व गुप्त विषय में उत्तम शोधन। मन बुद्धि में कुछ बंधन।

चन्द्रमा द्वितीय भाव में—विद्या बुद्धि का बड़ा भरोसा। विद्या व बुद्धि भाइयों को। मनोबल की भारी शक्ति। एक कन्या भाई के पास रहे। बोलचाल में तेजी व हाजिर जवाबी, मन में तरंग व उमंग। भाग्य कमजोर। धर्म की परवाह न करे, पुरुषार्थ के मुकाबले भाग्य को न माने। सुयश में

कमी, ईश्वर पर विश्वास न करे, साहसी, प्रभावशाली।

चन्द्रमा तृतीय भाव में—विद्या ग्रहण घर पर। मन व बुद्धि में प्रसन्नता। वाणी द्वारा मनोरंजन की बातें, खेल-तमाशे व हँसने-हँसाने की आदत। मनोबल व बुद्धिबल से बड़ा सुख। अपनी बुद्धि बल से भूमि व मकान को सँवारे। पिता से सुन्दर सम्पर्क, राज समाज में मान वृद्धि, उन्नति, व्यापार में तरक्की।

चन्द्रमा चतुर्थ भाव में—बुद्धिमान, विद्यावान्, शान्ति से जँचाव की बातें। पुत्रियाँ सर्वगुण सम्पन्न, पुत्र सुन्दर व गुणी। मनोयोग व बुद्धि योग द्वारा मान्यता। लाभ कम, लाभ में कठिनाईयाँ, सिद्धान्तिक बातें, एकाग्रता, मृदु भाषी, सन्तान भी मृदुभाषी। सुन्दर शील स्वभाव, मन्त्री, डिग्री, सन्तान मनमानी करे।

चन्द्रमा पंचम भाव में—विद्या ग्रहण में कठिनाईयाँ। सिर में अग्नि से जलन इस कारण बुद्धि में कमी, दिमागी अशान्ति। सन्तान में कमी व सन्तान शत्रुवत्। बोलचाल में रुकावट, दिमाग में पेचीदा बातें। अधिक खर्च। शीतल स्वभाव से शत्रु पर काबू। बुद्धि में शत्रु की तरफदारी।

चन्द्रमा षष्ठम भाव में—बुद्धियोग तथा मनोयोग से रोजगार में सफलता। पत्नी सुन्दर सुशील तथा विद्वान्। बुद्धियोग से सुन्दर ज्ञान, इन्द्रिय भोगादिक में अधिक रुचि। गृहस्थ के कार्यों में प्रवीणता, प्रसन्न मन, सन्तान अपनी माता से लिपटी रहे। ज्यों-ज्यों सन्तान प्राप्त हो त्यों-त्यों रोजगार बढ़ता रहे तथा रोजगार की सुचारुता से देह प्रसन्न रहे।

चन्द्रमा सप्तम भाव में—मन व बुद्धि में परेशानी। विद्या व सन्तान में कमी। अपने सामने सन्तान का मरण देखना पड़े, पुत्री मरते-मरते बचे। जीवन की दिनचर्या बुद्धि से बिगाड़ने वाला। पुरातत्त्व का ज्ञान। छिपाव की बातें। धन तथा कुटुम्ब की बुद्धि में प्रयत्नशील।

चन्द्रमा अष्टम भाव में—विद्या झगड़ों तथा परेशानियों से प्राप्त फिर भी कमी। वृद्धि में चिड़चिड़ापन तथा जिद्द। बुद्धि के दुर्बल होने से भाग्य में हानि। अन्त में भाग्य चमके। ईश्वर में अपूर्ण श्रद्धा, यश में कमी, पुरुषार्थ का ध्यान। अनुचित योजनाओं से कुछ-कुछ उन्नति।

चन्द्रमा नवम भाव में—विद्या नौकरी के लिए प्राप्त। जब-जब सन्तान प्राप्त हो तब-तब उन्नति के शिखर पर चढ़ता रहे। राजकाज में बुद्धिमान व मान प्राप्त। मन में गौरव व हुकूमत की बातें। माता, भूमि, मकान का सुख। सब सन्तान को राजकाज मिले। सन्तान का ध्यान सदा मकान भूमि सवारी तथा माता की ओर।

चन्द्रमा दशम भाव में—विद्या बुद्धि से धन कमाना, आमदनी में मन के कारण तथा सन्तान के कारण अड़चनें। लाभ प्राप्ति के लिए बड़ी-बड़ी तरकीबें, लाभ की अधिकता से तजुर्बे में तरक्की। विद्या में कमी। वाणिज्य व्यवसाय में मन की अशान्ति के कारण तथा विद्या की कमी के कारण असन्तोष। अगले जन्म में जमुना नदी में मगरमच्छ का जन्म लेगा। तदुपरान्त मानव योनि प्राप्त करेगा।

चन्द्रमा एकादश भाव में—नेत्र दोष, सन्तान को भी नेत्र दोष, सन्तान खर्चीली। जब-जब सन्तान उत्पन्न होती रही खर्च भी तब-तब बढ़ता रहा। स्मरण शक्ति की कमी। डिग्री न मिले या बड़े खर्च से प्राप्त हो। मन में अशान्ति। हेर-फेर की बातों से खर्च को सँभाल सके, मन को भय। पिछले जन्म में बच्चों पर टोटके किया करता था इस कारण अब यह सन्तान से दुखी है।

चन्द्रमा द्वादश भाव में—मनोयोग बुद्धियोग व सन्तान शक्ति की प्राप्ति। विद्या में विशेष चमत्कार, दूरदर्शी, आत्मीयता, वाणी में बड़प्पन। देह में शीतलता व सुन्दरता। सन्तान पिता के रूप पर, स्त्री में सुन्दरता व सन्तोष। सन्तान के योग्य होने के कारण नाम प्राप्त, चतुर, सज्जन, अन्तरज्ञानी। सन्तान पिता से लिपटी रहे तथा कानून पढ़ने का आग्रह करे।

मीन लग्न में मंगल

मंगल प्रथम भाव में—उत्तम भाग्य से तथा दैवी सहायता से धन की दिन दूनी वृद्धि। साला भी यहीं से धन लेकर भाग्यवान् बने। विद्या बुद्धि की धन की अधिकता के कारण कमी। धन की अधिकता से ही सन्तान से अशान्ति व क्लेश। दिनचर्या में अमीरात ढंग। कुटुम्ब में शक्तिशाली व्यक्तियों

की बुद्धि, माननीय, यशस्वी, धर्म-कर्म में व्यय सार्थक। इष्ट देव के अवश्य दर्शन, मकान के उत्तर पूर्व में धन गढ़ा है।

मंगल द्वितीय भाव में—सफल पुरुषार्थ और सफल भाग्य। धर्म पालक, राजसमाज में मान प्रतिष्ठा। पुलिस या रक्षा विभाग। पिता से लाभ, शत्रु पर पूर्ण प्रभाव। ननसाल से लाभ, यश प्राप्त, पुरुषार्थ तथा ईश्वर दोनों को माननेवाला, साहसी उत्साही, साला भाई के समान।

मंगल तृतीय भाव में—धन से मकान भूमि सवारी प्राप्त। माता के पास धन संग्रह, बहुत आमदनी, भाग्य की वृद्धि। राजसमाज में मान, धर्म का पालन। रोजगार में व्यापार में सफलता, सत्य धर्म की शक्ति से धन व मान की प्राप्ति। उत्तम भाग्य के कारण भूमि सवारी की प्राप्ति, मंगली। वक्ष में चोट।

मंगल चतुर्थ भाव में—सन्तान कष्ट, गर्भपात, विद्या में कमी। बुद्धि में क्रोध के कारण धन हानि। सन्तान की तरफ धन चला जाए। कुटुम्ब का धन सन्तान को प्राप्त। भाग्य की कमी से बुद्धि में चिन्ता। बेमजा अधिक खर्च। अन्य स्थान का उत्तम सम्पर्क, साला अपने भानजों के धन को देखकर जलता है।

मंगल पंचम भाव में—धन के बल से शत्रु पर व रोगों पर व शत्रुओं पर अधिक देना पड़े। साला भी शत्रुभंजन परन्तु बीमार रहे। बड़े दिक्कतों से भाग्यवानी का योग। शत्रुओं पर दैवयोग से विजय। कुटुम्ब विरोधी बने, झगड़े झंझटों से फायदा। उदर में चोट।

मंगल षष्ठम भाव में—भाग्यबल से रोजगार में तरक्की। पत्नी भाग्यवान तथा देवी का रूप। रुपए से रुपया कमाना, ब्याज खाना, पत्नी को नाजायज दबाव दे। राज समाज से लाभ। पत्नी धन को सँभाले। गृहस्थ से बड़प्पन। धन के लिए दौड़-धूप। साले के कारण पत्नी भाग्यवान्। साला अपनी बहन को बहुत प्यार करे।

मंगल सप्तम भाव में—भाग्य कमजोर, यश की कमी, धन हानि, पुरातत्त्व का लाभ, कुटुम्ब में जवान व्यक्ति की मृत्यु। विदेश योग से बहुत आमदनी, बहुत धन मारा जाए, गुप्त युक्तियों से धन वृद्धि, भाई से वैमनस्य।

साले का भाग्य कमजोर। परन्तु विदेश से लम्बी यात्रा से धन हानि। वस्ति का ऑपरेशन।

मंगल अष्टम भाव में—बड़ा भाग्यशाली, धर्मवान। साला बड़ा भाग्यवान्, भाई से वैमनस्य। अन्य स्थानों से भी लाभ, प्रभावशाली, हथियार धारण भाग्य में लिखे हैं। हर धर्म-कर्म में व्यय सार्थक है। मकान में दक्षिण-पश्चिम में धन गढ़ा है। भाग्योदय आठ बार।

मंगल नवम भाव में—धन की शक्ति से तथा भाग्य की शक्ति से राज में उत्तम पद, प्रतिष्ठा, वैभव, बड़े भारी कारोबार। हुकूमत से कडुवापन। मकान भूमि का योग, सवारी का सुख, प्रभावशाली धर्म कर्म। साले को भी राज में उत्तम पद। मकान को तोड़-फोड़ कर बनवाता रहे।

मंगल दशम भाव में—भारी धन लाभ। अपूर्व धन की शक्ति, दैवी सहायता से बड़े-बड़े व्यापार। राज मदद, बड़े-बड़े मुफ्त के से महान् लाभ। विद्या में कमी। शत्रु पर स्वमेव विजय, दिक्कतों से स्वमेव बचाव। कुटुम्ब का पालक, साला व्यापारी, धन, भाग्य व रोजगार तीनों चीजें भाग्य में लिखी हैं। मान सम्मान, बड़े रोजगारों में धन का व्यय सार्थक है। अगले जन्म में कप्तान बनेगा। मकान में पूर्व दक्षिण में धन गढ़ा है।

मंगल एकादश भाव में—धन तथा कुटुम्ब की हानि, भाग्य कमजोर। जब से पैदा हुआ तब से ही धन का बिगाड़ होता रहा, मजबूरियों से अधिक खर्च, यश में कमी। अन्य स्थान के सम्पर्क से धन तथा भाग्य में उन्नति। शत्रु पर धन खर्च से प्रभाव, बरक्कत से दूर, उत्तम भाग्य व धन की भारी कमी। ऋणी, मंगली, पिछले जन्म में चाकूबाज था इस कारण अब इसका भाग्य साथ नहीं दे रहा है।

मंगल द्वादश भाव में—पिता की सम्पत्ति प्राप्त, विशेष भाग्यवान्। उत्तम भाग्य के कारण धन की विपुलता। धन के विषय में ईश्वरीय सहायता। देह में शान्ति कम, तेज व कुछ बन्धन। माता, भूमि, सवारी का सुख। पिछले कर्मों के कारण नामवर। अमीरात का ढंग, प्रभावशाली, साला-साली साथ रहना चाहे। जब से छोटा साला उत्पन्न हुआ तभी से भाग्यवान्। मंगली, नाम की मुहर बने।

मीन लग्न में बुध

बुध प्रथम भाव में—पत्नी का धन पर काबू। भूमि, मकान, सवारी से धन की प्राप्ति। गृहस्थ सुख से बन्धन, माता को कई बार चोटें, सुख में कमी, भोगादिक की कमी। बन्धन को धन की शक्ति से हरावे। पुरातत्त्व का लाभ, बड़ा कुटुम्ब।

बुध द्वितीय भाव में—साहसी, शील-युक्त, विवेकी। नई उमंगें, सुखपूर्वक परिश्रम से विवेक द्वारा रोजगार में सफलता। भूमि मकान का सुख। माता निजी मकान को इसके भाई के नाम करवा दे, भाई सुखी। पत्नी भाइयों की ओर झुके। गृहस्थ व लौकिक कार्यों में सफलता। धर्मपालन, भाग्यवान्।

बुध तृतीय भाव में—माता की राय से बहू के नाम मकान। गृहस्थ का आनन्द, जायदाद का सुख। गृहस्थ की देखरेख माता करे, मकानों की देखरेख पत्नी करे। रोजगार मकान में, मकान में कारीगरी। विवेकशील पत्नी, राज सुख, पिता से सुख, आराम के लिए विविध प्रकार की सामग्रियाँ। भोगी विलासी, आदरणीय, भाग्योदय छः बार।

बुध चतुर्थ भाव में—माता-पुत्रों को पढ़ावे तथा पुत्रों के नाम पर जायदाद लिखवाने की प्रेरणा प्रदान करे। गृहस्थ की संचालन क्रिया का उत्तम ज्ञान। कोकशास्त्र का ज्ञान। लेखक, प्रकाशक, इन्द्रियों के अनुकूल जीवन। विद्या द्वारा रोजी।

बुध पंचम भाव में—मातृ वियोग, माता की आयु कम। पत्नी की आयु कम, पत्नी अन्य की बातों को मान ले, पत्नी विद्रोह पर उतर आवे, भूमि-मकान कुछ मुफ्त में ही चले जाएँ, सुख में कमी, रोजगार में परेशानियाँ। सन्तान, शत्रु पक्ष में व रोग पक्ष में अधिक खर्च। शत्रु भी सुख पावे, शीलवान, पिता को रोजी घटती रहे।

बुध षष्ठम भाव में—माता पत्नी की तरफदारी में, पत्नी सुन्दर, चतुर, शिल्प प्रवीण, माता पत्नी को स्वयं घर की मालकिन बनाए, माता रोजगार में सहायक, भूमि मकान का सुख, मकान पूर्ण सुख-साधनमय, छः मंजिल का मकान, देह में कमजोरी, दिखावा, आत्मा की आवाज के प्रतिकूल

भोगवादी ।

बुध सप्तम भाव में—मकान गिर पड़े, माता की आयु कम, माता का देहान्त हो और मकान गिरे, पत्नी की आयु कम, रोजगार मन्दा सा, विदेश के योग से धन लाभ, गृहस्थ में अशान्ति, सुख में घाटा, सवारी में मृत्यु, गूढ़ ज्ञान से कार्य में उन्नति, पुरातत्त्व से धन का लाभ, उत्तम आयु, पिता की रोजी में कमी ।

बुध अष्टम भाव में—माता व पत्नी दोनों भाग्यवान्, भाग्य शक्ति से रोजगार में सफलता, गृहस्थी में धर्म का ध्यान, धर्मपूर्वक रोजगार, सुन्दर सुखभोग, बहन-भाइयों का सुख, कोमल पुरुषार्थ, भूमि व सवारी का सुख, माता व पत्नी कहती है कि ईश्वर पर भरोसा रखो सब कार्य पूर्ण होंगे, माता व पत्नी के देहान्त के बाद भाग्य में हानि ।

बुध नवम भाव में—राजसी सुखभोग, माता व पत्नी सरकारी नौकरी को प्रोत्साहन देती है । पत्नी भी सर्विस कर सकती है, भोग विलास की उत्तमता, जमीन जायदाद, बड़े रोजगार, नामवरी स्थान में सजावट, मान प्रतिष्ठा प्रमुख व उन्नति ।

बुध दशम भाव में—माता व पत्नी रोजगारों को प्रोत्साहन देती हैं । दुकान के पास ही मकान, सुखपूर्वक रोजगार, पत्नी या माता के नाम रोजगार, विवेक व शान्ति से लाभ, सन्तान का सुख, विवेक से विद्या में सफलता, मृदु भाषण, आराम के उत्तम ढंग, चतुर व नरम, अगले जन्म में कार बनाने का कारखाना खोलेगा ।

बुध एकादश भाव में—माता व पत्नी खर्चीली, मकान गिरवी रख जाए, भोग तथा सुख में कमी । रोजगार में बहुत खर्च, अन्य स्थानों में सुख व रोजगार उत्तम, बाहरी सम्पर्क से व विवेक द्वारा रोजगार में उन्नति, शत्रु से नरमाई, माता व पत्नी रोजगार के लिए कर्ज लेने की सलाह देती है, पिता की रोजी में कमी, पिछले जन्म में किसी की साइकिल चुराई थी इस कारण सुख में कमी है ।

बुध द्वादश भाव में—देह में हल्कापन, माता से सुख की कमी, मकान में मन न लगे, सवारी कष्टप्रद, पत्नी सुखी, बड़े परिश्रम से उन्नति ५

व्यापारिक बुद्धि, अनेक कार्य, रोजी बनी रहे। प्रकाशक, भोगों की कमजोरी, फिर भी कठिनता से मन के न चाहने पर भी मकान अपने नाम हो जाए।

मीन लग्न में गुरु

गुरु प्रथम भाव में—धन पर पिता का काबू, कर्मयोग से धन एकत्र। सरकारी सहायता। कुटुम्ब में गौरव, मान प्रतिष्ठा, शत्रु पर प्रभाव, दिक्कतों पर धन के बल से फतेह, प्रभावशाली, धन एकत्र करना ही श्रेय, देह का भी ध्यान नहीं।

गुरु द्वितीय भाव में—भाईयों को सरकारी सहायता, आमदनी में कमी, कुछ भाग्यवान्, अनुचित लाभ, पत्नी में महानता, गृहस्थ में भोग तथा प्रभाव, हठधर्मी, प्रभावशाली। पाँच भाई, पिता भाइयों की तरफदारी करे। भाई के यहाँ नौकरी, परन्तु मन उदास।

गुरु तृतीय भाव में—घर पर ही राजसेवा का पत्र आ जाए। उत्पन्न होते ही पिता ने ऊँचा मकान बनवाया, सरकारी सवारी। राजपद, वैभवपूर्ण, सुखी जीवन, माता की तरफदारी करे। हृदय बल से कारोबार तथा हुकूमत के ढंग। पुरातत्त्व का लाभ, आयु वृद्धि। खर्च में नीरसता, अपने स्थान में आमोद-प्रमोद।

गुरु चतुर्थ भाव में—हृदय तथा आत्मा में महानता, आचार्य, प्रभावशाली भाषण, पाँच पुत्र, धर्म पालक, पिता इसके पुत्रों को बहुत चाहे। आमदनी में कमी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली, दूरदर्शी, विख्यात और बच्चों के सुख से जी न भरे। भाग्योदय चार बार।

गुरु पंचम भाव में—परतन्त्रतायुक्त प्रभावशाली कर्म, पिता रोगी व विरोधी, बहुत परिश्रम से धन वृद्धि, इज्जत का पूरा ध्यान, ननसाल में इज्जत, परेशानियों के अन्दर भी सुखी होने का दावा।

गुरु षष्ठम भाव में—सुन्दर देह, हृदय तथा कर्म की शक्ति, देह की मेहनत, पिता ने रोजी से लगा दिया। पिता इसकी बहू को बहुत चाहता है। पत्नी आदरवाली, पत्नी स्वयं पसन्द की, भोगविलास की शक्ति, गृहस्थ में गौरव, आमदनी में कमी, अनुचित रीति से लाभ, भाई से वैमनस्य पर अच्छे

सम्बन्ध ।

गुरु सप्तम भाव में—दुर्बल देह, आयु कम, पिता की आयु कम । नौकरी छूटे । पिता कष्ट में, कठिनता से धन प्राप्ति । विदेश के सम्पर्क से लाभ, जीवन की दिनचर्या में बड़प्पन, हृदय में अशान्ति, पुरातत्त्व का लाभ । जीवन कुछ मरा हुआ सा । हृदय रोग से मृत्यु ।

गुरु अष्टम भाव में—बड़ा भाग्यवान्, धर्मात्मा, न्याय प्रिय । पिता के कारण भाग्यवान् व राज में मान । सुन्दर देह, आत्मबल व देहबल, ख्याति, पवित्र हृदय, उदार, डिग्री, सन्तान सुन्दर तथा भाग्यवान् । ओजस्वी, प्रभावशाली, ईश्वर में श्रद्धा । नाम की मुहर बने ।

गुरु नवम भाव में—राजसत्ता को स्वयं सँभाल ले । पिता की पूजा करे । प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, बड़े कारोबार, धन वृद्धि, माता भूमि सवारी का सुख । शत्रु पर विजयी, राजसत्ता पर पिता का संकेत । आत्मबल व कर्मबल, से कोई महान् कार्य, विजयी, साहसी, कानून भय, स्वाभिमानी, राजमद, बड़ी सवारी । भाग्योदय पाँच बार ।

गुरु दशम भाव में—स्वयं व पिता भी बड़े-बड़े रोजगारों की ओर संकेत करे । पिता के साथ ही कारोबार पर आमदनी में कमी व क्लेश । लाभ में परतन्त्र, सरकारी सहायता से विलम्ब । बुद्धि में जागृति से रोजगार में चमत्कार । उन्नति, वाचाल, डिग्री, पत्नी व ससुराल से मान । अगले जन्म में भी बड़प्पन प्राप्त करेगा ।

गुरु एकादश भाव में—जब से उत्पन्न हुआ है तब से खर्च ही खर्च, पिता ऋणी, पिता की आयु कम । पिता पुत्र दोनों को हृदय रोग । आत्मा में अशान्ति, नौकरी छूटे । राजसमाज में हानि फिर भी कार्य संचालन । गुप्त गूढ़ कार्यो से सुख । शत्रु पर प्रभाव । कुछ अन्य स्थानों से सम्पर्क । पिछले जन्म में यह व्यक्ति धर्म-कर्म के विपक्ष में बोलता था इस कारण मन तथा हृदय अशान्ति में रहता है ।

गुरु द्वादश भाव में—राज-मद, हाथी की सवारी । कानून, हुकूमत । विशेष भाग्यवान्, सन्तान सुख, सन्तान को भी राजपद मान-सम्मान । आत्मा लौकिक व अलौकिक गुणों का भण्डार । पिता की उच्चशक्ति का सहारा ।

विद्या में चमत्कार, बड़प्पन, स्वाभिमानी, पूजनीय। ऐसा पति पाकर पत्नी सुखी। न्यायप्रिय, धर्मात्मा, दानी, भाग्योदय नौ बार। लेखन, प्रकाशन।

मीन लग्न में शुक्र

शुक्र प्रथम भाव में—पुरातत्त्व धन की शक्ति, भ्राता के विषय में बन्धन। दिनचर्या में अमीरात का ढंग, आयु वृद्धि, मौजूदा धन में हानि, कूट युक्तियों से धन वृद्धि। धन संग्रह के लिए समय तथा शक्ति का प्रयोग। धन संग्रह करते-करते मृत्यु। जीवन की मस्ती से धन हानि। भाई धन पर काबू करे।

शुक्र द्वितीय भाव में—पुरुषार्थ शक्ति। भ्राता सभी दीर्घ आयु वाले। जीवन की दिनचर्या में बड़ी शान व गुमान, उत्तम आयु, पुरातत्त्व का लाभ। भाग्यवृद्धि के लिए भारी परिश्रम। धर्म को न माने, निडर, प्रभावशाली। बाहुबल से, गुप्त शक्ति के बल से तथा बड़ी चतुराईयों से बड़े-बड़े कार्य करने वाला। भाई के हाथ से इसकी मृत्यु।

शुक्र तृतीय भाव में—माता की आयु कम, माता को क्लेश। पुरातत्त्व का सुख। बहन-भाई सुखी, आयु का सुख, जीवन की दिनचर्या में आनन्द। अपना मकान गिर पड़े, सुख के साधनों की कमी। पिता से वैमनस्यता विदेश से सुख, चतुर, मानयुक्त।

शुक्र चतुर्थ भाव में—विद्या में पुरातत्त्व शक्ति का ज्ञान। बुद्धि की युक्तियों से दिनचर्या का आनन्द, पेचीदा चालें, सन्तान की आयु कम। भाई एक सन्तान गोद लेना चाहे, उत्तम आयु, भाई-बहनों की कमी, पुरुषार्थ में कमी, पुरातत्त्व से लाभ।

शुक्र पंचम भाव में—जीवन में अशान्ति, बन्धु विरोध करे। परतन्त्रता, गूढ़ कर्म को भी परिश्रम तथा चतुराई से करना। उदर विकार, पुरुषार्थ में कमी। खूब खर्च, पुरातत्त्व की कुछ हानि। बड़ी कठिनाई से पुरुषार्थ द्वारा जीवनाधार शक्ति को पावे। पेचीदा युक्तियों से सफलता।

शुक्र षष्ठम भाव में—गृहस्थी व पत्नी से परेशानी। पत्नी की आयु कम। रोजी में परेशानी, रोजी में भाई लात मारने का प्रयास करे। अपनी भाभी

को फूटी आँख न देख सके। देह में रौनक व बुद्धि, वीर्य दोष, गुप्तचर, गुप्त साहसी। परतन्त्रता युक्त कर्म व रोजी।

शुक्र सप्तम भाव में—गुप्तबल की महान शक्ति। पुरातत्त्व का स्थिर लाभ। आयु वृद्धि, जीवन की दिनचर्या में मस्ती, पुरुषार्थ में हानि। बहन की आयु कम, धन वृद्धि को बड़े प्रयत्न। अदृश्य व गहरी चतुराईयों का मास्टर। कठिन परिश्रम से सफलता। दूरदर्शी भाई की मृत्यु देखनी पड़े।

शुक्र अष्टम भाव में—भाग्य की शक्ति से जीवन की दिनचर्या में आनन्द। पुरातत्त्व का संचित लाभ। आयु वृद्धि, पुरुषार्थ की सफलता का गौरव, सुयश में कमी। भाग्योदय में कठिनाईयाँ, यथार्थ धर्म में कमजोरी, बड़ी भारी चतुराईयों से कार्य। भाइयों का भी भाग्य कमजोर पर स्वास्थ्य ठीक।

शुक्र नवम भाव में—पिता की आयु कम, पिता को क्लेश, आयु में रौनक। प्रभावशाली पुरातत्त्व का पैतृक लाभ, गूढ़ युक्तियों व चतुराईयों से महान कार्य को करे। सुख व भूमि की वृद्धि, साहसी, लापरवाह, नौकरी छूटे। राजसमाज में बड़े परिश्रम से मान प्राप्त। भाइयों की साधारण नौकरी।

शुक्र दशम भाव में—पुरातत्त्व का भारी लाभ। आयु की वृद्धि। भाई-बहनों को बड़े रोजगार व सरकारी सहायता, दिनचर्या में आमोद-प्रमोद, कूटनीति व गुप्त कार्यों के बल से खूब लाभ, पुरुषार्थ की वृद्धि में गुप्त शक्ति। सन्तान को कष्ट। विद्या में कमी, आमदनी में परेशानी, परिश्रम का भरोसा, अगले जन्म में परदेश में जाकर वणिक वृत्ति करेगा।

शुक्र एकादश भाव में—भ्राता खर्चीले, भाई की आयु कम, पुरातत्त्व की हानि, बाहु कमजोर, वीर्यरोग, जीवन में अशान्ति, आयु पर्यन्त हानियाँ, अन्य स्थानों में जीवनाधार शक्ति की प्राप्ति, शत्रु, रोग व कठिनाईयों का हटाने में कूट युक्तियों का प्रयोग, गुप्तचर, दूर की गूढ़ शक्ति का भरोसा। भाई बरबाद कर दे। पिछले जन्म में एक नाव डुबो दी थी जिसमें पन्द्रह व्यक्ति डूबकर मर गए थे, इस कारण दुखी है।

शुक्र द्वादश भाव में—चतुर, साहसी, पुरुषार्थी, लम्बा कद। छोटा भाई बहुत प्रेम व आदर करे, छोटे भाई के कारण मान मर्यादा बड़े, शरीर पुष्ट

रहे, इच्छा मृत्यु, आयु दीर्घ, पराक्रम से चमके, कूटनीति का आदर्श रूप में प्रयोग, पुरतत्त्व का लाभ, दिनचर्या में मस्ती, पत्नी पर अनुचित रीति से शक्ति का प्रयोग, दैनिक रोजगार में कुछ कमी, दूरगामी, दूरदर्शी।

मीन लग्न में शनि

शनि प्रथम भाव में—धन संग्रह में कमजोरी, कभी धन हानि, धन स्थान के सम्पर्क से बहुत आमदनी। सदा प्राप्त होने वाली आमदनी से लाभ। माता की आयु कम, सुख की कमी, सवारी बिक जाए। पुरातत्त्व का लाभ। किसी वृद्ध की मृत्यु। दिनचर्या में मस्ती, अनुचित रीति से धन प्राप्ति। चाचा-ताऊ भी धन प्राप्त करें।

शनि द्वितीय भाव में—पुरुषार्थी। आमदनी से अधिक खर्च, खर्च की बाहुबल से पूर्ति। बाहरी अन्य स्थानों से शक्ति प्राप्त। भाई को लाभ व हानि। विद्या में कमी, सन्तान की हानि, सन्तान का जीवन कष्टमय। सुयश की कमी, प्रभाव में वृद्धि, दिमाग में परेशानी, बाहुबल में सामान्य कमजोरी। भाईयों को भारी आमदनी व बड़े खर्च।

शनि तृतीय भाव में—माता दुखी तथा आयु कम। सुख शान्ति में कमी। आमदनी खर्च बराबर, घर में ही कार्य। देह कृश, शत्रु की हानि, ननसाल में संकट, पिता परेशान। भूमि की प्राप्ति भी तथा भूमि का नुकसान भी। प्रपंच के मामलों को बुरा समझकर काम लेने वाला। साहसी, चाचा-ताऊ भूमि पर अधिकार कर लें।

शनि चतुर्थ भाव में—सन्तान पक्ष में हानि भी लाभ भी, विद्या में हानि भी लाभ भी। अन्य बाहरी स्थान के सम्बन्ध से लाभ, धन संग्रह न हो सके। आमदनी व खर्च बराबर, वैसे बहुत आमदनी, कुटुम्ब में विग्रह। दिमाग में परेशानी। पत्नी संकट में, पत्नी की आयु कम, स्वार्थ की बातें।

शनि पंचम भाव में—कुछ प्रभावशाली परतन्त्रता की शक्ति से लाभ तथा खर्च की शक्ति पाने वाला। ननसाल में हानि, लाभ तथा खर्च दोनों के विषय में दिन दूनी परेशानी। आमदनी का शत्रुओं पर व्यय। कुछ पैतरेबाजी व साहस से कार्य। दिनचर्या में प्रभाव। अन्य स्थान की शक्ति से लाभ।

शनि षष्ठम भाव में—रोजगार में हानि-लाभ बराबर। अन्य स्थान के सम्पर्क से फायदा। पत्नी के विषय में लाभ भी हानि भी। भाग्य के विषय में चिन्ता। देह कृश व परेशान, आमदनी व खर्च की चिन्ता से सुख में कमी, माता को भी सुख में कमी, माता को आयु कम, चाचा-ताऊ पत्नी को सतावें।

शनि सप्तम भाव में—अन्य स्थान के सम्पर्क से पुरातत्त्व का लाभ, जीवन में मस्ती, खर्च व आमदनी के बड़प्पन के ढंग। आयु दीर्घ, गूढ़ व गुप्त विषय से लाभ व उन्नति, धन संग्रह में कमी व हानि। पिता से शत्रुता, पिता की आयु कम, उन्नति के मार्ग में विचित्र कर्म, सन्तान पक्ष से हानि व लाभ। बाएँ पैर पर अनेक तिल।

शनि अष्टम भाव में—अन्य स्थान के सम्पर्क तथा भाग्यशक्ति से खूब आमदनी, सदैव आवश्यकताओं की पूर्ति, भाग्यवान भी, भाग्य में कुछ कमी भी। धर्म में कमजोरी, पुरुषार्थ में वृद्धि, दौड़-धूप की शक्ति, हर प्रकार की कठिनाईयों को मिटाने की तरकीब, सावधान, स्वार्थयुक्त। लाभ का बहुत ख्याल। चाचा-ताऊ भाग्यवान्।

शनि नवम भाव में—पिता को भारी चिन्ता, खर्च की अधिकता से इज्जत सँभालना भारी पड़े। नौकरी लगे और छूटे। राजसमाज में कमजोरी, उन्नति के लिए नाना प्रकार के कर्म, कारोबार में हानि, माता दुखी, पत्नी विषय में लाभ हानि, अन्य स्थान से व परेशानियों से लाभ प्राप्त, चाचा-ताऊ बहुत परेशान। बाईं छाती पर कालापन।

शनि दशम भाव में—अन्य स्थानों के सम्पर्क से खूब लाभ, खर्च की शक्ति से भी फायदा, देह क्लेश, अपने फायदों में भी कुछ कमी, जीवन की दिनचर्या में मस्ती, पुरातत्त्व का लाभ, खर्च तथा लाभ, के कारणों से देह भी परेशान, सन्तान कष्टमय, विद्या में कमी, स्वार्थयुक्त गूढ़ युक्तियों से लाभ। चाचा-ताऊ को भी उत्तम लाभ, अगले जन्म में रेल विभाग में कार्य करेगा।

शनि एकादश भाव में—आमदनी से अधिक खर्च, दुकान बिक जाए। अन्य स्थान के सम्पर्क से लाभ, धन संग्रह न हो, कुटुम्ब में अशान्ति, भाग्य की चिन्ता, यश में कमी, धर्म की हानि, शत्रु पर प्रभाव, कठिनाईयों पर

हावी, ननसाल में हानि, अन्य स्थान में लाभ सोचे। आमदनी चाचा-ताऊ को अधिक। पिछले जन्म में किसी दुकान से लोहा चुराया था।

शनि द्वादश भाव में—देह में दुर्बलता, आयु कम, लाभ और खर्च बराबर, अधिक लाभ अधिक खर्च, पिता से विरोध, भाई से मित्रता पर मित्रता में कमजोरी, पुरुषार्थ, बाहुबल, पत्नी को क्लेश, पत्नी की आयु कम, राजसमाज में उन्नति में बाधा, नौकरी छूटे, बाहरी अन्य स्थानों के सम्पर्क से लाभ। जीवन भर कमावे और सब बराबर करता चले। चाचा-ताऊ नुकसान पहुँचावें।

मीन लग्न में राहु

राहु प्रथम भाव में—आमदनी के विषय में धन की हानि, धन की बार-बार हानि, धन सम्बन्धी परेशानी, कुटुम्ब की हानि व क्लेश, जोखम उठाकर कठिनाई से उन्नति, धन के लिए गुप्त शक्ति का प्रयोग, सहायता माँगना, कभी-कभी अचानक धन के विषय में गहरा धक्का, बड़े परिश्रम से कार्य।

राहु द्वितीय भाव में—पुरुषार्थ से सफलता, बड़ा परिश्रमी, भाई के विषय में परेशानी, पेचीदा तरकीबों से व बड़े साहस से उन्नति, जरूरत से ज्यादा सतर्क, नाजायज तरकीबों से इज्जत व प्रभाव की वृद्धि। अपनी होशियारी की सफलताओं में मस्ती, बड़ा चतुर, चलता पुर्जा, बेफिकर।

राहु तृतीय भाव में—सुख की वृद्धि के लिए बड़े-बड़े संकट, मकान गिर पड़े फिर कुछ दिनों बाद बन जाए। बड़े प्रपंच के भोगों से सुख की साधनाएँ प्राप्त, आडम्बर से फायदा, सुख का दिखावा, सुख साधनों का नाजायज फायदा उठाने की शक्ति। शान्ति में बार-बार विघ्न। घर में ही दुकान परन्तु झगड़ा। फिर भी भाग्योदय तीन बार।

राहु चतुर्थ भाव में—सन्तान कष्ट, विद्या में कमी, कुछ मूर्खता, सन्तान के शरीर में कमी, वृद्धि में परेशानी, विद्या का बोझ, मानसिक चिन्ताएँ फिर भी बुद्धि तथा मन के द्वारा बड़े-बड़े कठिन विषय को हल करना, चिन्तित विचार सन्तान को क्षीण कर दें, सन्तान पर बड़े-बड़े आघात।

राहु पंचम भाव में—शत्रु से परेशानी, शत्रु को तबाह करने वाला, ननसाल में हानि, कठिनाईयों में बड़े धैर्य व चतुराई से कार्य परन्तु विजयी, अपनी परेशानियाँ छिपाकर वातावरण में बड़े प्रभाव तथा धैर्य से कार्य, पेचीदा तरकीबों का प्रयोग, रोगों की परवाह न करे, कटु, स्वार्थी व साहसी, लाभ को शत्रु खाते रहें।

राहु षष्ठम भाव में—रोजी के लिए बड़ी भारी दौड़-धूप, बड़ी चतुराई व छिपाव शक्ति से कार्य। पत्नी दुखी, गृहस्थ में परेशानियाँ, रोजगार में कभी-कभी गहरे संकट, फिर भी पथ पर डटा रहे। इन्द्रिय भोगादिक में कुछ कमी व रुचि, बड़ी आमदनी के लोभ में रोजी बिगड़े।

राहु सप्तम भाव में—जीवन की दिनचर्या में परेशानी, पेट के नीचे अन्दर की तरफ रोग, जीवन में मुसीबतें सहते-सहते बाद में मजबूती व गुजर का अच्छा साधन, पुरातत्त्व की हानि, आयु में कभी-कभी बड़े आघात, महान् गूढ़ ज्ञान की शक्ति का गुप्त भण्डार, चिन्तित। विदेश आने-जाने में अड़चनें। बड़ी आमदनी न हो सके।

राहु अष्टम भाव में—भाग्य में मुसीबतें, धर्म की हानि, शील दया का विचार न कर सके। भाग्य में कभी-कभी भयानक आघात, पेचीदी व परेशानी की युक्तियों से उन्नति, यश में कमी, ईश्वर में अविश्वास, स्वार्थ सिद्धि, ऊपरी धर्म का पालन। बड़ी आमदनी का धोखा।

राहु नवम भाव में—पिता से क्लेश व चिन्तित, राजसमाज में हानि व क्लेश, अवनति के मार्ग का अनुसरण, इज्जत आबरू पर कभी-कभी बड़े-बड़े आघात, गुप्त व भेद वाले कर्म, प्रशंसा की हानि। उन्नति के लिए अनाधिकार कर्म की चेष्टा, पिता से अशान्ति, पिता दुखी, कुछ परतन्त्रता में परेशानियों के कर्म।

राहु दशम भाव में—वित्त से अधिक लाभ का प्रयत्न। मुफ्त का सा धन चाहना, लाभ के लिए गुप्त चालें व दृढ़ता, अपने स्वार्थ के सामने दूसरे का तनिक भी ध्यान न रहना, लाभ में परेशानी व घोर परिश्रम, लाभ के लिए बड़ी-से-बड़ी कठिनाईयों की भी परवाह न करना। अगले जन्म में भैंस बनेगा व अपने स्वामी को दूध देकर खूब सेवा करेगा।

राहु एकादश भाव में—बहुत बेजा खर्च। खर्च विषय में परिश्रम व परेशानियाँ, परेशानियों के बाद मजबूती। खर्च को गुप्त तरकीबों व होशियारी से पूर्ण करना। दूर के सम्बन्ध में अन्य व्यक्तियों से बड़ी पेचीदा गुप्त तरकीबों से कार्य, खर्च विषय में कुछ परतन्त्रता व निराशा, अन्य स्थान के विषय में कुछ प्रपंच, बड़ी आमदनी बड़े खर्च में बदल जाए। पिछले जन्म में ठगों के साथ रहता था जिसके कारण इस जन्म में धन उगा जा रहा है।

राहु द्वादश भाव में—देह की चिन्ता, आमदनी की चिन्ता, देह में कमी, देह में आघात, तथा कुछ कमजोरी व बन्धन, आदर्श चतुराई से कार्यरत, देह की वृद्धि व स्वच्छन्दता के लिए बड़े-बड़े कष्टसाध्य कर्म, मान प्रतिष्ठा व नाम रखने के लिए बहुत बड़ी जोखम व मुसीबत सहना, गुप्त तरकीबों के बल से वृद्धि।

मीन लग्न में केतु

केतु प्रथम भाव में—धन के विषय में बड़ी-बड़ी हानियाँ, बड़ी कठिनाईयाँ, धन की कमी से मार्मिक वेदना, कुटुम्ब में कमी व क्लेश, धन प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम। धन के लिए गुप्त शक्ति का प्रयोग। अन्त में धन की शक्ति से मजबूत शक्ति। अशान्त, पिता की सम्पत्ति में बँटवारा।

केतु द्वितीय भाव में—बहुत पराक्रमी, भारी दौड़-धूप, भाई से अशान्ति व क्लेश, बाहुबल की बड़ी शक्ति, गुप्त साहस, पुरुषार्थ के मामलों में संकटों का सामना भी किन्तु महान् धैर्य से कार्य। अन्ध विश्वास व अन्धाधुन्ध शक्ति का प्रयोग। इसे असम्भव कुछ भी नहीं।

केतु तृतीय भाव में—माता की आयु बहुत कम, मातृ स्थान से वियोग, सुख शान्ति की कमी, संकीर्ण स्थान में निवास, सहयोगियों से कष्ट, अशान्तप्रद परिश्रम, झंझट में फँसना, लघुजाति से सम्पर्क, लघु रीति से ही अन्त में सुख के साधन। भूमि मकान की हानि। सुख प्राप्ति के लिए अनुचित गुप्त शक्ति से कार्य। जमीन में धन गाढ़ कर भूल जाए।

केतु चतुर्थ भाव में—सन्तान कष्ट, सन्तान को पुष्ट आहार न मिल

सके, सन्तान को उदर रोग, विद्या में कमी व मानसिक चिन्ताएँ, बड़ी-बड़ी अड़चनें व रुकावटें, अन्त में विद्या व सन्तान की मजबूत शक्ति प्राप्त। विद्या सन्तान व दिमाग व वाणी पर कभी-कभी भारी आघात। निज मन्तव्य को समझाने की कमी, सन्तान को थोड़ा धन प्राप्त।

केतु पंचम भाव में—शत्रु का नाश, ननसाल में प्रभाव वृद्धि, महान परिश्रम, शत्रु रोग व विपक्षियों से अशान्ति, परन्तु महान् धैर्य, मुसीबतों पर विजय, बड़ी-बड़ी कठिनाईयों का छेदन। गुप्त शक्ति व गुप्त युक्ति व साहस से बड़े-बड़े कार्य हल, शील की परवाह न करे, स्वार्थी, हठयोगी।

केतु षष्ठम भाव में—पत्नी को अशान्ति, उदर रोग, विशेष भोग, भारी परिश्रम, फिर भारी अन्दरूनी मजबूती, गुप्त शक्ति व निरन्तर परिश्रम में रोजगार में तरक्की, भोगादिक में गुप्त युक्तियों का लाभ, रोजगार में अनाधिकार लाभ की चेष्टा, अन्ध विश्वास। पत्नी धन बिगाड़े।

केतु सप्तम भाव में—जीवन की दिनचर्या में अशान्ति। पुरातत्त्व की प्रकट शक्ति में हानि परन्तु बाद में कठिन परिश्रम से प्राप्ति। गुदा विकार। आयु पर निराशाजनक आघात। गूढ़ शक्ति के बल से गुप्त साहस का आनन्द। प्रकट में चिन्ताएँ, दृढ़ सिद्धान्त हठी। पिता का धन नष्ट।

केतु अष्टम भाव में—भाग्य में चिन्ताएँ, धर्म हानि, उन्नति के मार्ग में बाधा, महान् परिश्रम, महान् धैर्य। गुप्त योजनाओं का बल। सुयश में कमी। स्वार्थ सिद्धि में धर्म-अधर्म की परवाह न करे। अशान्त, ईश्वर के विश्वास में कमी परन्तु पिता का धन भाग्य में लिखा है।

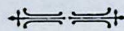
केतु नवम भाव में—राजसमाज में भारी दौड़-धूप। परिश्रम से उन्नति। पिता से हठधर्मी। अन्धाधुन्धी के साथ बेधड़क कार्य। पुरुषार्थ तथा गुप्त शक्ति से महान् कार्यों का हाल। प्रपंच की शक्ति, अनाधिकार रूप से अधिकार पाने का प्रयत्न। प्रतिष्ठा कारोबार व उन्नति के लिए उग्रकर्म। पिता का विरोधी, पिता ने धन दबा रखा है।

केतु दशम भाव में—धन प्राप्ति के लिए महान् उद्योग। धन प्राप्ति में साहस व बहादुरी। धनवान, गुप्त शक्ति से बहुत लाभ। मुफ्त का सा धन पाने की योजनाएँ। स्वार्थ के लिए किसी का नफा-नुकसान न देखे। आमदनी में

कमी व दिक्कतें फिर भी अन्धाधुन्ध शक्ति का प्रयोग। सन्तान को पेट के रोग। अगले जन्म में उद्योगपति बनेगा।

केतु एकादश भाव में— भारी खर्च, सब धन खर्च, खर्च की चिन्ता। बड़े परिश्रम से खर्च चले। अन्य स्थानों से लाभ। अन्धाधुन्ध शक्ति का प्रयोग, अन्य स्थानों में भी अशान्ति। खर्च विषय में बड़ी परेशानी, बाद में बड़ी मजबूती, बड़ी बेफिकरी, गुप्त शक्ति से अन्य स्थानों में सफलता। पिता का धन मारा जाए, ऋणी। पिछले जन्म में मछलियों का शिकार किया करता था इसलिए जीवन निशाओं से घिरा और अशान्त है।

केतु द्वादश भाव में— कभी-कभी देह पर आघात। खतरों से गुजरना, देह की सुन्दरता में कमी कुछ परतन्त्रता, हृदय में दृढ़ता, अन्दर शक्ति का संचार। गुप्त रीति से निज शक्ति का प्रयोग। मुसीबतों में अपार धैर्य, बड़प्पन। तामसी शक्ति। पैतृक सम्पत्ति प्राप्त।



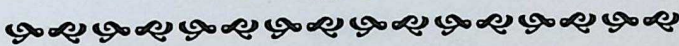
द्वितीय भाग

दशानन कृत ज्योतिष के



सुनहरी

सिद्धान्त



प्रिन्टिंग
मशीन

राशियाँ

राशियों के स्वामी

राशि	स्वामी
१. मेष	मंगल
२. वृष	शुक्र
३. मिथुन	बुध
४. कर्क	चन्द्रमा
५. सिंह	सूर्य
६. कन्या	बुध
७. तुला	शुक्र
८. वृश्चिक	मंगल
९. धनु	बृहस्पति
१०. मकर	शनि
११. कुम्भ	शनि
१२. मीन	बृहस्पति

ग्रहों के लिंग

पुरुष : सूर्य, मंगल, बृहस्पति

स्त्री : चन्द्र, शुक्र

नपुंसक : बुध, शनि

राहु-केतु ग्रह कुण्डली में जिस ग्रह का प्रतिनिधित्व करते हैं उनके अनुसार ही उनका लिंग जानना चाहिए।

ग्रहों के प्राकृतिक स्वभाव

बृहस्पति, शुक्र, चन्द्र, बुध प्राकृतिक स्वभाव में शुभ, सूर्य क्रूर, शनि, मंगल, राहु, केतु पापी, चन्द्र क्षीण तथा पापी ग्रह से युक्त बुध प्राकृतिक स्वभाव में पापी।

ग्रहों की दृष्टियाँ

प्रत्येक ग्रह जिस राशि में जितने अंश हो वहाँ से ६० अंश, ९० अंश, १२० अंश, १८० अंश (तृतीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम स्थानों पर उतने ही अंशों) पर पूर्ण दृष्टि डालता है। इसके अतिरिक्त मंगल की २१० अंश (अष्टम) पर पूर्ण दृष्टि होती है।

प्रत्येक ग्रह की दृष्टि अपने से दोनों ओर होती है। अतः तृतीय के दूसरी ओर एकादश, चतुर्थ के दूसरी ओर दशम् में, पंचम से दूसरी ओर नवम दृष्टि होती है। मंगल की अष्टम के दूसरी ओर पष्ठम् दृष्टि होती है। ग्रहों की दृष्टियों का दायरा (Ora) नीचे के चक्र से स्पष्ट है।

दृष्टि	कितने अंश से दृष्टि शुरू होती है	कितने अंश तक दृष्टि रहती है	दृष्टि दायरा
६० अंश	५४ अंश	६६ अंश	६ अंश
९० अंश	८४ अंश	९६ अंश	६ अंश
१२० अंश	११४ अंश	१२६ अंश	६ अंश
१८० अंश	१७२ अंश	१८८ अंश	८ अंश
२१० अंश	२०४ अंश	२१६ अंश	६ अंश

शुभ दृष्टियाँ

६० अंश, १२० अंश (तृतीय, पंचम)

अशुभ दृष्टियाँ

९० अंश, १८० अंश (चतुर्थ, सप्तम)

नोट : पापी ग्रहों की चतुर्थ, सप्तम दृष्टि अधिक प्रबल होती है।

कम प्रभावी दृष्टियाँ

अर्द्ध-वर्ग दृष्टि : यह दृष्टि ४५ अंश की है और अशुभ है।
दृष्टि का दायरा २ अंश है।

अर्द्ध-तृतीय दृष्टि : यह ३० अंश की दृष्टि है तथा शुभ है। दृष्टि
का दायरा २ अंश है।

षष्ठ-दृष्टि : यह दृष्टि १५० अंश की है तथा अशुभ है।
दृष्टि का दायरा २ अंश है।

अर्द्ध-नवम् : यह दृष्टि १३५ अंश की है और अशुभ है।
दृष्टि का दायरा २ अंश है।

उपरोक्त दृष्टियाँ भी दोनों ओर होती हैं।

ग्रहों के दिन

सूर्य का दिन : रविवार

चन्द्र का दिन : सोमवार

मंगल का दिन : मंगलवार

बुध का दिन : बुधवार

बृहस्पति का दिन : गुरुवार (वीरवार)

शुक्र का दिन : शुक्रवार

शनि का दिन : शनिवार

राहु का दिन : जन्म कुण्डली में राहु जिस राशि में हो उस
राशि के स्वामी का जो दिन हो वही दिन राहु
का होता है। उदाहरण—यदि किसी कुण्डली
में राहु धनु राशि में हो तो राहु का दिन
बृहस्पतिवार होगा।

केतु का दिन : राहु की भांति ही केतु का दिन ज्ञात करना
चाहिए।

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

ग्रहों के नक्षत्र

- सूर्य के नक्षत्र : कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा ।
 चन्द्र के नक्षत्र : रोहिणी, हस्त, श्रवण ।
 मंगल के नक्षत्र : मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा ।
 बुध के नक्षत्र : आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती ।
 बृहस्पति के नक्षत्र : पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद ।
 शुक्र के नक्षत्र : भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वा आषाढ़ा ।
 शनि के नक्षत्र : पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद ।
 राहु के नक्षत्र : आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा ।
 केतु के नक्षत्र : अश्वनी, मघा, मूल ।

भाव

- केन्द्र : प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव ।
 पणफर : द्वितीय, पंचम, अष्टम और एकादश भाव ।
 अपोक्लिम : तृतीय, षष्ठ, नवम और द्वादश भाव ।
 त्रिकोण : नवम और पंचम ।
 मारक : द्वितीय और सप्तम भाव ।
 त्रिकस्थान एवं
 दुष्ट स्थान : षष्ठ, अष्टम और द्वादश भाव ।
 नेत्र संज्ञक : द्वितीय एवं द्वादश भाव ।
 उपचय : तृतीय, षष्ठ, दशम और एकादश भाव ।

ग्रहों के यन्त्र, तन्त्र एवं रत्न

सूर्य यन्त्र

४०	३५	३६
३३	३७	४१
३८	३९	३४

चन्द्र यन्त्र

७६	८१	७४
७५	७७	७९
८०	७३	७८

मंगल यन्त्र

३६	३१	३२
२९	३३	३७
३४	३५	३०

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

२४१

बुध यन्त्र

७०	६५	६६
६३	६७	७१
६८	६९	६४

बृहस्पति यन्त्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

शुक्र यन्त्र

५६	६१	५४
५५	५७	५९
६०	५३	५८

शनि यन्त्र

४	९	२
३	५	७
८	१	६

राहु यन्त्र

१३	८	१५
१४	१२	२०
९	१६	११

केतु यन्त्र

२४	९	१६
१५	१३	१२
२०	२७	१२

ग्रहों के मन्त्र

१. सूर्य—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ।
२. चन्द्र—ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः ।
३. मंगल—ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः ।
४. बुध—ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ।
५. गुरु—ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः ।
६. शुक्र—ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः ।
७. शनि—ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः ।
८. राहु—ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः ।
९. केतु—ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः ।

नोट—उपरोक्त नवग्रहों के मन्त्रों के अतिरिक्त शास्त्रों में वर्णित ग्रहों के अन्य मन्त्रों का प्रयोग भी जाप के वास्ते किया जा सकता है ।

यन्त्रों पर ग्रहों की जाप संख्या

जो ग्रह नीच का हो तथा अशुभ ग्रहों से अशुभ दृष्ट हो उसके यन्त्र पर २१,००८ बार जाप करना चाहिए ।

जो ग्रह नीच को हो उसके यन्त्र पर ११,००८ बार जाप करना चाहिए ।

जो ग्रह अशुभ दृष्ट अथवा शत्रु क्षेत्री हो उसे १,००८ बार जाप करना चाहिए।

यन्त्रों का जाप कब प्रारम्भ करना चाहिए

यन्त्र पर ग्रह का जाप उसके दिन तथा होरा से प्रारम्भ करना चाहिए। राहु व केतु के दिन जातक की कुण्डली से ज्ञात करना तथा उस ग्रह के दिन व होरा में जाप प्रारम्भ करना चाहिए।

यन्त्र किस धातु में धारण करना चाहिए

सूर्य, मंगल, बुध, शनि, राहु, केतु के यन्त्र चाँदी में धारण करना चाहिए। बृहस्पति यन्त्र ताँबे में धारण करना चाहिए।

चन्द्र, शुक्र के यन्त्र ताँबे या सोने में धारण करना चाहिए।

नोट—यदि धातु का स्वामी जातक की कुण्डली में नीच का शत्रु क्षेत्री अथवा अशुभ ग्रहों से दृष्ट-युक्त हो तो यन्त्र सप्त-धातु में धारण करना चाहिए।

यन्त्र कब धारण करना चाहिए

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि के यन्त्र उन ग्रहों के दिन तथा उनकी होरा में धारण करने चाहिए।

राहु व केतु के दिन जातक की कुण्डली से ज्ञात करना तथा उस ग्रह के दिन व होरा में यन्त्र धारण करना चाहिए।

ग्रहों के रत्न

सूर्य—लाल माणिक्य

चन्द्र—मोती

मंगल—लाल मूँगा

बुध—पन्ना

बृहस्पति—पीला पुखराज

शुक्र—हीरा

शनि—नीलम या नीला पुखराज

राहु—गोमेद

रत्नों पर मन्त्रों का जाप

रत्नों का मन्त्रों का जाप कुण्डली में ग्रह के बलाबल की परीक्षा करके १,००८ से लेकर २१,००८ बार तक आवश्यकता अनुसार करना चाहिए।

रत्नों पर जाप कब आरम्भ करना चाहिए

रत्नों पर जाप उसके ग्रहों के दिन तथा होरा से आरम्भ करना चाहिए।

रत्न किस धातु में धारण करना चाहिए

लाल माणिक्य तथा लाल मूँगा सोने अथवा ताँबे में, मोती चाँदी अथवा कांस्य में, पन्ना स्वर्ण अथवा कांस्य में, हीरा चाँदी में, पीला पुखराज सोना अथवा चाँदी में, नीलम लोहा अथवा स्टील में, राहु सीसा अथवा सप्त धातु में तथा केतु लोहा अथवा सप्त धातु में पहनना चाहिए।

रत्न कब धारण करना चाहिए

रत्न ग्रहों के स्वामियों के दिनों में तथा उनकी होरा में धारण करना उत्तम है।

रत्न धारण से पहले शुद्धि

लाल मूँगे को रीठे की झाग में, लाल माणिक्य को नींबू के रस में तथा अन्य रत्नों को कच्चे दूध में तीन घण्टे भिगोकर फिर शुद्ध पानी से धोकर उपरोक्त विधि से धारण करें।

रत्न किस अंगुली में धारण करना चाहिए

रत्न ग्रहों की अंगुलियों में अथवा ग्रहों के मित्रों की अंगुलियों में धारण करना चाहिए। राहु और केतु कुण्डली में जिन ग्रहों का प्रतिनिधित्व करते हों उन ग्रहों की अंगुलियों में धारण करना चाहिए।

ग्रहों की वस्तुएँ

सूर्य—सोना, मतान्तर से ताँबा, गेहूँ, गुड़, केसर, खस-खस, घी, गुलाबी रंग के वस्त्र, साठी चावल, लाल चन्दन, लाल गुलाब, लाल रंग की गाय या कुत्ता, गुलाबी पगड़ी, तेजफल, लाल कमल का फूल, नारियल, लाल माणिक्य।

चन्द्र—चाँदी, कांस्य, दूध, दही, चावल, शंख, सफेद सीपी, सफेद वस्त्र, निर्मल जल, कपूर, सफेद गाय, सफेद कुत्ता, खरगोश, सफेद बिल्ली, सफेद चन्दन, चकोर, हंस, बर्फ, सफेद मोती ।

मंगल—ताँबा, मतान्तर से सोना, केसर, कस्तूरी, गेहूँ, लाल, चन्दन, लाल गुलाब, सिन्दूर, शहद, लाल पुष्प, शेर, मृगशाला, मसूर की दाल, लाल कनेर, लाल मिर्च, लाल पत्थर, लाल मूँगा ।

बुध—स्वर्ण, मतांतर से कांस्य, स्टेशनरी का सामान, हरे वस्त्र, केला, हरी सब्जियाँ, मूँग की दाल, तोता, मिट्टी का घड़ा, घी, हरे रंग का पत्थर, हरे रंग की वस्तुएँ एवं पन्ना ।

बृहस्पति—सोना, मतांतर से चाँदी, दाल चना, हल्दी, केसर, पीला रंग, पीली वस्तुएँ, लुकाठ, कांस्य, पीत पुष्प, कस्तूरी, सेव, मेंढक, घोड़ा घी, पीपल का वृक्ष, पीली मिट्टी, पीला पुखराज ।

शुक्र—चाँदी, सोना, आभूषण, सफेद चन्दन, सुगन्धित द्रव्य, श्वेत पुष्प, दूध, मिश्री, श्वेत मिट्टी, कामधेनु गाय, दही, चिड़िया, अभ्रक, आलू, श्वेत पत्थर, हीरा ।

शनि—लोहा, लोहे की वस्तुएँ, नीले वस्त्र सरसों का तेल, काले माश, काली मिर्च, काले वस्त्र, काले चने, काला सुरमा, भैंस, काला साँप, चमड़ा, कुलथी, गर्म मसाले, पत्थर का कोयला, नीले पुष्प, नीला पत्थर, नीलम ।

राहु—सीसा, सर्प, काला रंग, काले तिल, जौ, सरसों का तेल, काले रंग के पुष्प, हाथी, कच्चे कोयले, अभ्रक, मछली, गर्म कपड़े, बिजली के यन्त्र, नील गाय, धुआँ, कुण्डली में राहु जिस ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है उस ग्रह की वस्तुएँ गोमेद ।

केतु—लोहा, चूहा, पलंग, चितकबरा कुत्ता, चितकबरे रंग, सर्प, पेशाब, चितकबरा कम्बल, छिपकली, काले-सफेद तिल, चितकबरी गाय, श्मशान भूमि, चितकबरा पत्थर । कुण्डली में केतु जिस ग्रह का प्रतिनिधित्व करता हो उस ग्रह की वस्तुएँ, लहसुनियाँ ।

शुभ तथा अशुभ ग्रहों का निर्णय

जो ग्रह उच्च, मूल त्रिकोण, स्वराशि मित्र राशि में शुभ ग्रहों से युक्त तथा शुभ ग्रहों की शुभ दृष्टियों (त्रिक) के अधिपति होकर अशुभ एवं पापी ग्रहों से युक्त हों तथा अशुभ अथवा पापी ग्रहों की अशुभ दृष्टियों (चतुर्थ, सप्तम) से दृष्ट हों वह ग्रह कुण्डली में अशुभ कहे जाते हैं।

आगे के अध्यायों में ग्रहों का फलादेश दिया गया है। शुभ ग्रह जातक को अपनी भावस्थिति तथा भावाधिपत्य के अनुसार शुभ फल प्रदान करते हैं अतः शुभ ग्रह की शुभता को और बढ़ाने के लिए और प्रबल करना चाहिए। इसके लिए प्रत्येक भाव में प्रत्येक ग्रह को प्रबल करने के लिए उपाय दिए गए हैं।

इसी प्रकार अशुभ ग्रह कुण्डली में अपनी भावस्थिति तथा भावाधिपत्य के अनुसार अशुभ फल ही देते हैं। अतः अशुभ ग्रहों के दुष्प्रभावों को रोकने के लिए उनके उपाय भी दिए गए हैं।

शुभ ग्रह अपनी दशा अंतर्दशा में, जब अन्य ग्रह उनके नक्षत्रों में भ्रमण करते हैं, जब गोचर के ग्रह इन ग्रहों को शुभ दृष्टियों से देखते हैं अथवा युति करते हैं तब ये उस समय जातक को शुभ फल प्रदान करते हैं और इसी प्रकार अशुभ ग्रह अपनी दशा-अंतर्दशा, उनके नक्षत्रों में अन्य ग्रहों के भ्रमण से, अशुभ दृष्टियों से दृष्ट होने से तथा गोचर के अशुभ ग्रहों की युति के काल में अशुभ फल देते हैं।

अतः आवश्यकतानुसार शुभ ग्रहों के काल में शुभ फलों में वृद्धि करने के लिए उपाय करना तथा जब-जब अनिष्ट ग्रहों का समय आए तब-तब जातक को उन अनिष्ट ग्रहों के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय करना लाभप्रद होगा।

उपायों के बारे में

पिछले अध्याय में हम विचार कर चुके हैं कि कुण्डली में शुभ ग्रह जातक को शुभ फल प्रदान करते हैं और अशुभ ग्रह अशुभ फल ही देते हैं। अतः शुभ ग्रह जातक के मित्र तथा अशुभ ग्रह उसके शत्रु होते हैं। मित्र को

गले लगाना चाहिए तथा शत्रु से दूर ही रहना चाहिए ताकि वह जातक पर प्रहार करके हानि न पहुँचा सके।

शत्रु के प्रहार से बचने के लिए यह आवश्यक है कि या तो शत्रु से दूर ही रहा जाए अथवा उसे किसी प्रकार निर्बल कर दिया जाए ताकि वह प्रहार के योग्य ही न रह सके या फिर मित्र को और बलवान किया जाए और बलवान मित्र की सहायता से शत्रु के प्रहार का मुकाबला किया जा सके।

अतः शुभ ग्रहों को और बलवान करने के लिए उनके आधिपत्य को वस्तुओं को शरीर पर धारण करना प्रयोग करना अथवा अपने पास रखना चाहिए।

इसी प्रकार अशुभ ग्रहों के अनिष्ट से बचने के लिए अशुभ ग्रहों की वस्तुओं का त्याग, उन वस्तुओं को न रखना तथा उन वस्तुओं का दान के रूप में वितरण करना उचित है ताकि अशुभ ग्रह जातक पर प्रहार न कर सकें तथा उसे हानि न पहुँचा सकें।

उपरोक्त सिद्धान्त के अनुसार ही प्रस्तुत पुस्तक में शुभ ग्रहों को प्रबल करने तथा अशुभ ग्रहों को अप्रभावी करने के लिए उपयुक्त उपाय दिए गए हैं जिनसे जातक लाभान्वित हो सकता है।

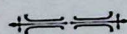
ग्रहों का फलादेश

कुण्डली निर्माण

पंचाङ्ग की सहायता से राशि चक्र, ग्रह स्पष्ट तथा भाव स्पष्ट करना। फिर भाव चक्र में ग्रहों की पूर्ण परीक्षा करके शुभ तथा अशुभ ग्रहों का निर्णय करना।

फलादेश ज्ञान

आगे के अध्यायों में वर्णित द्वादश भावों में जातक के शुभ ग्रहों का फलादेश 'शुभ' शीर्षक के अन्तर्गत तथा अशुभ ग्रहों का फलादेश 'अशुभ' शीर्षक के अन्तर्गत समझें।



सूर्य



सूर्य प्रथम भाव में

शुभ—जिस जातक के सूर्य प्रथम भाव में हो वह सुंदर निरोग, चरित्रवान, दयालु, स्वतन्त्र विचारों वाला, जीवन में अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने वाला, जीवन की कठिनाईयों को हँसते-हँसते पार करने वाला, राज दरबार में सम्मानित, उच्च प्रतिष्ठित, सत्तारूढ़ व्यक्तियों तथा उच्च अधिकारियों से पूर्णमेल मिलाप रखनेवाला, पिता के लिए भाग्यकारक, साधारण कुल में जन्मा जातक भी जीवन में उच्चपद प्राप्त करता है। सूर्य की शुभता में वृद्धि हेतु उपाय १, २, ४, ५, ७, ९, १७, १८, १९ आदि करें।

अशुभ—जातक क्रोधी, दुर्वचन बोलने वाला, ब्लड प्रेशर का रोगी, नेत्र रोगी, स्त्री से कलह करने वाला, माता के स्वास्थ्य के लिए अशुभ, छोटे भाई के धन का नाश करने वाला, रोगी तथा दुखी होता है। सरकारी अधिकारियों से झगड़े का भय, वाहन से चोट का भय तथा विद्या में विघ्न पड़ता है। अशुभ सूर्य से अनिष्ट निवारण हेतु उपाय २१, २२, २८, ३६, ४० आदि करें।

सूर्य द्वितीय भाव में

शुभ—दयालु, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाला, कारखाने या

फैक्ट्री का मालिक अथवा मकैनिक, सरकारी नौकर, माता के लिए शुभ, धनवान, वाहन से युक्त तथा गृहस्थ जीवन सुखमय तथा आनन्दमय होता है। जातक के छोटे भाई अथवा बहन के विदेश जाने का योग होता है। जातक के पुत्र निरोग, बुद्धिमान तथा उच्च पदों पर आसीन होते हैं। सूर्य की शुभता में वृद्धि हेतु उपाय १, २, ३, ७, १२, १३, १५, १७, १८, १९ आदि करें।

अशुभ—जातक के अन्य स्त्रियों के साथ अवैध सम्बन्ध होते हैं तथा वह उन पर धन नाश करता है। जातक की स्त्री को ज्वर तथा महान कष्ट, भूमि सुख अल्प होता है। बुआ, मासी आदि से झगड़ा तथा गुदा में रोग होता है। जातक पिता के लिए रोगकारक तथा भाईयों के धन का नाश करता है। अशुभ सूर्य के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय २१, २२, २६, २८, ३२, ३५, ३६, ४०, ४१ आदि करें।

सूर्य तृतीय भाव में

शुभ—पक्के इरादे वाला, साहसी, समाज में सम्मानित, प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला, व्यापार में निरन्तर वृद्धि करने वाला, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, मुकद्दमे तथा झगड़ों में विजय प्राप्त करने वाला, भाई के लिए लाभदायक तथा भाइयों से लाभ प्राप्त करने वाला एवं उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। जातक के पुत्र धनवान होते हैं तथा जातक के लिए लाभदायक होते हैं। जातक गणित का विद्वान तथा उत्तम ज्योतिषी होता है। सूर्य की शुभता में वृद्धि हेतु उपाय १, ७, ११, १७, १८, १९ आदि करें।

अशुभ—प्रत्येक कार्य में बाधा, लड़ाई-झगड़ों में धन नाश, पड़ोसियों तथा भाईयों से झगड़ा, माता से वियोग, पिता के लिए कष्टदायक तथा सन्तान के लिए भी अशुभ होता है। जातक पर झूठा इल्जाम लगता है जिससे उसे समाज में अपमानित होना पड़ता है। अशुभ सूर्य के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय २१, २२, २५, २८, ३६, ३८, ४०, ४१ आदि करें।

सूर्य चतुर्थ भाव में

शुभ—जातक पृथ्वी जायदाद का स्वामी तथा पृथ्वी जायदाद के

व्यापार में लाभ प्राप्त करने वाला होता है। भ्रातृपक्ष से धन तथा भूमि प्राप्त होती है। जातक अपने सभी लक्ष्यों में सफलता प्राप्त करता है। जातक का विदेश यात्रा का योग होता है। जातक अपनी स्त्री से लाभ प्राप्त करता है अथवा उसकी स्त्री नौकरी करती है। जातक व्यापार में सफलता प्राप्त करने वाला एवं वाहन युक्त होता है, सूर्य की शुभता में वृद्धि हेतु उपाय १, ४, ७, ८, १०, १४, १६, १७, १८, १९, २० आदि करें।

अशुभ—जातक के प्रत्येक कार्य में बाधा उत्पन्न होती है। ब्लड प्रेशर का रोगी होता है। चोरी का स्वभाव पड़ सकता है। धन का विभिन्न तरीकों से नाश होता है। माता का सुख अल्प होता है। गृहस्थ जीवन दुःखमय, स्त्री कलह तथा स्त्री से अपमान का सामना करना पड़ता है। वाहन से दुर्घटना का भय होता है। अशुभ सूर्य के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय २१, २२, २७, २८, ३१, ३६, ३७, ३९, ४० आदि करें।

सूर्य पंचम भाव में

शुभ—जातक जुए सट्टे में जीतने वाला तथा लाटरी का योग है। फिल्म उद्योग से धन लाभ प्राप्त करने वाला, सन्तान से धन-प्राप्ति तथा सन्तान द्वारा सेवा लाभ प्राप्त करने वाला, माता से धन लाभ प्राप्त करने वाला उच्च विद्या की प्राप्ति करने वाला, यात्रा से लाभ तथा अचानक धन की प्राप्ति करने वाला होता है। सूर्य की शुभता में वृद्धि हेतु उपाय १, ७, ११, १६, १७, १८, १९ आदि करें।

अशुभ—प्रेम प्रणय में असफलता तथा अपमान, पुत्रों द्वारा विरोध तथा संतान हानि अथवा जातक को संतान सम्बन्धी चिन्ता, अचानक धन हानि, मामा तथा मासी के लिए अशुभ एवं उदर रोगी होता है। अशुभ सूर्य के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय २१, २२, २६, ३१, ३२, ३६, ३७, ४० आदि करें।

सूर्य षष्ठम भाव में

शुभ—जातक चुनाव में विजय प्राप्त करने वाला, मुकद्दमे तथा झगड़े में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, इरादे का पक्का, बड़े परिवार

में रहने वाला, दूसरों से प्रशंसा का इच्छुक, पिता के लिए भाग्यकारक, सन्तान की मन लगाकर सेवा करने वाला, समाज में सम्मानित तथा अच्छी सरकारी नौकरी प्राप्त करनेवाला होता है। जातक उच्चकोटि का डॉक्टर अथवा कैमिस्ट होता है। जातक का जन्म अपने पैतृक घर से बाहर होता है। सर्विस में तबदीली होती है जातक का भाग्योदय सन्तानोत्पत्ति के पश्चात् होता है, सूर्य की शुभता में वृद्धि हेतु उपाय ६, १३, १६ करें।

अशुभ—जातक हृदय रोगी, कृश शरीर, अंग-भंग का भय, सरकारी अधिकारियों से परेशानी, झगड़े मुकद्दमों में धन नाश, शरीर दुबला पतला, दादी के लिए अशुभ होता है। जातक को अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। अशुभ सूर्य के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय २१, २२, २४, २५, २८, ३४, ३६, ३८, ४० आदि करें।

सूर्य सप्तम भाव में

शुभ—जातक का विवाह के पश्चात् भाग्योदय होता है तथा सुन्दर स्त्री की प्राप्ति होती है। जातक की स्त्री अभिमानी तथा प्रभावशाली होती है। व्यापार में लाभ, उत्तम व्यापारी, यदि कुण्डली में नौकरी का योग हो तो जातक अच्छी नौकरी प्राप्त करता है। लड़ाई-झगड़े तथा मुकद्दमे में दूसरे पक्ष से समझौता होता है। हिस्सेदारी में लाभ तथा पिता के लिए शुभ होता है। सूर्य की शुभता में वृद्धि हेतु उपाय १, ४, ७, १०, १६, १७, १८, १९ आदि करें।

अशुभ—विवाह में विलम्ब, पति-पत्नी दोनों का चरित्र सन्देहात्मक, जातक पत्नी के अधीन रहने वाला, उसके दुष्चरित्र स्त्रियों के साथ अवैध सम्बन्ध होते हैं परिणाम स्वरूप उसको गुप्त रोग होते हैं। जातक की स्त्री रोग ग्रस्त रहती है। स्त्री को मासिक धर्म में कष्ट, पति-पत्नी में झगड़ा अथवा तलाक का योग, जातक की दो शादियों का योग, आँख का रोगी, सरकारी अधिकारियों से परेशानी तथा सन्तान के लिए अशुभ होता है। अशुभ सूर्य के निवारण हेतु उपाय २१, २२, २६, २८, ३१, ३६, ३७, ४० आदि करें।

सूर्य अष्टम भाव में

शुभ—विवाह के पश्चात् भाग्योदय, निरोग शरीर, लम्बी आयु, स्त्री पक्ष से धन की प्राप्ति, हिस्सेदारी के व्यापार में लाभ, शोधकर्ता, गुप्त विद्याओं का ज्ञाता, तपस्वी, समाज में सम्मानित एवं उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा परोपकारी होता है। सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु उपाय ६, १३, १६ आदि करें।

अशुभ—मुकद्दमें झगड़े में धन हानि, स्त्री पक्ष के धन का नाश, परस्त्री रत, स्त्रियों से अपमानित, अपनी स्त्री द्वारा विरोध, पत्नी की अल्पायु तथा अर्ध-नपुंसक तथा रोगी होता है। सूर्य के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय २१, २२, २८, ३०, ३६, ३९, ४० आदि करें।

सूर्य नवम भाव में

शुभ—जातक धनी, धार्मिक विचारों वाला, धार्मिक संस्थानों को स्थापित करने वाला, उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला, नए विषयों की खोज करने वाला, अपने भाग्य का स्वयं निर्माता, परिवार जनों का पोषक एवं सेवक, समाज सुधारक, उच्चपद पर प्रतिष्ठित, पिता और गुरु का भक्त, लम्बी आयु वाला, जातक के परिवार जनों की दीर्घायु होती है। उत्तम वैद्य अथवा डॉक्टर बनने का योग होता है। सूर्य की शुभता में वृद्धि हेतु उपाय १, ७, १५, १७, १८, १९ आदि करें।

अशुभ—शुभ फल न्यून होते हैं। जातक मूडी होता है, पिता के भाग्य के लिए हानिकारक, ससुराल के धन का नाशक तथा यात्रा में हानि होती है। विदेश में धन नाश होता है। पिता से कलह रहती है। जातक के साले-सालियां उसके विरोधी होते हैं। सूर्य के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय २१, २२, २३, २८, २९, ३३, ३६, ४० आदि करें।

सूर्य दशम भाव में

शुभ—सफल राजनीतिज्ञ, राजा अथवा राजा के समान, बड़ा लीडर,

स्वतन्त्र एवं चतुर, धनी, व्यापार में निरन्तर लाभ प्राप्त करने वाला। मकान, वाहन, धन-धान्य तथा उत्तम पुत्रों से युक्त, संगीत का शौकीन तथा पिता के लिए भाग्यकारक होता है। सूर्य की शुभता में वृद्धि हेतु उपाय १, २, ३, ४, ७, १०, १२, १६, १७, १८, १९, २० आदि करें।

अशुभ—उपरोक्त शुभ फलों की कमी होती है। राजनीति में असफलता, सत्तानाश का भय, पिता का विरोधी, पुत्रों द्वारा विरोध तथा व्यापार में धन नाश होता है। चुनाव में हार होती है। सूर्य के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय २१, २२, २४, २६, २८, ३२, ३६, ४० आदि करें।

सूर्य एकादश भाव में

शुभ—जीवन में उच्च आकांक्षाएँ रखने वाला व उनकी पूर्ति करने वाला, सफल राजनीतिज्ञ, सत्ता लाभ, ईमानदार, वफादार, शुभ मित्रों से युक्त, अत्यन्त धनी, जीवन की सभी सुख-सुविधाओं से सम्पन्न, भाइयों के लिए शुभ, सुखी, समृद्ध एवं धन-संग्रह कर्ता होता है। जातक के पुत्र उसके आज्ञाकारी होते हैं सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु उपाय १, २, ३, ६, ७, १२, १७, १८, १९ आदि करें।

अशुभ—कम सन्तान, पिता को यात्रा में हानि, ताया, चाचा तथा बुआ के धन का नाशक, बड़े भाई के लिए अशुभ, राजनीति में असफलता, चुनावों में हार, सन्तान सुख अल्प तथा सन्तान के धन का नाशक, माता की आयु के लिए अनिष्ट तथा दुःखी होता है। सूर्य के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय २१, २२, २४, २६, २८, ३२, ३६, ४० आदि करें।

सूर्य द्वादश भाव में

शुभ—एकान्त प्रिय, विदेश भ्रमण करने वाला, विदेश में सफलता व धन लाभ, गुप्त विद्याओं का ज्ञाता, उत्तम ज्योतिषी, उत्तम व्यापारी, उत्तम डॉक्टर या वैद्य तथा पिता के भाग्यकारक होता है, सूर्य शुभता बढ़ाने हेतु उपाय ६, १३, १६ आदि करें।

अशुभ—विदेश में असफलता एवं धन नाश, विदेश में रोग से ग्रस्त,

अमानत में खयानत करने वाला, आँख का रोगी, फूहड़, कारीगर, विधवा तथा नीच स्त्रियों से अवैध सम्बन्ध स्थापित करने वाला, पत्नी व दादी के लिए रोग कारक, शत्रुओं से पीड़ित तथा पैतृक सम्पत्ति का नाशकर्ता होता है। सूर्य के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय २१, २२, २५, २८, ३४, ३५, ३६, ३९, ४० आदि करें।

सूर्य के उपाय

शुभ

१. इस पुस्तक में वर्णित विधि अनुसार लाल माणिक्य धारण करना।
२. खाना खाते समय सोने के चम्मच का प्रयोग करना।
३. सोने का व्यापार कृतिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढा नक्षत्र में आरम्भ करना।
४. ग्यारह रविवार सूर्य स्नान करना।
५. इक्कीस रविवार सिर पर नारियल का तेल लगाना।
६. लाल गाय या लाल रंग का कुत्ता पालना।
७. सोने की चैन धारण करना जो पेट को स्पर्श करे।
८. गुलाब के फूलों का गुलदस्ता ताँबे के जार में घर में रखना।
९. गुलाबी बोलत में पानी भर कर सूर्य की किरणों में सात दिन रखना फिर उस पानी को नहाने वाले पानी में मिलाकर इक्कीस दिन स्नान करना।
१०. चारपाई के पायों में ताँबे के चार कील गाड़ना।
११. ताँबे का चकोर टुकड़ा लेकर केसर का लेप करके घर के आँगन में रविवार को दबाना।
१२. जेब में ताँबे अथवा सिक्के का टुकड़ा २७ दिन रखना।
१३. तेजफल की दातुन करना अथवा तेजफल का वृक्ष घर में लगाना।
१४. घर की झ्योढी तथा रसोई का दरवाजा पूर्व की ओर रखना। यदि न हो तो घर की पूर्व वाली दीवार में ताँबे के सात कील गाड़ना।
१५. लाल रंग का जूता पहनना तथा दोनों जूतों के तलों में ताँबे के सात-

सात कील लगाना ।

१६. घर के कवारगंदल या कैक्टस का पौधा लगाना ।
१७. इक्कीस रविवार लाल चन्दन से स्नान करना ।
१८. रविवार को रवि की होरा में सूर्य की अँगुली में ताँबे अथवा सोने की अँगूठी पर सूर्य का यन्त्र खुदवा कर पहनना ।
१९. इक्कीस रविवार केसर का तिलक लगाना ।
२०. घर का आँगन खुला रखना ।

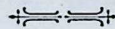
अशुभ

२१. इस पुस्तक की बताई विधि के अनुसार सूर्य यन्त्र धारण करना ।
२२. १०८ रविवार सूर्य को पानी देना ।
२३. पिता अथवा गुरु के पाँवों को उत्तराषाढा नक्षत्र से आरम्भ करके ४३ दिन तक छूना ।
२४. गेहूँ, बाजरा, गुड़, मिलाकर लाल गाय को ग्यारह रविवार देना ।
२५. ताँबे के चकोर टुकड़े पर केसर लगाकर गुलाबी वस्त्र में लपेटकर रविवार को पूर्व दिशा में जाकर सूर्योदय के समय निर्जन स्थान में दबाना ।
२६. ग्यारह रविवार मन्दिर अथवा पिंगलवाड़ा में घी और सूर्य की वस्तुएँ दान देना ।
२७. घर की ड्योढी का दरवाजा पूर्व की ओर न रखना । यदि हो तो घर में पानी का नल लगवाना ।
२८. सफेद चन्दन से इक्कीस रविवार स्नान करना ।
२९. रविवार को गुरु अथवा पिता को गुलाबी रंग के वस्त्र अथवा पगड़ी भेंट करना ।
३०. यदि जातक रविवार कृतिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढा नक्षत्रों में दिन के समय किसी मुर्दे की अर्थी देखे तो उस मुर्दे के साथ श्मशान भूमि तक जाए ।
३१. सूर्य की वस्तुओं का दान न लेना ।

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

२५५

३२. एक नारियल और सात बादाम ग्यारह रविवार धर्म स्थान में दान दें।
३३. ससुराल से सूर्य की वस्तुएँ न लेना।
३४. इक्कीस रविवार को बन्दर को गुड़ खिलाएँ।
३५. अन्धों को सात रविवार भोजन खिलाना।
३६. अपने इष्टदेव की चाँदी की मूर्ति बनाकर घर में रखना।
३७. रविवार के दिन या सूर्य के नक्षत्रों में सूर्य की शान्ति हेतु हवन करवाना।
३८. घर के खाली पड़े बड़े बर्तन में चाँदी के टुकड़े रखना।
३९. चलते पानी में ताँबे का सिक्का रविवार के दिन बहाना।
४०. शराब न पीना।
४१. मूली, शलजम, गाजर रात को सिरहाने रखकर रविवार की प्रातः को ग्यारह रविवार धर्म स्थान में दान देना।



चन्द्र



चन्द्र प्रथम भाव में

शुभ—जिस जातक के चन्द्रमा प्रथम भाव में हो, वह सुन्दर तथा पतले शरीर वाला, तीक्ष्ण बुद्धि तथा शुद्ध विचारों वाला। गृहस्थ जीवन में पूर्ण सुखी, बहुत भाई बहन वाला, सफल व्यापारी तथा व्यापार में निरन्तर लाभ प्राप्त करने वाला, परोपकारी, स्त्री की प्रत्येक बात को मानने वाला, माता के लिए भाग्यकारक तथा मातृ भक्त होता है। शुभ चन्द्र को और बलवान करने हेतु १, २, ३, ४, ५, १०, ११, १२, १३, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक चिन्तायुक्त, स्त्री से अपमानित, सम्भोग द्वारा स्त्री की पूर्ण तृप्ति न करने वाला, सन्तान की प्राप्ति विलम्ब से होती है, रोगी, मानसिक बीमारियों का रोगी अथवा पागल होता है। जातक का डूबकर मरने का भय रहता है। अशुभ चन्द्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २६, २९ आदि उपाय करें।

चन्द्र द्वितीय भाव में

शुभ—जातक सुन्दर, मधुरभाषी, हँसमुख, बुद्धिमान, सम्मानित, धनी, पुस्तकों तथा तरल पदार्थों से लाभ प्राप्त करने वाला, सुन्दर एवं सुशील स्त्री

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

२५७

से युक्त, माता तथा स्त्री पक्ष से लाभ प्राप्त करने वाला, स्त्री को सम्भोग में पूर्ण तृप्त करने वाला, वाहन युक्त और बहुत भाई, कम बहनों वाला होता है। जातक के भाई का विदेश योग होता है। शुभ चन्द्र को और बलवान करने हेतु १, २, ४, ५, ६, ७, ८, ११, १२, १३, १७, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक की विद्या में विघ्न, पैतृक धन लाभ की प्राप्ति न होना, धन का अधिक व्यय तथा स्त्री की अल्पायु होती है। जातक मदिरापान तथा नशीली वस्तुओं का आदी होता है। पिता के लिए रोगकारक होता है। अशुभ चन्द्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २३, २४, २५, २६, २७, २९, ३० आदि उपाय करें।

चन्द्र तृतीय भाव में

शुभ—जातक निरोगी, महाधनी, राज्य में सम्मानित, दृढ़ निश्चयी, प्रत्येक समय काम में मग्न रहने वाला, होशियार तथा चुस्त, यात्रा का शौकीन तथा यात्रा करने वाला, यात्रा से लाभ। बहुत बहनों वाला, जीवन की सभी सुविधाओं से सम्पन्न, उच्च विद्या प्राप्त करने वाला, बहन भाइयों का पोषक एवं सेवक तथा सुखी होता है। शुभ चन्द्र को और बलवान करने हेतु १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक मानसिक चिन्ताग्रस्त, भ्रम रोग से पीड़ित अथवा निद्रा में चलने के रोग से पीड़ित, यात्रा में हानि, पिता की आयु अल्प तथा भाई बहनों से अपमानित होता है। पड़ोसी तथा रिश्तेदारों से विरोध होता है। अशुभ चन्द्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २६, २९, ३० आदि उपाय करें।

चन्द्र चतुर्थ भाव में

शुभ—जातक को सम्पत्ति का लाभ, सुन्दर व सुशील माता से युक्त, माता-पिता का भक्त, जमीन जायदाद तथा वाहन युक्त, गृहस्थ जीवन सुखी, उच्च विद्या की प्राप्ति, जातक अपना निवास स्थान बदलता है। जातक की जमीन जायदाद, गाड़ियों के क्रय-विक्रय तथा तरल पदार्थों एवं सफेद कपड़े

के व्यापार में लाभ होता है। स्त्री का भरपूर सुख होता है शुभ चन्द्र को और बलवान करने हेतु १, २, ३, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक पैतृक धन नाश करता है। गृहस्थ जीवन दुःखी, स्त्री द्वारा विरोध, माता का विरोध, वाहन से दुर्घटना का भय तथा गृहस्थ जीवन के सम्बन्ध में चिन्तित रहता है। अशुभ चन्द्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २८ आदि उपाय करें।

चन्द्र पंचम भाव में

शुभ—जातक सुन्दर व सुशील स्त्री युक्त, लम्बी आयु वाला, भाग्यवान्, इन्साफ पसन्द, हँसमुख, सन्तान का पोषक, तैरने का शौकीन, संगीत में रुचि, सन्तान के पोषण के लिए माता से धन प्राप्त करता है। पिता के धन में वृद्धि करने वाला, जातक की कन्याएँ अधिक होती हैं। जातक एक अच्छा मित्र तथा सलाहकार होता है। शुभ चन्द्र को और बलवान करने हेतु १, २, ४, ७, ११, १३, १४, १६, १८ आदि उपाय करना।

अशुभ—जातक अस्थिर मन वाला, दुःखी, माता से अपमानित, जातक की सन्तान उसकी विरोधी होती है, विद्या में विघ्न पड़ता है, व्यापार में हानि होती है। अशुभ चन्द्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २४, २५, २९, ३०, ३१ आदि उपाय करें।

चन्द्र षष्ठम भाव में

शुभ—जातक पतले शरीर वाला, नौकरी बदलने वाला, मामा-मासी और फूफी के लिए शुभ व धनकारक होता है। शुभ चन्द्र को और बलवान करने हेतु ९, १३, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक कृश शरीर, छूत रोगी, लकवा, गुर्दे का रोग, मूत्र रोग तथा आन्त के रोग का भय रहता है। जातक को पालतु पशु रखने तथा मुर्गी खाना खोलने से हानि होती है। हमेशा कर्जदार, धन का व्यय अधिक, माता से झगड़ा, मानसिक रूप से विक्षिप्त तथा गैस, अतिसार रोगों से ग्रस्त

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

२५९

रहता है। यदि चन्द्र शनि से युक्त-दृष्ट हो तो विवाह में विलम्ब अथवा विवाह न होने का योग होता है। अशुभ चन्द्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २७, ३० आदि उपाय करें।

चन्द्र सप्तम भाव में

शुभ—जातक का विवाह जल्दी होता है, सुन्दर आज्ञाकारिणी स्त्री से युक्त, समाज सेवक, उत्तम कवि कई विषयों का विशेषज्ञ, शुद्ध विचारों वाला, यात्रा का शौकीन व यात्रा से लाभ, जीवन के अन्तिम समय में अपने घर में ही होता है। तरल पदार्थों के व्यापार में लाभ। शुभ चन्द्र को बलवान करने हेतु १, २, ३, ४, ५, ७, ११, १२, १३, १४, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक-कृश शरीर, अस्थिर मन वाली स्त्री होगी, दूसरों से ईर्ष्या रखने वाला, माता से कलह करने वाला, बहू-सास का झगड़ा, नशीली वस्तुओं का सेवन करने वाला, यदि चन्द्र पापी ग्रहों के मध्य में पीड़ित हो तो स्त्री से तलाक या मृत्यु के बाद दूसरा विवाह होता है। अशुभ चन्द्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २६, २९, ३१ आदि उपाय करें।

चन्द्र अष्टम भाव में

शुभ—जातक को व्यापार से लाभ, ससुराल से धन प्राप्ति, दादी से सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। पिता के विदेश जाने का योग होता है। जातक की स्त्री का नौकरी करने का योग होता है। शुभ चन्द्र को और बलवान करने हेतु ९, १३, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक की अल्पायु, कृश शरीर, माता के लिए अशुभ, परस्त्रीरत, गुप्त रोगों से ग्रस्त, परस्त्री पर धन नाश करने वाला तथा अकाल मृत्यु को प्राप्त होता है। अशुभ चन्द्र के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय २१, २२, २५, २६, २७, २८, ३०, ३१ आदि उपाय करें।

चन्द्र नवम भाव में

शुभ—जातक बुद्धिमान, धर्म का आदर करने वाला, धर्म के नाम पर

२६०

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

दान देने वाला होता है, जातक ईमानदार, सबका प्रिय, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाला होता है। विदेश भ्रमण तथा विदेश में सफलता प्राप्त करने वाला होता है। मानसिक रोगों का उत्तम डॉक्टर होता है। शुभ चन्द्र को और बलवान करने हेतु उपाय १, २, ४, ५, १०, ११, १२, १३, १५, १६, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—उपरोक्त शुभ फल न्यून होते हैं। पिता की अल्पायु का योग होता है तथा माता के लिए रोगकारक होता है। अशुभ चन्द्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २५, २६, ३०, ३२ आदि उपाय करें।

चन्द्र दशम भाव में

शुभ—जातक पैतृक धन प्राप्त करने वाला, दीर्घायु वाला, लम्बी यात्राएँ करने वाला, नौकरी अथवा व्यापार बदलने वाला, वृद्धों की सेवा करने वाला, समाज सेवक, जनता का प्रिय तथा उत्तम सर्जन होता है। शुभ चन्द्र को और बलवान करने हेतु १, २, ३, ४, ५, ६, १०, ११, १२, १३, १४, १७, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक अस्थिर मन, नौकरी या व्यापार बदलने में हानि, पैतृक धन प्राप्ति में अड़चनें, स्त्री से कलह, माता की अल्पायु, चुनावों में पराजय, स्त्री पक्ष से धन की प्राप्ति न होना तथा रोगी होता है। अशुभ चन्द्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २५, २६, २७, २९, ३० आदि उपाय करें।

चन्द्र एकादश भाव में

शुभ—जातक शुभ मित्रों तथा शुभ सन्तान से युक्त, दूरदर्शी सिद्धान्तवादी, भाग्यवान्, महाधनी, प्रत्येक समय सचेत रहने वाला, सफल राजनीतिक सामाजिक कार्यों में लाभ प्राप्त करने वाला तथा सर्वप्रिय होता है। जातक वाहन युक्त होता है। शुभ चन्द्र को और बलवान करने हेतु १, २, ४, ५, ६, ८, ९, ११, १२, १३, १७, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—उपरोक्त फल कम होंगे, सन्तान का अल्प सुख, पुत्र कम होंगे, माता से कलह, नपुंसकता के रोग का भय होगा। अशुभ चन्द्र के अनिष्ट

निवारण हेतु २१, २२, २३, २५, २६, २९, ३०, ३१ आदि उपाय करें।

चन्द्र द्वादश भाव में

शुभ—जातक विदेश भ्रमण करने वाला तथा विदेश में धन लाभ प्राप्त करने वाला, एकान्त प्रिय तथा उत्तम ज्योतिषी, तांत्रिक-मांत्रिक-यांत्रिक तथा दूसरी स्त्रियों का प्रिय होता है। शुभ चन्द्र को और बलवान करने हेतु ९, १३, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक आँख का रोगी, ससुराल का धन नाश करने वाला, परस्त्रीरत, गुप्त रोग का रोगी, अपमानित, अपनी स्त्री के लिए रोगकारक तथा दुष्चरित्र होगा। विदेश भ्रमण में असफलता व धन नाश होगा। अशुभ चन्द्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २६, २७, २८, ३०, ३२ उपाय करें।

चन्द्र के उपाय

शुभ

१. इस पुस्तक में बताई विधि अनुसार सफेद मोती धारण करना।
२. १०८ दिन चाँदी के बर्तन में भोजन करना व दूध पीना।
३. चारपाई के चारों पायों में चाँदी के चार कील गाड़ना।
४. अपने घर में अपने इष्टदेव की चाँदी की मूर्ति बनाकर रखना।
५. चाँदी की माला अथवा अंगूठी सोमवार को अथवा रोहिणी, हस्त, श्रवण नक्षत्रों में चन्द्र की होरा में पहनना।
६. चन्द्रवार को घर में सफेद शंख रखना।
७. घर में सफेद सीपी चाँदी के बर्तन में चन्द्रवार को रखना।
८. पूर्णमासी के दिन चन्द्र उदय के पश्चात् चन्द्रमा की किरणों में बैठकर खीर खाना।
९. चन्द्रवार को सफेद गाय अथवा सफेद कुतिया पालना।
१०. मकान के चारों कोनों में चाँदी की चार कील गाड़ना।
११. चन्द्रवार या चन्द्र नक्षत्रों में सफेद वस्त्र पहनना तथा सफेद बिस्तर का प्रयोग करना।

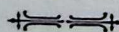
२६२

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

१२. चावल या चाँदी माता से लेकर अपने पास रखना।
१३. गंगाजल का १०८ दिन प्रयोग करना।
१४. शुभ कार्य करने से पहले दूध का कुम्भ रखना।
१५. चीनी खाकर घर से यात्रा के लिए प्रस्थान करना।
१६. श्मशान घाट का पानी घर में चाँदी के बर्तन में भरकर रखना।
१७. चाँदी का टुकड़ा अथवा चाँदी का सिक्का जेब में रखना।
१८. एक मुखी रुद्राक्ष सफेद धागे में चन्द्र का पाठ करके चन्द्रवार अथवा चन्द्र नक्षत्रों में धारण करना।

अशुभ

२१. 'चन्द्र यन्त्र' पुस्तक में बताई विधि अनुसार धारण करना।
२२. चन्द्रवार से लेकर १०८ दिन तक लोगों को अथवा सफेद गाय को पानी पिलाना।
२३. छबील (प्याऊ) के लिए धन दान करना।
२४. ग्यारह चन्द्रवार पाँच कन्याओं को खीर खिलाना।
२५. अपने इष्ट देव की चाँदी की मूर्ति अपने इष्ट धर्मस्थान पर चन्द्रवार को स्थापित करना।
२६. चन्द्र वस्तुओं का २१ चन्द्रवार अपने इष्ट धर्म स्थान में दान देना।
२७. शंख अथवा सीपी में २१ चावल के दाने भरकर सफेद वस्त्र में लपेट कर अमावस्या की रात को चलते पानी में बहाना।
२८. दूध का व्यापार न करना।
२९. चन्द्रवार अथवा चन्द्र नक्षत्रों से आरम्भ करके १०८ दिन माता के पाँव छूना।
३०. चन्द्रवार को गाय का दान (जैसे कन्या दान किया जाता है) करना।
३१. सम्भोग से पहले दूध या पानी में सोने की सलाई गर्म करके बुझाकर पीना (यह पुत्रोत्पत्ति के लिए शुभ है)।
३२. अपने इष्ट धर्म स्थान में चन्द्रवार या चन्द्र नक्षत्रों में एक किलो दूध चढ़ाकर प्रणाम करना।



मंगल



मंगल प्रथम भाव में

शुभ—जातक निरोग, दृढ़ निश्चयी, उच्च-आकांक्षावादी, सिर या मस्तक पर चिह्न, सम्मानित, युद्ध में प्रवीण, बत्तीस दाँत वाला, दीर्घायु, महाधनी, यात्राओं का शौकीन तथा वीर व निर्भीक होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु उपाय १, २, ३, ४, ५, ७, ११, १२, १५, १७, १९, २० आदि उपाय करें।

अशुभ—स्त्री की अल्पायु तथा स्त्री से कलह-क्लेश, क्रोधी, निर्दयी, धननाशक, काम को बनाकर बिगाड़ने वाला, परिवार तथा वृद्धों के लिए अशुभ होता है। दुर्घटना ग्रस्त, कृतघ्न तथा आलसी, दुःखी, आँख का रोगी होता है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय २१, २२, २४, २५, २७, २३, ३१, ३८, ३६, ३७, ३९ आदि उपाय करें।

मंगल द्वितीय भाव में

शुभ—भाईयों में बड़ा, भाईयों का रक्षक, दृढ़ निश्चयी, महा धनवान, लोहे, लकड़ी, मशीनरी, कैमीकल आदि से धन लाभ प्राप्त करने वाला, बुद्धिमान और नए यन्त्रों का आविष्कारक होता है। शुभ मंगल की शुभता

बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ७, ८, १२, १४, १७, २० आदि उपाय करें।

अशुभ—विद्या में रुकावट, व्यापार में हानि, धन का अपव्यय, स्त्री की अल्पायु, दुःखी, अजीब आदतों वाला होता है। जातक की लड़ाई-झगड़े में अचानक मृत्यु होती है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २५, २७, ३१, ३५, ३७, ३९ आदि उपाय करें।

मंगल तृतीय भाव में

शुभ—दृढ़ निश्चयी, धनी, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, चुनाव जीतने वाला, भाईयों में बड़ा, भाईयों का पोषक, जातक की स्त्री अमीर घराने से सम्बन्ध रखती है तथा जातक के विवाह के पश्चात् उसके ससुराल पक्ष के भाग्य का उदय होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ८, ९, १२, १६, १७, २० आदि उपाय करें।

अशुभ—भाई की मृत्यु का योग, यात्रा में हानि, आत्महत्या की प्रवृत्ति, धोखेबाज, फुकरा, रक्त विकार का रोगी, सन्तान कम, धन की हानि, परस्त्री रत, पड़ोसियों तथा सम्बन्धियों से झगड़ा तथा मुकद्दमे झगड़ों में जातक को हानि होती है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २५, २६, २७, ३०, ३१, ३७, ३९ आदि उपाय करें।

मंगल चतुर्थ भाव में

शुभ—जातक धनी, वाहन युक्त, निडर तथा दिलेर, न्यायप्रिय, सच्चा, दूसरों का हित चाहने वाला, ट्रांसपोर्ट के काम में धन प्राप्त करने वाला, जातक को पैतृक धन प्राप्त होता है, किसी सम्बन्धी की सम्पत्ति मिलती है अथवा गड़ा धन प्राप्त होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ५, ८, ९, १०, ११, १७, १८, १९, २० आदि उपाय करें।

अशुभ—कठोर स्वभाव वाला, पिता का विरोधी, माता को दुःख देने वाला, माता की आयु के लिए अनिष्ट, स्त्री से झगड़ा कलेश करने वाला तथा उसे पीटने वाला, झगड़े में धन नाश करने वाला, नानी, सास का विरोधी, परतन्त्र, 'दूसरों को नसीहत व खुद मीयां फसीहत' होता है। जातक का चोरी

अथवा आग से धन नाश होता है। दुर्घटना में चोट का भय होता है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २७, २८, ३१, ३७, ३८, ३९ आदि उपाय करें।

मंगल पंचम भाव में

शुभ—निरोग, सुगठित शरीर वाला, व्यायाम करने वाला अथवा पहलवान, उत्तम खिलाड़ी, शुभ स्त्री तथा पुत्र पौत्रों से युक्त होता है। जातक एक अच्छा डॉक्टर अथवा वैद्य होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ५, ७, ८, ९, १२, १३, १५, १७, १८, १९, २० आदि उपाय करें।

अशुभ—पहली सन्तान का नाश, आठ का अंक उसके लिए अशुभ, षड्यन्त्रकारी, फौजदारी मुकद्दमे में सजा पाने वाला, सट्टे दड़े में हानि उठाने वाला, परस्त्रीरत, भाईयों की सन्तान की अल्पायु का भय, पुत्रों से कलह, यदि जातक स्त्री हो तो बच्चा ऑपरेशन से होता है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २५, २७, ३१, ३४, ३७, ३९ आदि उपाय करें।

मंगल षष्ठम भाव में

शुभ—महाधनी, सफल राजनीतिज्ञ, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, चुनावों में जीतने वाला, अच्छा लेखक, निर्भीक, दीर्घजीवी और संगीत विद्या का शौकीन होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु ४, ५, ६ आदि उपाय करें।

अशुभ—दुर्घटना से चोट लगती है। कम पुत्र वाला, ज्वर का रोगी, पालतु पशुओं के पालन में हानि, व्यापार में हानि। जातक लापरवाह और मुकद्दमों में धन का नाश करता है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २५, २७, २८, ३१, ३२, ३७, ३९, ४० आदि उपाय करें।

मंगल सप्तम भाव में

शुभ—बुद्धिमान, गणितिज्ञ, धर्मात्मा, बहुत भाईयों वाला, प्रत्येक

२६४ ❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ७, ८, १२, १४, १७, २० आदि उपाय करें।

अशुभ—विद्या में रुकावट, व्यापार में हानि, धन का अपव्यय, स्त्री की अल्पायु, दुःखी, अजीब आदतों वाला होता है। जातक की लड़ाई-झगड़े में अचानक मृत्यु होती है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २५, २७, ३१, ३५, ३७, ३९ आदि उपाय करें।

मंगल तृतीय भाव में

शुभ—दृढ़ निश्चयी, धनी, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, चुनाव जीतने वाला, भाईयों में बड़ा, भाईयों का पोषक, जातक की स्त्री अमीर घराने से सम्बन्ध रखती है तथा जातक के विवाह के पश्चात् उसके ससुराल पक्ष के भाग्य का उदय होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ८, ९, १२, १६, १७, २० आदि उपाय करें।

अशुभ—भाई की मृत्यु का योग, यात्रा में हानि, आत्महत्या की प्रवृत्ति, धोखेबाज, फुकरा, रक्त विकार का रोगी, सन्तान कम, धन की हानि, परस्त्री रत, पड़ोसियों तथा सम्बन्धियों से झगड़ा तथा मुकद्दमे झगड़ों में जातक को हानि होती है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २५, २६, २७, ३०, ३१, ३७, ३९ आदि उपाय करें।

मंगल चतुर्थ भाव में

शुभ—जातक धनी, वाहन युक्त, निडर तथा दिलेर, न्यायप्रिय, सच्चा, दूसरों का हित चाहने वाला, ट्रांसपोर्ट के काम में धन प्राप्त करने वाला, जातक को पैतृक धन प्राप्त होता है, किसी सम्बन्धी की सम्पत्ति मिलती है अथवा गड़ा धन प्राप्त होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ५, ८, ९, १०, ११, १७, १८, १९, २० आदि उपाय करें।

अशुभ—कठोर स्वभाव वाला, पिता का विरोधी, माता को दुःख देने वाला, माता की आयु के लिए अनिष्ट, स्त्री से झगड़ा कलेश करने वाला तथा उसे पीटने वाला, झगड़े में धन नाश करने वाला, नानी, सास का विरोधी, परतन्त्र, 'दूसरों को नसीहत व खुद मीयां फसीहत' होता है। जातक का चोरी

अथवा आग से धन नाश होता है। दुर्घटना में चोट का भय होता है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २७, २८, ३१, ३७, ३८, ३९ आदि उपाय करें।

मंगल पंचम भाव में

शुभ—निरोग, सुगठित शरीर वाला, व्यायाम करने वाला अथवा पहलवान, उत्तम खिलाड़ी, शुभ स्त्री तथा पुत्र पौत्रों से युक्त होता है। जातक एक अच्छा डॉक्टर अथवा वैद्य होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ५, ७, ८, ९, १२, १३, १५, १७, १८, १९, २० आदि उपाय करें।

अशुभ—पहली सन्तान का नाश, आठ का अंक उसके लिए अशुभ, षड्यन्त्रकारी, फौजदारी मुकद्दमे में सजा पाने वाला, सट्टे दड़े में हानि उठाने वाला, परस्त्रीरत, भाईयों की सन्तान की अल्पायु का भय, पुत्रों से कलह, यदि जातक स्त्री हो तो बच्चा ऑपरेशन से होता है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २५, २७, ३१, ३४, ३७, ३९ आदि उपाय करें।

मंगल षष्ठम भाव में

शुभ—महाधनी, सफल राजनीतिज्ञ, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, चुनावों में जीतने वाला, अच्छा लेखक, निर्भीक, दीर्घजीवी और संगीत विद्या का शौकीन होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु ४, ५, ६ आदि उपाय करें।

अशुभ—दुर्घटना से चोट लगती है। कम पुत्र वाला, ज्वर का रोगी, पालतु पशुओं के पालन में हानि, व्यापार में हानि। जातक लापरवाह और मुकद्दमों में धन का नाश करता है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २५, २७, २८, ३१, ३२, ३७, ३९, ४० आदि उपाय करें।

मंगल सप्तम भाव में

शुभ—बुद्धिमान, गणितिज्ञ, धर्मात्मा, बहुत भाईयों वाला, प्रत्येक

इच्छित वस्तु को प्राप्त करने वाला तथा दूसरों का हितैषी होता है। जातक व्यापार में लाभ प्राप्त करने वाला, सफल राजनीतिज्ञ होता है। जातक का स्वाभिमानी स्त्री से विवाह होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ५, ८, १२, १७, २० आदि उपाय करें।

अशुभ—पत्नी से झगड़ा, मुकद्दमे में धन हानि, परस्त्रीरत, बवासीर का रोगी, दुःखी पत्नी की अल्पायु तथा दो विवाह का योग, विधवा बहन वाला, विधवा साली के साथ अवैध सम्बन्ध कायम करने वाला होता है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २७, ३१, ३७, ३९ आदि उपाय करें।

मंगल अष्टम भाव में

शुभ—न्यायप्रिय, मेहनती, हिम्मती, शत्रुओं पर भारी, संघर्षमय जीवन, बाधाओं को हँसते-हँसते पार कर जाने वाला, लोह पुरुष, सम्भोग में स्त्री की तृप्ति करने वाला, किसी रिश्तेदार की मृत्यु के पश्चात् छोड़ी गई सम्पत्ति को प्राप्त करने वाला होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु ४, ५, ६, १३ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक दुःखी, चोरी या आग से धन हानि, आँख का रोगी, स्त्री की अल्पायु या अकाल मृत्यु, आठ वर्ष में जातक को कष्ट, भाईयों के लिए अशुभ तथा भाईयों से अपमानित, परस्त्रीरत, स्त्री को निर्वस्त्र करके सम्भोग करने वाला तथा गुप्त रोगों से ग्रस्त रहता है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २५, २७, २८, २९, ३१, ३२, ३७, ३९, ४० उपाय करें।

मंगल नवम भाव में

शुभ—अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारी, स्वाभिमानी, युद्ध में प्रवीण तथा युद्ध में विजयी, युद्ध के समान बनाने का व्यापारी, स्वयं के भाग्य का निर्माता, लम्बी आयु वाला तथा जीवन की सभी सुख-सुविधाओं से भरपूर, धनी व सुखी जातक होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ७, ८, ९, १२,

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

२६७

१५, १६, १७, २० आदि उपाय करें।

अशुभ—नास्तिक, बदनाम, समाज में अपमानित, अन्य स्थानों पर झगड़े का भय, क्रोधी, पिता का विरोधी तथा पिता के लिए हानिकारक, कृषि कार्य में धन हानि होती है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २५, २७, ३०, ३१, ३४, ३७, ३९ आदि उपाय करें।

मंगल दशम भाव में

शुभ—साहसी, स्वतन्त्र, जोशीला, नेता, राजनीतिज्ञ, मन्त्री, सफल व्यापारी, उच्च-पद पर प्रतिष्ठित, बहुत बड़ी जमीन जायदाद का स्वामी, कारखाने का मालिक, समाज में सम्मानित होता है। नौकरी में उच्चपद प्राप्त करने वाला, जातक के पुत्र और भाई संख्या में बराबर होते हैं। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ५, ८, ९, १०, १२, १७, २० आदि उपाय करें।

अशुभ—सन्तान विलम्ब से होगी, परिवार-जनों की मृत्यु का योग, सरकारी अधिकारियों से झगड़ा, झगड़े में धन हानि तथा व्यापार में हानि होती है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २४, २५, २७, ३१, ३३, ३७, ३९ आदि उपाय करें।

मंगल एकादश भाव में

शुभ—राज दरबार तथा समाज में सम्मानित व्यक्ति, लीडर और राजनीतिज्ञ, शुभ मित्रों से युक्त, धनवान, शत्रुओं को जीतने वाला, स्वयं के भाग्य का निर्माता, जीवन की सभी सुख-सुविधाओं से युक्त, व्यापार में निरन्तर लाभ प्राप्त करने वाला सुखी जातक होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ८, ९, १२, १३, १४, १७, २० आदि उपाय करें।

अशुभ—पैतृक धन तथा सम्पत्ति का नाश करने वाला, कम सन्तान वाला, भाई तथा मामा के लिए अशुभ, माता की अल्पायु, पिता का सम्बन्धियों से झगड़ा, बड़े भाई के लिए रोग कारक तथा भाग्यहीन जातक होता है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २५, २७, ३१, ३५, ३७,

३९ आदि उपाय करें।

मंगल द्वादश भाव में

शुभ—उत्तम परिवार से युक्त, विदेश भ्रमण से सफलता, साहसी, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, परिवार में अग्रणी व्यक्ति, बड़े भाई के धन के लिए लाभकारक, ऐश्वर्यवान तथा बुजुर्गों की सेवा करने वाला होता है। जातक दुर्बल की सहायता करने वाला होता है। जातक की स्त्री के सर्विस करने का योग होता है। शुभ मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु ४, ५, ६ आदि उपाय करें।

अशुभ—प्रत्येक कार्य में विघ्न, कम सन्तान, पैतृक धन का नाश, षड्यन्त्रकारी, व्यापार में हानि, नेत्र रोगी, जेल यात्रा का भय, झगड़े में चोट अथवा धन हानि का भय तथा कृतघ्न जातक होता है। अशुभ मंगल के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २५, २७, २८, ३१, ३२, ३७, ३९, ४० आदि उपाय करें।

मंगल के उपाय

शुभ

१. 'लाल मूँगा' इस पुस्तक में वर्णित विधि अनुसार धारण करना।
२. अपने इष्टदेव की सोने की मूर्ति बनाकर मंगलवार को घर में स्थापित करना।
३. लाल रंग के वस्त्र धारण करना।
४. घर में लाल गुलाब का पौधा मंगलवार को लगाना।
५. मंगलवार या मंगल के नक्षत्रों से आरम्भ करके १०८ दिन तक मृगशाला पर शयन करना। (इन दिनों स्त्री संग न करना)।
६. अपने इष्टदेव को घर में ही २७ मंगलवार सिन्दूर का तिलक लगाना।
७. मंगलवार से आरम्भ करके शुद्ध शहद प्रयोग करना।
८. ताँबे के बर्तन में एक लाल मिर्च, सत्ताईस मसूर की दाल के दाने तथा

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

२६९

पाँच लाल गुलाब के फूल लेकर मंगलवार को घर के आँगन में दबाना।

९. सत्ताईस मंगलवार घर में इष्टदेव की मूर्ति को लाल फल अर्पण करना।
१०. मंगलवार से आरम्भ करके १०८ दिन तक रात को ताँबे के बर्तन में पानी सिरहाने रखकर प्रातः घर में लगे गुलाब के पौधे को वही पानी डालना।
११. मंगलवार को घर के चारों कोनों पर लाल पत्थर लगाना।
१२. सत्ताईस मंगलवार माथे पर केसर का तिलक लगाना।
१३. लाल रंग की बोतल को पानी से भरकर सात दिन धूप में रखकर उस पानी से २७ मंगलवार गुप्तांग को धोना।
१४. ताँबे का सिक्का अथवा टुकड़ा जेब में रखना।
१५. सोने की अँगूठी पर मंगल यन्त्र खुदवाकर मंगलवार को धारण करना।
१६. मंगलवार को यात्रा प्रस्थान से पहले शहद का सेवन करना।
१७. घर में लाल रंग के पर्दे लगाना।
१८. घर में लाल रंग का फर्श बनवाना।
१९. घर में लाल रंग का फर्नीचर रखना।
२०. घर की दीवारों पर व दरवाजों पर लाल रंग करना।

अशुभ

२१. पुस्तक के बताई विधि अनुसार 'मंगल यन्त्र' धारण करना।
२२. शरीर पर ताँबा अथवा सोना धारण न करना।
२३. मंगल के दिन या नक्षत्रों में मंगल की वस्तुएँ दान न लेना।
२४. मंगलवार अपने इष्टदेव की सोने या ताँबे की मूर्ति बनाकर अपने इष्ट धर्मस्थान में स्थापित करना।
२५. गेहूँ तथा मसूर की दाल के सात-सात दाने, लाल पत्थर पर सिन्दूर का तिलक लगाकर इनका लाल वस्त्र में लपेट कर मंगलवार को चलते पानी में बहाना।

२७०

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

२६. सत्ताईस मंगलवार भाई को मंगल की वस्तुएँ देना। यदि भाई न हो तो धर्म स्थान में देना।
२७. शराब न पीना।
२८. सत्ताईस मंगलवार किसी अंगहीन व्यक्ति को मीठा भोजन खिलाना।
२९. घर में जमीन के अन्दर तन्दूर या भट्ठी न बनाना।
३०. सत्ताईस मंगलवार गुरु अथवा बड़े भाई के चरण छूना।
३१. लाल रंग के वस्त्र न पहनना।
३२. रात को ताँबे के बर्तन में पानी रखकर सत्ताईस मंगलवार वट के वृक्ष को डालना।
३३. केसर का तिलक न लगाना।
३४. धर्म स्थान में इष्ट देव को सत्ताईस मंगलवार सिन्दूर अर्पण करना।
३५. लाल रंग का जूता न पहनना।
३६. सिन्दूर का तिलक न लगाना।
३७. पानी में लाल गुलाब का फूल डालकर प्रातः सूर्य को १०८ दिन पानी देना।
३८. घर का फर्श लाल रंग का न रखना यदि हो तो उस पर नंगे पाँव न रखना।
३९. मंगलवार का व्रत रखना।
४०. जौ के सात दाने लेकर गाय के मूत्र से सात बार धोकर लाल कपड़े में लपेटकर मंगल के दिन चलते पानी में बहाना।



बुध



बुध प्रथम भाव में

शुभ—लग्न में बुध हो तो जातक लम्बे कद का, मधुर भाषी, विद्वान्, तीव्र बुद्धि, दूरदर्शी, राज दरबार में सम्मानित, उच्च शिक्षित, इंजीनियर, गणितज्ञ, ज्योतिषी अथवा कर्मकाण्डी विद्वान् पंडित होगा। जातक यात्रा का शौकीन, सभ्य, सुसंस्कृत तथा शुभ एवं उच्च शिक्षित स्त्री से युक्त होगा। जातक संगीत का शौकीन तथा धन संग्रहकर्ता होगा। जातक के दांत तीस से कम अथवा बत्तीस से अधिक होने का योग, जातक कुशल वक्ता तथा सर्वप्रिय होता है। शुभ बुध की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ४, ६, ८, ११, १२, १३, १४, १५ आदि उपाय करें।

अशुभ—उपरोक्त फलों में कमी होती है, जातक कृश शरीर, अर्धनपुंसक, झगड़ालू, नशीले पदार्थों के सेवन का आदी, व्यापार में हानि, स्त्री से झगड़ा अथवा तलाक का भय होता है। अशुभ बुध के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २७, २८, ३१ आदि उपाय करें।

बुध द्वितीय भाव में

जातक हँसमुख, बुद्धिमान, संयमी, उत्तम वक्ता, समृद्ध, सुखी, धनवान्,

कुल का दीपक सुखी होता है। जातक का विवाह विज्ञापन द्वारा होता है। इसकी स्त्री कम आयु की बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, उच्च घराने से सम्बन्ध रखती है अथवा सर्विस करती है। जातक को व्यापार, हिस्सेदारी में लाभ होता है। शुभ बुध की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ६, ८, ११, १२, १४, १५ आदि उपाय करें।

अशुभ—स्त्री से झगड़ा मुकद्दमा व तलाक का योग, जातक रोगी रहता है। निम्न विचारों का, परस्त्रीरत तथा व्यापार में हानि उठाने वाला होता है। जातक की स्त्री प्रायः उसकी विरोधी होती है। गृहस्थ सुख कम होता है। अशुभ बुध के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २३, २५, २८, ३१ आदि उपाय करें।

बुध अष्टम भाव में

शुभ—लम्बी आयु वाला, धनी, मुकद्दमे झगड़ों में जीतने वाला, स्त्री पक्ष से लाभ प्राप्त करने वाला तथा आविष्कारक होता है। शुभ बुध की शुभता बढ़ाने हेतु ८, ११ आदि उपाय करें।

अशुभ—व्यापार, मुकद्दमा, हिस्सेदारी में धन हानि, स्त्री से झगड़ा, कम सन्तान, स्नायु दुर्बलता अथवा लकवे का रोगी, नपुंसक तथा स्त्री से अपमानित होता है। उसको हर कार्य में असफलता का सामना करना पड़ता है। माता के लिए अशुभ, धन का अपव्यय तथा अल्पायु होता है। अशुभ बुध के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २४, २६, २८, २९, ३१, ३४ आदि उपाय करें।

बुध नवम भाव में

शुभ—उच्च शिक्षित, विदेश भ्रमण तथा विदेश में सफलता, उच्च पद पर आसीन, उत्तम ज्योतिषी, भाग्यवान् पिता वाला, किसी नए विषय की खोज करने वाला, संगीत का शौकीन, पिता भक्त तथा सुखी होता है। शुभ बुध की शुभता बढ़ाने हेतु १, ४, ७, ८, ११, १४, १५, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—उपरोक्त फलों में कमी आती है। जातक निर्लज्ज, ढीठ, कभी भी वायदे को पूरा न करने वाला तथा कृतघ्न होता है। अशुभ बुध के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २८, ३१ आदि उपाय करें।

बुध दशम भाव में

शुभ—जमीन, मकान, वाहन युक्त, उत्तम व्यापारी, लेखक, अध्यापक, सम्पादक अथवा रेल कर्मचारी, व्यापार में निरन्तर वृद्धि करने वाला, अनेक विद्याओं का ज्ञाता, ज्योतिषी और किसी विषय पर नई खोज करता है। शुभ बुध की शुभता बढ़ाने हेतु १, ३, ४, ५, ६, ८, १०, ११, १५ आदि उपाय करें।

अशुभ—उपरोक्त फल कम होते हैं। धन का नाश, पिता के लिए अशुभ, मादक वस्तुओं का सेवन करने वाला, रोगी तथा व्यापार में धोखा खाने वाला होता है। अशुभ बुध के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २७, २८, ३१, ३३, ३४ आदि उपाय करें।

बुध एकादश भाव में

शुभ—दयालु, उच्च इच्छाओं वाला, अत्यन्त धनी, जीवन की सभी सुख-सुविधाओं से सम्पन्न, गणितज्ञ, शुभ मित्रों से युक्त, बुद्धिमान सन्तान वाला, भाई बहनों के लिए शुभ तथा सुखी जातक होता है। शुभ बुध की शुभता बढ़ाने हेतु १, ४, ५, ८, ९, १०, ११, १५, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—उपरोक्त फल कम होते हैं। व्यापार में धन हानि, मित्रों द्वारा धोखा, सन्तान के बारे में चिन्तित, बहन, मासी, बुआ से झगड़ा होता है। अशुभ बुध के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २७, २८, ३०, ३१, ३३ आदि उपाय करें।

बुध द्वादश भाव में

शुभ—जातक ज्योतिषी, यान्त्रिक, मान्त्रिक, तान्त्रिक, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, प्रत्येक कार्य को सोच-विचार कर करने वाला, संयमी, त्यागी तथा परोपकारी होता है। विदेश में सफलता प्राप्त करने वाला होता है। शुभ बुध की शुभता बढ़ाने हेतु ८, ११ आदि उपाय करें।

अशुभ—निर्धन, आलसी, दुःखी, झगड़ालू, कम सन्तान, मानसिक रोग से पीड़ित अथवा पागल, दुष्चरित्र, विश्वास न करने योग्य, विदेश में धन

२७६

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

हानि, पंचवीसवें वर्ष में विवाह अशुभ, माता, मासी, बुआ के लिए अशुभ, परस्त्रीरत तथा जातक को व्यापार सट्टे में हानि होती है। अशुभ बुध के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २६, २८, २९, ३१, ३४ आदि उपाय करें।

बुध के उपाय

शुभ

१. इस पुस्तक में लिखित विधि अनुसार 'पन्ना' धारण करना।
२. घर में बुध की वस्तुएँ रखना।
३. बुध के दिन या नक्षत्र में हरे पिंजरे में कण्ठी वाला तोता पालना।
४. हरे रंग के वस्त्र पहनना तथा घर में हरे रंग के पर्दे लगाना।
५. घर में स्टेशनरी तथा लिखने पढ़ने का सामान पर हरे रंग के कागज चढ़ाकर रखना अथवा उन पर हरे रंग का गोल निशान लगाकर रखना।
६. हरे रंग की बोतल में पानी भर कर सात दिन सूर्य में रखना तथा उस पानी से नहाने वाले पानी में मिलाकर बुध के दिन या बुध के नक्षत्रों से शुरू करके २७ दिन स्नान करना।
७. हरे रंग की गाड़ी या साईकल का प्रयोग करना।
८. अपने इष्ट देव की कांस्य की मूर्ति बनवा कर हरे रंग के पात्र में रखकर बुध के दिन या नक्षत्र में घर में रखना।
९. घर में केले का पौधा बुधवार के दिन लगाना।
१०. हरे रंग की बोलत या गमले में मनीप्लांट लगाना।
११. मूँग साबुत के सात दाने, हरा पत्थर, केले के पत्ते में लपेटकर मिट्टी के कुब्जे में डालकर बुध के दिन या नक्षत्र में घर में दबाना।
१२. सूखी ब्राह्मी बूटी सिरहाने में भरकर बुधवार से शुरू करके सत्ताईस दिन प्रयोग करना।
१३. मूँग साबुत का सत्ताईस बुधवार प्रयोग करना।

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

२७७

१४. सत्ताईस बुधवार बकरी के दूध का सेवन करना।
१५. बुध के दिन अथवा नक्षत्रों से शुरू करके १०८ दिन सूर्योदय के समय सूर्य प्रणाम करना।
१६. बुध के दिन या नक्षत्र में कांस्य या चाँदी के गोल टुकड़े पर हरे रंग के कपड़े में लपेटकर जेब में रखना या भुजा पर बाँधना।
१७. बच्चे को तड़ागी पहनाना।
१८. घर में पड़े पुराने खाली बर्तनों में कांस्य का टुकड़ा या मूँग साबूत के सात-सात दाने रखना।
१९. बुध के दिन अथवा नक्षत्रों से शुरू करके १०८ दिन हरी घास पर नंगे पाँव चलना।
२०. घर के आंगन में हरी घास या दूब उगाना।

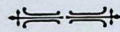
अशुभ

२१. इस पुस्तक में लिखित विधि अनुसार 'बुध यन्त्र' धारण करना।
२२. मूँग साबूत के सात दाने, हरा पत्थर, कांस्य का गोल टुकड़ा, हरे रंग के वस्त्र में लपेटकर बुध के दिन अथवा नक्षत्र में चलते पानी में बहाना।
२३. साबूत मूँग सत्ताईस बुधवार धर्मस्थान या पिंगलवाड़ा में देना।
२४. कौड़ियों की राख बनाकर सत्ताईस बुधवार चलते पानी में बहाना।
२५. हरे रंग के वस्त्र तथा पर्दों आदि का प्रयोग न करना।
२६. बुध के दिन या नक्षत्र में हरे रंग के वस्त्र किसी हिजड़े को देना।
२७. अपने इष्टदेव की कांस्य की मूर्ति बनाकर बुधवार या बुध के नक्षत्रों में धर्मस्थान की स्थापना करना।
२८. शराब न पीना।
२९. हरे रंग की बोतल में गंगाजल डालकर पीपल के पेड़ पर बुधवार के दिन या नक्षत्रों में दबाना।
३०. खुम्ब को मिट्टी के बर्तन में रखकर बुध के दिन अथवा नक्षत्रों में धर्मस्थान में देना।

२७८

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

३१. भाँग का प्रयोग न करना ।
३२. गाने-बजाने के गोल यन्त्र किसी पाठशाला में बुध के दिन या नक्षत्र में देना ।
३३. पाँच बुधवार पाँच बालिकाओं को हरे वस्त्र देना ।
३४. सत्ताईस बुधवार चौपायों को हरी घास या हरा चारा डालना ।



बृहस्पति



बृहस्पति प्रथम भाव में

शुभ—निरोग, भरा हुआ शरीर, अत्यन्त धनी, बुद्धिमान्, दूरदर्शी, ईमानदार, दयालु, उच्चशिक्षित, सर्वप्रिय, सर्वत्र सम्मानित, सुन्दर सुशील स्त्री से युक्त, पिता के लिए भाग्यकारक, पैतृक धन प्राप्त करने वाला, अच्छा वकील, जज, चार्टर्ड एकाउन्टेण्ट, डॉक्टर, वैद्य, सम्पादक अथवा उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। शुभ बृहस्पति को बलवान करने हेतु १, २, ३, ४, ८, ९, १२ आदि उपाय करें।

अशुभ—रक्त विकार, कैंसर, हृदय रोग, दमा का रोगी, पिता के लिए अशुभ तथा पिता का विरोधी, अनपढ़, उजड़्ड, गृहस्थ जीवन दुःखी तथा धन का नाश करने वाला, निर्धन होता है। अशुभ बृहस्पति के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २६, २८, ३०, ३१, ३४, ३५ आदि उपाय करें।

बृहस्पति द्वितीय भाव में

शुभ—अत्यन्त धनी, समृद्ध, उच्च शिक्षित, निडर एवं उत्तम सिपाही अथवा युद्धकर्ता, जीवन की सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला, सुन्दर

२८०

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

सुशील स्त्री से युक्त, सफल व्यापारी, दीर्घायु, स्वतन्त्र, समाज सुधारक, बैंक, अध्यापन, विद्या संस्थान, बीमा आदि के कार्यों में लाभ प्राप्त करने वाला, गड़ा धन प्राप्त करने वाला, जातक को अचानक धन लाभ अथवा लाटरी का योग, धार्मिक विचारों वाला अथवा साधु होता है। शुभ गुरु को बलवान करने हेतु १, २, ५, ६, ७, ८, ९, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—कुल का नाशक, कृश, बातूनी, दुःखी, चिन्तित मन वाला, स्त्री का विरोधी तथा अभागा होता है। अशुभ गुरु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २६, २८, ३०, ३१, ३३ आदि उपाय करें।

बृहस्पति तृतीय भाव में

शुभ—दयालु परोपकारी, बहुत भाईयों वाला, बहन-भाईयों, पड़ोसियों, सम्बन्धियों के लिए शुभ, दूरदर्शी, ससुराल के लिए भाग्यकारक, उत्तम सन्तान से युक्त, लम्बी आयु वाला, यात्राओं से लाभ प्राप्त करने वाला, लेखक, सम्पादक अथवा विज्ञापन आदि से धन प्राप्त करने वाला धनी जातक होता है। शुभ बृहस्पति को बलवान करने हेतु १, २, ८, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—धर्म गुरुओं का अपमान करने वाला, बहन भाइयों का शोषण करने वाला, अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अच्छे और बुरे दोनों साधन प्रयोग करने वाला, अधिक बोलने वाला, झगड़ालू होता है। अशुभ बृहस्पति के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २३, २४, २६, २८, २९, ३०, ३१ आदि उपाय करें।

बृहस्पति चतुर्थ भाव में

शुभ—उच्च शिक्षित, मकान, वाहन से युक्त अत्यन्त धनी, सुन्दर, स्त्री से युक्त, भाग्यवान् माता-पिता वाला, पालतु पशु रखने वाला, उत्तम व्यापारी, बैरिस्टर, जज, वकील, राजा अथवा राजा के समान, गड़ा हुआ धन या निःसन्तान व्यक्ति के धन की प्राप्ति का योग, लाटरी का योग, पिता के

लिए भाग्यकारक तथा धन संग्रहकर्ता होता है। शुभ बृहस्पति को बलवान करने हेतु १, २, ५, ८, ९, १० आदि उपाय करें।

अशुभ—माँस, शराब का व्यसनी, धन नाश करने वाला, निर्धन, माता का विरोधी, वाहन से दुर्घटना का भय तथा परस्त्रीरत होता है। जातक को गृहस्थ सुख अल्प मिलता है। अशुभ बृहस्पति के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २६, २८, ३०, ३० आदि उपाय करें।

बृहस्पति पंचम भाव में

शुभ—सम्माननीय, पूज्य, सुखी, समृद्ध, बुद्धिमान, अच्छा सलाहकार, उत्तम एवं परमायु सन्तान से युक्त, प्रेम-प्रणय में सफल, थोक का व्यापारी, फौज में कमाण्डर, कुल दीपक, बाप से पोते तक सभी सुखी, महाधनी, भाग्यवान्, जूए, सट्टे में लाभ प्राप्त करने वाला होता है। जातक के सिर पर लाटरी का योग होता है। शुभ बृहस्पति को बलवान करने हेतु १, ३, ५, ८, ९, १०, १५, १७ आदि उपाय करें।

अशुभ—जीवन में बड़े-बड़े उतार चढ़ाव, सन्तान से दुःखी कुल का घातक, किसी बच्चे की मृत्यु का योग, गृहस्थ जीवन दुःखी तथा जीवन के अन्तिम समय में जातक को भयंकर यंत्रणा होती है। सन्तान पर धन नाश तथा जुए सट्टे में हानि होती है। अशुभ गुरु के अनिष्ट हेतु २१, २२, २६, २८, ३०, ३१ आदि उपाय करें।

बृहस्पति षष्ठम भाव में

शुभ—निरोगी, धनवान, समृद्ध जीवन, उच्च पद पर प्रतिष्ठित, नौकरों चाकरों से युक्त, मुकद्दमे व झगड़े में शत्रुओं पर विजय, मामा, बुआ, ताया, चाचा के लिए शुभ तथा उनसे धन लाभ प्राप्त करने वाला। अचानक धन लाभ का योग, धन संचय कर्ता, दानी, चुनाव में जीतने वाला। जातक का पिता अत्यन्त धनी होगा तथा उसकी अपनी सन्तान सुखी होगी। शुभ गुरु को बलवान करने हेतु ६, ११ आदि उपाय करें।

अशुभ—मानसिक रोगों से तनाव से ग्रस्त, आँख का रोगी, परस्त्री

रत, अभागा, निर्धन, निर-उद्देश्य घूमने वाला, पिता के लिए दुःखकारक, झगड़े, मुकद्दमे में धन हानि, रोगी तथा मामा के धन का नाश करता होता है। अशुभ गुरु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २६, २७, २८, ३० आदि उपाय करें।

बृहस्पति सप्तम भाव में

शुभ—सुन्दर, सुशील और आज्ञाकारिणी तथा मधुर स्वभाव की स्त्री से युक्त, महाधनवान, व्यापार तथा हिस्सेदारी में लाभ, झगड़े, मुकद्दमे तथा चुनाव में विजय प्राप्त करने वाला, त्यागी, सर्वप्रिय, सर्वत्र सम्मानित तथा धार्मिक संस्थानों का मुखिया, ज्योतिषी, कर्मकाण्डी, विद्वान, पण्डित अथवा साधु होता है। शुभ गुरु को बलवान करने हेतु १, २, ३, ८ आदि उपाय करें।

अशुभ—राज दरबार से हानि, विधवा बहन वाला, घुमक्कड़ साधु, परस्त्रीरत, सन्तान के लिए अशुभ, स्त्री सुख अल्प, दुष्चरित्र, ढोंगी, स्त्री पक्ष का धन नाश करने वाला, व्यापार में हानि तथा दुःखी होता है। अशुभ गुरु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २६, २८, ३०, ३१ आदि उपाय करें।

बृहस्पति अष्टम भाव में

शुभ—विवाह के पश्चात् भाग्योदय, लम्बी आयु वाला, समाज में सम्मानित एवं पूज्य, दयालु, व्यापार में लाभ, स्त्री पक्ष से धन की प्राप्ति, गुप्त विद्याओं का ज्ञाता व स्त्री का प्रिय होता है। शुभ गुरु को बलवान करने हेतु ६, ११ आदि उपाय करें।

अशुभ—दूसरों के माल को हजम करने वाला, व्यापार में हानि, रोगी, धन नाशकर्ता, डरपोक, जो उसका भला करे उसी का बुरा करने वाला, फरेबी, परस्त्रीरत, रक्त की कमी से पीड़ित तथा दुःखी होता है। अशुभ गुरु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २६, २७, २८, ३०, ३१, ३२ आदि उपाय करें।

बृहस्पति नवम भाव में

शुभ—भाग्यवान् पिता व पिता के लिए भाग्य-कारक, धार्मिक विचार, धार्मिक कार्यों के लिए धन दान, समाज में सम्मानित एवं पूज्य, अविष्कार कर्ता, धर्म प्रचारक, उत्तम सन्तान से युक्त, विदेश में धन लाभ, अच्छा डॉक्टर, अध्यापक, जौहरी, वैद्य अथवा लेखक होता है। शुभ गुरु को बलवान करने हेतु १, ८, ९, १०, १५, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—निर्धन, हृदय रोगी, कम पुत्र, सन्तान से दुःखी, नास्तिक, भाग्यहीन, पिता का विरोधी तथा ससुराल पक्ष से झगड़ा करने वाला होता है। अशुभ गुरु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २४, २६, २८, ३०, ३१ आदि उपाय करें।

बृहस्पति दशम भाव में

शुभ—उत्तम व्यापारी, व्यापार में वृद्धि, उच्चपद पर प्रतिष्ठित, समृद्ध विचारों वाला, नौकर चाकरों से युक्त, मकान तथा वाहन से युक्त, नेता, मन्त्री, राजा अथवा राजा के समान होता है। जातक महाधनी एवं परोपकारी होता है। शुभ गुरु को बलवान करने हेतु १, २, ५, ६, ७, ८, ९, १४, १५ आदि उपाय करें।

अशुभ—शेखचिल्ली, भाग्यहीन, झगड़ालू, परस्त्रीरत, पिता के लिए अशुभ, श्वास रोग, रक्त विकार आदि रोगों से पीड़ित, धन का नाशक तथा राजदरबार में हानि प्राप्त करने वाला जातक होता है। अशुभ गुरु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २३, २४, २६, २८, ३०, ३१, ३३ आदि उपाय करें।

बृहस्पति एकादश भाव में

शुभ—उच्च शिक्षित, बुद्धिमान, सम्मानित, जीवन की सभी सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण, भाग्यवान् पुत्रों से युक्त, वायदे का पक्का, सफल राजनीतिज्ञ, सत्ता से लाभ, नौकरों चाकरों से युक्त, शुभ मित्रों से युक्त, बहुत मकान तथा वाहन से युक्त, महाधनी तथा भाग्यवान् पिता वाला होता है। शुभ गुरु को बलवान करने हेतु १, ५, ६, ७, ८, ९, १४, १५ आदि उपाय करें।

अशुभ—अधर्मी, धन का नाशक, स्त्रियों को ठगने वाला, हमेशा कर्ज के बोझ से लदा रहने वाला, बुढ़ापे में दुःखी, सन्तान सुख अल्प तथा बहन, बुआ के लिए अशुभ होता है। अशुभ गुरु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २३, २४, २६, २८, ३०, ३१, ३३ आदि उपाय करें।

बृहस्पति द्वादश भाव में

शुभ—विदेश से धन लाभ, जातक डॉक्टर, वैद्य, कैमिस्ट, जज, वकील, उत्तम ज्योतिषी, प्रकाण्ड, पण्डित, संयमी, त्यागी, ट्रांसपोर्ट के कार्यों में लाभ प्राप्त करने वाला, बयालीस वर्ष के पश्चात् भाग्योदय तथा मृत्यु के पश्चात् मोक्ष प्राप्त होता है। शुभ गुरु को बलवान करने हेतु ६, ११, १३ आदि उपाय करें।

अशुभ—षड्यन्त्रकारी, धोखेबाज, कम सन्तान वाला, जिगर, तिल्ली का रोगी, स्त्री रोगी, झगड़ालु तथा दुःखी होता है। अशुभ गुरु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २६, २७, २८, ३०, ३१, ३२ आदि उपाय करें।

बृहस्पति के उपाय

शुभ

१. इस पुस्तक में दी हुई विधि अनुसार 'पुखराज' धारण करना।
२. पीले रंग के वस्त्रों का प्रयोग करना तथा घर में पीले रंग के पर्दे लगाना। अपने सोने वाले कमरे में पीला अथवा क्रीम रंग दीवारों पर करना। परन्तु पीले रंग का जूता न पहनना।
३. गुरु के दिन अथवा नक्षत्र से आरम्भ करके १०८ दिन सोने के चम्मच से खाना खाना।
४. सत्ताईस गुरुवार चने की दाल का सेवन करना।
५. पीले सूर्यमुखी का पौधा घर में लगाना।
६. गुरु के दिन या नक्षत्र में धर्म स्थान से लड्डू अथवा बूँदी का प्रसाद ग्रहण करना।
७. सत्ताईस गुरुवार केसर का तिलक लगाना तथा केसर की पुड़िया पीले

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

२८५

रंग के कपड़े या कागज में अपने पास रखना।

८. गुरु के दिन या नक्षत्र में चने की दाल के ९ जोड़े, हल्दी की एक गट्ठी, पीपल के पाँच पत्ते, मुलट्टी की एक गट्ठी, सूर्य मुखी का एक फूल, केसर, पीले रंग के वस्त्र में बाँधकर इयोढी की छत में या दीवार पर लटकाना।
९. अपने इष्टदेव की सोने की मूर्ति बनाकर गुरुवार या गुरु के नक्षत्र में अपने घर में स्थापित करना।
१०. पाँच गुरुवार अपने इष्टदेव का पूजन करके पीले रंग के मिष्ठान भोजन का भोग लगाना और स्वयं पीले रंग का भोजन करना।
११. अपने इष्टदेव की मूर्ति के आगे सत्ताईस गुरुवार गौ के घी का दीपक जगाना।
१२. पीले रंग की बोटल में पानी डालकर सात दिन धूप में रखना तथा इस पानी को नहाने वाले पानी में मिलाकर गुरु के दिन अथवा नक्षत्र से शुरू करके सत्ताईस दिन स्नान करना।
१३. सत्ताईस गुरुवार प्रातः उठकर अपने पाँवों के प्रथम दर्शन कर स्पर्श करना।
१४. सत्ताईस गुरुवार हल्दी की गट्ठी तथा पीपल के पाँच पत्ते सिरहाने में डालकर सोना।
१५. सोने या कांस्य के टुकड़े पर 'गुरु यन्त्र' खुदवा कर बृहस्पति के दिन अथवा नक्षत्र में अपने पास रखना।
१६. घर में अपने इष्टदेव का सत्ताईस गुरुवार चमेली अथवा कमल का पीला फूल अर्पण करना।
१७. छह तार का पीला धागा लेकर उसमें सात गाँठें लगाकर गुरु के दिन अथवा नक्षत्र में दाहिनी भुजा पर धारण करना।

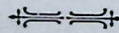
अशुभ

२१. इस पुस्तक में दी गई विधि अनुसार 'गुरु यन्त्र' धारण करना।
२२. सत्ताईस गुरुवार धर्म स्थान पर लड्डू अथवा बूँदी का प्रसाद चढ़ाना।
२३. अपने धर्म गुरु को पाँच गुरुवार पाँच लड्डू पाँच छूकर भेंट करना।

२८६

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

२४. साधु अथवा गुरु को पीत या भगवे वस्त्र पाँव छूकर भेंट करना।
२५. छह तार का पीला कच्चा धागा लेकर सत्ताईस गुरुवार तथा गुरु का होरा में पीपल के वृक्ष को बाँधना और केसर का तिलक लगाना।
२६. शराब न पीना।
२७. गुरुवार को बृहस्पति की वस्तुएँ दान न लेना।
२८. अपने इष्टदेव की सोने, चाँदी या कांस्य की मूर्ति बनाकर गुरु के दिन या नक्षत्र में धर्म स्थान में स्थापित करना।
२९. पाँच पीत पुष्प पाँच गुरु की होरा में निर्जन स्थान में दबाना।
३०. गुरु के दिन या नक्षत्र में चने की दाल के ९ जोड़े, हल्दी की एक गट्ठी, पीपल के पाँच पत्ते, मुलट्ठी की एक गट्ठी, सूर्य मुखी का एक फूल तथा केसर पीले रंग के वस्त्र में बाँधकर चलते पानी में बहाना।
३१. सत्ताईस गुरुवार धर्म स्थान में गाय के घी का दीपक जलाना।
३२. सात गुरुवार गुरु की खाद्य वस्तुएँ धर्म स्थान या पिंगलवाड़ा में देना।
३३. सात गुरुवार घोड़े को चने की दाल खिलाना।
३४. पीले वस्त्र न पहनना तथा पीत वस्त्रों का प्रयोग न करना।
३५. स्वर्ण धारण न करना।



शुक्र



शुक्र प्रथम भाव में

शुभ—जातक सुन्दर, तीक्ष्ण नयन नक्श, हँसमुख, भाग्यवान्, आनन्दित, सर्वप्रिय, गणितज्ञ, कवि, सुन्दर वस्त्रों से युक्त, विवाह से पूर्व ही नौकरी का योग, स्त्रियों का प्रिय, यदि जातक स्त्री हो तो सुन्दर आभूषणों से युक्त, जातक धनी एवं सुखी, सम्भोग में स्त्री की पूर्ण तृप्ति करने वाला होता है। काम-क्रीड़ा में स्त्री की वस्ती का स्पर्श, चुम्बन करने वाला जातक होता है। शुभ शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु १, ३, ४, ७, ९, १०, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक माता-पिता, स्त्री के लिए अनिष्ट, स्त्री रोगी, अल्पसन्तान। कृशशरीर, ज्वर, गुर्दा, शूगर रोग से ग्रस्त, गालें बीच धंसी हुई। स्त्री स्त्री जातक को गुप्तांग तथा गर्भाशय के रोग, २५वें वर्ष में विवाह अशुभ, जातक के तलाक का योग होता है। अशुभ शुक्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २६, २७, ३१, ३३ आदि उपाय करें।

शुक्र द्वितीय भाव में

शुभ—जातक धनी-भाग्यशाली, आनन्दमय जीवन, उच्च अधिकारियों तथा सत्ताधारियों से लाभ। सामाजिक कार्यों में सफलता, सर्वप्रिय, सुन्दर

वस्त्राभूषणों से युक्त, विवाह धूम-धाम से, महासुन्दरी से युक्त, काम-क्रीड़ा में स्त्री के गुप्तांग को स्पर्श तथा चुम्बन करने वाला, बाजीकरण प्रयोग कर्त्ता, आभूषण, होटल, ब्यूटी पार्लर से लाभ प्राप्त करने वाला, शुभ शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु १, ४, ८, ९, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक-अल्पसन्तान, विधवा या कुलटा स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला, दुःखी, रोगी स्त्री से युक्त तथा बुरे कामों में धन व्यय करने वाला होता है। अशुभ के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २७, २९, ३०, ३१ आदि उपाय करें।

शुक्र तृतीय भाव में

शुभ—जातक निरोगी, सुन्दर तथा शिक्षित भाई-बहन से युक्त, मित्रों तथा सम्बन्धियों का प्रिय ऐसे जातक पर स्त्रियाँ मुग्ध रहती हैं। सम्बन्धियों से लाभ, जातक की सुन्दर भुजाएँ तथा सुन्दर हाथ, काम क्रीड़ा में स्त्री की जाँघ को स्पर्श तथा मर्दन करने वाला प्रसन्न तथा धन संचय कर्त्ता तथा यात्रा से लाभ प्राप्त करने वाला होता है। शुभ शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु १, ४, ९, १३ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक दुःखी, निर्धन, कृपण, अपमानित भाई-बहनों तथा स्त्री से कलह करने वाला, स्त्री पक्ष का धन नाश, पिता के लिए अशुभ पड़ोसियों से अन-बन तथा निरर्थक घूमने वाला होता है। अशुभ शुक्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २७, २८, ३१, ३२ आदि उपाय करें।

शुक्र चतुर्थ भाव में

शुभ—जातक भाग्यशाली, धनी, जायदाद, वाहन से युक्त, सुन्दर शुभ माता से युक्त, घर में पालतु पशु रखने वाला, पैतृक-सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, ट्रांसपोर्ट में नौकरी, दाँतों का डॉक्टर, उच्चशिक्षित, सभ्य, काम क्रीड़ा में स्त्री के घुटनों को स्पर्श, मर्दन करने वाला, गृहस्थ जीवन सुखी तथा माता का प्रिय होता है। शुभ शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ४, ८, ९, १७ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक का गृहस्थ जीवन दुःखी, पैतृक-सम्पत्ति न मिलना, मादक वस्तुओं का सेवन करने वाला, वाहन से दुर्घटना का भय, सन्तान में विलम्ब, माता-पिता तथा स्त्रियों से अपमानित दुःखी एवं निराश जातक होता है। अशुभ शुक्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २४, २७, ३१, ३५ आदि उपाय करें।

शुक्र पंचम भाव में

शुभ—सन्तान सुन्दर, विशेषतः कन्याएँ, सुन्दर, सट्टा-जुए में लाभ, लाटरी का योग, उच्चाधिकारी, उत्तम व्यापारी, संगीत में दक्ष, अच्छा सलाहकार अच्छा मित्र, प्रेम-प्रणय में सफलता, काम-क्रीड़ा से स्त्री की टाँगों को स्पर्श मर्दन करने वाला, भाग्यवान् तथा स्त्री प्रिय जातक होता है। शुभ शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु १, ४, ७, ८, ९ आदि उपाय करें।

अशुभ—माता-पिता के लिए अशुभ सामाजिक नियमों का उलंघन कर्त्ता, प्रेम विवाह का योग, ढोंगी, बड़ों का आदर न करने वाला तथा जुए में धन नाश करने वाला, चरित्रहीन, अधिक सम्भोग से गर्भपात का भय। मामा, मासी, फूफी का धन नाशकर्त्ता होता है। अशुभ शुक्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २६, २७, ३१, ३४ आदि उपाय करें।

शुक्र षष्ठम भाव में

शुभ—धनी, निरोगी, सुन्दर स्त्री से युक्त, झगड़े, मुकद्दमे में शत्रुओं पर विजय, चुनाव जीतने वाला, काम-क्रीड़ा में स्त्री के पाँव का मर्दन करने वाला, पालतु पशु रखने वाला, सुखी जातक होता है। शुभ शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु ५, ६ आदि उपाय करें।

अशुभ—विलासी, परस्त्रीरत गुर्दे, शूगर, चर्म रोग का रोगी, कृश शरीर, स्त्री जातक के बाँझ होने का योग, मुकद्दमे में धन हानि, मामा, मासी, बुआ के लिए अशुभ तथा बदनाम होता है। अशुभ शुक्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २७, २८, ३१ आदि उपाय करें।

शुक्र सप्तम भाव में

शुभ—उत्तम व्यापारी, हिस्सेदारी में लाभ, महासुन्दरी तथा शुभ स्त्री से युक्त, काम-क्रीड़ा में स्त्री के मुख का चुम्बन करने वाला, यात्राएँ करने वाला तथा यात्रा से लाभ, गृहस्थ जीवन सुखी तथा पिता के लिए भाग्य कारक होता है। शुभ शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ७, ८, ९, ११, १२, १४, १८ आदि उपाय करें।

अशुभ—सन्तान से दुःखी, अल्पायु, विलासी, परस्त्रीरत, पर स्त्रियों पर धन नाश, गुप्तांग रोगी, दुःखी तथा हिस्सेदारी के काम से हानि उठाने वाला, धन नाशकर्ता होता है। अशुभ शुक्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २६, २७, ३१ आदि उपाय करें।

शुक्र अष्टम भाव में

शुभ—मकान तथा वाहन से युक्त, धनी, स्त्री पक्ष से लाभ, किसी सम्बन्धित के मरने के बाद धन लाभ, हिस्सेदारी के व्यापार में लाभ, काम-क्रीड़ा में स्त्री का मुख तथा होंठ चुम्बन करने वाला, २५वें वर्ष विवाह युक्त तथा स्त्री प्रिय जातक होता है। शुभ शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु ५, ६, ७, ११, १४, १५, १५, १९ आदि उपाय करें।

अशुभ—स्त्री के आधीन रहने वाला, भाई बहनों से कलह, माता के लिए अशुभ, परोपकार न मानने वाला, गुप्तांग रोगी अथवा नपुंसक, स्त्री उग्रस्वभाव की झगड़ालु, परस्त्रीरत तथा धन का अधिक व्यय करने वाला होता है। अशुभ शुक्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २७, २८, ३१ आदि उपाय करें।

शुक्र नवम भाव में

शुभ—उच्च शिक्षित, दयालु, सफल व्यक्ति, उच्चपद पर आसीन, युद्ध में प्रवीण, विदेश भ्रमण से धन लाभ, अन्तर्जातीय विवाह, पिता के लिए भाग्यकारक, सर्वप्रिय, धनी तथा तीर्थ यात्राएँ करने वाला, धार्मिक विचारों वाला जातक होता है। काम-क्रीड़ा में स्त्री की भुजाओं, कन्धे तथा हाथों का

चुम्बन करने वाला। शुभ शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु १, ४, ९, १३, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—उपरोक्त शुभ फल कम होते हैं। गुरु अथवा धर्म गुरु की कन्या से प्रेम-सम्बन्ध, कम सन्तान, रक्त अल्पता का रोग, सम्बन्धियों के लिए अशुभ, मादक वस्तुओं का प्रयोग करने वाला, २५वें वर्ष में विवाह अशुभ तथा खेतीबाड़ी के कामों में हानि तथा गृहस्थ जीवन दुःखी होता है। अशुभ शुक्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २७, ३१, ३२, ३४ आदि उपाय करें।

शुक्र दशम भाव में

शुभ—सुखी, सुसंस्कृत, धनी, सुन्दर स्त्री से युक्त मुकद्दमे झगड़े में जीतने वाला, संगीत, फिल्म उद्योग, कौसमैटिक्स, ट्रांसपोर्ट आदि से धन लाभ प्राप्त करने वाला, सुन्दर मकान, वाहनयुक्त, सही फैसले करने वाला, न्यायप्रिय तथा सर्वप्रिय जातक होता है। शुभ शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ४, ९, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—धन हानि, सन्तान की ओर से चिन्ता, परस्त्रीरत, स्त्री दुःखी तथा रोगी जातक के प्रत्येक कार्य में विघ्न पड़ता है। अशुभ शुक्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २७, २९, ३१ आदि उपाय करें।

शुक्र एकादश भाव में

शुभ—महाधनी, उच्च शिक्षित, शुभ मित्रों से युक्त, विवाह के बाद भाग्योदय, सामाजिक कार्यों में सफलता, सुन्दर स्त्री तथा सन्तान से युक्त, आनन्दमय जीवन, काम-क्रीड़ा में स्त्री के उदर अथवा पीठ का चुम्बन करने वाला, फिल्म उद्योग से धन लाभ प्राप्त करने वाला, सुखी तथा सर्वप्रिय जातक होता है। शुभ शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ४, ९, ११, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—अल्प सन्तान, खेती-बाड़ी के कामों में हानि, स्त्री कलह, मित्रों से मन मुटाव, व्यापार में धन हानि, शीघ्र वीर्यस्खलन अथवा हस्त

२१२

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

मैथुन की लत, रोगी तथा धन हानि होती है। अशुभ शुक्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २५, २७, २९, ३०, ३१ आदि उपाय करें।

शुक्र द्वादश भाव में

शुभ—प्रण का पक्का, जीवन की सभी सुख-सुविधाओं से सम्पन्न, सर्वप्रिय, गुप्त विद्याओं का खोजी, काम कला में दक्ष, विदेश भ्रमण द्वारा धन लाभ, एकान्त प्रिय, सुन्दर स्त्री युक्त, संगीत प्रेमी तथा सुन्दर जातक होता है। ज्योतिषी, यान्त्रिक-मान्त्रिक-तान्त्रिक वैज्ञानिक तथा दीर्घजीवी व्यक्ति, आज्ञाकारिणी तथा शुभ स्त्री युक्त। काम-क्रीड़ा में स्त्री की नाभी भाग का चुम्बन करने वाला तथा धनवान होता है। शुभ शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु ५, ६ आदि उपाय करें।

अशुभ—अनेक स्त्रियों से अवैध सम्बन्ध रखने वाला, दुष्ट एवं नीच स्त्रियों से सम्भोग रत, स्त्री सुख रहित, धोखेबाज तथा दुःखी होता है। स्त्री के स्वास्थ्य के लिए भी अशुभ होता है। अशुभ शुक्र के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २७, २८, ३१ आदि उपाय करें।

शुक्र के उपाय

शुभ

१. इस पुस्तक में बताई विधि अनुसार 'हीरा' धारण करना।
२. शुक्र के दिन या नक्षत्रों में अपने इष्ट देव की चाँदी की मूर्ति घर में स्थापित करना।
३. चाँदी के आभूषण शुक्र के दिन या नक्षत्रों में पहनना।
४. क्रीम रंग के वस्त्र पहनना, घर में क्रीम रंग के पर्दे लगाना तथा बिस्तर पर क्रीम रंग की चादर का प्रयोग करना।
५. घर में सफेद गाय शुक्र के दिन या नक्षत्रों में पालना।
६. शुक्र के दिन या नक्षत्रों में घर में कच्चे स्थान पर तुलसी का पौधा लगाना।

७. शुक्र के दिन या नक्षत्र से शुरू करके सत्ताईस शुक्रवार गुप्तांग को दूध से धोना।
८. चाँदी की कटोरी में सफेद चन्दन, मुश्कपूर, सफेद पत्थर का टुकड़ा डालकर शुक्र के दिन या नक्षत्रों में अपने सोने वाले कमरे (बैड रूम) में रखना।
९. सत्ताईस दाने चरी, एक सफेद फूल, मिश्री, मुश्कपूर की एक टिक्की, अभ्रक सफेद या क्रीम रंग के रेशमी कपड़े में लपेटकर शुक्र के दिन या नक्षत्रों में घर में दीवार पर लटकाना।
१०. सात शुक्रवार जमीकन्द का प्रयोग करना।
११. सत्ताईस शुक्रवार सफेद चन्दन का अपने मस्तक पर तिलक लगाना।
१२. शुक्र के दिन या नक्षत्रों में चाँदी का बिछुआ पैर की अनामिका अंगुली में धारण करना।
१३. क्रीम रंग के जूते पहनना।
१४. चाँदी के टुकड़े पर 'शुक्र यन्त्र' खुदवा कर क्रीम रंग के रेशमी कपड़े में लपेटकर शुक्र के दिन या नक्षत्रों में अपने पास रखना।
१५. शुक्र के दिन या नक्षत्रों में क्रीम रंग का अंडरवीयर (कच्छा) पहनना।
१६. शुक्र के दिन या नक्षत्रों से शुरू करके सत्ताईस दिन घर में अपने इष्ट देव को सफेद चन्दन व इत्र का तिलक लगाना।
१७. सफेद फूलों का गुलदस्ता चाँदी के जार में शुक्र के दिन या नक्षत्रों में घर में रखना।
१८. स्त्री जातक अपने बालों में शुक्र के दिन या नक्षत्रों में सफेद फूल लगाए।
१९. शुक्र के दिन या नक्षत्रों में सम्भोग के समय नीचे क्रीम रंग की चादर बिछाना।

अशुभ

२१. इस पुस्तक में वर्णित विधि अनुसार यन्त्र धारण करना।
२२. सफेद अथवा क्रीम रंग के वस्त्रों का प्रयोग न करना।
२३. शुक्र के दिन या नक्षत्रों में सफेद गाय का दान करना या गऊशाला

२९४

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

- आदि में शुक्र के दिन से शुरू करके सात दिन गाय को चरी डालना ।
२४. घर में सफेद गाय न पालना यदि गाय रखनी हो तो अन्य रंग की गाय पालना ।
२५. अपने इष्टदेव की चाँदी की मूर्ति बनवाकर शुक्र के दिन या नक्षत्रों में अपने इष्ट धर्म स्थान में स्थापित करना ।
२६. शुक्र के दिन या नक्षत्र में सफेद या क्रीम रंग के वस्त्र पिंगलवाड़ा आदि में स्त्रियों को देना ।
२७. सिगरेट या तम्बाकू का प्रयोग न करना ।
२८. चाँदी के टुकड़े पर 'शुक्र यन्त्र' खुदवा कर रेशमी क्रीम या सफेद रंग के वस्त्र में लपेटकर शुक्र के दिन या नक्षत्रों में नीम के वृक्ष के नीचे दबाना ।
२९. शुक्र के दिन या नक्षत्रों में सफेद रंग के पत्थर पर चन्दन का तिलक लगाकर चलते पानी में बहाना ।
३०. शुक्र के दिन या नक्षत्रों में शुक्र की वस्तुएँ न लेना ।
३१. पाँच शुक्रवार पाँच कन्याओं को दूध व मिश्री देना ।
३२. शुक्र के दिन या नक्षत्रों में अपने धर्म स्थान पर तुलसी का पौधा लगाना ।
३३. पाँच शुक्रवार शुक्र का व्रत रखना ।
३४. पाँच शुक्रवार अपने इष्ट धर्म स्थान में दूध, मिश्री, कली या सफेद गुलाब के फूल अर्पण करना ।
३५. विधि पूर्वक अपनी स्त्री के साथ दो बार फेरे लेना ।



शनि



शनि प्रथम भाव में

शुभ—धनवान, न्यायप्रिय, दीर्घ आयु, यात्राएँ करने वाला, राजनीतिज्ञ, शत्रुओं पर विजयी तथा कठिन परिश्रमी जातक होगा। शुभ शनि की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ४, ६, ८, ९, १०, १२, १३ आदि उपाय करें।

अशुभ—आलसी, दुःखी, निर्धन, दाँत, हड्डी, तिल्ली, घुटने, जोड़ों के दर्द, कब्ज का रोगी, शिक्षा अधूरी। सन्तान दुःख, आँख का रोग, मादक वस्तुओं का सेवन करने वाला दुःखी और पैतृक सम्पत्ति से रहित होता है। अशुभ शनि के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २७, २९, ३०, ३१, ३७ आदि उपाय करें।

शनि द्वितीय भाव में

शुभ—कोयला, सिक्का, चमड़ा, मशीनरी, तेल के व्यापार में लाभ, कठिन परिश्रमी, गुरु का उपासक, पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति, दयालु, न्यायप्रिय तथा जातक को पूर्ण मातृ सुख होता है। शुभ शनि की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ८, १२, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—कठिन परिश्रम के पश्चात् भी पर्याप्त धन लाभ नहीं होता,

२९६

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

विद्या अधूरी, मादक पदार्थों का सेवन करने वाला, वहमी, उदासीन, नास्तिक, व्यापार में धन हानि तथा ससुराल पक्ष के लिए अशुभ होता है। अशुभ शनि के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २७, २९, ३०, ३४, ३५, ३७, ३८ आदि उपाय करें।

शनि तृतीय भाव में

शुभ—धनी, झगड़े मुकद्दमे में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, सच्चा, नेक, धार्मिक विचारों वाला, आँखों का डॉक्टर, दीर्घ आयु, भाइयों की सहायता करने वाला, कूटनीतिज्ञ व संयमी होता है। शुभ शनि की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ४, ८, १२, १५ आदि उपाय करें।

अशुभ—भाइयों से झगड़ा तथा भाई की मृत्यु का योग, सम्बन्धियों से दुःखी तथा अपमानित, निर्धन, फूहड़, विलासी, रोगी, अल्प आयु तथा यात्रा में हानि उठाने वाला जातक होगा। अशुभ शनि के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २५, २७, २९, ३०, ३२ आदि उपाय करें।

शनि चतुर्थ भाव में

शुभ—मकान, वाहन से युक्त, विदेश यात्रा का योग, खानदानी हकीम, डॉक्टर, यदि शनि धनेश, लाभेश अथवा सप्तमेश से शुभ युक्त दृष्ट हो तो पैतृक धन का लाभ एवं धनी, मातृ-पितृ सुख भरपूर, गृहस्थ जीवन सुखी, काली वस्तुओं, तेल, खाद्य पदार्थ के व्यापार में लाभ प्राप्त करता है। शुभ शनि की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ४, ५, ८, ९, १२ आदि उपाय करें।

अशुभ—माता पुराने रोग से ग्रस्त, विद्या अधूरी, यदि अपना मकान बनाए तो माता का नाश हो, मामा, मासियों के लिए अशुभ, राजनीतिज्ञों से शत्रुता, पैतृक स्थान में दुःखी तथा जातक को पैतृक सम्पत्ति नहीं मिलती। अशुभ शनि के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २५, २७, २८, ३०, ३३ आदि उपाय करें।

शनि पंचम भाव में

शुभ—न्यायप्रिय, खोजी यदि शनि कुम्भ राशि में हो तो बहुत पुत्रों वाला, स्वाभिमानी, देवी का भक्त, उत्तम लेखक, बजुर्गों की संगति में रहने का इच्छुक, यात्रा से लाभ, सिनेमा तथा फिल्म व्यापार में लाभ, गम्भीर प्रकृति वाला जातक होता है। दत्तक पुत्र का योग। शुभ शनि की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ४, ५, ८, १२ आदि उपाय करें।

अशुभ—सन्तान के बारे में चिन्तित, जुए में हानि, सिनेमा या फिल्म उद्योग से हानि, कम सन्तान अथवा निःसन्तान, यदि मकान हो तो सन्तान कम, प्रेम-प्रणय में असफलता, विधवा स्त्रियों के संग रहने वाला तथा दुःखी जातक होता है। जातक को फौजदारी मुकद्दमे में सजा होती है। अशुभ शनि के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २३, २४, २७, २९, ३०, ३६, ३९ आदि उपाय करें।

शनि षष्ठम भाव में

शुभ—शत्रुओं का नाशक, चुनाव जीतने वाला, धनवान उच्च पद पर आसीन, सफल राजनीतिज्ञ, बहुत पुत्रों वाला, कानून का विशेषज्ञ, यात्रा से लाभ तथा जीवन में सफलता प्राप्त करने वाला जातक होता है। शुभ शनि की शुभता बढ़ाने हेतु ७, ८, ११ आदि उपाय करें।

अशुभ—व्यसनी, अजीर्ण रोगों का रोगी, कान का रोगी नया मकान बनाने से राज्य भय, मुकद्दमे में धन हानि, पालतु पशु रखने तथा मुर्गीखाना खोलने में हानि, माता के लिए कष्टकारक, मामा-मामी, मौसी के लिए अशुभ। व्यापार में नौकरों से धन हानि। अशुभ शनि के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २७, २९, ३०, ३१, ३९, ४० आदि उपाय करें।

शनि सप्तम भाव में

शुभ—विवाह में विलम्ब, जातक की पत्नी आज्ञाकारिणी तथा वफादार, अत्यन्त धनी, नेता, गृहस्थ जीवन सुखी, सरकार से धन लाभ तथा शत्रुओं पर विजयी होता है। जातक को व्यापार में लाभ होता है। शुभ शनि की शुभता

२९८

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

बढ़ाने हेतु १, २, ४, ५, ८, ९, १२, १३ आदि उपाय करें।

अशुभ—धन का अन्यान्य तरीकों से नाश, कम सन्तान, धोखेबाज, चालबाज, परस्त्री रत, स्त्रियों से अपमानित अथवा सम्भोग शक्ति क्षीण होती है तथा जातक सम्भोग में शीघ्र स्खलित होता है। आँख का रोगी होता है। अशुभ शनि के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २४, २७, २९, ३०, ३६, ३९ आदि उपाय करें।

शनि अष्टम भाव में

शुभ—परोपकारी, दीर्घायु, शत्रु नाशक, व्यापार में लाभ, बड़े शिश्न वाला तथा किसी नए विषय की खोज करता है। स्वाभिमानी तथा सुखी जातक होता है। शुभ शनि की शुभता बढ़ाने हेतु ७, ८, ११ आदि उपाय करें।

अशुभ—निराश, बेईमान यदि शनि जल राशि में हो तो डूबने का भय अथवा लम्बी बीमारी के पश्चात् मृत्यु, व्यसनी, झगड़ालु, तिरस्कृत, परस्त्री रत, कपटी, कुण्डली में शनि जितने ग्रहों से युक्त हो घर में उतनी मौतों के बाद जातक का जन्म होता है। व्यापार में हानि व धोखा उठाने वाला होता है। अशुभ शनि के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २७, २८, ३०, ३१, ३९, ४० आदि उपाय करें।

शनि नवम भाव में

शुभ—जातक दार्शनिक, वैज्ञानिक, देवी का भक्त, ज्योतिषी परोपकारी, भाग्यवान्, जमीन जायदाद से युक्त, निरन्तर उन्नति करने वाला, भाग्यवान् माता-पिता, विदेश यात्रा से लाभ तथा धनी व्यक्ति होता है। शुभ शनि की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ४, ८, १२ आदि उपाय करें।

अशुभ—उपरोक्त शुभ फलों की कमी आती है, अधर्मी, अभागा, नास्तिक, बुरे कामों से लाभ प्राप्त करने वाला, रोगी, माता-पिता तथा स्त्री से झगड़े करने वाला तथा विदेश में असफल होता है। अशुभ शनि के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २७, २९, ३०, ३२ आदि उपाय करें।

शनि दशम भाव में

शुभ—राजनीतिज्ञ, नीतिवान, कूटनीतिज्ञ, कठिन परिश्रमी, दीर्घ आयु, ससुराल पक्ष से धन लाभ, पिता की दीर्घ आयु, धार्मिक स्थानों की यात्रा करने वाला, जातक जीवन में अत्यधिक उन्नति करता है परन्तु जब अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा आती है तो जातक का पतन होता है। जातक के लिए ४८ वर्ष के पश्चात् मकान बनाना शुभ होता है। शुभ शनि की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ८, ९, १२, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक मादक पदार्थों का सेवन करने वाला, व्यापार में हानि, माता-पिता के धन की हानि करने वाला, माता के लिए रोग कारक, गृहस्थ जीवन दुःखी तथा ससुराल पक्ष के लिए अशुभ होता है। अशुभ शनि के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २७, २९, ३०, ३५ आदि उपाय करें।

शनि एकादश भाव में

शुभ—दीर्घ आयु, राजनीतिज्ञ, सत्ताधारी, अत्यन्त धनी, मकान वाहन से युक्त, व्यापार में निरन्तर धन लाभ प्राप्त करने वाला, पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति, जातक के मित्र कम होते हैं और वे जातक के सहायक ही होते हैं। शुभ शनि की शुभता बढ़ाने हेतु १, २, ३, ४, ८, १२, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—बड़े भाई के लिए हानिकारक, कम सन्तान, विद्या में रुकावट, कुल नाशक, व्यापार में हानि, मित्रों द्वारा विरोध, गृहस्थ जीवन दुःखी, अल्प आयु, धन हानि तथा जातक मादक पदार्थों का सेवन करने वाला होता है। अशुभ शनि के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २७, २९, ३०, ३४, ३५, ३७ आदि उपाय करें।

शनि द्वादश भाव में

शुभ—विदेश में धनी व सुखी, बहुत परिवार वाला, उत्तम व्यापारी, ऐश्वर्यवान्, परोपकारी, गुप्त विद्याओं का ज्ञाता और सुखी जातक होता है। शुभ शनि की शुभता बढ़ाने हेतु ७, ८, ११ आदि उपाय करें।

अशुभ—फौजदारी मुकद्दमे में कैद का भय, निर्जन स्थान में रहने

३००

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

का शौकीन, विदेश में असफलता, कृश शरीर, नेत्र रोगी, सन्तान के लिए अशुभ, स्त्रियों से अपमानित, सम्भोग में स्त्री की तृप्ति न कर सकने वाला, कम पुत्र वाला, दुःखी जातक होता है। अशुभ शनि के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २७, २८, ३०, ३१, ३९, ४० आदि उपाय करें।

शनि के उपाय

शुभ

१. इस पुस्तक में बताई विधि अनुसार 'नीलम' धारण करना।
२. नीले वस्त्र, नीले रंग के पर्दे तथा नीले रंग की चादरों का प्रयोग करना।
३. शनि की वस्तुओं का व्यापार करना। व्यापार का आरम्भ शनि के दिन या नक्षत्रों में करना।
४. लोहे के बर्तन में सरसों का तेल, काले माश के ७ दाने, १ काली मिर्च, ७ काले चने के दाने, पत्थर के कोयले का एक टुकड़ा, एक चमड़े का टुकड़ा, नीले रंग के कपड़े का टुकड़ा डालकर घर में दबाना।
५. अपने इष्टदेव की लोहे की मूर्ति बनवाकर उस पर नीला रंग करके या काली मिट्टी की मूर्ति बनवाकर और उसे नीला रंग करके घर में शनि के दिन या नक्षत्र में स्थापित करना।
६. शनि के दिन या नक्षत्रों में माथे पर सरसों के तेल का तिलक लगाना।
७. शनि के दिन या नक्षत्र में घर में भैंस रखना।
८. ७ शनिवार अपने इष्टदेव पर सरसों के तेल का दीपक जलाना।
९. शनि के दिन या नक्षत्रों में काले माश का प्रयोग करना।
१०. नीले रंग की बोतल में पानी डालकर सात दिन धूप में रखना, फिर उस पानी को नहाने वाले पानी में डालकर शनि या शनि के नक्षत्रों में आरम्भ करके सत्ताईस दिन स्नान करना।
११. शनि के दिन या नक्षत्र में घर में काला कुत्ता पालना।
१२. स्टील के बर्तनों का प्रयोग करना।

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

३०१

१३. सत्ताईस शनिवार सरसों के तेल की मालिश करना।
१४. लोहे या स्टील की अँगूठी पर 'शनि यन्त्र' खुदवा कर शनि की अँगुली पर धारण करना।
१५. शनि के दिन या नक्षत्र में लोहे या स्टील का कड़ा पहनना।

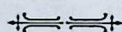
अशुभ

२१. इस पुस्तक में बताई विधि अनुसार 'शनि यन्त्र' धारण करना।
२२. नीले रंग के वस्त्र, नीले रंग के पर्दे तथा नीले रंग की चादरों का प्रयोग न करना तथा घर में दीवारों आदि पर नीला रंग न करना।
२३. घर में काली भैंस या कुत्ता न पालना।
२४. सात शनिवार आक के पौधे पर सात कील चढ़ाना।
२५. लोहे की कटोरी में तेल का छाया पात्र करना तथा वह तेल पाँच शनिवार आक के पौधे में डालना। पाँचवें शनिवार तेल चढ़ाने के पश्चात् तेल वाली कटोरी को वहीं दबा देना।
२६. सात शनिवार खाना खाने के पश्चात् बची हुई रोटी कौवों को डालना।
२७. सात शनिवार सात बादाम तथा काले माश अपने इष्ट धर्म स्थान में देना।
२८. काले माश के ७ दाने, १ काली मिर्च, ७ काले चने के दाने, पत्थर के कोयले का एक टुकड़ा, एक चमड़े का टुकड़ा किसी नीले रंग के कपड़े में बाँधकर शनिवार चलते पानी में बहाना।
२९. उपाय नम्बर २८ की वस्तुएँ निर्जन स्थान में दबाना।
३०. शराब तथा सिगरेट का प्रयोग न करना।
३१. शनि के दिन या नक्षत्र में भैंसे का दान करना या सात शनिवार भैंसे को काले चने खिलाना।
३२. सात शनिवार कीड़ों को काले तिल डालना।
३३. शनिवार या शनि के नक्षत्रों में मकान बनाना शुरू न करना।
३४. शनिवार को श्मशान घाट में लकड़ी दान करना।
३५. सात शनिवार पिंगलवाड़े में शनि की खाद्य वस्तुएँ दान देना।

३०२

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

३६. किसी लड़की के विवाह पर भट्टी के लिए ईंधन लेकर देना ।
३७. सात शनिवार काले माश को पीसकर उसके आटे की गोलियाँ बनाकर मछलियों को डालना ।
३८. शनि या शनि के नक्षत्र में शनि की वस्तुएँ दान न लेना ।
३९. शनि के दिन पत्थर के कोयले लंगर पकाने के लिए इष्ट धर्म स्थान में या पिंगलवाड़े में दान देना ।
४०. किसी सपेरे को साँप को दूध पिलाने के लिए पैसे दान देना ।



राहु



राहु प्रथम भाव में

शुभ—जिस जातक के राहु प्रथम भाव में हो तो जातक के सिर अथवा माथे पर तिल अथवा चिह्न होता है। धनवान, बड़े परिवार वाला, समृद्ध होता है। शुभ राहु की बल वृद्धि हेतु १, २, ३, ४, ११, १३, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—निर्दयी, क्रोधी, रोगी, स्त्री के लिए अशुभ, नास्तिक तथा निरन्तर घूमने वाला, पिता व सन्तान के लिए अशुभ होता है। अशुभ राहु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २८, ३१ आदि उपाय करें।

राहु द्वितीय भाव में

शुभ—जातक की ठोड़ी के पास तिल अथवा चिह्न होता है। राजा अथवा राजा के समान अथवा उच्च अधिकारी, धनवान, सुखी, परोपकारी, किसी धार्मिक संस्था का प्रधान, दीर्घ आयु, निरोगी, राजा से हमेशा लाभ प्राप्त करने वाला, गेहुआँ अथवा पक्का रंग, चरित्रवान तथा गुरु भक्त होता है। शुभ राहु की बल वृद्धि हेतु १, २, ५, ९, ११, १२, १३, १४ आदि

३०४

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

उपाय करें।

अशुभ—कम सन्तान, रोगी, दुःखी, झगड़ालु, अल्प आयु, लोभी, परस्त्रीरत, कृश शरीर, मानसिक तनाव से ग्रस्त, मादक पदार्थों का सेवन करने वाला, दो विवाह का योग, धन हानि, मुकद्दमे झगड़े में कैद का भय, भाईयों का विरोधी होता है। अशुभ राहु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २६, ३०, ३१, ३३ आदि उपाय करें।

राहु तृतीय भाव में

शुभ—जातक की भुजाओं अथवा हाथों पर तिल अथवा चिह्न होता है। महाधनवान, दृढ़ निश्चयी, सुखी, समृद्ध, सर्वत्र विजयी, वाहनयुक्त, उत्तम लेखक, ज्योतिषी, भाई तथा सम्बन्धियों की सहायता करने वाला तथा उनसे सहायता प्राप्त करने वाला होता है। शुभ राहु की बल वृद्धि हेतु १, २, १०, ११, १३, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—उपरोक्त फल कम होंगे, भाईयों तथा सम्बन्धियों द्वारा धन नाश, मित्र उधार लेकर वापस न करेंगे। अशुभ राहु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २६, ३१ आदि उपाय करें।

राहु चतुर्थ भाव में

शुभ—पुरुष की छाती पर, स्त्री के स्तनों तथा उसके आस-पास तिल अथवा चिह्न होगा। सुन्दर आभूषण युक्त, धनी, नौकर चाकर युक्त, उत्तम व्यापारी, उच्चपद पर आसीन, दयालु, नेक, माता का सेवक, सन्तान पक्ष भाग्यवान् तथा गृहस्थ जीवन सुखी होता है। शुभ राहु की बल वृद्धि हेतु १, २, ३, ६, ११, १३, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—माता के लिए अशुभ, दो विवाह का योग, वाहन से दुर्घटना का भय अपनी पत्नी के अतिरिक्त रखैल भी रखता है, अविश्वसनीय तथा धन का नाश होता है। अशुभ राहु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, ३१ आदि उपाय करें।

राहु पंचम भाव में

शुभ—जातक के पेट अथवा पीठ पर तिल का चिह्न, पुत्रवान, दयालु, धनी, उच्च अधिकारियों से लाभ प्राप्त करने वाला तथा जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होता है। शुभ राहु की बल वृद्धि हेतु १, २, ७, ११, १३, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—सन्तान नाश का भय, मुकद्दमे में सजा का भय, बातूनी, यदि जातक स्त्री हो तो बार-बार गर्भपात का भय, जातक के पिता और उसके पुत्र में झगड़ा, पुत्र प्राप्ति बिलम्ब से होती है। अशुभ राहु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २७, ३१, ३२ आदि उपाय करें।

राहु षष्ठम भाव में

शुभ—जातक की नाभी के पास तिल अथवा चिह्न होता है। दृढ़ निश्चयी, दीर्घ आयु, महाधनवान, झगड़े में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, यदि छोटे भाव में राहु चन्द्र से युक्त हो तो उसकी स्त्री सर्विस करने वाली होती है। जातक जीवन की सभी सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होता है। शुभ राहु की बल वृद्धि हेतु ६, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—नास्तिक, धोखेबाज, कुल का नाशक, बहन के लिए अशुभ, पालतु पशु रखने से हानि, जीवन में असफल एवं रोगी होता है। अशुभ राहु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३१, ३२ आदि उपाय करें।

राहु सप्तम भाव में

शुभ—जातक की वस्ती पर तिल अथवा निशान होता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, सरकारी कार्यों से लाभ अथवा सरकारी नौकरी का योग व धनी होता है। शुभ राहु की बल वृद्धि हेतु १, २, ३, ७, ८, ११, १३, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—दो शादियों का योग यदि राहु शुभ ग्रह से शुभ दृष्ट हो तो विवाह एक ही होता है। जातक रोगी, गृहस्थ जीवन दुःखी, माता-पिता के

३०६

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

धन का नाश तथा तलाक का योग होता है। अशुभ राहु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २७, ३१, ३२ आदि उपाय करें।

राहु अष्टम भाव में

शुभ—जातक की इन्द्री पर तिल अथवा चिह्न होता है। स्त्री पक्ष से लाभ, मध्यम आयु तथा धनी जातक होता है। शुभ राहु की बल वृद्धि हेतु ६, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—दुःखी, निराश, बदनाम, रोगी, झगड़ालु, अदालती झगड़ों में उलझे रहने वाला, अचानक दुर्घटना व बीमारी से धन हानि तथा अंग भंग का भय होता है। व्यापार में धन हानि होती है। अशुभ राहु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३१, ३२ आदि उपाय करें।

राहु नवम भाव में

शुभ—जांघ पर तिल और सर्वत्र सम्मानित, सन्तान का पोषक, नौकर चाकरों से युक्त, भूत-प्रेत आदि की सिद्धि करने वाला, विदेश भ्रमण करने वाला तथा मानसिक रोगों का उत्तम डॉक्टर होता है। शुभ राहु की बल वृद्धि हेतु १, २, ७, १०, ११, १३, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—माता-पिता सम्बन्धियों से झगड़ा करने वाला, ससुराल के लिए अशुभ, कम पुत्र वाला, परस्त्रीरत, नाखून झड़ने का रोग, रोगी, बदनाम तथा निराश जातक होता है। अशुभ राहु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २६, ३१, आदि उपाय करें।

राहु दशम भाव में

शुभ—घुटनों पर तिल अथवा चिह्न, चरित्रवान, सम्मानित, धनी, उत्तम व्यापारी, दीर्घ आयु, कवि अथवा लेखक होता है। शुभ राहु की बल वृद्धि हेतु १, २, ३, ५, ६, ९, ११, १२, १३, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—दुःखी, अशुद्ध विचारों वाला, कुल का विरोधी, माता के लिए अशुभ, गन्दे स्थानों में रहने का शौकीन, विधवा तथा नीच स्त्रियों से

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

३०७

अवैध सम्बन्ध स्थापित करने वाला तथा नशीली वस्तुओं पर धन नाश करता है। अशुभ राहु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २६, ३०, ३१ आदि उपाय करें।

राहु एकादश भाव में

शुभ—टाँग पर तिल अथवा चिह्न, बहुत पुत्र वाला, अति धनवान, जमीन जायदाद तथा वाहन से युक्त, अपने भाग्य का स्वयं निर्माता, लड़ाई-झगड़े में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, प्रवीण योद्धा, विद्वान, ज्योतिषी तथा पण्डित होता है। शुभ राहु की बल वृद्धि हेतु १, २, ५, ९, ११, १२, १३, १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—पितृ सुखहीन, कम सुनने वाला, पैतृक धननाश, सन्तान नाश का भय, आग से हानि, साँप काटने का भय, अदालत में जुर्माने की सजा, बेईमान, धोखेबाज, रीढ़ की हड्डी तथा पाँव का रोगी, मित्रों को धोखा देने वाला, ससुर तथा नाना पक्ष के धन का नाश करने वाला होता है। अशुभ राहु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २६, ३१, ३३ आदि उपाय करें।

राहु द्वादश भाव में

शुभ—पाँव पर तिल अथवा चिह्न, दयालु, दूसरों का सहायक, विदेश भ्रमण, भाई बहनों का पोषक, धनी, सुखी, समृद्ध, एकान्त प्रिय तथा गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होता है। शुभ राहु की बल वृद्धि हेतु ९ और १४ आदि उपाय करें।

अशुभ—क्रोधी, आँख का रोग, विदेश में धन हानि, चोरी का भय, धन नाशकर्ता, आत्महत्या की प्रवृत्ति। जातक पर अकारण झूठा इल्जाम लगता है। जातक बदनाम तथा बैडोल शरीर वाला होता है। अशुभ राहु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २४, २९, ३०, ३२ आदि उपाय करें।

राहु के उपाय

शुभ

१. इस पुस्तक में बताई हुई विधि अनुसार 'गोमेद' धारण करें।
२. अपने इष्टदेव की सिक्के की मूर्ति बनवाकर राहु के दिन अथवा नक्षत्रों में घर में स्थापित करना।
३. राहु के दिन अथवा नक्षत्रों में हाथी की चाँदी या सप्तधातु की मूर्ति बनवाकर घर में रखना।
४. कुण्डली में राहु जिस ग्रह का प्रतिनिधि है और यदि वह ग्रह शुभ है तो उसे ग्रह के रंग के वस्त्र पहनना।
५. जस्ते के टुकड़े पर 'राहु यन्त्र' खुदवा कर अपनी जेब में रखना।
६. राहु के दिन या नक्षत्र में सिक्के के चार टुकड़े चारपाई के चार पायों के साथ बाँधना।
७. अपने इष्ट धर्म स्थान में राहु के दिन या नक्षत्रों में बादाम चढ़ाकर आधे बादाम प्रसाद रूप में वापिस घर ले आना और उसे कपड़े में बाँधकर अपने पास रखना।
८. गंगाजल या किसी नदी का पानी टीन के डिब्बे में डालकर उसमें अभ्रक या चाँदी का टुकड़ा डालकर उस डिब्बे के मुँह को कलई के टाँके से बन्द कर के राहु के दिन अथवा नक्षत्रों में अपने घर में रखें।
९. राहु के दिन अथवा नक्षत्रों में सिक्के का टुकड़ा अपनी जेब में रखना।
१०. राहु के दिन अथवा नक्षत्रों में हाथी के पाँव की मिट्टी नीले कपड़े में बाँधकर घर रखना।
११. हाथी के दाँत की अँगूठी राहु के दिन अथवा नक्षत्रों में राहु जिस ग्रह का प्रतिनिधि है उस ग्रह की अँगुली में पहनना।
१२. राहु जिस ग्रह का प्रतिनिधि हो और वह ग्रह शुभ हो तो उस ग्रह की वस्तुएँ राहु के दिन या नक्षत्रों में स्थापित करना।
१३. कच्चा कोयला, तिल, काले या नीले रंग के ऊनी वस्त्र में बाँधकर राहु के दिन या नक्षत्रों में घर में दबाना।

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

३०९

१४. राहु के दिन व नक्षत्रों में रसोई घर के अन्दर नंगे पाँव लकड़ी की पटरी पर बैठकर खाना खाना।

अशुभ

२१. इस पुस्तक में बताई विधि अनुसार 'राहु यन्त्र' धारण करना।
२२. सिगरेट का प्रयोग न करना।
२३. राहु के दिन अथवा नक्षत्रों में ७ दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाना।
२४. राहु के दिन अथवा नक्षत्रों में सत्ताईस जौ के दाने सात बार काली गाय के मूत्र में धोकर चलते पानी में बहाना।
२५. राहु के दिन या नक्षत्रों में शुरू करके कच्चे कोयले चलते पानी में सत्ताईस दिन बहाना।
२६. राहु के दिन या नक्षत्रों से शुरू करके सत्ताईस दिन मसूर की दाल किसी धर्म स्थान या पिंगलवाड़ा में देना।
२७. हाथी दाँत की इष्ट देव की मूर्ति बनवाकर राहु अथवा राहु के नक्षत्रों में अपने इष्ट धर्म स्थान पर स्थापित करना।
२८. काले कपड़े न पहनना।
२९. राहु जिस ग्रह का प्रतिनिधि हो यदि वह ग्रह अशुभ हो तो उस ग्रह के उपयुक्त उपाय करना।
३०. राहु जिस ग्रह का प्रतिनिधि हो और वह ग्रह अशुभ हो तो उस ग्रह के कपड़ों को राहु के दिन या नक्षत्र में दान देना।
३१. सिक्के के चार टुकड़े राहु के दिन या नक्षत्रों में चलते पानी में बहाना।
३२. राहु के दिन या नक्षत्रों में शुरू करके ७ दिन मछलियों को जौ के आटे की गोलियाँ बनाकर डालना।
३३. राहु के दिन या नक्षत्रों में हरा नारियल लेकर धर्म स्थान में देना।



केतु



केतु प्रथम भाव में

शुभ—माथे पर तिल अथवा चोट का निशान, धनी, दीर्घआयु, यात्राएँ करने वाला, दीर्घ आयु पुत्रों से युक्त, पिता अथवा गुरु से लाभ प्राप्त करने वाला जातक होता है। शुभ केतु की बल वृद्धि हेतु १, २, ८, १०, ११, १३, १४, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—रोगी, दीन दुःखी, जन्म घर से बाहर होता है, पिता के लिए अशुभ, स्त्री की अल्प आयु का योग होता है। अशुभ केतु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २७, ३२, ३४ आदि उपाय करें।

केतु द्वितीय भाव में

शुभ—ठोड़ी के पास तिल अथवा चोट का निशान, भाग्यवान्, धनवान्, माता से धन की प्राप्ति, स्त्री का सेवक, व्यापार से लाभ, अथवा बैंक का खजान्ची, राजदरबार से पुरस्कृत तथा लाभ प्राप्त करने वाला धनी जातक होता है। शुभ केतु की बल वृद्धि हेतु १, २, ५, ८, ११, १३, १६ आदि उपाय करें।

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

३११

अशुभ—धन का नाशक, स्त्री की अल्प आयु, पिता को रोग, सन्तान से दुःखी, नशीले पदार्थों तथा माँस भक्षी होता है। जातक का बुढ़ापा दुःखमय होता है। अशुभ केतु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २६, २७, ३०, ३२, ३४, ३५ आदि उपाय करें।

केतु तृतीय भाव में

शुभ—भुजाओं और हाथ पर तिल अथवा चोट का निशान, दयालु, साहसी, सब का सहायक, धार्मिक विचारों वाला, भाई बहन तथा सम्बन्धियों के लिए शुभ, सन्तान युक्त, उच्चपद पर आसीन, यात्रा से लाभ, जातक को खेती-बाड़ी के काम में लाभ होता है। शुभ केतु की बल वृद्धि हेतु १, २, ८, १३, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—भाईयों से तंग, यात्रा में हानि, मुकद्दमे में धन हानि, सन्तान से दुःखी, पिता के लिए मृत्युकारक, निर्धन, निराश व निरर्थक घूमने वाला जातक होता है। जातक धन नाशकर्ता होता है। अशुभ केतु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २७, ३३, ३४ आदि उपाय करें।

केतु चतुर्थ भाव में

शुभ—छाती पर, स्त्री जातक के स्तनों के पास तिल अथवा निशान, धनवान, मकान, वाहन युक्त, माता के लिए शुभ, पैतृक धन लाभ। शुभ केतु की बल वृद्धि हेतु १, २, ५, ६, ८, १२, १३, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—माता से झगड़ा, माता की आयु के लिए अशुभ, छाती का रोग, स्त्री जातक को स्तनों का रोग तथा दुर्घटना में हानि का भय रहता है। अशुभ केतु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २६, २७, २८, ३४, ३६ आदि उपाय करें।

केतु पंचम भाव में

शुभ—उदर अथवा पीठ पर तिल अथवा चोट का निशान, बहुत पुत्रों वाला, धार्मिक विचारों वाला, पुत्र दीर्घ आयु होंगे, गुरु का भक्त तथा सुखी

३१२

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

जातक होता है। शुभ केतु की बल वृद्धि हेतु १, २, ८, १३, १४, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—दुष्चरित्र लोगों में रहने वाला, सन्तान से दुःखी, दमा के रोग का भय, रक्त विकार से पीड़ित, गृहस्थ जीवन दुःखी, निर्धन तथा निराश व्यक्ति होगा। अशुभ केतु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २५, २६, २७, ३२, ३४, ३६ आदि उपाय करें।

केतु षष्ठम भाव में

शुभ—नाभी के पास तिल अथवा चोट का निशान, उत्साही, धनी, झगड़े मुकद्दमे में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, समृद्ध, दीर्घ आयु, मामा-मामी के लिए अति शुभ तथा विदेश भ्रमण करता है। शुभ केतु की बल वृद्धि हेतु ३, ४, ७, ९, १३ आदि उपाय करें।

अशुभ—अल्प आयु, धन नाशकर्ता, पेट का रोगी, चर्म रोगी, पाँव का रोगी, कुल का नाशक, बुजदिल, धन का नाशक तथा निरुद्देश्य घूमने वाला जातक होता है। अशुभ केतु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २४, २७, २९, ३३, ३४ आदि उपाय करें।

केतु सप्तम भाव में

शुभ—वस्ती पर तिल अथवा चोट का निशान, उत्तम व्यापारी, शुभ सन्तान, माता भाग्यवान, धन संग्रहकर्ता, निडर, शत्रु नाशक, जातक के जितने साले सालियां होंगे उतने ही उनके बच्चे होंगे। शुभ केतु की बल वृद्धि हेतु १, २, ८, १३, १४, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—जातक की पहली पत्नी का नाश, दूसरी स्त्री भी रोगी, दुर्वचन बोलने वाला, झूठा, क्रोधी, परस्त्रीरत तथा धन का नाश करने वाला होता है। अशुभ केतु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २५, २६, २७, ३२, ३४, ३६ आदि उपाय करें।

केतु अष्टम भाव में

शुभ—इन्द्री पर तिल का निशान, लम्बी आयु, व्यापार में लाभ, स्त्री पक्ष से धन लाभ, किसी मृत व्यक्ति के धन की प्राप्ति तथा गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होता है। शुभ केतु की बल वृद्धि हेतु ३, ४, ७, ९, १३ आदि उपाय करें।

अशुभ—गुप्तांग रोग से पीड़ित, अल्प आयु, पिता के लिए अशुभ, बड़े भाई की मृत्यु का योग, परस्त्रीरत, कम सन्तान अथवा निःसन्तान, स्त्री जातक को मासिक धर्म में कष्ट होता है। अशुभ केतु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २४, २७, २९, ३३, ३४ आदि उपाय करें।

केतु नवम भाव में

शुभ—जांघ पर तिल अथवा चोट का निशान, दयालु, मधुर भाषी, दीर्घ आयु अपनी प्रशंसा का इच्छुक, पिता का आज्ञाकारी, उच्चपद पर आसीन, परोपकारी, समाज सेवक, धार्मिक विचारों वाला तथा विदेश में धन लाभ करने वाला होता है। शुभ केतु की बल वृद्धि हेतु १, २, ८, १३, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—माता, सन्तान, मामा-मामी, मौसी के लिए अशुभ, क्रोधी, नीच स्त्रियों के संग रहने वाला, बुरे लोगों के संग रहने वाला तथा मूर्ख होता है। अशुभ केतु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २७, ३१, ३३, ३४, ३६ आदि उपाय करें।

केतु दशम भाव में

शुभ—घुटनों पर तिल अथवा चोट का निशान, सम्मानित, विदेश, भ्रमण, महाधनी, बहादुर, कूटनीतिज्ञ, वफादार नौकरों से युक्त, अधिक पुत्रों वाला तथा अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी होता है। जातक धन संग्रहकर्ता होता है। शुभ केतु की बल वृद्धि हेतु १, २, ५, ८, १२, १३, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—गन्दे स्थानों में रहने वाला, कम सन्तान, गृहस्थ जीवन दुःखी, व्यापार में हानि, नीच स्त्रियों से सम्भोगरत तथा माता के लिए अशुभ

३१४

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

होता है। अशुभ केतु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २५, २६, २७, ३०, ३४ आदि उपाय करें।

केतु एकादश भाव में

शुभ—टाँगों पर तिल अथवा चोट का निशान, धनवान, जमीन, मकान, वाहन से युक्त, उत्तम सन्तान वाला, राज दरबार में पूज्य व राजा से लाभ प्राप्त करने वाला, बहुत पुत्रों वाला भाग्यवान् जातक होता है। शुभ केतु की बल वृद्धि हेतु १, २, ५, ८, ११, १३, १६ आदि उपाय करें।

अशुभ—माता की अल्प आयु, सन्तान नाश का भय अथवा कम सन्तान, बड़े भाई से दुःखी चिन्ताओं से ग्रस्त तथा धन का अपव्यय करने वाला जातक होता है। अशुभ केतु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २३, २६, २७, ३०, ३४ आदि उपाय करें।

केतु द्वादश भाव में

शुभ—पाँवों पर तिल अथवा चोट का निशान, विदेश यात्रा में लाभ प्राप्त करने वाला, जमीन मकान से युक्त, ऐश्वर्यवान, सुखी गृहस्थ जीवन, बहुत पुत्रों वाला, भाग्यवान्, शत्रुओं पर विजयी तथा गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होता है। शुभ केतु की बल वृद्धि हेतु १, ४, ७, ९, १३, १५ आदि उपाय करें।

अशुभ—आँख का रोगी, पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति न होना, सम्बन्धियों एवं समाज से अपमानित, विदेश में धन हानि, पापी, धोखेबाज, निरुद्देश्य घूमने वाला तथा कम पुत्रों वाला जातक होता है। अशुभ केतु के अनिष्ट निवारण हेतु २१, २२, २४, २७, २९, ३३, ३४, ३५ आदि उपाय करें।

केतु के उपाय

शुभ

१. इस पुस्तक में बताई विधि के अनुसार 'लहसुनिया' धारण करना।
२. कुण्डली में केतु जिस ग्रह का प्रतिनिधि हो और वह ग्रह शुभ हो तो

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

३१५

उस ग्रह के कपड़े केतु के दिन या नक्षत्र में पहनना।

३. घर में चितकबरा कुत्ता पालना।
४. घर में चितकबरी गाय पालना।
५. काले व सफेद तिल बराबर के लेकर चितकबरे कपड़े में लपेट कर केतु के दिन या नक्षत्र में घर में रखना।
६. घर में इमली का पेड़ केतु के दिन या नक्षत्र में लगाना।
७. श्मशान भूमि का पानी केतु के दिन या नक्षत्र में लाकर मिट्टी या चीनी के बर्तन में रखना।
८. कुण्डली के केतु जिस ग्रह का प्रतिनिधि हो और वह ग्रह शुभ हो तो ग्रह की वस्तुएँ घर में केतु के दिन या नक्षत्र में स्थापित करना।
९. केतु के दिन या नक्षत्र में खरगोश घर में पालना।
१०. चितकबरे कपड़े पहनना।
११. कुण्डली में केतु जिस ग्रह का प्रतिनिधि हो उस धातु का अँगूठी बनाकर उस ग्रह की अँगुली में केतु के दिन या नक्षत्र में धारण करें।
१२. लोहे के टुकड़े पर 'केतु यन्त्र' खुदवा कर चारपाई के साथ केतु के दिन या नक्षत्र में बाँधना।
१३. किसी भिखारी या अपंग व्यक्ति को घर में बुलाकर केतु के दिन या नक्षत्र के दिन खाना खिलाना।
१४. केतु के दिन या नक्षत्र में गले में काले व सफेद मोतियों की माला धारण करना।
१५. पाँवों के दोनों अँगूठों पर काला तथा सफेद धागा मिलाकर केतु के दिन या नक्षत्र में पहनना।
१६. केतु के दिन या नक्षत्र में सफेद-काला जूता पहनना।

अशुभ

२१. इस पुस्तक में बताई विधि से 'केतु यन्त्र' धारण करना।
२२. कुण्डली में केतु जिस ग्रह का प्रतिनिधि हो और वह ग्रह अशुभ हो तो उस ग्रह का उपयुक्त उपाय करना।
२३. चितकबरे कपड़े न पहनना।

३१६

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

२४. चितकबरे कुत्ते को दूध और रोटी मिलाकर सात दिन केतु के दिन या नक्षत्र के दिन देना।
२५. चितकबरी गाय को खल और भूसा मिलाकर केतु के दिन या नक्षत्र में गौशाला में चितकबरी गाय को खिलाना।
२६. किसी अपंग को केतु के दिन या नक्षत्र में सतनाजे की रोटी बनाकर पक्षियों का डालना।
२७. शराब सिगरेट का प्रयोग न करना।
२८. घर में छिपकली का नाश करना।
२९. केतु के दिन या नक्षत्र में लहसुन या प्याज की एक गट्ठी पानी में बहाना।
३०. पिंगलवाड़ा में केतु के दिन या नक्षत्र में चारपाई दान देना।
३१. काले सफेद तिल और सतनाजा धर्म स्थान में केतु के दिन या नक्षत्र में देना।
३२. काले सफेद कपड़े में लोहे के पाँच कील तथा चूना लपेट कर केतु के दिन या नक्षत्र में चलते पानी में बहाना।
३३. उपाय नम्बर ३२ की वस्तुएँ केतु के दिन या नक्षत्र में निर्जन स्थान में दबाना।
३४. सफेद धोती काले किनारे वाली केतु के दिन या नक्षत्र में किसी युवक को दान देना।
३५. केतु के दिन या नक्षत्र में काले रंग के फ्रेम का चश्मा दान देना।
३६. पिंगलवाड़ा में काला-सफेद कम्बल केतु के दिन या नक्षत्र में देना।



मंगलीक योग विचार

विवाह के लिए वर और कन्या की जन्म कुण्डलियों का मिलान करते समय मंगल दोष पर अनिवार्य रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक जातक वर या कन्या एक-दूसरे के लिए अनिष्ट होते हैं। मंगल अग्नि प्रधान ग्रह होने के कारण अपना अनिष्ट फल तुरन्त देने में बहुत प्रबल है।

मंगलीक योग

प्रचलित व्याख्या— भारतीय ज्योतिष के अनुसार जिस जातक की कुण्डली में मंगल लग्न, चन्द्र या शुक्र से १, २, ४, ७, ८ या १२ भाव में स्थित हो तो उस जातक का मंगलीक योग होता है।

वैज्ञानिक व्याख्या— कुण्डली में पहले यह निर्णय करना चाहिए कि मंगल शुभ है या अशुभ। कुण्डली में यदि अशुभ मंगल लग्न, चन्द्र या शुक्र से १, २, ७, ७, ८ या १२ भाव में स्थित हो तो जातक का मंगलीक योग होता है। परन्तु यदि इन भावों में शुभ मंगल स्थित हो तो जातक को भौम दोष नहीं होता।

पहले हम ये विचार करेंगे के कुण्डली में अशुभ मंगल का १, २, ४, ७, ८ या १२ भाव में होना क्यों अनिष्ट है।

प्रथम भाव— प्रथम भाव जातक का शरीर रचना स्थान और जातक के जीवन साथी का द्वितीय मारकेश स्थान है और लग्नस्थ मंगल जातक के सुख भाव (चतुर्थ भाव) को, द्वितीय मारकेश स्थान (अष्टम भाव) को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसलिए अशुभ मंगल की प्रथम भाव में स्थिति अनिष्ट है।

द्वितीय भाव— द्वितीय भाव जातक का प्रथम मारकेश स्थान और

उसके जीवन साथी का मृत्यु स्थान है। दूसरे भाव में स्थित मंगल, सन्तान भाव (पंचम भाव) और जातक के मृत्यु स्थान (अष्टम भाव) को पूर्ण दृष्टि से देखता है इसलिए द्वितीय भाव में अशुभ मंगल अनिष्ट है।

चतुर्थ भाव—चतुर्थ भाव जातक का सुख स्थान है। चतुर्थ भाव पंचम भाव से द्वादश है और किसी भी भाव से द्वादश स्थान उस भाव से प्राकृतिक रूप से अशुभ होता है। क्योंकि पंचम भाव सन्तान का है और मंगल का चतुर्थ भाव में होना सन्तान के लिए अशुभ है। चतुर्थ भाव दम्पति के गृहस्थ जीवन का भी है और चतुर्थ भाव में मंगल जातक के जीवन साथी के शरीर रचना स्थान (सप्तम भाव) को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसलिए चतुर्थ भाव में अशुभ मंगल अनिष्ट है।

सप्तम भाव—सप्तम भाव जातक का द्वितीय मारकेश स्थान और उसके जीवन साथी का शरीर रचना का भाव है। सप्तम भाव में स्थित अशुभ मंगल जातक के शरीर रचना स्थान (प्रथम भाव) और उसके प्रथम मारकेश स्थान (द्वितीय भाव) को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसलिए सप्तम भाव में अशुभ मंगल की स्थिति अनिष्ट है।

अष्टम भाव—अष्टम भाव जातक का मृत्यु स्थान और उसके जीवन साथी का प्रथम मारकेश स्थान है। आठवें भाव में अशुभ मंगल जातक के प्रथम मारकेश स्थान (द्वितीय भाव) को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसलिए अशुभ मंगल का अष्टम भाव में होना अनिष्ट है।

द्वादश भाव—द्वादश भाव जातक का व्यय और वियोग स्थान है। यह भाव जातक के जीवन साथी का रोग भाव (सप्तम से षष्ठ) है। द्वादश भाव में स्थित अशुभ मंगल, जातक के द्वितीय मारकेश स्थान (सप्तम भाव) को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसलिए द्वादश भाव में अशुभ मंगल की स्थिति अनिष्ट कही गई है।

मंगलीक भंग योग

१. यदि मंगल मेष या वृश्चिक राशि का होकर १, २, ४, ७, ८ या १२वें भाव में हो तो कोई मंगल दोष नहीं होता।

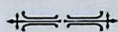
❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

३१९

२. बृहस्पति और शनि ग्रह, मंगल ग्रह से आकार में कई गुणा बड़े हैं और इन दो ग्रहों का गुरुत्वाकर्षण मंगल से कहीं अधिक है। इसलिए बृहस्पति या शनि की १, २, ४, ७, ८, १२वें भाव में स्थिति मंगल दोष को शान्त करती है।
३. बृहस्पति किसी भी भाव में स्थित हो कर मंगल को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मंगल दोष शान्त हो जाता है।
४. शनि किसी भी भाव में स्थित होकर मंगल को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मंगल दोष शान्त हो जाता है।
५. राहु यदि बृहस्पति या शनि से पूर्ण दृष्ट होकर मंगल को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मंगल दोष शान्त हो जाता है।

मंगलीक जातक के लिए अनिष्ट मंगल के उपाय

१. मंगलीक जातक के विवाह से पहले (विशेषतया यदि उसका जीवन साथी मंगलीक न हो) तो इस पुस्तक में बताई गई विधि अनुसार अशुभ मंगल का कुण्डली में उसकी भाव स्थिति के अनुसार अनिष्ट निवारण हेतु उपयुक्त उपाय करना।
२. विवाह के समय विधिपूर्वक दो बार फेरे लेना। यदि विवाह हो चुका हो तो विधिपूर्वक दूसरी बार फेरे लेना।



शनि की साढ़े साती

प्रचलित व्याख्या— भारतीय ज्योतिष के अनुसार जब गोचर का शनि जन्मकालिक चन्द्र के द्वादश, चन्द्र राशि में तथा चन्द्र से द्वितीय स्थान में भ्रमण करता है उस काल को साढ़े साती कहते हैं। क्योंकि शनि एक राशि का भ्रमण ढाई वर्ष में करता है। अतः साढ़े साती का विवरण निम्न है—

शनि चन्द्र से द्वादश स्थान में : २.५ वर्ष

शनि चन्द्र स्थित राशि में : २.५ वर्ष

शनि चन्द्र से द्वितीय स्थान में : $\frac{२.५ \text{ वर्ष}}{७.५ \text{ वर्ष}}$

साढ़े साती की वैज्ञानिक व्याख्या— अब गोचर का शनि जन्मकालिक चन्द्र से ४५ अंश की दूरी पर आता है तो साढ़े साती आरम्भ होती है और जब गोचर का शनि चन्द्र से भ्रमण करता हुआ चन्द्र से ४५ अंश की दूरी पर चला जाता है तो साढ़े साती समाप्त होती है। साढ़े साती का विवरण निम्न है—

चन्द्र से शनि की दोनों ओर ४५ अंश की दूरी = $४५ + ४५ = ९०$ अंश
= ३ राशि = ७.५ वर्ष

साढ़े साती का फल

- जिस जातक की कुण्डली में यदि चन्द्र और शनि दोनों ही शुभ ग्रह हों तो साढ़े साती के काल में (पैरा ४ (ख) के काल को छोड़कर) शुभ फल होते हैं। पैरा ४ (ख) के काल में भी अनिष्ट फल प्रायः नगण्य होते हैं।
- जिस जातक की कुण्डली में शनि का चन्द्र दोनों में से कोई एक ग्रह अशुभ हो तो अशुभ ग्रह की भावस्थिति तथा आधिपत्य के अनुसार

साढ़ेसाती काल में अनिष्ट फल होते हैं।

३. जिस जातक की कुण्डली में चन्द्र और शनि दोनों ही अशुभ ग्रह हों तो उस जातक को साढ़ेसाती काल में इन दोनों ग्रहों के आधिपत्य तथा भावस्थिति के अनुसार भयानक अनिष्ट फल होते हैं तथा जातक को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

साढ़ेसाती का विशेष अनिष्ट फल समय

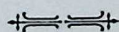
४. (क) शनि चन्द्र की युति का काल।
(ख) वह काल जब शनि चन्द्र की दूरी २२.५ अंश तथा ४५ अंश (दायरा (ora) २ अंश हो)।

साढ़ेसाती के अनिष्ट निवारण हेतु उपाय

१. शनि या चन्द्र दोनों में जो अशुभ ग्रह हो तो कुण्डली में उसकी भाव स्थिति के अनुसार अनिष्ट निवारण हेतु इस पुस्तक में बताई विधि अनुसार उपाय करें।
२. कुण्डली में यदि शनि और चन्द्र दोनों अशुभ हों तो उपरोक्त विधि से दोनों ग्रहों का उपाय साढ़ेसाती के अनिष्ट निवारण हेतु करें।

ढैया—प्रचलित व्याख्या के अनुसार जब गोचर का शनि चन्द्र से चतुर्थ अष्टम हो तो ढैया होता है। परन्तु हमारे अनुसार शनि चन्द्र से चतुर्थ, षष्ठ, सप्तम, अष्टम और दशम आए तो ढैया होता है।

उपाय—ढैया का उपाय साढ़ेसाती की भांति ही करना चाहिए।



वरुण

इसको हर्शल, यूरेनस, प्रजापति भी कहते हैं। इसकी कक्षा शनि से ऊपर है।

वरुण की स्वराशि कुम्भ है तथा इसकी उच्च राशि वृश्चिक या मतान्तर से कन्या है।

अन्य विषयों के अतिरिक्त वरुण से अध्यात्मवाद, गूढ़ रहस्य के ज्ञान के बारे में, वैज्ञानिक, अन्वेषण व शोध, मनुष्य के स्नायु संस्थान के बारे में विचार किया जाता है। इस ग्रह के शुभ-अशुभ का निर्णय अन्य ग्रहों की भांति करना चाहिए। यह एक राशि में लगभग ७ वर्ष रहता है।

वरुण प्रथम भाव में

शुभ—जातक धनी, ज्योतिष प्रेमी, वैज्ञानिक खोज करने वाला, ईश्वर भक्त होता है।

अशुभ—जातक मनमानी करने वाला, चंचल स्वभाव, वैवाहिक जीवन दुःखी, आयु से अधिक बूढ़ा लगने वाला, नौकरी या व्यवसाय बदलने वाला, विकृत अंग, यात्रा में हानि, हठी तथा दुराचारी होता है।

वरुण द्वितीय भाव में

शुभ—जातक बिजली और मकैनिकल कार्य करने वाला, संगीत से लाभ, जज, वैज्ञानिक, वकील होता है।

अशुभ—किसी निकट सम्बन्धी की मृत्यु का योग, स्त्री के लिए अनिष्ट, जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं।

वरुण तृतीय भाव में

शुभ—जातक ज्योतिष में रुचि लेने वाला, यात्राओं का शौकीन, बुद्धिमान होता है।

अशुभ—जातक चिंतायुक्त, मानसिक रोग का भय, पड़ोसियों से मारपीट का भय, यात्रा में कष्ट व हानि, छोटे-भाई बहनों के लिए अनिष्ट तथा पैतृक घर से दूर रहने वाला होता है।

वरुण चतुर्थ भाव में

शुभ—जातक वाहन सुख से युक्त परन्तु वाहन बार-बार बदलने वाला होता है। जातक का बुढ़ापा सुखपूर्वक बीतता है।

अशुभ—माता का अल्प सुख, चोरी का भय, स्त्री से मनमुटाव, जातक को पैतृक सम्पत्ति में पूरा हिस्सा नहीं मिलता।

वरुण पंचम भाव में

शुभ—जातक फलित ज्योतिष में विश्वास रखने वाला, सिनेमा देखने का शौकीन तथा रोमांटिक जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

अशुभ—लाटरी, सट्टा, जुआ में हानि का भय, सन्तान के लिए कष्टकारक, जातक स्त्री हो तो गर्भपात का भय, प्रथम बच्चे की मृत्यु का भय होता है। यदि यूरेनस शुक्र से युक्त हो तो जातक अतिकामी होता है।

वरुण षष्ठम भाव में

शुभ—जातक मानसिक संतुलन कायम रखने वाला तथा सुखी तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है।

अशुभ—मानसिक चिन्ता, शत्रुओं से भय, फेफड़े का रोग, गठिया, शीत रोग तथा वृद्धावस्था में असाध्य रोग का भय, पागलपन, तलाक, मामा या मौसी की अचानक मृत्यु का भय होता है।

वरुण सप्तम भाव में

शुभ—जातक के अचानक विवाह का योग, व्यापार में अचानक धन

लाभ तथा जातक रोमांटिक जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

अशुभ—स्त्री से कलह, स्त्री उग्र स्वभाव वाली, व्यापार में अचानक धन हानि, स्त्री को क्षय रोग का भय, स्त्री की अचानक मृत्यु का योग, पुनर्विवाह का योग, मुकद्दमे में धन हानि और हार का भय तथा सरकारी अधिकारियों से झगड़े का भय होता है।

वरुण अष्टम भाव में

शुभ—स्त्री व ससुराल पक्ष से धन प्राप्ति तथा पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने वाला होता है।

अशुभ—ससुराल से दहेज न मिलना अथवा धन की प्राप्ति न होना, पैतृक सम्पत्ति में झगड़ा, अचानक रोग तथा रोग लम्बे समय तक चलता है। रोग में महाकष्ट, आत्म हत्या की प्रवृत्ति, मुकद्दमे में दण्ड अथवा कैद का भय होता है।

वरुण नवम भाव में

शुभ—जातक गुप्त विद्याओं का ज्ञाता, विदेश यात्रा का योग, योगाभ्यास का शौकीन, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, समाज सुधारक, नई वैज्ञानिक खोजें करने वाला होता है।

अशुभ—पिता के लिए अनिष्टकारक, पिता की अल्पायु, विदेश में धन हानि और कष्ट, ससुराल पक्ष से कष्ट होता है।

वरुण दशम भाव में

शुभ—जातक अध्यापक, इंजीनियर, बिजली की वस्तुओं का व्यापारी व्यापार में उन्नति तथा उच्चपद की प्राप्ति होती है।

अशुभ—नौकरी से अवनति-अपमान, असफलता तथा व्यापार में अचानक हानि का भय होता है।

वरुण एकादश भाव में

शुभ—गुप्त विद्याओं से लाभ, बिजली, इंजीनियरिंग और मकैनिकल

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

३२५

वस्तुओं से लाभ, मित्रों से लाभ, जातक के मित्र बड़े बुद्धिमान होते हैं। प्रभावशाली तथा बड़े लोगों से मित्रता होती है।

अशुभ—सन्तान का अल्पसुख, गर्भपात, गर्भाशय रोग, बहू या किसी प्रिय मित्र की अचानक मृत्यु का योग होता है।

वरुण द्वादश भाव में

शुभ—जातक गुप्त विद्याओं का खोजी तथा विदेश भ्रमण करने का शौकीन होता है।

अशुभ—परिवार जनों से वियोग, चंचल मन, यातना सहन करने वाला, दुःखी, अपमानित, गुप्त शत्रुओं से घिरा हुआ तथा व्यापार में दिवालिया हो जाने का भय, जेल जाने का भय, मामा, मौसी की अचानक मृत्यु का भय होता है।

वरुण के उपाय

शुभ वरुण की शुभता बढ़ाने हेतु समस्त भावों में निम्नलिखित उपाय करें। यदि वरुण त्रिक स्थान में हो तो उपाय नम्बर १ न करें—

१. मिश्रित धातु की अँगूठी बुध के दिन धारण करना।
२. जामुनी रंग के वस्त्रों का प्रयोग करना तथा घर में जामुनी रंग के पर्दे आदि लगाना।
३. जामुनी की ७ गुठलियाँ जामुनी रंग के कपड़े में बाँधकर बुध के दिन घर के आँगन में दबाना।

अशुभ वरुण के अनिष्ट निवारण हेतु समस्त भावों में निम्नलिखित उपाय करें—

१. बिजली का टूटा-फूटा सामान घर में न रखना।
२. जामुनी रंग के वस्त्र न पहनना।
३. जामुनी की ७ गुठलियाँ लेकर जामुनी रंग के वस्त्र में बाँधकर बुध के दिन निर्जन स्थान में दबाना।
४. पाँच बुधवार बैंगन धर्म स्थान या पिंगलवाड़ा में दान देना।



वारुणी

इसका अन्य नाम नेपच्यून भी है। इसकी कक्षा वरुण से ऊपर है। यह मीन राशि में स्वगृही होता है। जल राशियों (कर्क, वृश्चिक, मीन) में यह बलवान माना जाता है। एक राशि में यह लगभग १४ वर्ष रहता है।

वारुणी प्रथम भाव में

शुभ—जातक मध्यम कद का, तरल पदार्थों या समुद्री व्यापार से लाभ, दूरदर्शी, प्रेम-प्रणय में सफल तथा कला में निपुण होता है।

अशुभ—मानसिक रोगी, दुःखी, निराश तथा निर्धन होता है।

वारुणी द्वितीय भाव में

शुभ—धनी, तरल पदार्थों से लाभ अथवा समुद्री सेवा से लाभ, अच्छा डॉक्टर होता है।

अशुभ—व्यापार में हानि, कामचोर, धोखा-धड़ी आदि से धन हानि होती है।

वारुणी तृतीय भाव में

शुभ—लेखन तथा सम्पादन से लाभ, उच्च आकांक्षावादी, यात्रा से लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

अशुभ—सम्बन्धियों तथा भाई बहनों से झगड़ा, यात्रा में हानि, धोखा-धड़ी से धन हानि होती है।

❖ ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

३२७

वारुणी चतुर्थ भाव में

शुभ—परमात्मा तथा माता का भक्त, मकान वाहन से युक्त तथा विदेश यात्रा का योग होता है।

अशुभ—गृहस्थ जीवन दुःखी, वाहन दुर्घटना का भय होता है।

वारुणी पंचम भाव में

शुभ—अच्छा तैराक, सर्वप्रिय, तेल के व्यापार तथा समुद्री व्यापार से लाभ प्राप्तकर्ता होता है।

अशुभ—उपरोक्त फल विपरीत, सन्तान से चिन्तित, विद्या में रुकावट होती है।

वारुणी षष्ठम भाव में

शुभ—बुद्धिमान, नौकरी से लाभ, मामा, मौसी के लिए शुभ होता है।

अशुभ—भूत-प्रेत की छाया आदि, धन नाशकर्ता, नशीली वस्तुओं का व्यसनी, असाध्य रोग से पीड़ित होता है।

वारुणी सप्तम भाव में

शुभ—हिस्सेदारी के व्यापार में लाभ तथा सुशील स्त्री से युक्त होता है।

अशुभ—अविश्वसनीय, रोगी स्त्री वाला, गृहस्थ जीवन दुःखी अथवा दो विवाह का योग होता है।

वारुणी अष्टम भाव में

शुभ—स्त्री पक्ष से धन लाभ अथवा स्त्री का नौकरी करने का योग होता है।

अशुभ—असाध्य रोग से पीड़ित अथवा डूबकर मरने का भय होता है।

वारुणी नवम भाव में

शुभ—ईश्वर भक्त, विदेश में सफलता, उच्च शिक्षित तथा दार्शनिक होता है।

अशुभ—सम्बन्धियों तथा स्त्री से मुकद्दमा, झगड़ा आदि नास्तिक, विदेश में धन हानि होती है।

वारुणी दशम भाव में

शुभ—पैतृक सम्पत्ति का लाभ, नेता, अच्छा डॉक्टर, धनी, मछलियों के व्यापार से लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

अशुभ—धन नाश, समाज में अपमानित, मुकद्दमे झगड़े में हार का भय होता है।

वारुणी एकादश भाव में

शुभ—शुभ मित्रों से युक्त, धनी, समुद्री व्यापार या मछलियों के व्यापार से धन लाभ तथा कवि होता है।

अशुभ—धन हानि, सन्तान से चिन्तित, मित्रों द्वारा धोखा, व्यापार में हानि होती है।

वारुणी द्वादश भाव में

शुभ—अविष्कार कर्ता, जासूस, डॉक्टर, नर्स या डिस्पेंसर आदि, विदेश में सफलता होती है।

अशुभ—षडयन्त्रकारी, शत्रुओं से चिन्तित, धोखा-धड़ी से हानि, विदेश में असफलता तथा दुःखी जातक होता है।

वारुणी के उपाय

शुभ वारुणी की शुभता बढ़ाने हेतु समस्त भावों में निम्नलिखित उपाय करें। यदि वारुणी त्रिक स्थानों में हो तो उपाय नम्बर १ न करें।

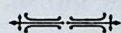
शुभ

१. नीलरक्ताभ या नील-पीत रंग के वस्त्र पहनना।
२. अपने इष्टदेव की मूर्ति पर चन्द्रवार या बृहस्पतिवार से शुरू करके सत्ताईस दिन सुगन्धित धूप या अगरबत्ती जलाना।
३. घर में समुद्र का पानी रखना।

अशुभ वारुणी के अनिष्ट निवारण हेतु समस्त भावों में निम्नलिखित उपाय करें।

अशुभ

१. नीलरक्ताभ या नील-पीत रंग के वस्त्र न पहनना।
२. नशीली वस्तुएँ जैसे सिगरेट, भाँग, गाँजा, अफीम आदि का प्रयोग न करना।
३. पाँच सोमवार पिंगलवाड़ा में चाय की पत्ती दान करना।



भाग्य-तारिका (Fortuna)

भाग्य तारिका (फारच्यूना) क्रान्ति-वृत्त (Zodiac) में शुभ फलप्रद-शक्ति-पुंज का बिन्दु है। इसकी गति चन्द्रमा से भी कहीं अधिक है। इसकी गति लगभग ४ मिनट में १ अंश है। भाग्य तारिका स्पष्ट करने की विधि निम्नलिखित है—

लग्न स्पष्ट + चन्द्र स्पष्ट—सूर्य स्पष्ट = भाग्य तारिका।

भाग्य तारिका का द्वादश भावों में निम्नलिखित फल है। भाग्य तारिका के शुभ अशुभ का निर्णय भी अन्य ग्रहों की भान्ति करना चाहिए।

भाग्य-तारिका प्रथम भाव में

शुभ—दृढ़ निश्चयी, सुखी जीवन, व्यापार में लाभ, स्वयं निर्मित जातक होता है।

अशुभ—अल्पायु अथवा मध्यम आयु होता है।

भाग्य-तारिका द्वितीय भाव में

शुभ—भाग्यवान्, धनी, गृहस्थ जीवन सुखी, उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

अशुभ—उपरोक्त फल न्यून तथा धन नाश का भय।

भाग्य-तारिका तृतीय भाव में

शुभ—भाई बहनों और यात्रा से लाभ, अचानक धन लाभ।

अशुभ—सम्बन्धियों व पड़ोसियों से झगड़ा, यात्रा में दुर्घटना का भय।

भाग्य-तारिका चतुर्थ भाव में

शुभ—पैतृक धन लाभ, मकान वाहन से युक्त तथा जातक को गड़ा धन मिलने का योग तथा धनी।

अशुभ—वाहन से दुर्घटना का भय, पैतृक सम्पत्ति से वंचित।

भाग्य-तारिका पंचम भाव में

शुभ—शुभ सन्तान से युक्त, संगीत में शौक सट्टा लाटरी आदि में लाभ।

अशुभ—धन हानि, धोखा खा जाने वाला तथा सन्तान से दुःखी।

भाग्य-तारिका षष्ठम भाव में

शुभ—शुभ मामा-मामी, फूफी से युक्त, नौकरों तथा पशु पालन से धन लाभ।

अशुभ—रोगी, पशु पालन से हानि, कर्जाई।

भाग्य-तारिका सप्तम भाव में

शुभ—हिस्सेदारी के व्यापार में लाभ, शत्रुओं पर विजय, चुनाव में जीत होती है।

अशुभ—उपरोक्त फल विपरीत, स्त्री द्वारा विरोध।

भाग्य-तारिका अष्टम भाव में

शुभ—स्त्री से धन की प्राप्ति अथवा स्त्री के नौकरी करने से किसी बजुर्ग की मृत्यु के पश्चात् उसकी सम्पत्ति मिलने का योग होता है।

अशुभ—उपरोक्त फल विपरीत होते हैं। पिता के लिए कष्टकारक।

भाग्य-तारिका नवम भाव में

शुभ—उच्च शिक्षित, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारी, विदेश से धन लाभ।

❖ रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त ❖

अशुभ—धर्म विरोधी, पिता का विरोधी, विदेश में धन हानि।

भाग्य-तारिका दशम भाव में

शुभ—सम्मानित, धनी तथा उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति।

अशुभ—अचानक विनाश, धन हानि अथवा भिखमंगा।

भाग्य-तारिका एकादश भाव में

शुभ—शुभ सन्तान एवं मित्रों से युक्त, धनी, व्यापार में वृद्धि तथा सुखी जातक होता है।

अशुभ—उपरोक्त फल विपरीत होते हैं। मित्र द्वारा धोखे का भय।

भाग्य-तारिका द्वादश भाव में

शुभ—सफल व्यापारी, भाग्यवान्, धनवान तथा विदेश में धन लाभ तथा सुखी।

अशुभ—धन हानि, विदेश में असफलता तथा तस्करी के व्यापार में लिप्त।

+==+
ACC. 39980 / 511 40

ज्योतिष एवं वास्तुकला सम्बन्धी कुछ अन्य पुस्तकें—

- ❖ सम्पूर्ण लाल किताब और हस्तरेखा ज्ञान (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ असली लाल किताब : सरल अध्ययन (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ लाल किताब के अद्भुत टोटके एवं उपाय (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ मानसागरी : भारतीय ज्योतिष का फलित महाग्रन्थ (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ भारतीय फलित शास्त्र : बृहज्जातक भाषा-टीका (डॉ. ज्ञानेश्वर)
- ❖ वर्षफल विचार (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ ब्रह्माण्ड और ज्योतिष रहस्य : खगोल विज्ञान (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ नवग्रह उपासना और ग्रह दोष के उपाय (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ सामुद्रिक ज्ञान : पंचांगुली साधना (एस.एम. बहल) चित्रों सहित
- ❖ हस्त रेखाओं से रोग परीक्षण (गोपाल राजू)
- ❖ सरल ज्योतिष फल दीपिका (भृगुनाथ मिश्र)
- ❖ कन्या की शादी शीघ्र कैसे करें (भृगुनाथ मिश्र)
- ❖ अंक ज्योतिष (योगीराज यशपाल जी)
- ❖ शकुन अपशकुन विचार (योगीराज यशपाल जी)
- ❖ भारतीय ज्योतिष संग्रह (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ ग्रह परिचय (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ नक्षत्र ज्ञान (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ लघु पाराशरी (सम्पादन : डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ ज्योतिष गुप्त प्रश्नोत्तरी (सम्पादन : डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ आपकी राशि क्या कहती है (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ गोचर ज्योतिष (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ मुहूर्त निकालिये (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ भृगु सूत्रम् भाषा-टीका (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ जन्म कुण्डली में ग्रह बाधा और निदान (पं. रामकृष्ण शर्मा 'राजर्षि')
- ❖ कल्याणकारी शनिदेवता (पं. रामकृष्ण शर्मा 'राजर्षि')
- ❖ वास्तुकला और भवन निर्माण (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ भारतीय वास्तु शास्त्र (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ सचित्र विश्वकर्मा प्रकाश (संस्कृत श्लोक और व्याख्या)

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार दूरभाष : (01334) 226297

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र सम्बन्धी मूल्यवान पुस्तकें—

- ❖ मन्त्र रहस्य (योगीराज यशपाल जी)
- ❖ तान्त्रिक चमत्कार : मन्त्र तन्त्र यन्त्र महाशास्त्र (योगीराज यशपाल जी)
- ❖ सिद्धि प्रदायक यन्त्र संग्रह : रंगीन एलबम
- ❖ चमत्कारी ५५ पूजा यन्त्र (पं. कुलपति मिश्र)
- ❖ दश महाविद्या तन्त्र सार (योगीराज यशपाल जी)
- ❖ बगलामुखी महासाधना (योगीराज यशपाल जी)
- ❖ यन्त्र विधान (योगीराज यशपाल जी)
- ❖ संकट मोचिनी कालिका सिद्धि (योगीराज यशपाल जी)
- ❖ तन्त्र महायोग (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
- ❖ महाविद्या तन्त्र मन्त्र (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
- ❖ सचित्र तान्त्रिक जड़ी बूटी दर्शन (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
- ❖ गुरु नानक मन्त्र शक्ति (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
- ❖ मन्त्र पोथी (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
- ❖ बावन जंजीरा (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
- ❖ मन्त्र दीक्षा और रहस्य (पं. महावीर प्रसाद मिश्र)
- ❖ पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें (तान्त्रिक बहल)
- ❖ नाग और नागमणि (तान्त्रिक बहल)
- ❖ तन्त्र मन्त्र द्वारा रोग निवारण (तान्त्रिक बहल)
- ❖ मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक साधनाएँ (तान्त्रिक बहल)
- ❖ तान्त्रिक तरंग (के.एल. निषाद भैरमगढ़ी)
- ❖ तन्त्र की रहस्यमयी काली किताब (बाबा औढरनाथ तपस्वी)
- ❖ उल्लू तन्त्र, कौवा तन्त्र और पशु पक्षी तन्त्र (अनुपम घोष 'मणिपुरी')
- ❖ तन्त्र द्वारा मनोकामना सिद्धि (पं. भृगुनाथ मिश्र)
- ❖ यक्षिणी भूतिनी साधना और देवी सिद्धियाँ (कनकवती शोभना)
- ❖ त्रिसूक्तम् : यन्त्र और अनुवाद सहित (पं. हरिओम कौशिक)
- ❖ तन्त्र द्वारा दूर करें दुर्भाग्य (गोपाल राजू)
- ❖ धनदायक तान्त्रिक प्रयोग (गोपाल राजू) रंगीन चित्रों सहित
- ❖ यन्त्र विद्या के १२१ प्रयोग (बाबा औढरनाथ तपस्वी)
- ❖ मन्त्र प्रयोग (बाबा औढरनाथ तपस्वी)
- ❖ मन्त्र तन्त्र और टोटके (डॉ. रामकृष्ण उपाध्याय)
- ❖ सौन्दर्य लहरी : यन्त्र और व्याख्या सहित (प्रस्तुति पं. कुलपति मिश्र)

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार दूरभाष : (01334) 226297

जीवन को ऊँचा उठाने के लिए आध्यात्मिक और दृष्टांत ग्रन्थ—

- ❖ विश्व के प्रमुख धर्म और उनके उपदेश (सुरेश चन्द्र अग्रवाल)
- ❖ चमत्कारी ॐ महिमा एवं साधना (प्रकाशनाथ शास्त्री)
- ❖ मन को वश में कैसे करें (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
- ❖ गायत्री साधना : गायत्री पर एक सम्पूर्ण ग्रन्थ (एस.एम. बहल)
- ❖ गुरुवाणी (श्री गुरुग्रन्थ साहिब की प्रमुख वाणियाँ हिन्दी अनुवाद सहित)
- ❖ आध्यात्मिक ज्ञान के ११०० स्वर्ण सूत्र (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ विवेक चूड़ामणि (हिन्दी अर्थ व व्याख्या) (लेखक : दशोरा)
- ❖ ब्रह्मसूत्र : वेदान्त दर्शन (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ योग वाशिष्ठ : महारामायण (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ अष्टावक्रगीता और चर्पट पञ्जरिका : श्लोक एवं काव्यानुवाद
- ❖ जीवन साधना से आत्मिक आनन्द (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ ज्ञान से मानसिक शान्ति (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ धर्म क्या है (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ पातंजल योग सूत्र (हिन्दी व्याख्या सहित) (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ अवधूत गीता (मूल, अनुवाद, व्याख्या) (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ आत्मा की जीवन यात्रा (दया कृष्ण शर्मा)
- ❖ भगत माला : भारत के सन्त और भक्त (डॉ. उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर')
- ❖ दृष्टान्त महासागर (चक्र व चैतन्य)
- ❖ प्रभु मिलेंगे कैसे (जगद्गुरु बाल स्वामी के प्रवचन)
- ❖ दृष्टान्त दीपक (पुष्पावती खेतान)
- ❖ ईश्वर प्राप्ति और ज्ञानवर्धक कथाएँ (पुष्पावती खेतान)
- ❖ महानता के दृष्टांत (पुष्पावती खेतान)
- ❖ राजा निर्मोह की कथा (डॉ. भरत लाल शर्मा)
- ❖ कण-कण में भगवान (डॉ. भरत लाल शर्मा)
- ❖ सिक्खों के दस गुरु : जीवन चरित्र और उपदेश (सुरेश चन्द्र अग्रवाल)
- ❖ गुरु नानक देव : जीवन और उपदेश (आर.एस. अरोड़ा)
- ❖ हमारे सोलह संस्कार : औचित्य एवं महत्त्व (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ गीता में सम्पूर्ण योग (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ मन की अद्भुत शक्तियाँ (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ ध्यान योग चिकित्सा (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ योग वाशिष्ठ के सिद्धान्त (नन्दलाल दशोरा)

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार दूरभाष : (01334) 226297

नीति ग्रन्थ, अनमोल वचन, योग एवं चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें—

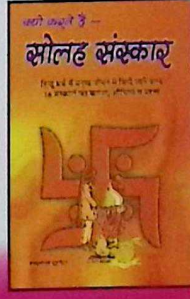
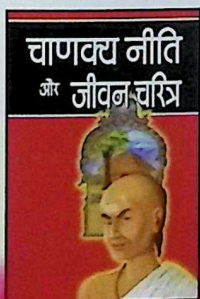
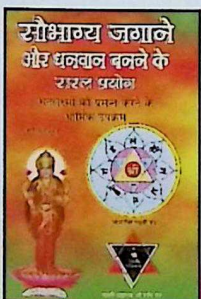
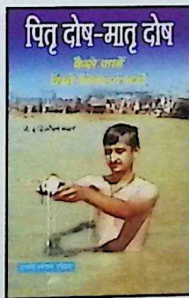
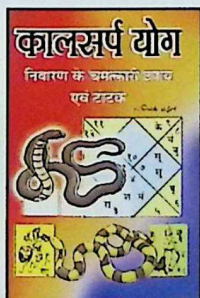
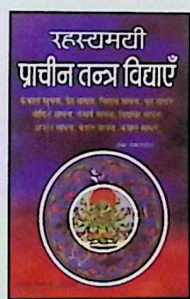
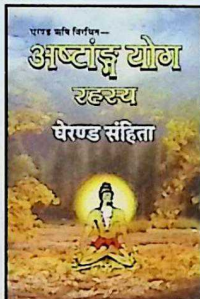
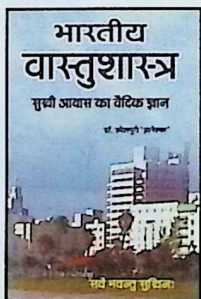
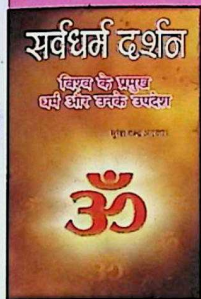
- ❖ मनुस्मृति (हिन्दी अनुवाद सहित)
- ❖ शुक्रनीति (हिन्दी अनुवाद सहित)
- ❖ सचित्र भर्तृहरि शतक (२४ चित्रों सहित)
- ❖ चाणक्य सूत्र संग्रह (कौटिलीय अर्थशास्त्र)
- ❖ चाणक्य नीति और जीवन चरित्र (चित्रों सहित)
- ❖ विदुर नीति और जीवन चरित्र (चित्रों सहित)
- ❖ अन्धविश्वास सत्य और तथ्य (गोपाल राजू)
- ❖ ज्ञान गंगा (वेदवाणी, शास्त्रवाणी, सन्तों की वाणी)
- ❖ ज्ञान मार्ग के सोना-चाँदी एवं सुख और शान्ति का सच्चा साथी
- ❖ बिखरे मोती—सूक्ति संग्रह (जगद्गुरु बालस्वामी)
- ❖ ११०० रस बिन्दु—सूक्ति संग्रह (जगद्गुरु बालस्वामी)
- ❖ महापुरुषों के अनमोल वचन (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ रेकी : स्पर्श चिकित्सा (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ चमत्कारी कुण्डलिनी शक्ति (डॉ. कमल प्रकाश)
- ❖ चमत्कारी हिप्नाटिज्म : रोगोपचार और त्राटक साधना (एस.एम. बहल)
- ❖ उपयोगी जड़ी बूटियाँ : चित्र, परिचय व प्रयोग (डॉ. उपाध्याय)
- ❖ चमत्कारी रुद्राक्ष की महिमा और प्रयोग (डॉ. रामकृष्ण उपाध्याय)
- ❖ रत्न परिचय और चिकित्सा विज्ञान (डॉ. रामकृष्ण उपाध्याय)
- ❖ ध्यान योग चिकित्सा (नन्दलाल दशोरा)
- ❖ अष्टांग योग रहस्य (घेरण्ड संहिता का अविकल अनुवाद)
- ❖ स्वरोदय विज्ञान (नासिका छिद्रों से श्वास प्रक्रिया पर आधारित)
- ❖ शिव स्वरोदय भाषा-टीका (बाबा अनुराग दास)
- ❖ स्वर शास्त्र (स्वामी हरिहरदास त्यागी)
- ❖ स्वरोदय के चार रत्न (बाबा अनुराग दास)

हिन्दी के विभिन्न विषयों की जीवनोपयोगी पुस्तकें, धार्मिक ग्रन्थ, वेद, उपनिषद्, कर्मकाण्ड, उपासना, स्तुति, मन्त्र-तन्त्र, ज्योतिष, हस्तरेखा, रत्न, रुद्राक्ष इत्यादि सभी प्रकार के ग्रन्थों को प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें—

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार दूरभाष : (01334) 226297

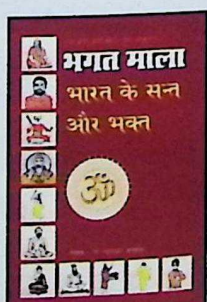
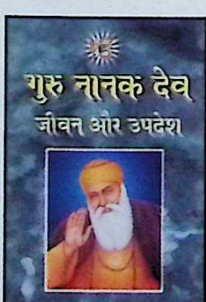
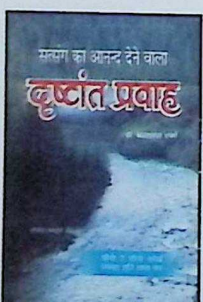
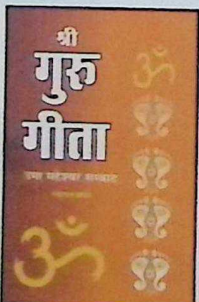
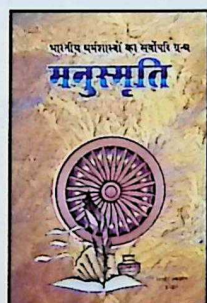
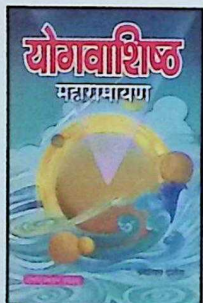
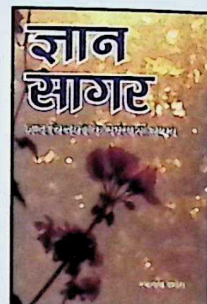
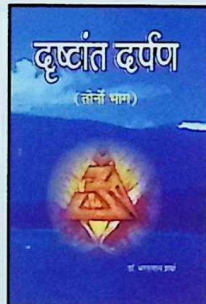
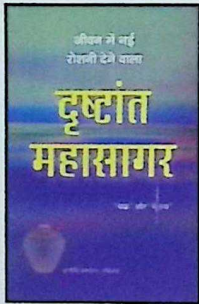
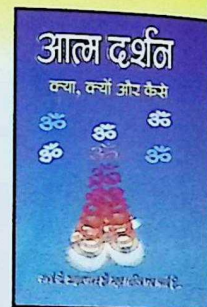
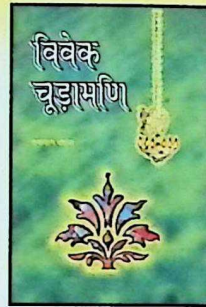
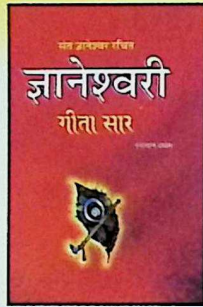
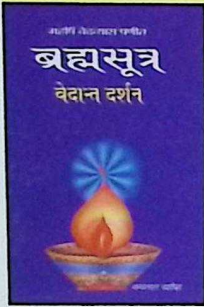
रणधीर प्रकाशन

विभिन्न विषयों की नवीन पुस्तकें



रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार-पिन कोड: 249401

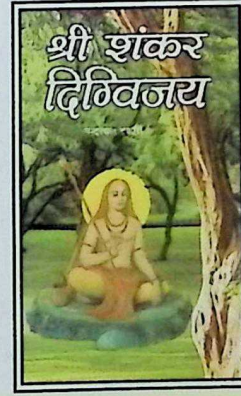
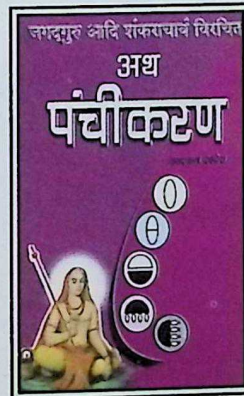
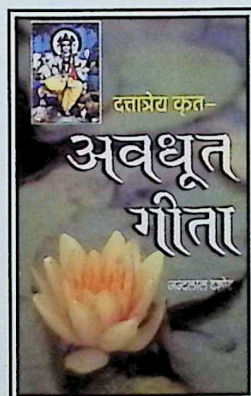
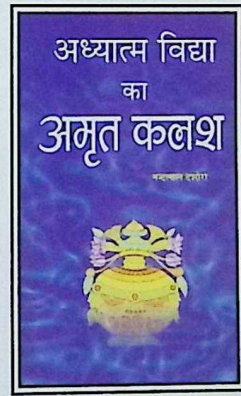
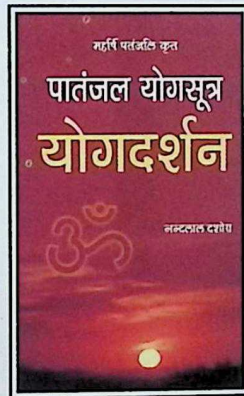
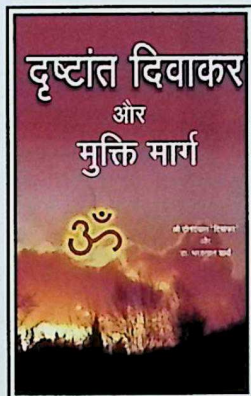
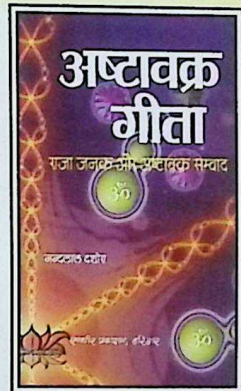
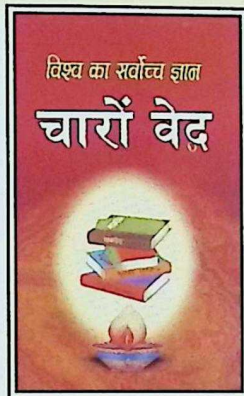
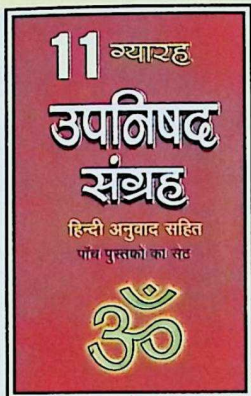
आत्मिक सुख देने वाली अनमोल पुस्तकें



रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

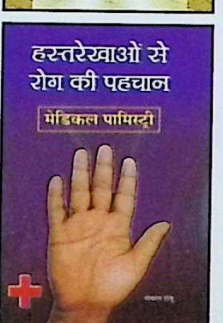
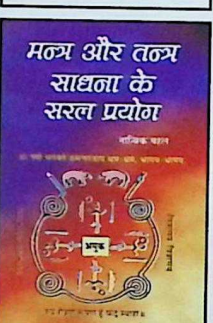
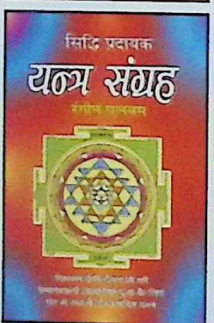
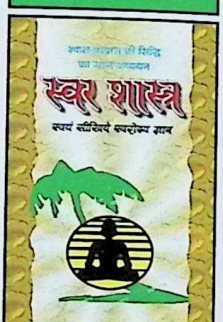
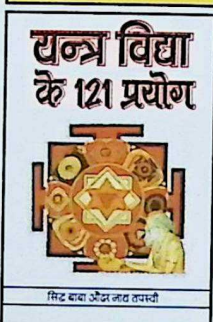
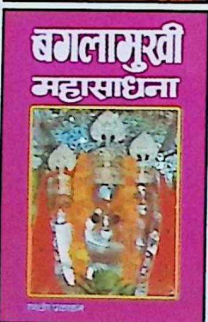
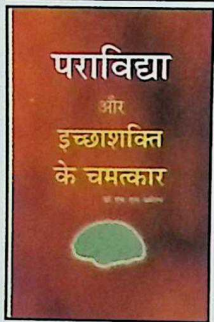
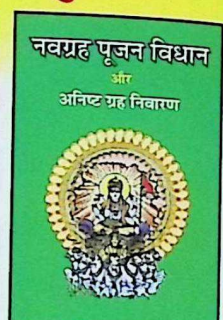
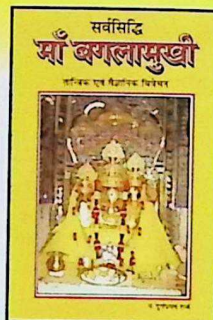
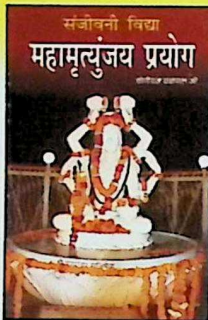
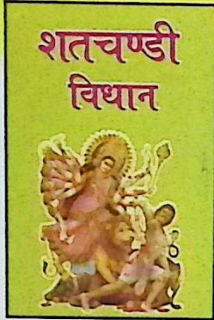
हर घर में संग्रह करने योग्य ज्ञान ग्रन्थ



रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

हर घर में काम आने वाली उपयोगी पुस्तकें

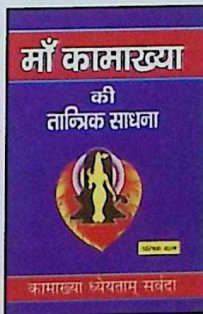
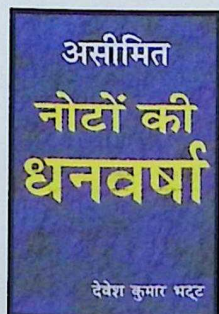
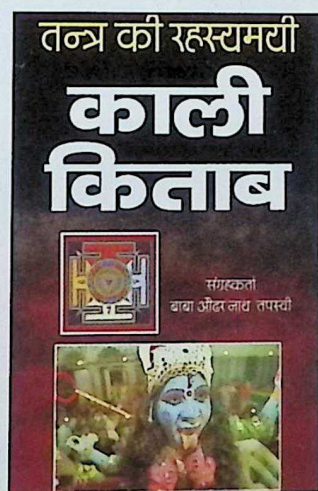
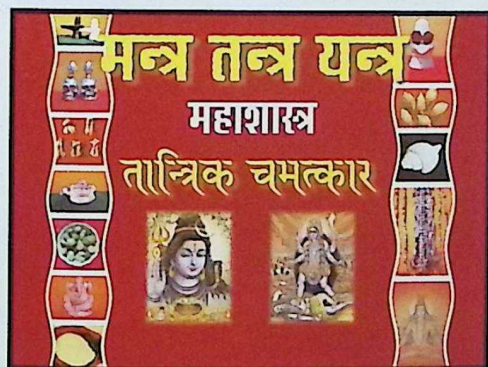
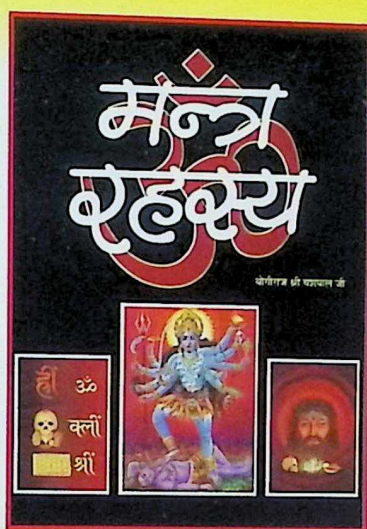
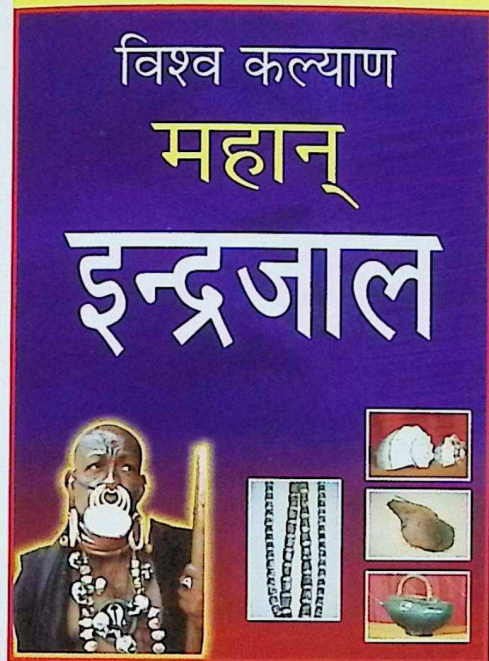


मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र एवं ज्योतिष के किसी प्रयोग अथवा पूजा पाठ के अनुष्ठान में योग्य गुरु का निर्देशन अवश्य लें। लेखक, प्रकाशक एवं मुद्रक किसी भी उचित या अनुचित प्रयोग का उत्तरदायी नहीं है।

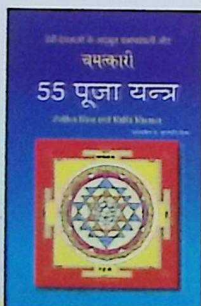
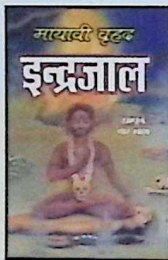
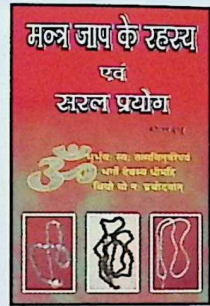
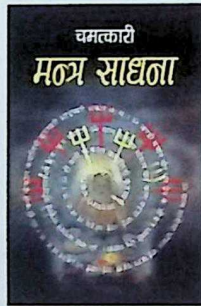
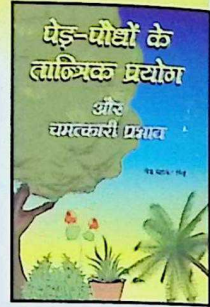
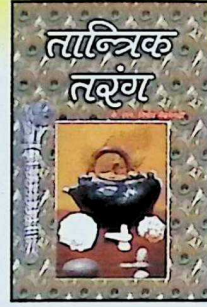
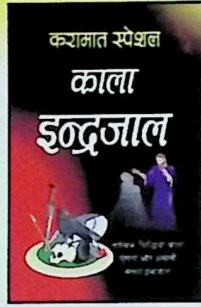
रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

प्रख्यात तान्त्रिकों द्वारा रचित विशेष ग्रन्थ



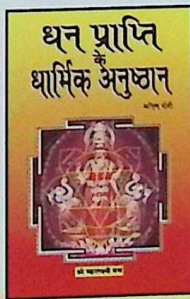
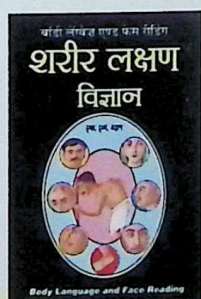
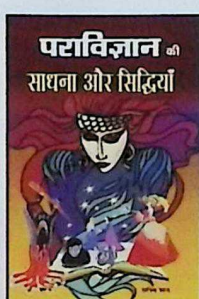
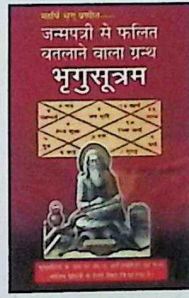
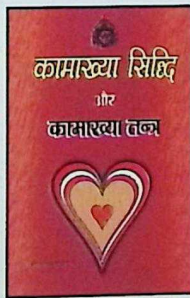
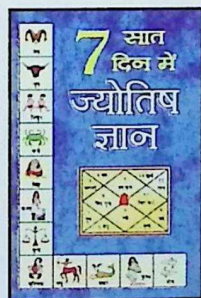
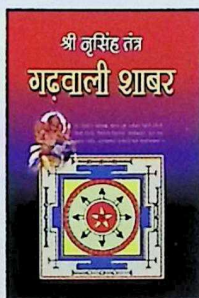
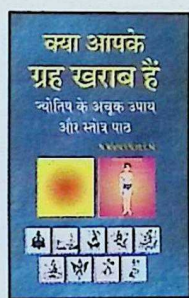
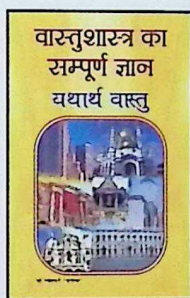
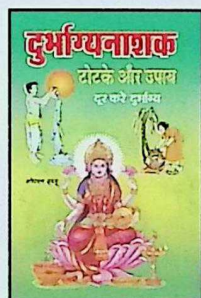
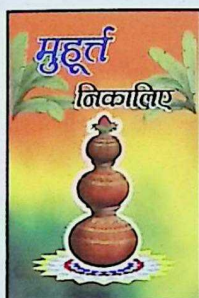
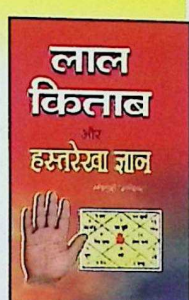
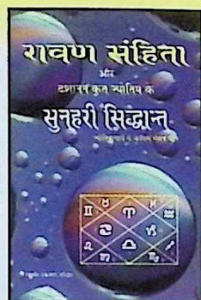
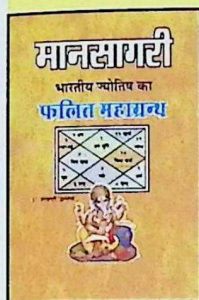
मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र एवं रत्न विषयक पुस्तकें



रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

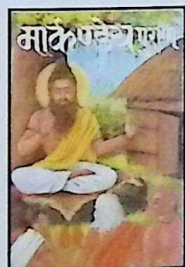
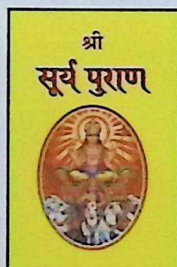
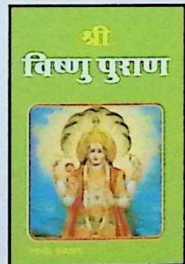
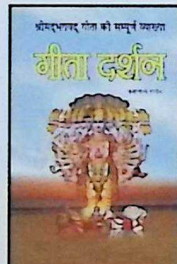
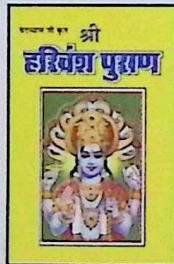
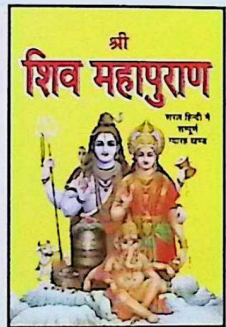
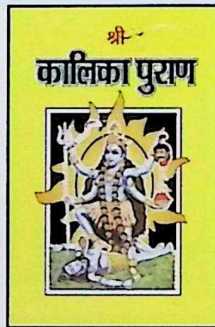
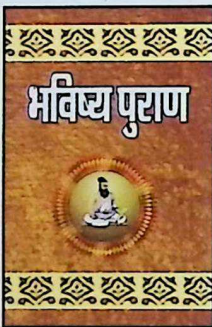
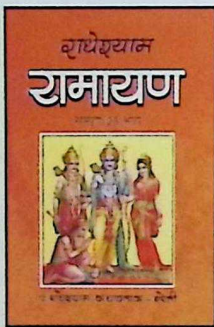
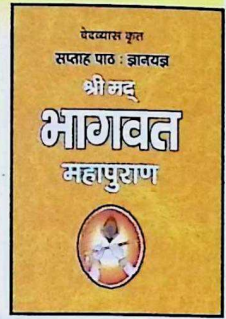
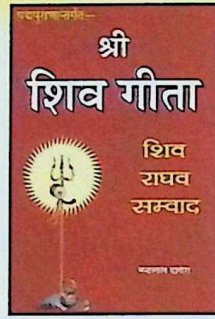
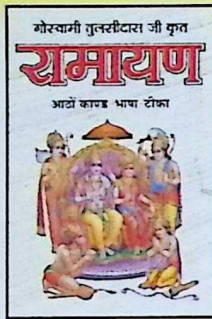
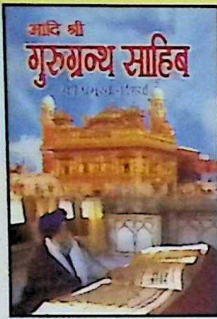
विभिन्न विषयों की अन्य पुस्तकें



रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

हर घर में संग्रहणीय धार्मिक ग्रन्थ एवं पुराण



वेद, पुराण, ग्रन्थ, पूजा-पाठ, कर्मकाण्ड की पुस्तकों का मूल्य सूची पत्र मँगवाने के लिये सम्पर्क करें—

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

Designed by: Madhur Graphics, Delhi

